

घट रामायन

[भाग १]

सतगुरु तुलसी साहिब (हाथरस वाले)
की रची हुई

यह ग्रंथ दो प्रमानिक लिपियों का मिलान करके
बड़ी शुद्धता से दो भागों में पूरा छापा
गया है, मय उन महात्मा के
जीवन-चरित्र
के

All rights reserved.

[कोई साहिब बिना इजाज़त के इस पुस्तक को नहीं छाप सकते]

इलाहाबाद

बेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग वर्क्स में प्रकाशित हुई

सन १८९६ ई०

दूसरा एडिशन]

8121

[दाम प्रति भाग १]

॥ संतबानी ॥

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जक्त-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी और उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और जो छपी थीं सो प्रायः ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप में या छेपक और त्रुटि से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ हस्तलिखित दुर्लभ ग्रंथ आ फुटकल शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नकल कराके मँगवाये। भर सक तो पूरे ग्रंथ छापे गये हैं और फुटकल शब्दों की हालत में सर्व-साधारण के उपकारक पद चुन लिये हैं, प्रायः कोई पुस्तक बिना दो लिपियों का मुकाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी गई है और कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत फुट-नोट में दे दिये हैं। जिन महात्मा की बानी है उन का जीवन-चरित्र भी साथ ही छपा गया है और जिन भक्तों और महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उन के वृत्तांत और कौतुक संक्षेप से फुट-नोट में लिख दिये गये हैं।

दो अंतिम पुस्तकें इस पुस्तक-माला की अर्थात् संतबानी संग्रह भाग १ [साखी] और भाग २ [शब्द] छप चुकीं जिन का नमूना देख कर महामहोपाध्याय श्री पंडित सुधाकर द्विवेदी बैकुंठ-बासी ने गद्गद होकर कहा था—“न भूतो न भविष्यति”।

एक अनूठी और अद्वितीय पुस्तक महात्माओं और बुद्धिमानों के बचनों की “लोक परलोक हितकारी” नाम की गद्य में सन् १८१६ में छपी है जिसके विषय में श्रीमान महाराज काशी नरेश ने लिखा है—“वह उपकारी शिक्षाओं का अचरजी संग्रह है जो सोने के ताल सस्ता है”।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष उन की दृष्टि में आवें उन्हें हम को कृपा करके लिख भेजें जिस से वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें।

यद्यपि ऊपर लिखे हुए कारणों से इन पुस्तकों के छापने में बहुत खर्च होता है तो भी सर्व-साधारण के उपकार हेतु दाम आध आना फी आठ पृष्ठ (रायल) से अधिक नहीं रक्खा गया है।

प्रोग्रैटर, बेलवेडियर छापाखाना,

सितम्बर सन् १८१६ ई०

इलाहाबाद।

॥ भूमिका ॥

(पहिले एडिशन की)

हमारा इरादा घट रामायन के छापने का न था क्योंकि इस ग्रंथ को मुंशी देवी प्रसाद साहिब उर्फ देवी साहिब पहले छाप चुके हैं परन्तु संतबानी सीरीज़ के बहुत से ग्राहकों के आग्रह पर कि यह अनमोल ग्रंथ हमारी पुस्तक-माला के सिलसिले में ज़रूर छपना चाहिये क्योंकि औवल तो देवी साहिब की छपी हुई पुस्तक में छेपक विशेष है जिस से वह तुलसी साहिब की निर्मल और अछूती बानी नहीं कही जा सकती, दूसरे उसका दाम बहुत ज़ियादा है यानी बढ़िया कागज़ पर १०॥) और घटिया कागज़ पर ७॥) जिसे मामूली हैसियत के लोग नहीं खरीद सकते ॥

दो बरस हुए हमारे मित्र लाला बालमकुंदजी हाथरस निवासी ने हम को एक लिखी हुई पुस्तक घट रामायन की दी थी लेकिन बिना दूसरी लिपि के उस से पूरे तौर पर काम नहीं चल सकता था। अब हमारे पूज्य मित्र राय बहादुर सेठ सुदर्शनसिंह साहिब ने रत्नसागर की तरह इस अनमोल ग्रंथ की हस्त-लिखित प्रति को भी परमपुरुष स्वामीजी महाराज के पाठ की पुस्तकों में से निकाल कर अति दया से प्रेमी जनों के उपकारार्थ छापने को भेज दिया। यह लिपि प्राचीन और प्रामाणिक पाई गई और जो अशुद्धता या त्रुटि कहीं कहीं थी वह दूसरी लिपि की सहायता से शोध और ठीक की गई। अब यह पुस्तक जो छाप कर प्रेमी जनों के सामने रखी जाती है मुताबिक असल के है और जहाँ तक हो सका शुद्धता के साथ छपी गई है ॥

हम ने तवज्जह के साथ अपनी लिपियों का मुंशी देवीप्रसाद जी की पुस्तक से मुकाबला किया और शुरू में जहाँ तक फर्क कम पाया पाठ-भेद और त्रुटियों को अपनी पुस्तक के फुटनोट में दिखलाया लेकिन आगे चल कर इतना ज़ियादा फर्क न सिर्फ़ इक्के दुक्के लफ़्ज़ों का बल्कि कड़ियों की लड़ियों का मिला कि वह कोशिश छोड़ दी गई। वह अधिक कड़ियाँ और पद छेपक हैं या असल इसको हर एक बिबेकी पाठक समझ सकता है ॥

तुलसी साहिब का लिखा हुआ उनके पूर्व जन्म का वृत्तांत दूसरे भाग में दिया गया है जैसा कि हमारी लिपियों में है और जोकि मुनासिब जगह उसकी जान पड़ी। सर्वसाधारण के उपकार के हेतु इस ग्रंथ को दो भागों में बाँट दिया गया है और बढ़िया कागज़ पर छाप कर दाम केवल एक रुपया प्रति भाग रक्खा गया है जिस में हर एक जिज्ञासू एक या दो बार करके पूरा ग्रंथ मँगा सके ॥

तुलसी साहिब का जीवन-चरित्र उनकी शब्दावली और रत्नसागर के साथ पहले छपा जा चुका है परन्तु जोकि अब एक नई पुस्तक “सुरत-बिलास” नाम की जिस में तुलसी साहिब का जीवन-चरित्र लिखा है हम को मिली है उसकी सहायता से शोध कर विस्तार के साथ उन का जीवन-चरित्र यहाँ पर छापते हैं ॥

हम इस अवसर पर रायबहादुर सेठ सुदर्शनसिंह साहिब को अनेक धन्यवाद देते हैं जिनकी कृपा से यह ग्रंथ छपा गया। मुंशी देवी प्रसाद साहिब ने इस अनमोल रत्न को पहले पहल बड़ी योग्यता और परिश्रम से छापे में प्रकाशित किया इस उपकार का कोई वार पार नहीं है। हम ने भी यदि इस ग्रंथ को उनकी पुस्तक से पहले न पढ़ा होता तो उसके छापने का उत्साह न होता और न बिना उसकी मौजूदगी के अपनी लिपियों को कहीं कहीं शोधने में भिन्नक दूर होती, इस लिये हम उनको विशेष धन्यवाद देते हैं ॥

इलाहाबाद,

सितम्बर १९११ }

अधम,

एडिटर ।

तुलसी साहिब का जीवन-चरित्र

सतगुरु तुलसी साहिब जिनको लोग साहिबजी भी कहते थे जाति के दक्षिणी ब्राह्मण राजा पूना के युवराज यानी बड़े बेटे थे जिनका नाम उनके पिता ने श्यामराव रखा था। बारह बरस की उमर में उनकी मरजी के खिलाफ पिता ने उनका विवाह कर दिया पर वह जवान होने पर भी ब्रह्मचर्य में पड़े और अपनी स्त्री से अलग रहे। उनकी स्त्री जिसका नाम लक्ष्मीबाई था पूरी पतिव्रता थीं और अपने पति की सेवा दिल जान से बराबर करती थीं। आखिर को एक दिन जबकि उनके पति किसी भारी सेवा पर बड़े प्रसन्न हुए और उनसे बर माँगने को कहा तो उन्होंने अपनी सास की सीख अनुसार यह माँगा कि मुझे एक पुत्र हो। साहिबजी ने कहा बहुत अच्छा और दस महीने पीछे बेटा हुआ ॥

साहिबजी के पिता भी बड़े भक्त थे और अब इनकी इच्छा हुई कि उनको राज गद्दी दे कर आप एकान्त में रह कर मालिक की बंदगी करें परन्तु उनको हज़ार समझाया वह किसी तरह राजी न हुए और अपने पिता से बैराग और भक्ति की ऐसी चरचा की कि उनको जवाब न आया, फिर भी वह इनके राज गद्दी पर बैठने की तैयारी करते रहे। जब गद्दी पर बैठने को एक दिन बाकी रहा तो साहिबजी अपने पिता से मिलने बाग़ को थोड़े से सवारों के साथ जो उनकी निगरानी के लिये तैनात थे गये और वहाँ से आगे हवा खाने के बहाने एक तेज़ तुरकी घोड़े पर सवार होकर निकल गये। जब शहर-पनाह के पास पहुँचे तो मौज से ऐसी आँधी उठाई कि घोर अंधेरा छागया जिसकी ओट में वह घोड़ा भगा कर अपने साथियों से अलग हो गये। राजा ने यह खबर सुनकर इनकी खोज के लिये चारों ओर देश विदेश आदमी व सवार दौड़ाये पर जब कहीं पता न लगा तो अति उदास व निरास होकर राज्य को त्याग किया और अपने छोटे कुँवर बाजीराव को गद्दी पर बैठाया ॥

तुलसी साहिब कितने ही बरस तक जंगलों, पहाड़ों और दूर दूर शहरों में घूमे और हज़ारों आदमियों को उपदेश देकर सत्य मार्ग में लगाया और कई बरस पीछे ज़िला अलीगढ़ के हाथरस शहर में आकर एक तैर पर ठहरे और वहाँ अपना सतसंग जारी किया ॥

घर से निकलने के बयालीस बरस पीछे वह अपने छोटे भाई राजा बाजीराव से बिठूर (ज़िला कानपुर) में मिले थे जहाँ कि बाजीराव गद्दी से उतारे जाने पर सम्बत् १८७६ में भेज दिये गये थे। इसका हाल "सुरत बिलास" ग्रंथ में इस तरह लिखा है कि साहिबजी गंगा के तट पर रम रहे थे कि एक शूद्र और ब्राह्मण में झगड़ा

होते देखा। ब्राह्मण गंगाजी के तट पर संध्या करता था और शूद्र नहा रहा था। शूद्र की देह से जल का छूँटा ब्राह्मण पर पड़ा जिस से वह क्रोध में भर आया और उठ कर शूद्र को गाली देने और मारने लगा। साहिबजी के पूछने पर उसने सब हाल कहा और बोला कि इस शूद्र ने जल की छूँट अपने बदन से उड़ा कर मुझे अपवित्र कर दिया और अब मेरे पास दूसरी धोती भी नहीं है कि फिर नहा कर पहनूँ और पूजा खतम करूँ। साहिबजी ने समझाया कि तुम्हारे ही शास्त्र के अनुसार गंगा और शूद्र दोनों एक ही पद से याने विष्णु के चरन से निकले हैं फिर क्यों एक को पवित्र और दूसरे को अपवित्र मानते हो। यह सुनकर ब्राह्मण लज्जित हुआ ॥

घाट पर जो लोग जमा थे उनमें से राजा बाजीराव के एक पंडित ने साहिबजी को पहिचान लिया क्योंकि इनका अति सुन्दर और मोहनी रूप जिस किसी ने एक बार भी दर्शन किया उसकी आँखों में समा जाता था। उसने तुरत राजा को खबर भेजी कि आपको भाई आये हैं। राजा नंगे पाँव दौड़े और साहिबजी के चरनों पर बिलाप करते हुए गिरे और बड़े आदर भाव से सुखपाल पर बैठाकर घर लाये और चाहा कि उनको वहीं रखे पर वह एक दिन वहाँ से भी चुपचाप चलते हुए ॥

सुरत विलास में तुलसी साहिब के देशाटन समय के कितने ही चमत्कार लिखे हैं जैसे रोगियों को अरोग्य कर देना, मुरदों को जिला देना, अंधों को आँख, निर्धन को धन और बाँझ को संतान देना इत्यादि, जिनके विस्तार की यहाँ आवश्यकता नहीं है। ऐसी कथाएँ महात्माओं की महिमा बढ़ाने के लिये लोग अक्सर गढ़ लेते हैं। संत यद्यपि सर्व समर्थ हैं पर वह कभी सिद्धि शक्ति नहीं दिखलाते और अपनी ऊँची गति को गुप्त रखते हैं। हमारे मन में तो सब कथाओं में यह हाल जो प्रसिद्ध है अधिक बैठता है कि एक साहूकार ने आपका बड़ा सत्कार किया और भोग लगाते समय यह वरदान माँगा कि मुझे दया से एक पुत्र वंश जाय। तुलसी साहिब ने अपना सौँटा उठाया और यह कहकर चलते हुए कि लड़का अपने सर्गुन इष्ट से माँग, संतों की दया तो यह है कि अगर उनके दास के औलाद मौजूद भी हो तो उसे उठा लें और अपने दास को निर्वन्ध कर दें ॥

तुलसी साहिब के उत्पन्न होने का सम्बत् सुरत विलास में नहीं दिया है पर यह लिखा है कि उन्होंने अनुमान अस्सी बरस की अवस्था में जेठ सुदी २ विक्रमी सम्बत् १८६६ या १६०० में चोला छोड़ा। इस से उनके देह धारण करने का समय सम्बत् १८२० के लगभग ठहरता है। हाथरस में उनकी समाधि मौजूद है और बहुत से लोग वहाँ दर्शन को जाते हैं और साल में एक बार भारी मेला होता है ॥

यद्यपि इनको इस संसार से गुप्त हुए ७० बरस से कम हुए हैं पर उनके अनुयायियों ने न जानें किस मसलहत से उनके जीवन समय को ऐसी भूल भुलैयाँ में डाल रक्खा है कि लोग उसे सैकड़ों बरस समझते हैं। मुंशी देवी प्रसाद साहिब ने भी जो अब इस मत के आचार्य्य कहे जाते हैं घट रामायन की भूमिका में इस भरम

को दूर करने की कोशिश नहीं की है। हमने इस मत के कई साधुवों और गृहस्थों से तुलसी साहिब का जीवन समय पूछा तो उन्होंने एक मुँह होकर अब से साढ़े तीन सौ बरस पहिले बतलाया जोकि गोसाँईं तुलसीदास जी जन्म-प्रचलित सर्गुन रामायन के करता का समय है। तुलसी साहिब ने निस्संदेह घट रामायन के अंत में फ़रमाया है कि पूर्व जन्म में आपही गोसाँईं तुलसीदास जी के चोले में थे और तब ही घट रामायन को रचा परन्तु चारो ओर से पंडितों भेषों और सर्व मत वालों का भारी विरोध देख कर उस ग्रंथ को गुप्त कर दिया और दूसरी सर्गुन रामायन उस की जगह समयानुसार बनादी। इस से यह नतीजा साफ़ तौर पर निकलता है कि घट रामायन को तुलसी साहिब ने जब दूसरा चोला अनुमान एक सौ चालीस बरस पीछे धारन किया तब प्रगट किया न कि पहिले चोले से। सवाल यह है कि कोई संत तुलसी साहिब के नाम के पीछले सत्तर पछत्तर बरस के अंदर हाथरस में उपस्थित थे या नहीं जो वहाँ सतसंग कराते थे और उपदेश देते थे, और जहाँ उन की समाधि अब तक मौजूद है? हम को इस में कोई संदेह नहीं है कि ऐसे महापुरुष अवश्य थे क्योंकि हम आप उन की समाधि का दर्शन कर आये हैं और दो प्रमानिक सतसंगी अब तक मौजूद हैं जिन्होंने ने अपने लड़कपन में तुलसी साहिब के दर्शन किये थे और उन में से एक को तुलसी साहिब ने अपनी घट रामायन आप दिखलाई थी ॥

तुलसी साहिब के मत वाले उनकी महिमा समझ कर इस बात पर बड़ा जोर देते हैं कि महाराज ने कोई गुरु धारन नहीं किया और इसके प्रमान में यह कड़ी पेश करते हैं—

“एक बिन्धी चित रहूँ सम्हारे। मिलै कोई सत फिरौँ तिस लारे ॥”

यह कड़ी तुलसी साहिब के “पूर्व-जन्म के चरित्र” में पहिली चौपाई की बीसवीं कड़ी है और उसी के दो पन्ने आगे “बरनन भेद संत मत” में पहिला खोरठा लोगों की इस बहस का खंडन करता है—

“तुलसी संत दयाल, निज निहाल मो को कियौ।

लियौ सरन के माहिँ, जाइ जन्म फिर कर जियौ ॥”

इस में संदेह नहीं कि तुलसी साहिब स्वयं संत थे जिन को गुरु धारन करने की ज़रूरत न थी लेकिन मरजादा के लिये किसी को नाम मात्र को अवश्य गुरु बना लिया होगा जिसके लिये संत सतगुरु कबीर साहिब और समस्त संतों की नज़ीर मौजूद है ॥

तुलसी साहिब अक्सर हाथरस के बाहर एक कम्मल ओढ़े और हाथ में डंडा लिये दूर दूर शहरों में चले जाया करते थे। जोगिया नाम के गाँव में जो हाथरस से एक मील पर है अपना सतसंग जारी किया और बहुतेों को सत्य मार्ग में लगाया ॥

इनकी हालत अक्सर गहरे खिँचाव की रहा करती थी और ऐसे आवेश की दशा में धारा की तरह ऊँचे घाट की बानी उनके मुख से निकलती, जो कोई निकट-बर्ती सेवक उस समय पास रहा उसने जो सुना समझा लिख लिया नहीं तो वह बानी हाथ से निकल गई। इस प्रकार के अनेक शब्द उनकी शब्दावली में हैं ॥

तुलसी साहिब के अनुयायी अब तक हजारों आदमी हिन्दुस्तान के शहरों में मौजूद हैं। उनके प्रसिद्ध ग्रंथ घट रामायन और शब्दावली और रत्न-सागर हैं ॥

तुलसी साहिब ने अपनी बानी में बहुत जगह बेद कतेब कुरान पुरान राम रहीम और प्रचलित मतों का खोल कर खंडन किया है जिस से लोग उन्हें निन्दक और द्रोही समझते हैं पर यह उनकी अनसमझता की बात है। तुलसी साहिब के पदों के अर्थ पर ध्यान देने से स्पष्ट जान पड़ता है कि उन्होंने ने किसी मत को झूठा नहीं ठहराया है बरन जहाँ तक जिसकी गति है उसको साफ़ तौर पर बतला दिया है। उनका अभिप्राय केवल यह है कि इष्ट सब से ऊँचे और समस्त पिंड और ब्राह्मांड के धनियों के धनी का बाँधना चाहिये और उसी की सेवा और भक्ति करनी चाहिये, निर्मल चेतन्य देश से नीचे के लोकों के धनियों की भक्ति करने से परिश्रम तो उतना ही पड़ेगा और लाभ पूरा न उठेगा, अर्थात् भक्त का काम अधूरा रह जायगा और वह आवागवन से न छूटेगा, देर सवेर जन्म मरन का चक्कर लगा रहेगा, क्योंकि ये लोक माया के घेर में हैं चाहे वह कितनी ही सूक्ष्म माया हो ॥



तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की

घट रामायन

भाग १

भेद पिंड और ब्रह्मांड का

॥ सारठा ॥

सुति बुँद सिंध मिलाप, आप अधर चढ़ि चाखिया ।
भाखा भोर भियान, भेद भान गुरु सुति लखा ॥

॥ छंद सुति सिंध ॥

सत सुरति समझि सिहार साधौ । निरखि नित नैनन रहौ ॥
धुनि धधक धीर गँभीर मुरली । मरम मन मारग गहौ ॥१॥
सम सील लील अपील पेलै । खेल खुलि खुलि लखि परै ॥
नित नेम प्रेम पियार पिउ कर । सुरति सजि पल पल भरै ॥
धरि गगन डोरि अपोर^१ परखै । पकरि पट पिउ पिउ करै ॥२॥
सर साधि सुन्न सुधारि जानौ । ध्यान धरि जब थिर थुवा^२ ॥
जहँ रूप रेख न भेष काया । मन न माया तन जुवा ॥३॥
अलि अंत मूल अतूल कँवला । फूल फिरि फिरि धरि धसै ॥
तुलसि तार निहार सूरति^३ । सैल सत मत मन बसै ॥४॥

॥ छंद २ ॥

हिये नैन सैन सुचैन सुंदरि । साजि सुति पिउ पै चली ॥
गिर गवन गोह गुहारि मारग । चढ़त गढ़ गगना गली ॥१॥

(१) बिना जोड़ या गाँठ के । (२) हुआ । (३) मुन्शी देवीप्रसाद जी की पुस्तक में
“तार” के आगे “पार” का शब्द भी है ।

जहँ ताल तट पट पार प्रीतम । परसि पद आगे अली ॥
 घट घोर सौर सिहार सुनि के । सिंध सलिता जस मिली ॥२॥
 जब ठाट घाट बैराट कीन्हा । मीन जल कँवला कली ॥
 अली अंस सिंध सिहार अपना । खलक लखि सुपना छली ॥३॥
 अस सार पार सम्हारि सूरति । समझि जग जुगजुग जली ॥
 गुरुज्ञान ध्यान प्रमान पद बिन । भटकि तुलसी भौ भिली ॥४॥

॥ छंद ३ ॥

अलि अधर धार निहारि निजकै । निकरि सिखर चढ़ावही ॥
 जहँ गगन गंगा सुरति जमुना । जतन धार बहावही ॥१॥
 जहँ पदम प्रेम प्रयाग सुरसरि । धुर गुरु गति गावही ॥
 जहँ संत आस बिलास बेनी । बिमल अजब अन्हावही ॥२॥
 कृतकुमति काग सुभाग कलि मल । कर्म धोइ बहावही ॥
 हिये हेरि हरष निहारि घर कै । पार हंस कहावही ॥३॥
 मिलि तूल मूल अतूल स्वामी । धाम अविचल बसि रही ॥
 अलि आदिअंत विचारि पद कै । तुलसि तब पिव की भई ॥४॥

॥ छंद ४ ॥

अलि पारपलग बिछाड़ पल पल । ललक पिउ सुख पावही ॥
 खुस खेल मेल मिलाप पिउ कर । पकरि कंठ लगावही ॥१॥
 रस रीति जीति जनाइ आसिक । इस्क रस बस लै रही ॥
 पति पुरुष सेज सँवार सजनी । अजब अलि सुख का कही ॥२॥
 मुख बैन कहनि न सैन आवै । चैन चौज चिन्हावही ॥
 अलि संत अन्त अतन्त जानै । बूझि समझ सुनावही ॥३॥
 जिन चीन्हि तन मन सुरति साथी । भवन भीतर लखि लई ॥
 जिन गाइ सब्द सुनाइ साखी । भेद भाषा भिनि भई ॥४॥
 अलिअलष अंडन खलक खंडा । पलक पट घट घट कही ॥
 (तुलसी) ताल बोल अबोल बानी । बूझि लखि बिरले लई ॥५॥

॥ छंद ५ ॥

अलि देख लेख लखाव मधुकर । भरम भौ भटकत रही ॥
दिन तीनि तन सँग साथ जानौ । अंत आनंद फिरि नहीं ॥१॥
जग नहिन सार असार सखिरी । भ्रमत बिधि बस भौ महीं ॥
धन धाम काम न कनक काया । मुलक माया लै बही ॥२॥
येहि समभि बूझि बिचारि मन में । निरखि तन सुपना सही ॥
जम जाल जबर कराल सजनी । काल कुल करतब लई ॥३॥
सब तिरथ धरत अचार अलिरी । कर्म बस बंधन भई ॥
तुलसि तरक बिचारि तन मन । संत सतगुरु अस कही ॥४॥

॥ छंद ६ ॥

सखि समभि सूर सहूर सुनि कै । बदन बिच सुधि बुधि गई ॥
करूँ कवन भवन उपाव विन बस । नेक मधुकर बस नहीं ॥१॥
मिलि पाँचतीनि पचीस निस दिन । गाँठि गुन बंधन भई ॥
भइ विवस बस नहिँ दाँव लागै । दृढ़ निमख^१ नहिँ आवही ॥२॥
धरि हाथ पटक पुकारि पिव संग । हारि जिव सँग हटि रही ॥
कहुँ ठौर मोर न जोर चालै । आली बिपति कछु का कही ॥३॥
सुनि ज्ञान ध्यान न कान मानै । बिकल तन मन बिचलई ॥
तुलसी विरह बेहाल^२ हिये मैं । मौत दिन देवै दई ॥४॥

॥ छंद ७ ॥

सखि सीख सुनि गुनि गाँठि बाँधै । ठाट ठट सतसँग करै ॥
जब रंग संग अपंग अलि री । अंग सत मत मन मरै ॥१॥
मन मोन दिल जब दीन देखै । चोन्ह मधुकर सिर धरै ॥
अलि डगर मिलि जब सुरति सरजू । कँवल दल चल पद परै ॥२॥
थिर थोव ठुमकि टिकाव नैना । नीर थिर जिमि थम थिरै ॥
यहि भाँति साथ सुधारि मन कै । पलक गिरि गगना भरै ॥३॥

(१) मुन्शी देवी प्रसाद की पुस्तक में कड़ी २ में “दृढ़ निमख” की जगह “उड़ान मख”, और कड़ी ४ में “बेहाल” की जगह “बिकल बेतरह” है ।

लखि द्वार दृढ़ दरबार दरसै । परसि पुनि पद पिउ घरै ॥
गुरु गैल मेल मिलाप तुलसी । मंत्र विषधर^१ बसि करै ॥४॥

॥ छंद ८ ॥

सखि भेद भाव लखाव लै गुरु । मरम केहि मारग मिलै ॥
जेहि जतन पतन पिथास पलपल । पकरि मन केहि धिधि चलै ॥१॥
गुन गोह गति मति गजब गैला । सिखरि साधन कस पलै ॥
सखि सुरति मंज समान संजम । मैल मन संग दुख खलै ॥२॥
सुनि सुलभ लखन लखाव सजनी । दुलभ^२ दृढ़ कलिमल दलै ॥
मोहि दीन लीन जो चीन्ह चेरी । तपन बिच तन मन जलै ॥३॥
सखि चरन सरन निवास निस दिन । दुख दवा मोहि अब मिलै ॥
गुरु सरन मंत्र मिलाप तुलसी । जबर संग जुलमी टलै ॥४॥

॥ छंद ९ ॥

जब बल बिकल दिल देखि बिरहिन । गुरु मिलन मारग दई ॥
सखि गगन गुरु पद पार सतगुरु । सुरति अंस जो आवई ॥१॥
सुरति अंस जो जीव घर गुरु । गगन बस कंजा मई ॥
अलि गगन धार सवार आई । ऐन बस गोगुन रही ॥२॥
सखि ऐन सुरति पैन पावै । नील चढ़ि निरमल भई ॥
जब दीप सीप सुधारि सजिकै । पछिम पट पद मैं गई ॥
गुरु गगन कंज मिलाप करि कै । ताल तज सुन धुनि लई ॥३॥
सुनि सद्ध से लखि सद्ध न्यारा । प्रालबद जद क्या कही ॥
जेहि पार सतगुरु धाम सजनी । सुरति सजि भजि मिलिरही ॥४॥
अस अलल अंड अकार डारै । उलटि घर अपने गई ॥
येहि भाँति सतगुरु साथ भैंटे । कर अली आनंद लई ॥५॥
दुख दाउ कर्म निवास निस दिन । धाम पिथा दरसत वहाँ ॥
सतगुरु दया दिल दीन तुलसी । लखत भै निरभै भई ॥६॥

॥ छंद १० ॥

अलि आदि अजर दयाल सतगुरु । मर्म कहौ कहैं लगि कहूँ ॥
 अस कुटिल खोट मलीन बुधि मैं । चित छली मनमत रहूँ ॥१॥
 धर धोइ सतगुरु सरस साबुन । ज्ञान सिल जल मल बह्यो ॥
 सखि मैल मन जस चिकट कपरा । उजल हिये अलि अस भयो ॥२॥
 जब आदि अटल अनादि रँग मैं । चटक रँग सतगुरु दयो ॥
 कहूँ कौन सिफति सुनाइ सजनी । अचल सलिता सिंध लह्यो ॥३॥
 सिंध सब्द सतगुरु सुरति सलिता । अलि मिलन अस बिधि भयो ॥
 सिंध बुन्द नन मन बन बिराटा । बूझ बिन बादै बह्यो ॥४॥
 जब उलटि घर अलि आदि चीन्है । दीन दिल सतगुरु लयो ॥
 अलि आदि अंत समाद समझो । बरनि बिधि जस जस कह्यो ॥५॥
 सखि संत सतगुरु बरनि बरनौ । भाखि समझि सुनावही ॥
 गुरु चारि तन अस्थान अलिसुनि । समझि भेद लखावही ॥६॥
 सखि प्रथम गुरु सुनि कँवल कंजा । सहस दल पल पावही ॥
 सखि दूसर गुरु गढ़ गगन ऊपर । कँवल दुइदल गावही ॥
 अलि तीनि गुरु तन माहिँ पेखौ । चौकँवल सुति लावही ॥७॥
 सतलोक चौथे चार सतगुरु । अगम सिंध कहावही ॥
 जहँ सुरति सब्द मिलाप सजनी । संत वोहि घर जावही ॥८॥
 सखि मूल संत दयाल सतगुरु । पिउ निहाली मोहिँ करी ॥
 सत सुरति सिंध सुधारि तुलसी । सार पद जद लखि परी ॥९॥

॥ छंद ११ ॥

लख अगम भेद अलोक अलि री । संत सतगुरु मोहिँ कह्यौ ॥
 तिहुँ लोक से री अलोक न्यारा । पार मारग मोहिँ दयौ ॥१॥
 सिंध सब्द सतगुरु किरनि चेला । सुरति सब्द मिलावही ॥
 सतलोक सिंध सम्हार अलि लख । मिलन समझ सुनावही ॥२॥

(१) गुन ।

सखि सिंध बुन्द मिलाप सतगुरु। किरनि सुरज कहावही ॥
 सखि समुंद जल जस भरत बदरा। भूमि बरस बहावही ॥३॥
 अलि सिमटि नीर समीर सलिता। सिंध समझि समावही ॥
 सखि सिंध बुन्द जो सिष्य सतगुरु। गवन गत मत गावही ॥४॥
 सखि जलहि जल बल एक करिकै। भूमि भर्म नसावही ॥
 चित चीन्ह जैसे खेल चौपड़। जुग नरद घर आवही ॥५॥
 जिमि किरनि भास निवास रबि मैं। गगन मर्म मिलावही ॥
 अलि गगन नास अकास बिनसै। रबि रहन नहिँ पावही ॥६॥
 अलि सिंध सूरज ब्रह्म कहि नद^१। किरनि जीव कहावही ॥
 सब ठाट बाट बिराट बिनसै। सुरज कहँ होइ रहावही ॥७॥
 सखि सुरज ब्रह्म बिनास किरनी। जब अकास नसाइये ॥
 सखि सुरज कहौ केहि ठाम रहि। सोइ समझ खोज लगाइये ॥८॥
 सोइ धाम ठाम ठिकान सजनी। घर समझ जहँ जाइये ॥
 नहिँ और आस बिनास सब को। कोइ रहन नहिँ पाइये ॥९॥
 सखि नीर छीर मिलाप समुंदुर। बदर फिरि भरि लावही ॥
 जल बरसि नद मिलि समुंद आवौ। जाइपुनि फिरि आवही ॥१०॥
 अस जीव आवागवन माहीं। ब्रह्म जीव कहावही ॥
 बस कर्म काल बिनास निसदिन। अगम घर नहिँ पावही ॥११॥
 अलि समुंद आदि बुन्याद कह सोइ। सोत केहि घर गावही ॥
 करि खोजि रोज बिचारि मन मैं। गैल गुरु सँग पावही ॥१२॥
 सखि संत चरन निवास चेरी। अधर समझ सुनावही ॥
 लखि सिंध बुन्द से अगम आगे। देखि समझि समावही ॥
 सोइ समझ सतगुरु सार सजिके। लेख लखन लखावही ॥१३॥

जिमि धार मिलि जल मीन चढ़िके । अधर घर धसि धावही ॥
 अलि अमर लोक निवास करिके । सुख अचल जुग पावही ॥१४
 गुरु कंज सतगुरु मंज मिलिके । अंज अमल पिलावही ॥
 सज सुरति निरति सम्हार मिलिके । पिलि पुरुष पिय पावही ॥१५
 एरी अगम दीनदयाल सतगुरु । हाल हरष निहारही ॥
 तुलसिदास बिलास कहि अस । संत अज अरथावही ॥१६॥

॥ दोहा ॥

तुलसी अगम निवास, सुरति बास बस घर किया ।
 पिया परम रस मूल, सो अतूल अंदर हिया ॥१॥
 फूली बन फुलवारि, भीतर घट के कहि कही ।
 खग मृग सरवर ताल, गुरु निहाल करि लखि लई ॥२॥

॥ सोरठा ॥

तन मन ब्रह्मंड पसार, अंड अंड नौखंड लौ ।
 सो घट लखन मँभार, करत सैल ब्रह्मंड की ॥१॥
 सतगुरु गगन गुहार, गगन मगन खुति मिलि रही ।
 मंदिर मगन निहार, कंज भान भिन के कहो ॥२॥

॥ दोहा ॥

भास भवन घट मैं लखी, सलिल कँवल के माइँ ।
 पदम पार बेनी बसी, लसी अधर चढ़ि धाइ ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी तोल निहार, गुरु अगम पद पदम हीँ ।
 कर दृग ऐन आधार, पार परस पट भवन मैं ॥

॥ शब्द चरचरी ॥

तुलसिदास भास भवन, देखा घट माहीं ।
 लाई खुति सलिल कँवल, पदमन पर जाई ॥ टेक ॥
 सतगुरु गिरि गगन मगन, मंदिर मानौ अजूब ।
 कंजा भजि भलक भान, कोटिन छबि छाई ॥ १ ॥

बेनी मंजन अनूप, रहिनी अंदर अरूप ।
 चंदा रबि रैन दिवस, तारे नभ नाहीं ॥ २ ॥
 बरनन लखि अलख ऐन, स्याम सिखर निकर कंद ।
 निरता स्तुति समभि सूर, पंकज अपनाई ॥ ३ ॥
 अंडा अंबुज अतूल, बेलि बृच्छ अधर मूल ।
 फूला फल बन निवास, ललित लता छाई ॥ ४ ॥
 भेंवर भृंग लसि सुगंध, उरभेरस बस बिलास ।
 आनंद सीतल समीर^१, सरवर तट माई ॥ ५ ॥
 जहँ जहँ दृग देखि जात, खगपति^२ कृति नभ उड़ात ।
 बन बन मृग चरत जात, कोकिल करकाई ॥ ६ ॥
 धरि कै धस धरन डोर, दृढ़कै चढ़ि कड़क कोक ।
 धधकत धसि धधक नीर, फूटा पुल जाई ॥ ७ ॥
 भाखा भीतर बयान, सज्जन सुनि समभि साथ ।
 अद्बुद^३ अज अजर बात, संतन लखवाई ॥ ८ ॥

॥ सोरठा ॥

भान भवन घट बास, लखि अकास अंदर गई ।
 लीला गिरि चित चास, दीपक मंदिर मरम जस ॥
 ॥ दोहा ॥

लखि प्रकास पद तेज, सेज गवन गढ़ गगन मैं ।
 पति प्रिय प्रेम बिलास, तुलसिदास दस गिरा मैं ॥
 ॥ सोरठा ॥

मैं मति ऐन अयान, गुरु बयान मो को कह्यौ ।
 लह्यौ गगन सोइ जान, सतगुरु मंजन पदम हौं ॥
 ॥ सोरठा ॥

सतगुरु अगम अपार, सार समभि तुलसी कियो ।
 दया दोन निरधार, मोहिँ निकार बाहिर लियो ॥

॥ दोहा ॥

सतगुरु संत दयाल, करि निहाल मो को दियो ।
सूरति सिंध सुधार, सार पार जद लखि पश्यो ॥

॥ सारठा ॥

संत चरन पद धूर, मूर मरम मो को दई ।
भई निरति स्तुति सूर, लइ समान मन चूर करि ॥१॥
मै मति मान अपूर, कूर कुटिल न्यारे किये ।
हिये तिमर तन दूर, तूर तमक तन की गई ॥२॥
मो मन सुरति अयान, जानि सुरति सत रीति ले ।
गहि कर संत सुजान, मान मनी मद छाँड़ि के ॥३॥
मै मति सत सम नाहिँ, पाइ पकरि लारै लई ।
सतगुरु दीनदयाल, जाल काट न्यारी करी ॥४॥
सतगुरु चरन निवास, बिमल बास बिधि लखि परी ।
धरी जो तुलसीदास, भास चमकि चढ़ि चाँप धरि ॥५॥
सतगुरु परम उदार, दल दरिद्र सब दूरि करि ।
संपति सुरति बिचार, निधि निहार सब्दै लखा ॥६॥

॥ चौपाई ॥

परथम बन्दौँ सतगुरु स्वामी । तुलसी चरन सरनि रति मानी ॥
पुनि बन्दौँ संतन सरनाई । जिन पुनि सुरत निरत दरसाई ॥
चरन सरन संतन बलिहारी । सूरति दीन्ही लखन सिहारी ॥
सरन सूर सूरति समझाई । सतगुरु मूर मरम लख पाई ॥
मै मतिहीन दीन दिल दीन्हा । संत सरन सतगुरु को चीन्हा ॥
सतगुरु अगम सिंध सुखदाई । जिन सत राह रीति दरसाई ॥
पुनिपुनि चरन कँवल सिर नाऊँ । दीन होइ संतन गति गाऊँ ॥
दीनजानि दीन्ही मोहिँ आँखी । मै पुनि चरन सरन गहि भाखी ॥

मैं तौ चरन भाव चित चेरा । मोहिँ अति अधम जानि कै हेरा ॥
 मैं तौ प्रति प्रति दास तुम्हारा । संत बिना कोइ पावै न पारा ॥
 संत दयाल कृपा सुखदाई । तुम्हरी सरन अधम तरि जाई ॥
 आदि न अंत संत बिन कोई । तुलसी तुच्छ सरन मैं सोई ॥
 जो कछु करहिँ करहिँ सोइ संता । संत बिना नहिँ पावै पंथा ॥
 मेरे इष्ट संत स्तुति सारा । सतगुरु संत परम पद पारा ॥
 सतगुरु सत्तपुरुष अबिनासी । राह दीन लखि काटी फाँसी ॥
 कँवलकंज सतगुरु पद बासी । सूरति कीन दीन निज दासी ॥
 सूरति निरत आदि अपनाई । सतगुरु चरन सरन लौ लाई ॥
 बार बार सतगुरु बलिहारी । तुलसी अधम अघ नाहिँ बिचारी ॥
 बन्दीँ सब चर अचर समाना । जानौ तुलसी दास निदाना ॥
 मैं किंकर पर दया बिचारा । अनहित प्रिये करौ हित सारा ॥
 सब के चरन बन्दि सिर नाई । प्रिये लार लै प्रीति जनाई ॥
 तुम प्रति भूल बंद अस गाई । बार बार चरनन सिर नाई ॥
 पुनि बन्दीँ सतगुरु सतभावा । जिनसे वस्तु अगोचर पावा ॥
 सतगुरु अगम अरूप अकाया । जिनकी गति मति संतन पाया ॥
 सतगुरु की कस करहुँ बखानी । सूरति दीन्ही अगम निसानी ॥
 लख लख अलख सूरति अलगानी । संत कृपा सतगुरु सहदानी ॥
 सूरति सैल पेल रस राती । सतगुरु कंज पदम मद माती ॥
 तुलसी तुच्छ कुच्छ नहिँ जानै । सतगुरु चरन सरन रत मानै ॥
 सूरति सतगुरु दीन्ह जनाई । नित नित चढ़ै गगन पर धाई ॥
 सैल करै ब्रह्मंड निहारा । देखै आदि अंत पद सारा ॥
 निरखा आदि अंत मधि माहीं । सोइ सोइ तुलसी भाखि सुनाई ॥
 पिंड माहिँ ब्रह्मंड समाना । तुलसी देखा अगम ठिकाना ॥

पिंड ब्रह्मांड मैं आदि अगाधा। पेली सुरति अलख लख साधा ॥
पिंड ब्रह्मांड अगम लख पाया। तुलसी निरखि अगाध सुनाया^१ ॥
पिंड माहिँ ब्रह्मांड दिखाना^१। ता की तुलसी करी बखाना ॥

॥ सोरठा ॥

पिंड माहिँ ब्रह्मांड, देखा निज घट जोइ कै ।
गुरु पद पदम प्रकास, सत प्रयाग असनान करि ॥

॥ दोहा ॥

बूझै कोइ कोइ संत, आदि अंत जा ने लखी ।
परचै परम प्रकास, जिन अकास अम्बर चखी ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी तोल तरास, तत् बिबेक अंदर कही ।
बूझैगे निज दास, जिन घट परचै पाइया ॥ १ ॥
पानी पवन निवास, कँवल बास बिधि सब कही ।
जीव काल और स्वाँस, और अकास उतपति भई ॥ २ ॥
भीतर देखि प्रकास, सब ब्रह्मांड बिधि यै कही ।
रावन राम सँबाद, आदि अंत निज जोइ कै ॥ ३ ॥

॥ चौपाई ॥

जो कोइ घट का परचा पावै । कँवल भेद ता को दरसावै ॥
भिन्न भिन्न कँवलन बिधि गाई । स्वाँसा भिन्न बिधी दरसाई ॥
निज निज तत्त कहेऊ मैं जानी । परखैगे कोइ संत सुजानी ॥
मैं गति नीच कीँच कर सानी । कहत लजाउँ अगम गति जानी ॥
जो अपनी गति कहहुँ बिचारी । तौ मन मोट होत अधिकारी ॥
मैं किंकर संतन कर दासा । घट घट देखा तत्त निवासा ॥
ता की गति ग्रंथन मैं गाई । बूझै जिन सत संगति पाई ॥
सूरति सार सब्द जिन पाया । दस गृह सैल जिन करी अकाया ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में “अगाध सुनाया” की जगह “परख गत गाया” और आगे की कड़ी में “दिखाना” की जगह “समाना” है ।

॥ सोरठा ॥

जिन मानी परतीत, अधर रीति जा ने लखी ।
सब गति कहहुँ अजीत, सत्त बचन परमान कै ॥ १ ॥

तुलसी सब्द सम्हार, वार पार सगरी लखी ।
पकी चखी सुति सार, लार सब्द सूरति गई ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

सतगुरु पुर पद पार, ये अगार अदबुद कही ।
भौ बुधि भेष मैभार, सार लार सूभै नहीं ॥

॥ छंद ॥

गुरु पद कंज लखाइ घट परचे पाई । सुरति समानी सिंध मई^१ ॥
देखा वह द्वारा अगम पसारा । दस दिस फोड़ अकासगई ॥
नाम निअच्छर छर नहीं अच्छर । देख अगाध अनाद लई ॥
घट भीतर जाना घट परमाना । जेइ जेइ संत अगार कही ॥ २ ॥
जिनकी रज पावन राम औ रावन । निःअच्छर सत सार सही ॥
पंडित और ज्ञानी यह नहीं जानी । भेष भेद गति नाहिँ लई ॥ ३ ॥
सब जग संसारा काल की जारा । सकल पसारा भेष मई ॥
रागी बैरागी भौ रस त्यागी । साँगी पाँगी भरम बही ॥ ४ ॥
ध्यानी बिज्ञानी बन बस जानी । संत पंथ मत राह नहीं ॥
जोगी सन्यासी काल की फाँसी । परमहंस परमान नहीं ॥ ५ ॥
निज गावै बेदा जानै न भेदा । सास्त्र संध जिन राह लई ॥
संतन गति न्यारी सुनौ बिचारी । चौथे पद के पार कही ॥ ६ ॥
कोइ करिहै संका महा मति रंका । सतसंगति सम सूभ नहीँ ॥
तुलसी मति-हीना पायौ चीन्हा । संत कृपा घट घाट लई ॥ ७ ॥

(१) एक लिपि में इस छंद की पहिली कड़ी के दूसरे ठुकड़े का पाठ ऐसे है—
“सब सुखदाई सुरति समानी सिंध मई” ।

॥ सौरठा ॥

पानी पवन निवास, कँवल बास बिधि सब कही ।
सब्द सुरति कर बास, वै निरास अच्छर रहत ॥ १ ॥
कह्यौ ग्रन्थ घट सार, गुरु परचै निज कँवल मैं ।
जिन जिन पाय निवास, सो लखिहँ ये भेद सब ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

अब ब्रह्मांड का भाखौँ लेखा । भिन्न भिन्न घट भीतर देखा ॥
पाँच तत्त का कहौँ बिचारा । अग्नि अकास नीर निरधारा ॥
पृथ्वी पवन सकल कर भेदा । पिंड ब्रह्मांड का रच्यो निषेदा ॥
लखि अकास बाई^१ संग आई । दोड़ मिलि निज अग्नि उपजाई ॥
अब पानी का सुनौ बिचारा । ये चारौ मिलि मही अकारा ॥
ऐसे पाँच तत्त उपराजा । निज तन कीन्ह देह कर साजा ॥
पानी बुंद सृष्टि उपजाई । ता मैं चेतन सत्त समाई ॥
अब पानी का भाखौँ लेखा । भिन्न भिन्न घट भीतर देखा ॥
ता की बिधि बिधि कहौँ बिचारा । छत्तिस नीर पचासी धारा ॥
जोड़ जोड़ नीर नाम बतलाऊँ । नीर छतीसो बरनि सुनाऊँ ॥
बिधि बिधि नाम नीर समझाऊँ । नाम नीर भिन भिन दरसाऊँ ॥

॥ नीर के नाम ॥

॥ चौपाई ॥

जल अजीत परथम करि गाऊँ । करता जल दूसर कर नाऊँ ॥
और अनूप तीसर जल कीन्हा । चौथा मुक्ति नीर को चीन्हा ॥
नीर पाँच पुरइनि परमाना । अंबुज षष्ठम नीर बखाना ॥
नीर सात बिषया भर होई । नीर आठ अटला सुर सोई ॥
नवाँ नीर नाटक दुख भेदा । दसवाँ नीर दसौ मन छेदा ॥
एकादस नीर काल को जाना । द्वादस नीर जिव करै पयाना ॥

(१) वायु ।

तेरवाँ नीर पुरुष कै ध्याना । जो बूझै घट परचै जाना ॥
 जीव नीर चौधा मैं भूला । पंद्रह नीर भीर सहै सूला ॥
 सोला नीर कनक कर संगी । सत्रा नीर रूप रस रंगी^१ ॥
 अठरा नीर बोल दे नाऊँ । उन्निस नीर कुसुम रँग राज ॥
 बिसवाँ नीर कलंगी गाई । निज घट भीतर परचा पाई ॥
 इकिस नीर सुखसागर धामा । भँवरकंज उरभा तेहि ठामा ॥
 बाइस नीर मूल घट^२ राजा । तेइस नीर निरासू बाजा ॥
 नीर चौबिसवाँ चतुरसुजाना । पञ्चिस नीर मेघ परमाना ॥
 छब्बिस नीर कहौँ मैं काला । सताइस नीर धनासुर नाला ॥
 अठाइस नीर रूप द्वै आना । उन्निस नीर अभयादुर्ग^३ दाना ॥
 तिसवाँ नीर आहि बल भारी । इकतिस नीर आहि संसारी ॥
 बतिस नीर निरगुन है सीठा । तैँतिस आलस नीर है मीठा ॥
 चौँतिस नीर सरोसिल नाऊँ । पृथ्वी पैँतिस नीर बताऊँ ॥
 छत्तिस नीर कामिनी बासा । ब्रह्माबिस्नुका भोग बिलासा ॥
 जीव जंतु जल जीव निवासा । ये सब परे काल की फाँसा ॥
 छत्तिस नीर नाम निरधारा । सो कोइ साधू करै बिचारा ॥
 आगे कहौँ पचासी पवना । ता कर नाम भेद गुन बरना ॥
 भिनि भिनि नाम बिधी बतलाऊँ । पवन पिचासी बरनि सुनाऊँ ॥
 प्रिंड मैं पवन पचासी बासा । सो निज भाखौँ भेद खुलासा ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में “रस रंगी” की जगह “परसंगी” है और चार
 कड़ी आगे “घट” की जगह “घर” है । (२) यह शब्द हमारी समझ में “दुर्ग”
 होना चाहिये यानी जहाँ कोई पहुँच नहीं सकता; कठिन । “दाना” नाम काल और
 उसके नायब धर्मराय का है जो जीव को बिना सतगुरु के बलशे हुए “निज नाम” का
 परधाना दिखाये अपनी हृद के बाहर नहीं जाने देता ।

॥ पवन के नाम ॥

१ रजलाय	पवन	२४ सकलंध	पवन
२ केदार	,,	२५ सल सोख	,,
३ बिलंभ	,,	२६ सुख रोग	,,
४ समीर	,,	२७ ज्ञान कुंभ	,,
५ पुरभी १	,,	२८ मैना ऊँघ	,,
६ कालूल	,,	२९ त्रिक्रोध	,,
७ स्तुति अंध	,,	३० क्रिवलास	,,
८ नल पती	,,	३१ करनास	,,
९ ब्रह्म राज	,,	३२ रस नाग	,,
१० मंदोष	,,	३३ तन जीत	,,
११ सकल तेज	,,	३४ सकसीत	,,
१२ मन सोत	,,	३५ बेलोक	,,
१३ जगजीत	,,	३६ मन मोष	,,
१४ उपजीत	,,	३७ बेरूप	,,
१५ जगजीत	,,	३८ सतसूक	,,
१६ पर राज	,,	३९ बीज मन्द	,,
१७ बल कुंभ	,,	४० बीज बन्द	,,
१८ पत राज	,,	४१ अजसार	,,
१९ बल भेद	,,	४२ नितनाल	,,
२० बारुन	,,	४३ शब्दाल	,,
२१ कुंभेर	,,	४४ गिरनाल	,,
२२ जगजाय ^१	,,	४५ सुषपाल	,,
२३ बिधुंध	,,	४६ रूपान	,,

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "जगजाय" की जगह "इन्द्रजीत" है।

४७ बिधान	पवन	६७ लैजार	पवन
४८ सुभपती	,,	६८ लैलार	,,
४९ छेरती	,,	६९ नदसूर	,,
५० उत्तरंत	,,	७० पदमूर	,,
५१ तितरंत	,,	७१ करकीत	,,
५२ पुरवो	,,	७२ धरजीत	,,
५३ सरभो	,,	७३ मनमास	,,
५४ उबमीत	,,	७४ सरसूत	,,
५५ दरदीत	,,	७५ अवधूत	,,
५६ उपमार	,,	७६ आकाश	,,
५७ अभियार	,,	७७ जगबास	,,
५८ अतरीत	,,	७८ सुनसूत	,,
५९ तार्ईत	,,	७९ मनभूत	,,
६० सुषमंद	,,	८० निरधार	,,
६१ असमंद	,,	८१ सतसार	,,
६२ सीराद	,,	८२ आसोग	,,
६३ लैयाद	,,	८३ तन भोग	,,
६४ करिहाट	,,	८४ जग जोग	,,
६५ करुनाट	,,	८५ मन रोग	,,
६६ बैराग	,,		

॥ चौपाई ॥

पवन पचासी भाखि सुनाई । कोइ साधू घट भीतर पाई ॥
 घट में पवन पचासी जाना । निरखा नैन सैन धरि ध्याना ॥
 साध आदि कोइ करै बिबेका । सोइ निज सार पवन का लेखा ॥
 तुलसीजिनजिननैन निहारा । पवन पचासी बरनि सिहारा ॥
 जिन जिनघटकीसैल सँवारा । पवन भवन सोइ गवन गुहारा ॥

आगे सुनहु गगन का लेखा । सोला गगन पिंड मैं देखा ॥
जिन जिन सैल सुरति से कीन्हा । सोला गगन भाखि तेहि दीन्हा ॥
जो सोला का भेद बतावै । सोइ सज्जन सत साध कहावै ॥
भिन्न भिन्न सोला विधि भाखौ । गगन नाम निज एक न राखौ ॥
विधिविधि नाम कहौ समझाई । चित दे सुनौ गगन कर नाई ॥

॥ गगन के नाम ॥

॥ चौपाई ॥

परथम गगन निसाधर मोषा । दूसर गगन पृथी पद पोषा ॥
तीसर गगन बिरिछ सुर सोषा । चौथा गगन दिलभी गोषा ॥
पंचम गगन हिरा पद स्यामा । षष्ठम गगन निरंजन नामा ॥
सप्तम गगन पुलंधर चीन्हा । अष्टम गगन सफानल कीन्हा ॥
कदलीकंद नवौ कर नामा । दसवौ गगन जमरस के ठामा ॥
एकादस गगन हरि हिरदे नामा । द्वादस गगन अधर परमाना ॥
तेरा गगन कलंगी रूपा । चौधा गगन है धुंध सरूपा ॥
पंद्रा गगन मुक्ति कर नामा । सोला गगन गुप्त निज धामा^१ ॥
इतने गगन काया के माई । सज्जन साध खोज कोइ पाई ॥
सोला का कोइ भेद बतावै । सोइ सोइ गगन गिरा गति गावै ॥
तुलसी निरखि कहा निज लेखा । बूझि साध कोइ करै बिबेका ॥
घट भीतर सब गगन बताया । भिनि भिनि नाम गगन गति गाया ॥
इतने की कोइ जानै संधा । सो नहि परै काल के फंदा ॥
आगे भेद जो कहौ अनूपा । भँवर गुफा मैं जोति सरूपा ॥
भँवर गुफा छै भाखि सुनाऊँ । जाकौ भिनि भिनि भेद बताऊँ ॥

॥ भँवर गुफा के नाम ॥

परथम बेहद नाम सुनइया । भँवर गुफा बिच बास करइया ॥
दूसर नाम निरखि निरधारी । तीसर नाम मुक्ति पद प्यारी ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में कड़ी ८ में “गुप्त निज” की जगह ‘मुक्ति कर’ छपा है (जो कि ठीक नहीं हो सका क्योंकि यही नाम पंद्रहवें गगन का है ।

चौथा नाम उनमुनी स्यामा । सोइ सब जोगिन का विसरामा ॥
 पंचम नाम हरी हृद सूना । छठवाँ चंदर अधर पर धूना^१ ॥
 छई छर भँवर गुफा दरसाई । तुलसी नैन नजरि में आई ॥
 आगे भाखौं भेद निहारा । छै त्रिकुटी घट माहि सिहारा ॥
 जा कै नाम ठाम दरसाऊँ । भिनि भिनि भाव भेद समझाऊँ ॥

॥ त्रिकुटी के नाम ॥

॥ चौपाई ॥

प्रथम कहौं रुकमन्दर^१ नाऊँ । काल कै चक्र फिरै तेहि ठाऊँ ॥
 दूसर बली विजै बल सोई । षटदल कँवल फूल जहँ होई ॥
 तीसर नाम मुकर मनि^१ जोई । मन बुधि निद्रा से सुख सोई ॥
 चौथा नाम सधनी होई । नौ नाड़ी सुपने दे सोई ॥
 पंचम नाम गोमती गाऊँ । अठदल कँवल फूल तेहि ठाऊँ ॥
 हंस मुखी छठवाँ कर नामा । हंस बिहंग बसै तेहि ठामा ॥

॥ दोहा ॥

छै त्रिकुटी विधि विध कहो, दृग निज नैन निहार ।
 तुलसिदास घट भीतरे, देखि कही सब सार ॥

॥ चौपाई ॥

त्रिकुटी छई नाम निज गाया । तुलसी भिन भिन भेद लखाया ॥
 जोगी जीत रीत कोइ जानै । त्रिकुटी चढ़ै भेद पहिचानै ॥
 आगे सत मत द्वार लखाऊँ । सुक्रित सेत द्वार दरसाऊँ ॥
 जौन दिसा सुक्रित है भाई । तौन दिसा सत द्वार लखाई ॥
 अष्ट कँवल दल दरपन माई । नाभि सेत नल मध के ठाई ॥

(१) भँवर गुफा के चौपाई की कड़ी ४ में “पर धूना” की जगह “रग धूना” दिया है । इसी तरह त्रिकुटी के नाम की चौपाई की पहिली कड़ी में पहिली त्रिकुटी का नाम “रुक्मादे” और तीसरी कड़ी में तीसरी त्रिकुटी का “मुक्तिमन” लिखा है ।

नल नागिनि करि बैठी भेषा । जीव भखन वो करै अनेका ॥
 पुनि सरवर तेहि पास बिराजै । ता पर बैठि सभा बहु गाजै ॥
 तेहि सरवर जल नीर अपारा । जीव उतरि कोइ जाइ न पारा ॥
 कैान दिसा नागिनि रस रूखा । कैान दिसा सरवर रहै सूखा ॥
 अभि अंतर सुकिरत सत बासा । करिया कँवल में काल निवासा ॥
 अष्ट कँवल नागिनि रस रूखा । सरवर बिरह कँवल में सूखा ॥
 यह सत रीति द्वार दरसाई । अब मैं कहौ सुनो तुम भाई ॥
 आगे तरवर भेद अपारा । चारि बिरछ पर सुरति सम्हारा ॥
 जीव पैठि सोइ मारग पावै । गगन कँवल भीतर चलि आवै ॥
 उलटै चक्र सुन्न मैं धावै । सिध साधक जहँ ध्यान लगावै ॥
 बिरछ चारि सोइ कहौ बुझाई । जाकर नाम ठाम गति गाई ॥
 जहँवाँ कागभसुंड कहु काला । बट पीपर पाकरी रसाला ॥
 कागभसुंड काया के माई । तन मन बिरछ संत समभाई ॥
 बिरछा ऊपर ताल बिराजै । निरखत काल कला सब भाजै ॥

॥ सोरठा ॥

बिरछा ऊपर ताल, जहाँ काल करकै नहीं ।
 तुलसी संत दयाल, दिया भेद भिनि भिनि लखा ॥

॥ कहेरा ॥

सखी री बिरछ पै ताला, जहँ करकै न काल ।
 बिरछा के जड़ नहिं पाती, वा की दुरी दुरी^१ डाल ॥ टेक ॥
 सर मैं सुरति न्हवावई, कागा किये हैं मराल ।
 संतो पंथ पिया पाये, गुरु भये हैं दयाल ॥ १ ॥
 अठमैं अटारी माहीं, परे सुनि पिया हाल ।
 हरखा बंक सुर नाला, चढ़ी चट चट चाल ॥ २ ॥

सुरति गगन घन छाई, पिया परे परे ख्याल ।
तुलसी तरक तत तारी, भारी काटी भ्रम जाल ॥ ३ ॥

॥ सोरठा ॥

कहौं अब विधि बरतंत, संत कहनि मन मत गद्दी ।
लही जो तुलसी अंत, ज्ञान चक्र चित चेति कै ॥

॥ चौपाई ॥

अब सोई विधि बरतंत सुनाऊँ । राह रीति मन मत दरसाऊँ ॥
मन मत चक्र घेर के मारा । ज्ञान चक्र जब जीव सम्हारा ॥
काल मारि मुख फेरि चलावै । काल भागि त्रिकुटी मैं आवै ॥
जीव सब्द गहि खेदि चलाई । अधर कँवल बिच काल छिपाई ॥
भर्म चक्र जब काल चलावा । भरमित जीव भरम जब आवा ॥
संसय सोग जीव उपजाई । साहेब सब्द बिसरि गयो भाई ॥
भगिया जीव गगन मग माहीं । यहँ होइ काल गहैगो नाहीं ॥
जीव वहाँ से निसरि पराई । नाल बंक मैं जाइ समाई ॥
बंकै नाल काल गति लइया । जीव भागि आगे चलि गइया ॥
परम कँवल मैं जीव छिपाना । वहाँ काल जो जाइ समाना ॥
सोला गगन जीव फिरि आई । तहाँ काल पुनि खेदत धाई ॥

॥ सोरठा ॥

सोला गगन मँभार, जीव काल खेदत फिरै ।

बूझै बूझनहार, घट निहारि अंदर लखै ॥

॥ चौपाई ॥

वहाँ जीव कोइ बचन न पावै । रहस नाल जिव पैठि समावै ॥
वहँ कहँ काल सुनन जब पावै । समाधान होइ काल सिधावै ॥
रहस नाल से भागि पराई । भँवर गुफा मैं जाइ छिपाई ॥
आपै काल ध्यान धर कीन्हा । अपनी सुरति गुफा मैं दीन्हा ॥
सूरति जीव काल पर आवै । काल आप धर ध्यान लगावै ॥
अपनी सुरति गुफा में लावै । भीतर सूरति जीव समावै ॥

अपना घर बिधि काल न पावै । पीछे काल तहाँ लगि धावै ॥
 तब लग काल जीव को घेरा । घर सुधिविन जो फिरै अनेरा ॥
 धनि वे जीव आप को जानी । उलटि काल को बाँधै तानी ॥
 जानै जीव जो नाम सहाई । नाम निअच्छर जाइ समाई ॥
 पुरुष नाम जीव लखि पावै । जीव नाम लखि ब्रह्म कहावै ॥
 नाम छाँड़ि जग जीव कहाये । भरम भरम भौसागर आये ॥
 अभि अंतर जिव पैठै जाई । राई के दस भाग समाई ॥
 अंतर काल बड़ा मग लागा । एक राई का दसवाँ भागा ॥
 अंतर बड़ा जीव को सोका । काल की आँखी तीनों लोका ॥
 जीव की आँखि पुरुष को देखा । काल दृष्टि जब होय बिसेषा ॥
 आँखी जीव चकोर समाना । पाँचो करै दृष्टि जस बाना ॥
 धरती दृष्टि प्रकिरती उद्रा । दृष्टि अकास करै नर मुद्रा ॥
 तत्त पाँच पाचौ हैं नारी । बचै नाम निज सुरति बिचारी ॥

॥ दोहा ॥

काल करै जिव हानि, तुलसीदास तत सम रहौ ।

घट रामायन सार^१, मथि काया बिच घट कह्यो ॥

॥ सारठा ॥

भिनि भिनि कहौ बखान, आदि अंत घट भेद बिधि ।

तुलसी तनहिँ बिचार, घट निरखो निज नैन से ॥

॥ चौपाई ॥

आगे घट का भेद बखाना । बतिस नाल घट भीतर जाना ॥

नाल भेद बिधि कहौ बुझाई । जिन जानी घट परचे पाई ॥

॥ नाल के नाम ॥

॥ चौपाई ॥

प्रथम नाल की बिधो बताऊँ । अभया तेज ताहि कर नाऊँ ॥

दूसर रहस नाल जो गावा । चौदल कँवल फूल तेहि ठाँवा ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "सार" की जगह "माहिँ" है ।

कँवल चार दल भँवर उड़ाना । चढ़ि अकास बिधि जाइ समाना ॥
 कनक नाल तीसर कर नामा । चौँसठ जोगिनि बसै तेहि ठामा ॥
 चौथी नाल बिकट थिर थाना । कोठा नाल बहत्तर जाना ॥
 धुंधर नाल पाँचवीं होई । काल सिंहासन बैठा सोई ॥
 छठवीं नाल रूपरम नामा । निरगुन रूप बसै तेहि ठामा ॥
 नाल सातवीं सेत बताई । मन की कला बसै तेहि माई ॥
 नाल आठ अभया मत नाँऊँ । कामिनि चारि बसै तेहि ठाऊँ ॥
 नाल मुकरमा नौवाँ नामा । द्वादस दूत बसै तेहि ठामा ॥
 हरि संग्रह दसवीं दरसाई । लछमन राम बसै जेहि माई ॥
 मुक्तामनि एकादस सोई । कलसर दूत बैठ बल जोई ॥
 द्वादस नाल पोहप पट माई । नभ नल द्वार सब्द गोहराई ॥
 तेरहीं नाल निकट नट नौली । वचन बिदेह बाक बिन बोली ॥
 चतुरदसि नाल नटवर नामा । मेघा छपन कोटि बिसरामा ॥
 पंद्रा गगन नाल निरबानी । भरि भरि चुवै कूप से पानी ॥
 सोला सुखमनि नाल कहाई । सुकिरत सेत बसै तेहि ठाई ॥
 सत्रह नाल अनूप अचीन्हा । अंडा बिदित बिस्वरचि लीन्हा ॥
 अठारानाल बिमल सुरजानी । तैंतिस कोटि देव दरबानी ॥
 उन्निस नाल भँवर मन्दाकी । अंडा कुम्भ रहै मन छाकी ॥
 बिसवीं नाल अजोरक माली । सूरत सब्द सेत चढ़ि चाली ॥
 इक्किस नाल हंसदे नाऊँ । मुक्ता मानसरोवर ठाऊँ ॥
 बाइस नाल सत अंकित होई । बन असेक सीता जहँ होई ॥
 तेइस नाल नगर एक बाटा । जहँ को जम रोकै नहिँ घाटा ॥
 चौबिस बिषमनाल निजधामा । गुंजै भँवर कंज के ठामा ॥
 पन्चिस नाल पदम सुर सोई । पचरँग रूप जहाँ नहिँ होई ॥
 छबिस नाल गढ़ गोधर नाई । अटक पार चढ़ फटक समाई ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में 'अंकित' की जगह 'सुकृत' है ।

सताइस नाल त्रिकुट पर लंका । जहँ रावन बसै ब्रह्म निसंका ॥
 अठाइस सेत द्वार दुरबीना । समुंदर सात पार कोइ चीन्हा ॥
 उंत्तिस नाल सिखर पर सैला । अच्छर अंदर अगम दुहेला ॥
 तिसवीं नाल अधररस रोकी । जहाँ निरंजन बैठे चौकी ॥
 इकतिस सुरति कँवल अस्थाना । कोइ सज्जन सत साध बखाना ॥
 बत्तिस नाल सब्द सुन माई । मुकर द्वार चढ़ि छूटै भाई ॥
 बत्तिस नाली बरन अनूपा । सुर नर मुनि नहिँ पावै भूपा ॥
 ये सब नाल चाल दरसाई । सो सब देखे घट के माई ॥
 जिनके नाम ठाम गुन बरना । कहै तुलसी संतन के सरना ॥
 बत्तिस नाल बरनि समझाई । वाकी मुनि हर एक रहाई ॥
 बंक नाल है वा को नाँवा । तीनों भवन भेद नहिँ पावा ॥
 घट में बत्तिस नाल बखाना । काया सोध साध कोइ जाना ॥

॥ दोहा ॥

बत्तिस नाल निहारि कै, तुलसी कहा विचारि ।
 घट घट अंदर देखि कै, साध करै निरवार ॥

॥ चौपाई ॥

सत्त बचन साधू परमाना । भीतर भेद सत्त पहिचाना ॥
 काया खोज नहीं जिन पाया । जाके सदा हिये तम छाया ॥
 काया खोज किया नहिँ भाई । सुकदेव रहे भूल के माई ॥
 व्यास जनक नारद नहिँ पाई । कथि पुरान आत्म गति गाई ॥

॥ दोहा ॥

ज्ञानी भूले भर्म में, परम हंस ब्रह्मचार ।
 सास्तर संध विचारिया, बहे कर्म की धार ॥

॥ सुन्न भेद ॥

॥ चौपाई ॥

आगे कहौ सुन्न विस्वासा । बिना सुन्न गये जीव निरासा ॥
 अब निज कहौ सुन्न मैं स्वाँसा । बिना सुन्न जिव काल निवासा ॥

सुन्न दिसा बिधि कहेँ बुझाई। बूझै साध सुन्न जिन पाई ॥
 बिरला सुन्न भेद को पावै। सुन्न दीप सोइ सब्द कहावै ॥
 सुन्न की सोत धुन्न में लागी। धुन की सोत गगन में जागी ॥
 गगन के ऊपर पवन रहाई। निरगुन पवन भवन के माई ॥
 निरखि कँवल साधैकोइ साधू। मिटि जाइ काल कष्ट की व्याधू ॥
 मूल कँवल के ऊपर देखो। घट में सत्त सब्द ले पेखो ॥
 अष्ट कँवल ओंकार का बासा। सो निज बूझो काल तमासा ॥
 षोडस कँवल को ध्यान लगावै। जोगी करै भेद सोइ पावै ॥
 पवन जोग जोगी गति गाई। त्रिकुटी निज धुनिकँवल कहाई ॥
 मन थिर होइ सुरति ठहरावै। त्रिकुटी कँवल पवन ले आवै ॥
 देखै अवर पवन हिये माई। चमकै जोति दृष्टि में आई ॥
 जीव पवन जब चलै अघाई। सेत पवन से मारि चलाई ॥
 करिया पवन भई बलहीना। नाखौ पवन जीव जब चीन्हा ॥
 नाखौ पवन भरोसा मोरा। सेत कँवल से बाँधौ डोरा ॥
 सेत कँवल सुकिरत की होई। सत मत द्वार जानिये सोई ॥
 सत्त सुकृत की एकै बानी। ताकी गति बिरले पहिचानी ॥
 कदली सब्द लाभ जिन देखा। मुक्ति अमी तहँ पियै अलेखा ॥
 जहाँ निरंजन बसै निदाना। सहस कँवल जोगी बिधि जाना ॥
 द्वादस आगे इमृत बासा। निगुरा नर सो मरै पियासा ॥
 सगुरा होइ सोई निज पावै। भर भर मुख इमृत भल खावै ॥
 पीवै अमी लोक को जाई। घट भीतर जिन खोज लगाई ॥
 पाँजी खोज हाथ अनुसरई। सो जिव सहजै से भौ तरई ॥
 भिलिभिलि भरै सुन्न के माहीं। गंगा जमुना सरसुति राही ॥
 गंगा जमुना सरसुति होई। तिरबेनी संगम है सोई ॥
 त्रिकुटी संगम बेनी घाटा। बसै जीव सत पावै बाटा ॥

बंक नाल होइ गंगा जाई । जमुना सुन्न गुफा से धाई ॥
 सरसुति सेत कँवल से आई । मन जोगी बिधि बास कराई ॥
 गंगा गहै करै असनाना । जमुना दूरि मुक्ति कर थाना ॥
 तीनों नदी तीनि हैं धारा । आप आप में देखि निहारा ॥
 यह तीनों हैं अगम अपारा । बिरले साधू उतरै पारा ॥
 तिन में रहै त्रिभवनी घाटा । ब्रह्मा बिस्नु न पावै बाटा ॥
 संकर जोगी सिद्ध अनूपा । उनहूँ न पायौ आपन रूपा ॥
 निराकार अभि अंतर भाई । ता का भेद कहूँ समझाई ॥
 सुरति निरति करि खोजै आपू । सुन्न सिखिर चढ़ि खैचै चाँपू^१ ॥
 महि ऊपर ब्रह्मांड की तारी । द्वै^२ पट भीतर सुरति सम्हारी ॥
 दहिने बाँयें सिला पहारा । जहँकी बाट न कोइ निहारा ॥
 जहँ सत द्वार बैठ सत थारा । अगम अगाध अजर का द्वारा ॥
 इमृत पीवै जीव बिचारा । जा से कटै काल की जारा ॥

॥ दोहा ॥

जोग बिधी बेनी कही, सुन्न जोग बिधि गाइ ।
 काल कला परचंड यौ, ठग ठग सब को खाइ ॥

॥ चौपाई ॥

अब बेनी संतन की गाऊँ । या से भिन्न भेद दरसाऊँ ॥
 संतन की बेनी बिधि न्यारी । तुलसी भाखी देख निहारी ॥
 अगम द्वार बेनी असनाना । सो बेनी संतन की जाना ॥
 मंजै जोइ अगम गति जानी । वह प्रयाग सब संत बखानी ॥

॥ सौरठा ॥

तुलसी अगम अपार, जहँ बेनी मंजन कियौ ।
 सतगुरु पदम प्रयाग, करि अगाध गति जिन कही ॥

(१) धनुष । (२) मुन्शी दे० प्र० की पुस्तक के पाठ में "दे" है ।

॥ चौपाई ॥

अब तेहि राह रोति दरसाऊँ । भिनि भिनि पंथ मता गति गाऊँ ॥
 सरगुन से निरगुन बिधि बानी । भिनि भिनिराहरीति सच छानो ॥
 परथम दृग दुरबीन लगावै । मन चित सुरति ताहि पर छावै ॥
 देखै ता के बीच मँभारा । जगमग जोति होत उजियारा ॥
 निरखा निरगुन पुरुष निहारा । जहवाँ सुनै सब्द भनकारा ॥
 सेत दीप जिव पहुँचै पारा । कोटिन काल भये जरि छारा ॥

॥ दोहा ॥

निरगुन ज्ञान विचारिया, सुरति राखिये पास ।
 तुलसीदास जहँ बास कर, जीव न जाइ निरास ॥

॥ दोहा ॥

घट रामायन सार, यह घट माहि घटाइया ।
 घट का मथन विचार, भिन्न भिन्न करि डारिया ॥

॥ सारठा ॥

निरगुन निरखि निहारि, ता से गुरुपद भिन्न है ।
 चौथे पद जद जाइ^१, पद प्रयाग सतगुरु लखै ॥

॥ दोहा ॥

तीन लोक के माहिँ, निरगुन सरगुन रचि रह्यौ ।
 सतगुरु इनके पार, सो तुलसी घट लखि पश्यौ ॥

॥ छंद ॥

घट भीतर जानी आदि बखानी । सुरति समानी सब्द मई ॥
 देखा निज नैना कहौ मुख बैना । सत्त नाम का मर्म यही ॥१॥
 नहिँ राम अरु रावन यह गति पावन । अगुन सगुन गुन नाहिँ कही ॥
 कहि अकथ कहानी अगमकी बानी । बेद भेद गति नाहिँ लई ॥२॥
 सुर नर मुनि ज्ञानी उनहुँ न जानी । पंडित भेष सब कहँ कही ॥
 तुलसी मत भारी यह गति न्यारी । बूझैगे कोइ संत सही ॥३॥

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ में "जद जाइ" की जगह "मभार" है ।

॥ सारठा ॥

आदि अंत का भेद, तुलसी तन भीतर लखा ।
सुरति सब्द परकास^१, ज्योँ अकास सर सैल करि^२ ॥

॥ चौपाई ॥

अब सुनु भेद कहाँ अनुसार । लेकर ज्ञान धान भ्रम जारा ॥
ज्ञान रतन की आँखो होई । जब जम जाल देखिये सोई ॥
सत मत गत अभि अंतर देखै । तत मत अष्ट कँवल मैं पेखै ॥
सुरति सुहागिन होइ अगमानी । तुरतै मिली सत्त की बानी^२ ॥
अरध उरध बिच बैठे माधो । तत उनमुनी लगाइ समाधो ॥
तारी उलटि तत्त मैं लावै । रहस नाल मधि जाइ समावै ॥
तुलसी मुद्रा जोग समाधा । आगे भाखौं भेद अगाधा ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी तन के माहिँ, पंथ भेद साधू सही ।
तत मत तोल अँकाइ, अधर जाइ जिन जिन कही ॥

॥ चौपाई ॥

ये सब काल जाल रस रीती । भौकृत खान जानि जम प्रीती ॥
गगन के मँडल काल अस्थाना । पाँच भूत बिधि जाइ समाना ॥
पाँच पच्चीस तीन मन मैला । सब जानौ वाँ को निज खेला ॥
काल जाल जग खाइ बढ़ाया । रिखी मुनी कोइ भेद न पाया ॥
उलटा चलै गगन को धाई । ता से काल रहै मुरभाई ॥
सतगुरु साहिब संत लखावै । तब घट भीतर परचा पावै ॥
जो जेइ मूल भेद दरसावै । तब घट मैं अविनासी पावै ॥
सतसंग भक्ति हृदे बिच आवै । जब सतद्वार अगम लखि पावै ॥
हिरदै सत्त रहै लौ लाई । सब्द द्वार चढ़ि काल गिराई ॥
मुक्ति ज्ञान पावै अविनासी । अगम ज्ञान संग मूल निवासी ॥

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ में “परकास” की जगह “उम्मेद” व “ज्योँ” की जगह “जो” छपा है। (२) दूसरा पाठ यों है—“धीरज तत्त सत्त की बानी” ।

यह कोइ बिरला साधू पावै । अविनासी गति अगम लखावै ॥
 सतगुरु कृपासिंध कोइ जागै । आवा गवन भर्म भौ भागै ॥
 कीन्ही अगम नाम सुति सैला । चीन्हा अगम निगम नित खेला ॥
 अधर सिखर पर तंबू तानै । जहँ से देखै सकल जहानै ॥
 ब्रह्मंड द्वार एक है नाका । गहि दुरवीन सुरति से ताका ॥
 मकर तार पावै वह द्वारा । ता पर सुरति होय असवारा ॥
 सुरति जात लागै नहिं बारा । चली सुरति भइ नाम अधारा ॥
 तब पहुँचै इक्किसवैं द्वारा । सुन्न से परे सब्द है न्यारा ॥
 सुरति सब्द में जाइ समानी । निर सब्दी गति अगम लखानी ॥
 जहँ नहिं पहुँचै मुक्ति पसारा । सोइ है आदि पुरुष दरबारा ॥
 मुनि अचारि पावै नहिं कोई । सब भौ भर्म रहा जग सोई ॥
 भँवर गुफा मारग चढ़ि देखा । जहँ जिव सत्त सुरत का लेखा^१ ॥
 सुन्न सुन्न सब करत बखाना । सुन्न भेद कोइ बिरले जाना ॥
 कहौ बिस्तार सुन्न की जोई । ज्यों गूलर फल कीट समोई ॥
 फल जेते तेते ब्रह्मंडा । दीप दीप फल फल नौ खंडा ॥
 सुन्न ग्रंथ की करी बखाना । कहै तुलसी कोइ साधू जाना ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी सुन्न निवास, सब्द बास जिन घर किया ।
 जिमि गूलर फल तासु^२, जग भिनि भिनि जेहिलखि परा ॥

॥ छंद ॥

भये सुन्न निवासी सब सुख रासी । सुरति बिलासी सब्द मई ॥
 अनहद हद पारा अगम अपारा । अमी सिंधु सुति जाइ लई ॥१॥
 देखा उँजियारा घट घट प्यारा । निरखि निहारा पार कही ॥
 तुलसी तुल जावै दस दिस पावै । सिंध फोड़ि असमान गई ॥२॥

(१) मु० दे० प्र० की पुस्तक में पाठ इस तरह है- “जहाँ जीव सत पुरुष को पेखा”
 और (२) सोरठा में “तासु” की जगह “नास” है जो ठीक नहीं जान पड़ता ।

॥ दोहा ॥

सुन्न महल अजपा जपै, समुंद सिखरि के पार ।
टूटी गगन गिरा भई, सत्त सब्द भनकार ॥
त्रिकुटी टाटी टूटि कै, सुन्न अंड भिनि बास ।
घट भीतर परिचय भई, देखा अजर निवास ॥

॥ कँवल भेद ॥

॥ चौपाई ॥

घट में सोधि कँवल जिन गाई । लखै कँवल बिरला कोइ भाई ॥
अंकुर उतपति कँवल मँभारा । सत्त नाम पद तिनके पारा ॥
ऊँच नीच परबत बिच बाटा । काल जहाँ रोकै नहिँ घाटा ॥
ता के दहिने मारग माई । दामिनि पाँच छेकि नियराई ॥
देवै दानी दान चुकाही । पावै जीव अगम की राही ॥
दानो कहै जीव सुनि बाता । बिना दान करिहौँ मैं घाता ॥
जब जिव कहै समझ सुन भाई । करौ घात केहि कारन जाई ॥
अंतर गुफा तहाँ चलि जाऊँ । जहँ साहिब के दरसन पाऊँ ॥
पाँचौ नाम जीव जब भाखा । छठवाँ नाम गुप्त करि राखा ॥
पाँचौ नाम काल के जानौ । तब दानी मन संका आनौ ॥
निरगुन निराकार निरबानी । धर्मराय योँ पाँच बखानी ॥
जीव नाम निज कहै बिचारी । जानि बूझि दानी भख मारी ॥
जाव जीव यह राह तुम्हारी । हम नहिँ रोकै बात बिचारी ॥
बोल पाँच हमहूँ सुनि पाई । हम नहिँ निकट तुम्हारे आई ॥
पाँचौ चोर रहे अलगाई । होइ निरभै जिव आगे जाई ॥
आगे सात सुमेर उँचाई । नौ नाटक तापर रहै भाई ॥
नौ नाटक पूछन चले आगे । कहौ जीव केहि मारग लागे ॥
हम यहि घाट बाट रखवारी । यहाँ न अदली चलै तुम्हारी ॥

कहै जीव दृग^१ दानी भाई । हम चलि जाइ नाम चित लाई ॥
 दानी दान चुकावौ आई । जब यहि बाट निभन तुम पाई ॥
 केहि कर अंस कहाँ तुम जाई । बात आपनी कहौ बुझाई ॥
 कहै जीव सतलोक निवासा । मैं चल जावँ पुरुष के पासा ॥
 दानी कहै दूरि है भाई । अगम पंथ कैसे निभ जाई ॥
 कौन नाम मारग को जाई । कौन नाम से उबरै आई ॥
 इतना भेद कहौ समझावा । बाट जीव जब घर की पावा ॥

॥ जीव बचन ॥

॥ चौपाई ॥

दानी सुनु बिधि बात हमारी । हम चलि जाइँ पुरुष दरबारी ॥
 सुरति निरति लै लोक सिधाऊँ । आदि नाम लै काल गिराऊ ॥
 सत्त नाम लै जीव उबारी । अस चल जाउँ पुरुष दरबारी ॥
 इतना बचन कही दिल सूना । बहुत त्रास लै मन मैं गूना ॥
 तुम मारग जावो जिव अपने । हम तुमको रोकै नहिँ सुपने ॥
 चले जीव आगे पग दीन्हा । करिया सरवर मारग लीन्हा ॥
 तहँ तौ पंछी एक रहाई । निस वासर वो बैठ उँचाई ॥
 तेहि मारग जिव चला अघाई । चौँचि पसार ग्वान को चाही ॥
 मुख पंछी बहु भाँति पसारा । जिवरा तो को करौँ अहारा ॥
 अपना नाम कहौ टकसारा^२ । तब चलि जैहौ वहि दरबारा ॥
 नहिँ हम से तुम बचने पैहौ । तो को जिवरा धर धर खैहौ ॥
 जिवरा सुरति नाम से लाया । करिया मारि पाँव तर नाया ॥
 जीव चला भरने के पारा । दस दिस देखि परा उँजियारा ॥
 अमी द्वार इमरत कर बासा । मिटा जीव का संसय सासा ॥
 अधर जीव इमरत को पीवै । सब्द बुंद इमरत जुग जीवै ॥
 वस्तु पाइ साधै कोइ साधू । चाखै इमरत सुरति समाधू ॥

(१) दुर्ग ? (देखो नोट पृष्ठ १४) । (२) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में “टुक सारा” है ।

चाटिचाटि सूरति चढ़ी अटारी। इमरत अजर नाम की लारी ॥
 साहिब अजर सब्द घर पावै। आवागवन बहुरि नहिँ आवै ॥
 डोरी पुरुष अकास अकेला। किया सुरति घट भीतर मेला ॥
 इमरत कँवल भरा भंडारा। पीवै जिव सो उतरै पारा ॥
 नाम अगाध कहौ समझाई। सूरति सब्द अगाध सुनाई ॥
 जो जिव चाहै अगम निवासा। सूरति करै सब्द में बासा ॥
 जिनजिन सूरति सब्द सँवारा। सो चलि गये अगम पद पारा ॥
 पावै भेद बस्तु लखि पावै। सो सतलोक सोक नसि जावै ॥
 सुरति सब्द में भई अधीना। ताकर भेद काल नहिँ चीन्हा ॥
 सत्त नाम से काल नसाना। कोइ साधू काया मथि जाना ॥
 काया दरपन सुरति समानी। सो साधू साहिब सम जानी ॥

॥ साखी ॥

कँवला काल निरंजना, तिन बस कीन्हा घाट।
 भिन्न भिन्न दरसाइ कै, सतगुरु दीन्ही बाट ॥

॥ दोहा ॥

जीव चला घर आपने, काल छेकि जम जार।
 नाम सुरति जब लख परा, भागे ठग बटमार ॥
 सुरत सब्द मिल लोक में, चढ़ि सतनाम जहाज।
 तुलसीदास पिया मिले, कीन्हा सेज बिलास^१ ॥

॥ छंद ॥

तुलसी लख जागे काल से भागे। लख दूग^२ दानी दूर किये ॥
 इमरत रस चाखा सो सब भाखा। जीव अघाइ अनाद पिये ॥१॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में यह दोहा बिदकुल निराला है—

सुरति शब्द मिलि लोक में, चढ़ी नाम की लास।

निज घर अपना पाइ कै, तुलसी कहै विचार ॥

(२) दुर्ग ? (देखो नोट पृष्ठ १४) ।

सतनामहिजानापदपहिचाना । सुरति सब्द जो जाइ लिये ॥
जिन जो सुति सैना देखा नैना । अगम अपनपौ पाइ पिये ॥२॥
हिये खुल गइ आँखी सब बिधि भाखी । काल बरन बिधि बूझि^१ कही ॥३॥

॥ सोरठा ॥

बानी काल बिचार, तीनि बरन तोली सबै ।

कहाँ बरन निरधार, सो कोइ साधू परखिहै ॥

॥ चौपाई ॥

काल बैन बिधि भाखि सुनाई । ता की अब मैं करौं लखाई ॥
बानी तीनि तीनि बिधि जानी । कँवल मध्य मैं कहौं बखानी ॥
कैान बरन वे कँवल रहाई । जाकी बिधि बिधि कहौं बुझाई ॥
कैाने बरन निरंजन देवा । तिन का बरन बताओँ भेवा ॥
करिया बरन काल को भाई । सेत रक्त वे कँवल रहाई ॥
सुन्नि के बरन निरंजन देवा । तिन कर कहौं निरख सब भेवा ॥
अब बानी का कहौं बिचारा । बूझै साध करै निरवारा ॥
बानी कैान निरंजन होई । बानी कैान काल की सोई ॥
बानी कैान कँवल की लीन्हा । सो सब निरखि बताओँ चीन्हा ॥
बानी अधर निरंजन सोई । बानी क्रोध काल की होई ॥
बानी मेल कँवल कर लीन्हा । येहि बिधि से तीना हम चीन्हा ॥

॥ साखी ॥

निरगुन सरगुन लखि परै, काया काल बिचार ।
आदि पुरुष सत लोक मैं, सो घर अधर हमार ॥१॥
घट घट मैं सब लखि परा, भिनिभिनि अगम पसार ।
तन बिच सोला द्वार की, तुलसी कहत पुकार ॥२॥

॥ चौपाई ॥

सोला द्वार भेद कहौं भाखी । जा की बरन बिधी कहूँ साखी ॥
प्रथम द्वार का भेद बताऊँ । जा की बिधि बरतंत सुनाऊँ ॥

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ में "बूझि" की जगह "भूल" है ।

प्रथम मूल दीप गति गाऊँ । जा की नाम ठाम समझाऊँ ॥
सतगुरु गुप्त भेद लखवावै । सोला द्वार भेद जब पावै ॥

॥ द्वार भेद ॥

प्रथम सहस्र कँवल में द्वारा । दूसर अकह कँवल के पारा ॥
तीसर द्वार गगन के नीचे । चौथा द्वार अधर के बीच ॥
जहँवाँ बैठा कंदर^१ काला । जिनहिँ बिछाया जग जम जाला ॥
पंचम द्वार दसौ दिस बाहिर । मन रस बैठा जग में जाहिर ॥
भँवर गुफा बिच छठवाँ द्वारा । कँवल भँवर तहँ बसै नियारा ॥
सतवाँ द्वार दसो के दहिना । पाँचौ भूत सूत बिन सैना ॥
अठवाँ मूल चक्र के माहीं । बैठा मूल मोह रस राही ॥
नौवाँ द्वार ताल में होई । स्वाँसा पवन चलावै सोई ॥
ये नौ द्वार काल के जाना । दसवाँ द्वारा अधर बखाना ॥
द्वारा चारि गुप्त गुहराई । जानै साध संत जिन पाई ॥
ऐसे चौथा भेद पुकारा । पंद्रा द्वार सत्त के पारा ॥
सोला खिरकी अगम निसानी । जा में सत साहिब की बानी ॥
ता के परे द्वार नहिँ देसा । जहँ इक साहिब नाम न भेसा ॥
संत सैल वह अगम निसानी । बसै संत वोहि धाम अनामी ॥
काया मढ़े काल बिचारो । निरंकार से पुरुष नियारो ॥
वां का भेद साध कोइ पावै । अगम निगम सोइ संध लखावै ॥
जोगी रमक राह नहिँ जाना । जोग ज्ञान मत भेद भुलाना ॥
प्रानायाम जोग कोइ कीन्हा । कोइकोइ कँवल उलट कर लीन्हा ॥
कोइ अष्टांग जोग जस कीन्हा । परम जोग रस रहे अधीना ॥
यह सब जोगी जोग कराया । कठिन काल सब धरधर खाया ॥

(१) गुफा ।

जोगी राह रीत दरसाऊँ । भिनि भिनि जोग बिधी बिधि गाऊ ॥
जोग सद्द बिधि कहौँ बखानी । बूझै जोग कीन्ह सोइ जानी ।

॥ कहेरा ॥

जोगी राह रमक तत तारी, करत जोग जुग चारी हो ।
ज्ञान जोग मिसिरित^(१) मन मैला, चढ़ि अकास नित खेला हो ॥१॥
अब तेहि राह रीति दरसाऊँ, बिधि भिनि भिनि गति गाऊँ हो ।
बस तन मन रस निरमल होई, इंद्री इस्क खुद खोई हो ॥२॥
ता पर तीन तलय पचबीसा, खड़ग ज्ञान दल पीसा हो ।
उनके निकट नेक नहिँ जावै, थिर होइ पवन चढ़ावै हो ॥३॥
दीदा फूल भूल दिन राती, त्रिकुटी चढ़ियेहि भाँती हो ।
बिधि बायें^(२) पैंगला गति केरी, इंगला दहिने फेरी हो ॥४॥
चंद सूर दम दम बस आवा, सुखमनि चटक चढ़ावा हो ।
बंक नाल पल पल नल खोली, अति अजपा नहिँ बोली हो ॥५॥
ओहँग तत सोहँग मत जानी, पवन सद्द सँध आनी हो ।
थिर मन मेरडंड चढ़ तारी, झलक जोति उँजियारी हो ॥६॥
तत अकास आतम बिधि जानी, लख चर अचर बखानी हो ।
अंदा तत्त द्वार दरसानी, जोग ज्ञान गति बानी हो ॥७॥
यह सब काल खेल भरमाये, सास्तर बेद भुलाये हो ।
यह सब जोगि जोग बस कीन्हा, काल राह रस पीना हो ॥८॥
वे दयाल बिधि भेद अपारा, संत चीन्ह भये न्यारा हो ।
जोग ज्ञान पंडित सुनि मानै, सास्तर पढ़त पुरानै हो ॥९॥
जैसे नीर घड़ा जल माई, रबि प्रतिबिंब दिखाई हो ।
जब लग घड़ा अकास समाना, तब लग तत दरसाना हो ॥१०॥
फूटा घड़ा अकास नसाना, रबि सूरज बिनसाना हो ।
तत भयौ नास भास भई जोती, अंध कूप हिये होती हो ॥११॥

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ में “मिसिरित” की जगह “निसिरित” और (२) “बिधि बायें” की जगह “बिधिवा यह” है जो अशुद्ध जान पड़ता है ।

अंध अकास भास नहिँ पावै, भूल भटक मन आवै हो ।
घट बिनसै तन दैही पावै, पुनि भव माहिँ समावै हो ॥१२॥
ज्ञान जोग ब्रत संजम कीन्हा, तीनि ज्ञान गति चीन्हा हो ।
अंत काल जम जाल फँसाना, बहु बिधिकाल चबाना हो ॥१३॥
तुलसी जोग जुगति कहि भारी, संत अगम गति न्यारी हो ।
संत राह रस अगम ठिकाना, जोगी भेद न जाना हो ॥१४॥

॥ सोरठा ॥

जोगी जुगति बिचार, संत भेद न्यारा कहै ।
अगम अगत गति पार, जोग ज्ञान पहुँचै नहीँ ॥

॥ चौपाई ॥

दूजा जोग कँवल षट गाऊँ । बसै तासु पर भेद बताऊँ ॥
चढ़ै चक्र षट जोगी गावै । तुलसी सब्द माहिँ समभावै ॥
काया माहिँ कँवल का बासा । कँवल कँवल कहूँ भूमि निवासा ॥

॥ कहेरा ॥

काया कलस कँवल बिधि भाखी, परख लखी हिये आँखी हो ।
भिनि भिनि जोग कँवल बिधि गाई, खुल षट भेद बताई हो ॥१॥
गुदा कर कँवल कहौँ दल चारी, गनपति बास बिचारी हो ।
छै पखड़ी दल कँवल कहाई, बसै ब्रह्मा तेहि ठाँई हो ॥२॥
अष्ट कँवल दल नाभ बसेरा, बसै बिस्नु तेहि तीरा हो ।
दल बारा बिधि सिधि हिये माहीं, सिव कैलास कहाई हो ॥३॥
सोला कंठ कँवल बिधि जानी, जगदंबा जग रानी हो ।
सहस्र कँवल दल दीद निरंजन, घाट रोकि गल गंजन हो ॥४॥
ये सब काल जोग रस माया, सिध जोगी सब खाया हो ।
मुद्रा पाँच अवस्था चारी, तीनि ज्ञान गति धारी हो ॥५॥
जोगी काल कलेवर कीन्हा, तप संजम ब्रत धारी हो ।
कष्ट भोग फल काया पाया, चारि खानि गति चारी हो ॥६॥

कँवल जोग जोगी गति गाया, भर्म भोगि भौ आया हो ।
 अब कहौ संत भेद बिधि सारी, जोग कँवल से न्यारी हो ॥७॥
 नौलख कँवल पार दल दोई^१, परे चारि दल सोई हो ।
 ता के परे अगमगढ़ घाटी, नीर तीर गहि बाटी हो ॥८॥
 ता के परे परम गुरु स्वामी, जीवअधर घर धामी हो ।
 ता के परे परम पद माहीं, साहिब सिंध कहाई हो ॥९॥
 ता के परे संत घर न्यारा, अगमअगाध अपारा हो ।
 तुलसी सैल सुरति से कीन्हा, अगम राह रस पीना हो ॥१०॥

॥ सोरठा ॥

जोग आत्मा ज्ञान, आगे मत जानै नहीं ।
 करि करि जोग बयान, काल खानि भौ रस रहै ॥

॥ चौपाई ॥

जोग निरंजन कीन्ह पसारा । यह सब काल जाल भ्रम डारा ॥
 कँवल सहस्र समाधि लगावै । मन सोइ काल निरंजन पावै ॥
 अंड खंड ब्रह्मंड पसारा । ये सब जानौ मन^२ की लारा ॥
 ब्रह्मा बिस्नु महेस कहाये । ये सब मनमत गति उपजाये ॥
 मन सोइ निरंकाल है भाई । ता कर बास अकास के ठाई ॥
 वा का सुनौ बास बिधि मूला । अग्नि अकास कँवल जहँ फूला ॥
 तुलसी ता की बिधी बताऊँ । सबद राह रस भेद सुनाऊँ ॥

॥ कहेरा ॥

अग्नि अकास जरत जल जाना, ता बिच कँवल फुलाना हो ।
 डंडी कँवल फूल नभ नारी, रज ब्रह्मा बिस्तारी हो ॥१॥
 नाल वोही तम संकर तारी, बिस्नु बिपति जग भारी हो ।
 मिलि तीनौ मन मरम न जाना, कीन्हे बेद पुराना हो ॥२॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में कड़ी = में, 'दोई' की जगह 'दोई' है और
 (२) आगे की चौपाई की कड़ी ३ में 'मन' की जगह 'काल' है ।

निरंकाल काल अस फाँदा, जीवजोति जग बाँधा हो ।
आदिअनादि पंथ नहिँ जानी, करि कुपंथ ठग ठानी हो ॥३॥
तीरथ वरत नेम बिधि^१ पाला, आस खानि फलडाला हो ।
नर तन भटक भटक भटभेरा, बाँधा न भौजल^२ बेड़ा हो ॥४॥
तन सराय छूटत छिन माहीं, सेमरि सुवा पछिताई हो ।
तुलसीदास चेत नर अंधा, परखि लखौ दुखदंदा हो ॥५॥

॥ चौपाई ॥

ये सब मन का भेद बताया । मन रचि कीन्हा खेल बनाया ॥
धरती गगन चंद औ सूर । निरंकाल रच मन मत मूरा ॥
सोइ मन अस बस बिषरस माई । भूला भरम खानि गति जाई ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी तरक बिचार, सार पार गति ना लखै ।
यह मन बिषम बिकार, ता की गति मति सब कही ॥

॥ छंद ॥

तुलसी मति न्यारी कहत बिचारी । जगत भिखारी जाल मई ॥
सुर नर मुनि नाचे कोइ न वाचे । आदि अंत सब छार छई ॥१॥
संतन सोइ जाने सुरति समाने । जिन वा घर की राह लई ॥
मैं उनका चेरा किया निबेरा । सुरति सैल अज अधर गई ॥२॥
मन की गति पाई सुरति छुड़ाई । रामायन घट माहिँ कही ॥
ले लेख अलेखा सब बिधि देखा । संत चरन सत सार सही ॥३॥
चीन्हा वह द्वारा सुरति सम्हारा । नैन निहारा पार गई ॥
तुलसी बिधि गाई सबै सुनाई । संत सहाई राह दई ॥४॥
कुंजी अरु तारा खोल किवारा । निरखि निहारा सूर भई ॥
जाना सत नामा अगम ठिकाना । लखि असमाना तिमर गई ॥५॥
तुलसी रस ज्ञाना माहिँ बखाना । धसि असमाना अगम लई ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में कड़ी ४ में “बिधि” की जगह “नित” और

(२) “बाँधा न भौजल” की जगह “बाँधौ नभ जल” है ।

॥ सोरठा ॥

यह बिधि निरमल ज्ञान, सत मत सुरति लखाइया ।
जब पाया वह ठाम, आदि अंत सोइ सुधि भई ॥

॥ सोरठा ॥

कीन्हा ग्रंथ बनाइ, पाइ गाइ गति अस कही ।
भई गुरन पद पार, सार पदम पद लखि रही ॥

॥ चौपाई ॥

आगे अगम लोक गति गाऊँ । सत्त नाम सत धाम लखाऊँ ॥
जब नहिँ निराकार और जोती । आदि अंत कछू नहिँ होती ॥
जब दयाल सत साहिब दाता । जबकी सुनौ सकल बिख्याता ॥
मैं अजान कछु मरम न जानौँ । संत कृपा सत साखि बखानौँ ॥
सतगुरु संध संत दरसाई । उन रज कही महुँ पुनि गाई ॥
मैं बुधिहीन अचीन्ह अनारी । कीन्ही कृपा सुरति मतवारी ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी मनहिँ बिचारि, संत अंत गति लखि परी ।
भाख्यौँ सरनि सिहार, सार पार जस जस भई ॥

॥ सोरठा ॥

सत्त लोक सत नाम, और अनाम आगे कही ।
सबहि संत ब्रत मान, मैं निकाम सरनै लई ॥

॥ चौपाई ॥

अब कहूँ आदि अगाध अनामी । ताकी गति मति संत बखानी ॥
जो कछु सत्त सीत उन केरी । महुँ पाइ मति निरखि निबेरी ॥
तुलसी जब जोइ जस जस भाखा । आदौ बिरछ पेड़ पत साखा ॥
पिरथम पुरुष अनाम अकाया । जास हिलोर भई सत माया ॥
माया नाम भया इक ठौरा । सत मत नाम बँधा इक डोरा ॥
सत्त लोक सत साहिब साँई । सत्त मिले सत नाम कहाई ॥
चौथा पद संतन सोइ भाखा । सो सत नाम कीन्ह अभिलाखा ॥

सत्त नाम से निरगुन आया । ता को बेद ब्रह्म बतलाया ॥
 ता की अब मैं कहूँ लखाई । त्रिकुटी रावन ब्रह्म कहाई ॥
 माया कुमति ब्रह्म इक ठौरा । भयाराम मन चहुँ दिसि दौरा ॥
 पाँचौ इंद्री प्रकृति पचीसा । तीनि गुनन मिलि सरगुन ईसा ॥
 इंद्री पिता भरत है भाई । गुन तन कुमति संग मन माहीं ॥
 इच्छा सँग रँग मन मति भूला । खस परा बृंद भया अस्थूला ॥
 ता को सब जग राम बखाना । ईस कर्म मन भर्म भुलाना ॥
 निराकार मन भया अकारा । जोति मिली गुन तीनि पसारा ॥
 ब्रह्मा बिस्नु भये महादेवा । इनकी उतपति मन मत भेवा ॥
 सास्तर बेद संस्कृत बानी । ये सब मनमत गति उतपानी ॥
 दस औतार जगत जग माया । यह मन और अनेक उपाया ॥
 ऋषी मुनी जोगीसुर ज्ञानी । मन करता कर सब मिलि मानी ॥
 तीरथ बरत बेद व्यौहारा । जग भूला मन जाल पसारा ॥
 जा से नाम भेद नहिँ जानै । मनहि राम को नाम बखानै ॥
 नाम गती है अगम अपारा । ब्रह्म राम दोउ पावै न पारा ॥
 निरगुन ब्रह्म राम मन होई । नाम अगम गत अगत अघोई ॥
 ता का पटतर मन पर लावै । ता से नाम भेद नहिँ पावै ॥

॥ दोहा ॥

येहि बिधि आदि अनादि, लखा भेद भिनि सब कह्यौ ।
 सुति निःनाम आधार, जाना जिन अंदर कह्यौ ॥

॥ छंद ॥

है निःनामी अकथ अनामी । दस दिसि लसि सर सैल कही ॥
 भाखा सतनामा ब्रह्म अकामा । माया मिलि मन जार लई ॥१॥
 काया अस्थूला मन सहै सूला । इंद्री बस भौ खानि मई ॥
 काया गति धारी कर्म बिचारी । भूल भटक भौ भार सही ॥२॥

॥ सोरठा ॥

काया रचन विचार, जाही से ये जग भया ।
 सो बिधि कहौ सँवार, बूझै जो जिन घट लखा ॥

॥ चौपाई ॥

उतपति जोनि खानि मन दीन्हा । गर्भ भीतर बालक को चीन्हा ॥
 उतपति कारज बीरज डीठा । यह मन बात लागि मद मीठा ॥
 या कर लेखा कहौ बनाई । तब जग हिरदे सत्त समाई ॥
 सुनौ गर्भ की बात विचारा । मात पिता रज बीरज सँवारा ॥
 उलटा उरधमुखी दुख पावै । तन भीतर का को गोहरावै ॥
 भया बिकल मुख नरक समाना । जठर अगिन तन तपन जराना ॥
 आजिज भया बिकल बहु भारी । अतिदुख मैं रहा बिकल दुखारी ॥
 तब साहिव से अरज पुकारी । बंदीछोर मोहिं लेव उबारी ॥
 निस दिन बँदगी करौं तुम्हारी । अब मोहिं काढ़ौ महा दुखारी ॥
 अब तोहिं नेक न बिसरौं साँझ । बार बार सुमिरौं चित लाई ॥
 दीन दुनी से मन नहिं लाऊँ । आठ पहर तुम्हरा गुन गाऊँ ॥

॥ सोरठा ॥

इतना किया करार, जब गर्भ से बाहिर भया ।
 भूला सिरजनहार, तुलसी भौ जग जाल मैं ॥

॥ चौपाई ॥

अब बाहिर का लागा रंगा । माता मोह पिता के संग ॥
 लरिकार्ड लट पट जग खेला । तोतरि बात मात संग बाला ॥
 भाई बंद सकल परिवारा । ठुमठुम पाँव चलै तेहि लारा ॥
 लरिकार्ड ऐसी बिधि खोई । तरुन भये तरुनी संग मोही ॥
 मन की मौज करै रस रंगा । भूला ज्ञान भया चित भंगा ॥
 अब साहिव की याद बिसारी । माया मोह बँधा संसारी ॥
 मद मैं मस्त कछू नहिं सूझै । साध संत को कछू न बूझै ॥
 खान पान निस दिन मदमाता । कामिन संग रहै रँगराता ॥

जिन यह घट का साज बनाया। ताहि बिसारि जगत मन लाया॥
यह जग भूँठ सराय बसेरा। भोर भये उठि सूना डेरा ॥
ऐसे या जग का व्योहारा। जनम जुवा जस बाजी हारा ॥
नेक न साहिब से मन लाया। बिरध भया तब अति दुख पाया ॥
ऐसे सकल जनम गयो बीती। नेक न जानी साहिब रीती ॥
अंत समय जम आनि सतावा। मुसकिल कष्ट महा दुख पावा ॥
मार परै जब कौन बचावै। कठिन काल बिकराल^१ सतावै ॥

॥ दोहा ॥

ऐसा नर तन पाइ कै, बादइ जनम गमाइ।
सो अस अंधा जग भया, परै नरक में जाइ ॥

॥ छंद ॥

ऐसा जग भूला सहै जम सूला। धर्मराय तन त्रास दई ॥
निज नाम न जाना बहु पछिताना। जिन नित काल की मार सही ॥१
ता से नर चेतौ छाँड़ि अचेतौ। नर तन गति ये जाति बही ॥
तुलसी कही साची कोउ न बाची। बिन सत संगति पार नहीं २

॥ सारठा ॥

तुलसी देखि बिचार, यह तन मन को सुपन है।
बहि मत जाइ गँवार, यह जग जल भौ पेखना ॥

॥ चौपाई ॥

निःनामी निःअच्छर भाखैँ। अब निज सुरति नाम से राखैँ ॥
ता से जीव होइ निरवारा। भवसागर से उतरै पारा ॥
संत कृपा सत संगति होई। सतगुरु मिलि होइ नाम सनेही ॥
अब मैं कहौँ आदि गति न्यारी। घट देखै सो लेइ बिचारी ॥
सब गति भिन्न भिन्न कहौँ भाखा। जानै जीव मिटै अभिलाखा ॥
पिंड माहिँ ब्रह्मंड बताऊँ। भिन्न भिन्न ता को दरसाऊँ ॥
जो बाहिर सोइ पिंड दिखाई। देखा जाइ पिंड के माहीं ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में “बिकराल” की जगह “जब आइ” है।

तुलसी ताहि पाइ धसि देखा । घट भीतर भिनि भिन्न बिबेका ॥
 जस जस संत कहा घट लेखा^(१) तस तस तुलसी नैनन देखा ॥
 अध मै या की कहौं लखाई । जो घट भीतर दीन्ह दिखाई ॥
 तुलसि निकाम संत कर बंदा । जित जित जो औं जग सब अंधा^(२) ॥
 कोइ न मानै बात सत मेरी । फिरि फिरि कर्म बंधे भौ बेरी ॥
 भिन्न भिन्न संतन गोहरावा । काहू हिरदे चेत न आवा ॥
 घट मै सुरति सैल जस कीन्हा । कागभसुंड भाखि तस दीन्हा ॥
 कागभसुंड कितहुँ नहिँ भयेऊ । तुलसी सुरति सैल तन कहेऊ ॥
 कागभसुंड काया के माहीं । राम रमा मुख पैठा जाई ॥
 तुलसी ता की गति मति जानी । रामायन मै कीन्ह बखानी ॥
 यह सब घट मै भाखि सुनाई । अंधे जिव अंतै लै जाई ॥
 भरत चत्रगुन लछिमन भाई । यह घट माहिँ कहेउ समभाई ॥
 सुमंतरा केकड़ कौसिल्या । ये तन भीतर घट मै मिलिया ॥
 सीता दसरथ राम कहाये । ये सब घट भीतर दरसाये ॥
 सरजू सुरति अवध दस द्वारा । ये घट भीतर देखि निहारा ॥
 रावन कुंभ लंकपति राई । त्रिकुटी ब्रह्म बसे तेहि माहीं ॥
 रावन ब्रह्म कहा हम जोई । त्रिकुटी लंक ब्रह्म है सोई ॥
 मन्दोदरी भीषण भाई । इंद्रजीत सुत त्रिकुटी माहीं ॥
 ये संवाद कहा घट माहीं । रामायन घट माहिँ बनाई ॥
 जो कोइ अंध जीवनहिँ मानै । पुनि पुनि परै नरक की खानै ॥
 संतन की गति कोइ न जानै । पिंड माहिँ ब्रह्मंड बखानै ॥
 उनकी गति मति कोइ कोइ जानै । बिन सतसंग नहीं पहिचानै ॥
 उनकी कृपा दृष्टि जब होई । तब अदृष्ट को बूझै सोई ॥
 पिंड ब्रह्मंड सैल कोइ पावै । तब सतगुरु सत दया लखावै ॥

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ में यह कड़ी ऐसे है—“आगै जस जस संतन लेखा” ।

(२) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में यह चौपाई और आगे की दो छूट गई हैं ।

अब ब्रह्मांड की कहाँ लखाई । कोइ कोइ साधू बिरले पाई ॥
 जो कोइ भये अधर मैं लीना । जिन को आया संत अकीना ॥
 जिन जिन सुरतिसैल घट कीन्हा । ता की गतिमति बिरले चीन्हा ॥
 अब मैं अपनी कहाँ दृढ़ाई । सुरति सैल घट माहिँ लखाई ॥
 रावन राम सकल परिवारा । ये घट भीतर चुनि चुनि मारा ॥
 और अनेक कहे बहु भाँती । ये सब माया की उतपाती ॥
 ये मत सत्त सत्त जिन माना । उनका आवागवन नसाना ॥
 या मैं कोई भर्म जो लावै । बार बार चौरासी पावै ॥
 मैं अपने अस देख बखानी । संत कृपा से महुँ पुनि जानी ॥
 अब ब्रह्मांड पिंड कर लेखा । भाखा जोइ निज नैनन देखा ॥

॥ देहा ॥

पिंड सैल ब्रह्मांड की, जस जस गति मति मोर ।

जो सत मत संतन कही, देखा घट गढ़ तोर ॥

॥ छंद ॥

गाया घट लेखा अगम अलेखा । जिन जिन देखा सार सही ॥
 महुँ पुनि भाखी देखा आँखी । सूरति धसि दस द्वार गई ॥१॥
 संतन जोइ गाई महुँ पुनि पाई । आदि अंत गति कहनि कही ॥
 जो जो घट माहीं सब दरसाई । जो रचना ब्रह्मांड मई ॥२॥
 जिन जिन निज जानी देख बखानी । जिन नहिँ मानी भर्म सही ॥
 पंडित गति ज्ञानी भर्म भुलानी । भेष भेद भौ माहिँ कही ॥३॥
 छत्री और ब्राह्मन बैस अपावन । सूद्र मती छर छार भई ॥
 का को गोहराई आदि न पाई । तुलसी सब देखा भर्म मई ॥४॥

॥ सोरठा ॥

ब्राह्मन अरु पुनि सूद्र, ये बूड़े सब उद्र को ।

बैस्य बसा भौ बास, कस अकास डोरी गहै ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में यह सोरठा ऐसे है—

“ब्राह्मन ऊद्र समाई । छत्री बूड़े लड़न में ।

बैस शूद्र भर्म माई । को अकाश डोरी गहै ॥”

॥ चौपाई ॥

सब ये घट की सैल बखाना । पिंड माहिँ ब्रह्मंड दिखाना ॥
 आगे घट का भेद बताई । अब जो सुनो कहौँ समझाई ॥
 तिल परमाने लगे कपाटा । मकरतार जहँ जिव की बाटा ॥
 इतना भेद जानि जिन कोई । तुलसीदास साध है सोई ॥
 आगे अदबुद ज्ञान अपारा । पिरथम घट का कहौँ बिचारा ॥

॥ अथ घट का भेद और ठिकाना ॥

(सवाल)

- १ पृथ्वी का माथा कहाँ है ? १८ तिल भर हाड़ काया मैं कहाँ है ?
 २ सूर का तेज ,, १९ गगन का कलेजा ,,
 ३ चंद्र की जोति ,, २० मन का मुख ,,
 ४ पानी का मूल ,, २१ काम की आदि ,,
 ५ कैवल का फूल ,, २२ देही का नूर ,,
 ६ वायु की नाभी ,, २३ बदन का पिंजर ,,
 ७ गनेस की स्वाबी ,, २४ सिव का ध्यान ,,
 ८ समुद्र का सोत ,, २५ वेद का भेद ,,
 ९ आकास का पोत ,, २६ गुनी का गुन ,,
 १० सुरति सहदानी ,, २७ राग का रस ,,
 ११ जीव की बानी ,, २८ सुर का आकार ,,
 १२ जीव का नाम ,, २९ आकार की आदि ,,
 १३ सुरति का ठाम ,, ३० अंत की समाधि ,,
 १४ ध्यान की सुरति ,, ३१ माया की धुनि ,,
 १५ ज्ञान की मूरति ,, ३२ धुनि की सुन्न ,,
 १६ सुरति की निरति ,, ३३ सुन्न का सब्द ,,
 १७ सुमेर की जड़ ,, ३४ ज्ञान का मूल ,,

॥ सोरठा ॥

इतना देहु बताइ, जीव कहेँ समभाइ कै ।
अगम निगम घर पाइ, तब तुलसी सब बिधि लखै ॥

(जवाब)

॥ चौपाई ॥

आगे उलटा भेद बताऊँ । अगम निगम घट भेद सुनाऊँ ॥
अब या का अरथंत सुनाऊँ । घट मैं ठीका ठौर बताऊँ ॥
जो कोई साध सैल घट कीन्हा । सुन करि अर्थ होइ लौ लीना ॥
अर्थ-१ पृथ्वी का माथा मैनागिरि देस में है ।

- २ सूर का तेज उदयागिरि परबत में है ।
- ३ चंद्र की जोति चंदागिरि परबत में है ।
- ४ पानी का मूल निरंजन के दोदे में है ।
- ५ कँवल का फूल अछै दीप में है ।
- ६ वायु की नाभी रंभा के पेड़ में है ।
- ७ गनेस की स्वाबी मान सरोवर में है ।
- ८ समुद्र का सोत समीरुख में है ।
- ९ आकास का पोत बाराह के माथे पर है ।
- १० सुरति सहदानी सब्द में है ।
- ११ जीव (हंस) की बानी अष्टकँवल में है-जीव अरूपी
द्वादस कँवल में है ।
- १२ जीव का नाम सुन्न कँवल में है ।
- १३ सुरति का ठाम दोइ दल कँवल में है ।
- १४ ध्यान की सुरति गगन के ऊपर नयन नासिका के
अग्र बीच में है ।
- १५ ज्ञान की मूरत ब्रह्मांड कँवल में है ।
- १६ सुरति की निरति साहिव के सब्द में है ।
- १७ सुमेर की जड़ नाग के कलेजे में है ।

- १८ तिल भर हाड़ पाँच इंद्रियों में है ।
 १९ गगन का कलेजा राग के आकार में है ।
 २० मन का मुख षटदल कँवल में है ।
 २१ काम की आदि संकर की सुरति में है ।
 २२ देही का नूर हरि के पास है ।
 २३ बदन का पिंजर पृथ्वी के भीतर है ।
 २४ सिव का ध्यान हरि के सब्द कँवल में है ।
 २५ वेद का भेद चार दल कँवल में है ।
 २६ गुनी का गुन षटदल कँवल में है ।
 २७ राग का रस पुरुष के सब्द में है ।
 २८ सुर का आकार सुन्न में है ।
 २९ आकार की आदि अनहद में है ।
 ३० अंत की समाध साहिब के लोक में है ।
 ३१ माया की धुन चतुरदल कँवल में है ।
 ३२ धुन की सुन्न वेद के मूल में है ।
 ३३ सुन्न का सब्द निरंतर में है ।
 ३४ ज्ञान का मूल नाम में है ।

॥ दोहा ॥

ये अस्थान बताइया, साधू सुनौ बखान ।
 कहै तुलसी घट भीतरे, सुरति से पहिचान ॥

॥ सारठा ॥

रामायन घट सार, सुरति सब्द से लखि परै ।
 गगन कंज कर बास, ऊपर चढ़ि जिन देखिया ॥

॥ चौपाई ॥

अब सुनियौ ब्रह्मंडी लेखा । कोटिन परलै घट बिच देखा ॥
 भीतर गुफा एक जो कीन्हा । कोटि प्रलै उद्यार जिव लीन्हा ॥
 सव्द निरंतर सत है भाई । गहै जीव पहुँचै जब जाई ॥
 घट का मथन सुरति से साधै । वा को काल कभी नहिँ बाँधै ॥
 कोटिन सूर ब्रह्मंड के माहीं । कोटिन कोटि देखि सब ठाहीं ॥
 घट बिचार घट ही के माहीं । ता में ब्रह्मा बिस्नु रहाई ॥
 सिव संकर सब घट में फंदा । घट में नदी अठारा गंडा ॥
 घट में देखे सात समुंदर । जिन से जल पहुँचै नभ अंदर ॥
 घट में तीरथ बरत मँभारी । घट में देखा कृष्ण मुरारी ॥
 घट में जोधा सामँत होई । घट में राजा परजा सोई ॥
 घट में हिंदू तुर्क दोइ जाती । घट में कुला कर्म की पाती ॥
 घट में नेम दया अरु धर्मा । घट में पाप पुन्य बहु कर्मा ॥
 घट में डंड बंध दोउ भाई । जो कछु बाहिर सो घट माई ॥
 घट में बास बसन जगलागा । घट में कामिनि खेलै फागा ॥
 घट में षट पलास सोइ फूला । घट में लोग प्रजा भकभूला ॥
 घट में स्वर्ग नर्क हैं दोई । घट में जनम मरन पुनि होई ॥
 घट में कथा पुरान सुनावै । घट में माया करम करावै ॥
 घट में चोरी चोर अपारा । घट में करता सिरजनहारा ॥
 घट में राजा राज कराई । घट में चौकी पहरा भाई ॥
 घट ही में सब न्याव चुकावै । घट में रागी तान सुनावै ॥
 घट में नाच कूद रे भाई । घट में राग अलाप सुनाई ॥
 घट में साह महाजन होई । घट में सव्द सुन्न है सोई ॥
 घट में राजा है बलि बावन । घट में सीता रघुपति रावन ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में दूसरी चौपाई इस तरह है--“भीतर गुफा एक है भाई । उबरे जीव पार जब जाई” ; और चौथी चौपाई में “सुरति से” की जगह “जीव कोइ” है ।

घट में लंका सा गढ़ भाई । घट में छानवे मेघा छाई ॥
 घट में बैठे पाँचौ नादा । घट में लागी सहज समाधा ॥
 घट में चारौ बेद रहाई । घट में असंख्य ब्रह्म समाई ॥
 घट में सात स्वर्ग पाताला । घट में बैठा काल कराला ॥
 जो कछु बाहिर सो कछु अंतर । घट का भेद घटहि में मंतर ॥
 घट में अरसठ तीरथ भाई । घट में गंगा धार बहाई ॥
 घट में लोग करें अस्नाना । घट में तीनो लोक समाना ॥
 घट की थाह कोई नहिं जाना । घट में पिंड ब्रह्मंड समाना ॥
 घट में हाट बजार लगाया । घट में दामिनिमनपतिपाया ॥
 घट में परबत बृच्छ पहारा । घट में बैठे दस औतारा ॥
 घट में हाथी घोड़ा होई । घट में हिरन रोम्भ^१ सब कोई ॥
 ऊँच नीच परबत भक भाई । निस दिन भरना बहतरहाई ॥
 मगर मच्छ घट माहिं मँभारा । घट में बस्ती और उजारा ॥
 घट में सुकदेव व्यास अरु नारद । घट में ऋषी मुनी अरु सारद ॥
 घट में राजा बरन कुबेर । घट में माँडे आठ सुमेरु ॥
 कहँ लगि घट का कहौ पसारा । घट में अनेक बिधान सँवारा ॥
 जो सब घट कहि बरनि सुनाई । तौ जग कागद मिलै न स्याही ॥

॥ दोहा ॥

घट भीतर जो देखिया, सो भाखा बिस्तार ।

भेदी भेद जनाइया, तुलसी देखि निहार ॥

॥ छंद ॥

सब ठीक बखाना घट परमाना । घट घट में सब ठाम ठई ॥
 बाहिर सोइ अंदर सब घट मंदर । देखि हिये बस बास कही ॥
 बूझै कोइ ज्ञानी अंतरजामी । मूरख मूढ़ न चेत भई ॥
 आगे पुनि गाऊँ बरनि सुनाऊँ । इन सब के अस्थान मई ॥
 तुलसी तन तारा खोलि किवारा । पैठि मँभारा सार लई ॥

(१) हिरन की एक जाति ।

॥ सोरठा ॥

या विधि तन मन ज्ञान, भीतर देखा जोड़ कै ।
साधू करौ प्रमान, भिन्नभिन्न तत मत कहा ॥

॥ चौपाई ॥

अब उनके अस्थान बताऊँ । भिनि भिनि ग्रंथन मैं समझाऊँ ॥

॥ कोठों के नाम ॥

कोठा प्रथम उतिसुर नाई । बैठे ब्रह्मा वेद पढ़ाई ॥
दूसर धरम-गंध दरसाई । बैठे बिस्नू ज्ञान सुनाई ॥
तीसर कोठा धुन-धर भाई । बैठे संकर जोग कराई ॥
चौथा कोठा रक्तमनि गाई । बरुन बैठि जहँ राज कराई ॥
हरि संग्रह पंचम बतलाऊँ । आठ सुमेर बसै तेहि ठाऊँ ॥
बिजै-धुंध षष्ठम कहलाई । मन की कला फिर तेहि ठाई ॥
कोठा सतवाँ नगरा नाऊँ । अन्नदेव बैठे तेहि ठाऊँ ॥
कोठा अठवाँ रुकमन ताला । जहँवाँ बैठे मदन गोपाला ॥
नौवाँ कोठा गौड़ मन माली । दुरमति माया करै बिहाली ॥
दसवाँ कोठा उघड़ू नावाँ । सहस कोटि जगै तेहि ठावाँ ॥
करभौनी एकादस नाऊँ । तीनि लोक में जोति समाऊँ ॥
द्वादस कोठा बिषमदे गावा । सुरनर मुनि जहँ ध्यान लगावा ॥
कोठा त्रयोदस मलदू द्वारे । जोगिनि चौंसठ लाख निहारे ॥
चौधा कोठा गगनधर नाऊँ । लच्छ अलच्छ बैठि तेहि ठाऊँ ॥
हमसुन्दर पंद्रा कर नावाँ । बास सुगंध बसै तेहि ठावाँ ॥
कोठा सोला अतिसुर नाऊँ । पाँच बजार बसै तेहि ठाऊँ ॥
कोठा सत्रा सिषरचल नाऊँ । अठरा गंडा नदी तेहि ठाऊँ ॥
अठरा कोठा कड़ेसुर नाऊँ । जीवको तेज बसै तेहि ठाऊँ ॥
कोठा उनीस बंकचल नाऊँ । मुरली सुहावन बजै तेहि ठाऊँ ॥

बिसवाँ कोठा कुलंग कहाई । सुकृत बाजा बजै सुहाई ॥
 इकइस कोठा भानसुर नाऊँ । अलख निरंजन है तेहि ठाऊँ ॥
 बाइस कोठा धुँधेसुर नाऊँ । मन को ध्यान बसै तेहि ठाऊँ ॥
 तेइस कोठा तरंगी ताला । बिछई जे जग में जमजाला ॥
 चौबिस कोठा कंठसुर नाऊँ । सुमति बिचार बसै तेहि ठाऊँ ॥
 पन्धिस कोठा प्रकृती^१ नाऊँ । मल को पती बसै तेहि ठाऊँ ॥
 छबिस कोठा मुदापल नाऊँ । पवन प्रधान बसै तेहि ठाऊँ ॥
 सताइस कोठा सुताचल नाऊँ । मन अलीप बैठे तेहि ठाऊँ ॥
 अठाइस कोठा धरनीधर नाऊँ । माया मोह बसै तेहि ठाऊँ ॥
 उतिस कोठा कमंची नाऊँ । बादल मेघ उठै तेहि ठाऊँ ॥
 तिसवाँ कोठा निरमल नामूँ । साहिव पलंग बिछा तेहि ठामूँ ॥
 इकतिस कोठा करोमल नामूँ । नवो नाथ बसते तेहि ठामूँ ॥
 बत्तिस कोठा बनासुर नामा । नौ कुत्ते बैठे तेहि ठामा ॥
 तँतिस कोठा अनंधू नामूँ । जम का तेज बसै तेहि ठामूँ ॥
 चौँतिस कोठा जमाउत नामा । जमुना नदी बसै तेहि ठामा ॥
 पँतिस कोठा सकरदू^२ सेता । कामदेव जहँ ऋरि ऋरि बहता ॥
 छत्तिस कोठा गनकू नामूँ । क्रोध कलेस बसै तेहि ठामूँ ॥
 सँतिस कोठा अवरधुर धुंधा । बैठ कृष्ण जहँ डारै फंदा ॥
 अरतिस कोठा बंसबल नाऊँ । चौधा कामिनि हैं तेहि ठाऊँ ॥
 उन्तालिस करियाधर नाऊँ । बैठे दया धरम तेहि ठाऊँ ॥
 चालिस कोठा किरिकोता नामूँ । सात समुद्र बसै तेहि ठामूँ ॥
 इकतालिस भौरादे नामा । नवौ कुली नाग तेहि ठामा ॥
 बयालीस कुंभेसुर नाऊँ । बारह कुंभ बसै तेहि ठाऊँ ॥
 तँतालिस भगताधर नावाँ । भय और त्रास बसै तेहि ठावाँ ॥

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ में “परकुटी” है। (२) एक लिपि में “सरदू” नाम लिखा है।

चवालीस कुसमाधर नाऊँ । चारौ बेद बसै तेहि ठाऊँ ॥
 पैतालिस मायारट नाऊँ । रोग अरु दोष बसै तेहि ठाऊँ ॥
 छेयालीस मलयागिरि नावाँ । हंस बिहंग बसै तेहि ठावाँ ॥
 सैंतालीस हलासुर^१ नामा । तीरथ अरसठ हैं तेहि ठामा ॥
 अरतालिस कुकरंदर न्यारा । जहँ है सत्त सुकृत^२ का द्वारा ॥
 कोठा उंचास मरमो नाऊँ । पवन अकास उठै तेहि ठाऊँ ॥
 कोठा पचास घूधर नामूँ । हरि को तेज बसै तेहि ठामूँ ॥
 कोठा इक्क्यावन मजकुर नामा । सहस कँवल फूला तेहि ठामा ॥
 बावन कोठा जरादे नामूँ । अगिनी जरै ऊँच तेहि ठामूँ ॥
 त्रेपन कोठा तेराधर नामूँ । धीर गँभीर बसै तेहि ठामूँ ॥
 चौवन कोठा सिसंधर नावाँ । सत संतोष बसै तेहि ठावाँ ॥
 पचपन कोठा हिंडोला नामूँ । नारी नवो बसै तेहि ठामूँ ॥
 छप्पन कोठा निरधर नाऊँ । अठारा भार बसै तेहि ठाऊँ ॥
 सतावन कोठा कफादे नावाँ । जीव की मोच बसै तेहि ठावाँ ॥
 अठ्ठावन सुमेरबल नावाँ । मंगल पुरुष चरित्तर गावाँ ॥
 उनसठ कोठा छैसुंदर नाँमा । आतम रूप बसै तेहि ठामाँ ॥
 साठ कोठा धौलाधर नाऊँ । तीनो लोक मही तेहि ठाऊँ ॥
 इकसठ कोठा जैसुंदर नामूँ । बलधर पुरुष बसै तेहि ठामूँ ॥
 बासठ कोठा हीरापुर नामूँ । नीर चुवै झरि झरि तेहि ठामूँ ॥
 जैसठ कोठा कलाकर नावाँ । चौधा भवन बसै तेहि ठावाँ ॥
 चौँसठ तिल बिक्रम कहलावै । जल थल कुंभ बसै तेहि ठाँवै ॥
 पैँसठ कोठा सुरतसर नामूँ । जप तप जज्ञ करै तेहि ठामूँ ॥
 छासठ कोठा सिखरिचल नाऊँ । जोगी असंखन जोग कराऊँ ॥
 सरसठ कोठा अनंदी भाई । जहँवाँ काल बसन नहिँ पाई ॥

(१) एक लिपि में "कोलाहर" नाम दिया है । (२) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "सुकृत" की जगह "मुक्त" है ।

अरसठ कोठा चितादे नाऊँ । चित का चक्र फिरै तेहि ठाऊँ ॥
 उन्हत्तर कोठा सनीता नाऊँ । ज्ञानी बुद्ध बसै तेहि ठाऊँ ॥
 सत्तर कोठा सलीका नाऊँ । सुन्न की धुन्न उठै तेहि ठाऊँ ॥
 इखत्तर कोठा उदाधर नाई । जहँ जग पालक बैठि रहाई ॥
 बहत्तर कोठा गंजधर नाऊँ । करनी मूल बसै तेहि ठाऊँ ॥
 कोठा बहत्तर कहेउ बखानी । ले लख भीतर जो पहिचानी ॥
 यह घट देखि देखि सोइ भाखा । बूझि बूझि साधू मन राखा ॥
 रामायन घट कहि समझाई । काया भीतर कथि दरसाई ॥
 काया खोज मुक्ति जब होई । बिन खोजे सब गये बिगोई ॥
 काया भीतर सब की पूजा । सिव सनकादि आदि नहिँ खूभा ॥
 बाहिर कथि कथि रहे भुलाई । काया भीतर वस्तु न पाई ॥
 कोठा बहत्तरि हम कहि दीन्हा । कोऊ न काया भीतर चीन्हा ॥
 सास्तर संसकिरत मैं फूले । ऋषी मुनी जोगेसुर भूले ॥
 या से राह घाट नहिँ पाई । बहे कर्म भौजल के माई ॥

॥ दोहा ॥

सत्त नाम सूरति गहै, सतगुरु सरन निवास ।
 तुलसी तरँग तरास ज्यौँ, लखि पहुँचै तेहि पास ॥

॥ छंद ॥

घट की गति गाई भाखि सुनाई । लखि पाई पद पार कही ॥
 जो जो परमाना घट मठ जाना । ठाम ठिकाना ठौर मई ॥१॥
 तुलसी तस देखा घट बिच लेखा । पेखा तत मत पूर जही ॥
 आगे जस होई भाखौँ सोई । जो जो सिद्ध^१ समाधि लई ॥२॥

॥ सौरठा ॥

सिध चौरासी नाम, घट भीतर सब देखिया ।
 ता कर कहौँ बखान, जस जस ठीका नाम गुन ॥

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ में "लिध" है जो छापे की भूल मालूम होती है ।

॥ चौपाई ॥

सिध चौरासी घट में होई । ता को देखा सुरति बिलोई ॥
ता कर ठौर ठिकाना भाखौं । आदि अंत ठीक कर ताकौं ॥
सिद्ध सिद्ध के नाम बताओं । छानि भेद सूच्छम दरसाओं ॥

॥ सिद्धों के नाम^१ ॥

१ अजोनी	सिद्ध	१९ जैपाल	सिद्ध
२ अजर दया	,,	२० अजया काल	,,
३ पवनगिरी	,,	२१ केदारली	,,
४ उचंद कँवल	,,	२२ रतनागिरि	,,
५ उदद कँवल	,,	२३ मेलमहंत	,,
६ पेषनादार	,,	२४ उदया	,,
७ नालीवर	,,	२५ भक्तभेला	,,
८ कोमार	,,	२६ उषमजार	,,
९ बालागिरि	,,	२७ मनउतगिरि	,,
१० जैदेव	,,	२८ सरपसोष	,,
११ नलमोवर	,,	२९ जंभीर नागर	,,
१२ परसेतम	,,	३० हंस मोह	,,
१३ त्रिकुमल	,,	३१ बिराज	,,
१४ पुरुषोपत	,,	३२ ललित दया	,,
१५ नलवोती	,,	३३ करुनामय	,,
१६ बाइभक्ष	,,	३४ बाष जार	,,
१७ नाल पाजरी	,,	३५ जीव भूषन	,,
१८ पायापाल	,,	३६ उदीत साह	,,

(१) एक लिपि में यह नाम-भेद है—११-नल कमोद, १५-बिनवो, १६-मलकूत,
२५-कमाल, २६-उष्मज, २८-बालपोष ।

३७ जगतधार	सिद्ध	६१ गौड़ आसन	सिद्ध
३८ साह पाल	,,	६२ पक्ष पती	,,
३९ परन पोष	,,	६३ भाउ नाद	,,
४० नौनागर	,,	६४ पोहप माल	,,
४१ ज्ञानपती	,,	६५ नरदया	,,
४२ साधगिरि	,,	६६ डंढ्र मनी	,,
४३ नलदेव	,,	६७ डंभीर	,,
४४ सहस अपढ़	,,	६८ कहूकितोहल	,,
४५ सुकृत जीव	,,	६९ जंभीर नाद	,,
४६ ऊच माया	,,	७० द्याल पती	,,
४७ सिंह नाद	,,	७१ तेनौगार	,,
४८ सहज तेज	,,	७२ काल मुनी	,,
४९ बेरंग नाद	,,	७३ प्रेम मुनी	,,
५० फूल काज	,,	७४ हंस करनाग	,,
५१ कैदार कोठ	,,	७५ मल मोद	,,
५२ सुचलेन	,,	७६ कूर नाकर	,,
५३ मजा गुनी ^१	,,	७७ सुषन सरीष	,,
५४ तानी गंभीर	,,	७८ सुरति लोक	,,
५५ जगपती	,,	७९ साध बाच	,,
५६ गंधर्व सूत ^१	,,	८० सुख बाच	,,
५७ रतना गिरी ^१	,,	८१ नेह नाच	,,
५८ सरोज मल	,,	८२ बस करन	,,
५९ कुल कुंभ	,,	८३ भय मेटन	,,
६० पिगोभ	,,	८४ सुच भाव	,,

(१) एक लिपि में यह नाम-भेद है—५३-नाजगुनी, ५६-मदार, ५७-अरुण सार ।

॥ चौपाई ॥

चौरासी सिधि कथि बतलाई । सिधि इतने घट भीतर छाई ॥
साधू कोइ करै परमाना । जिन घट के अंदर पहिचाना ॥

॥ सौरठा ॥

चौरासी सिधि देखि, घट रामायन मैं कहे ।
अंतर काया पेखि, भिन्न भिन्न दरसाइया ॥

॥ चौपाई ॥

प्रकृति पचीस कहौं अनुसारी । ये सब घट के माहिं बिचारी ॥
काया भेद देखि हम चीन्हा । ता कर लच्छुभाखि सब दीन्हा ॥

॥ सौरठा ॥

प्रकृती भेद बिचार, नाम नोक सबकी कही ।
तुलसी तनहिं निहार, मन इस्थिर जब होइ जेहि ॥

॥ चौपाई ॥

कौन कौन प्रकृती रे भाई । ता कर घर मैं दैव बताई ॥

॥ प्रकृतियों के नाम ॥

१ भाव	प्रकृति	१२ उदासमुद्र	प्रकृति
२ क्रता	„	१३ चंचलराज	„
३ दैहधर	„	१४ मजा गुन	„
४ उषमजार	„	१५ मजा नंद	„
५ इंद्रजै	„	१६ अभयानंद	„
६ मोहदधि	„	१७ चतुरदया	„
७ सुषम जार	„	१८ कजाकोग	„
८ मोह धन	„	१९ उचालम्भ	„
९ केदारखंड	„	२० दया भवन	„
१० सफाकंद	„	२१ ईस भोग	„
११ नलदया	„	२२ कामिनि जोग	„

२३ मोहजार प्रकृति २५ भँवर सोग^१ प्रकृति
 २४ नौ जोग ,,

॥ चौपाई ॥

प्रकृति पचीस यही हँ साधौ । सब जीवन को इनहीं बाँधौ ॥
 सत्य सत्य मैं भाखौं भाई । इनकर भेद कहौं समझाई ॥
 पच्चीसों का घर हम भाखा । सत्य सद्द हिरदे मैं राखा ॥
 प्रकृति पचीस कहौं समझाई । मूढ़ जीव ज्ञानी होइ जाई ॥

॥ प्रकृतियों के सुभाव ॥

- | | |
|-----------------|--------------------------------------|
| १ भाव को | सुभाव-आलस निद्रा जम्हाई । |
| २ क्रता को | ,, काम क्रोध बिकार । |
| ३ दँहधर को | ,, खावै पीवै सुख बिनोद । |
| ४ उषमजार को | ,, मोर तोर निंदा |
| ५ इंद्रजै को | ,, हँसै खेलै रावै । |
| ६ मोहदधि को | ,, मान गुमान बढ़ाई प्रभुता । |
| ७ सुषमजार को | ,, उच्चाट भय त्रास और डंड । |
| ८ मोह धन को | ,, सिकार उदासी जारै बारै जीव |
| | जंत्र मंत्र सेवा करै । |
| ९ केदार खंड को | ,, एक काम चित्त रहै कामिनि सुख । |
| १० सफाकंद को | ,, चोरी राति बिराति आवै जावै । |
| ११ नलदया को | ,, होम बहुत करै और आसा लगावै । |
| १२ उदासमुद्र को | ,, चित चंचल छगुनिया टेढ़ा चलै कर |
| | मोड़े । |
| १३ चंचल राज को | ,, खरा लेवै खरा देवै खरी बात खरा रहै |
| १४ मजा गुन को | ,, निडर निरभय निरमोह । |
| १५ मजा नंद को | ,, दया धर्म पुन्य षट कर्म |

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "भँवर जोग" है ।

- १६ अभयानंद को सुभाव-तोरथ बरत मठ बनावै ।
 १७ चतुरदया को „ बहुत गावै बजावै नाचै नैन
 उलारै ।
 १८ कजाकोग को „ झूठ बोलै मीठा रहै स्वारथ रत ।
 १९ उचालंभ को „ ज्ञान ध्यान गुरु सद्द कुछ न रखै ।
 २० दया-भवन को „ नीके कपरा खाना बिछौना नीक
 बसिबो ।
 २१ ईस-भोग को „ देव पूजै फूल पत्र चढ़ावै पीछे
 द्रव्य माँगै ।
 २२ कामिनि-जोग को „ भले मनुष्यन में रहै ऊँचे संग बैठै
 नीचे संग न करै अच्छी बात
 कहै और प्रीति न तोरै ।
 २३ मोहजार को „ कुबचन भाखै पहिले दे पीछे माँगै
 माया तकै ।
 २४ नौजोग को „ तरंग बाहिर मन भरमै शोक में
 रहै ।
 २५ भँवर-जोग को „ मीठा बोलै कौड़ी जाते प्रान जाय ।
 ॥ चौपाई ॥
 देखौ संतौ प्रकृति सुभाऊ । ये सुभाव घट माहिँ रहाऊ ।
 ॥ सोरठा ॥
 यह सुभाव घट माइँ, भिन्न भिन्न करि भाखिया ।
 लेखा अजब बनाइ, चीन्है सुरति सँवारि कै ॥
 ॥ चौपाई ॥
 घट भीतर नौ नारी भाखी । सो तुलसी ने देखा आँखी ॥
 ॥ नाड़ियन के नाम ॥

१ इड़ा	नाड़ी	३ सुषमना	नाड़ी
२ पिंगला	„	४ भामिनी	„

५ रमना	नाड़ी	८ हरि कामिनि	नाड़ी
६ करजाप	,,	९ बरना	,,
७ हंस-बदनी	,,		

॥ पाँच इंद्रियन के नाम ॥

१ अपान	इंद्री	४ उदान	इंद्री
२ प्रान	,,	५ व्यान	,,
३ समान	,,		

॥ इंद्रियन के बास ॥

- १ अपान का बास—नाभी में है ।
- २ प्रान का बास—मान सरोवर तट वार है ।
- ३ समान का बास—कलेजे में है ।
- ४ उदान का बास—कंठ में है ।
- ५ व्यान का बास—सब शरीर में है ।

॥ सोरठा ॥

इंद्री अर्थ बिचार, नाम भेद सब भाखिया ।

ठीका ठौर निहार, यह पुकार तुलसी कहा ॥

॥ चौपाई ॥

यह इंद्री का किया निषेदा । मन चीन्है सोइ जाने भेदा ॥
या की साखि सोत सब गाई । अब सुन्नन की कहैं लखाई ॥
बाइस सुन्न सोध हम लीन्हा । ताकर भिन्न भिन्न कहूँ चीन्हा ॥

॥ सुन्नन के नाम ॥

१ धुंधार	सुन्न	३ नौनार	सुन्न
२ सव्दार	,,	४ अजसार	,,

५ बिलंद	सुन्न	१४ पलक	सुन्न
६ सुखनंद	,,	१५ खलक	,,
७ अछरंद	,,	१६ फलक	,,
८ सबसंध	,,	१७ सरवाट	,,
९ ब्रह्मंड	,,	१८ दसघाट	,,
१० सबअंड	,,	१९ खिरकाट	,,
११ भौभंड	,,	२० अजआठ	,,
१२ नौखंड	,,	२१ सतलोक	,,
१३ अलख	,,	२२ परमोख	,,

॥ सोरठा ॥

बाइस सुन बर्तमान, जानि संत कोइ परखिहै ।
गगन गगन परमान, सुन्न सुन्न भिनि भिनि लखै ॥

॥ चौपाई ॥

सुन बाइस कौ भाखैँ लेखा । सो कोइ साध करै बिबेका^१ ॥
भिन्न भिन्न ग्रंथन मैँ गाई । बूझै वोही भेद जिन पाई ॥
सुन्न सुन्न निज निरनै भाखा । तुलसी निरखि देखि निज आँखा ॥

॥ सोरठा ॥

कह निरनै निरधार, सुन्न सुन्न बिधि यों कही ।
सुरति उतर गई पार, सुन बाइस वर भाखिया ॥

॥ चौपाई ॥

बाइस सुन का कहैँ बखाना । सुन्न सुन्न का ठौर ठिकाना ॥
जो जेहि सुन्न जौन अस्थाना । भाखैँ जोई सुन्न जेहि नामा ॥
सत्तलोक सत के तहँ राजा । रामायन मैँ भाख समाजा ॥
सत्त केत सत नाम कहइया । तासे निरगुन ब्रह्म जो भइया ॥
सोला निरगुन कहि कैँ भाखा । भिनि भिनि भेद कहैँ मैँ ता का ॥
एक सुन्न इक निरगुन होई । निरगुन सुन्न एक है सोई ॥

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ में "करि है पेवा" है ।

निरगुन चौधा चौधा सुन्नी । पंद्रा धर्म सुन्न है भिन्नी ॥
 सोला सुन्न निरंजन नामा । रचा ताहि ब्रह्मंड समाना ॥
 सत्तनाम से उपजा सोई । ऐसे सोला निरगुन होई ॥
 यह सब पिंड ब्रह्मंड के माई । सोला निरगुन सुन्न समाई ॥

॥ सोरठा ॥

छै सुन बाइस माहिँ, रहा भेद आगे कहौँ ।
 तुलसी निरखि निहार, सुन बाइस चढ़ि देखिया ॥

॥ मंगल ॥

सुन सुन री सखि, सैन बैन पिय के कहौँ ।
 बोलै मधुरे बोल, चोल चित्त मैं सहौँ ॥१॥
 छिन छिन रहौँ पिय पास, स्वाँस कहूँ नारुचै ।
 जैसे जल बिन मीन, तलफ मन^१ के बिचै ॥२॥
 सुन सखि चैन चिताव, भाव बिधि मैं मिली ।
 छूटी तन मन आस, पास पिय के चली ॥३॥
 चौधा भवन भौ पार, सार सुन मैं गई ।
 पुनि पंद्रा के पार, सार सोला सही ॥४॥
 सोला लोक मँझार, तार स्रुति से चखी^२ ।
 निराकार जहँ जोति, होत हिये मैं लखी ॥५॥
 सत्रा सुरति चलि चाल, ताल तट देखिया ।
 मान सरोवर घाट, हंस तहँ पेखिया ॥६॥
 एक हंस छबि तेज, कोटि रबि राजही ।
 सोभा भूमि अपार, सो हंस विराजही ॥७॥
 करि हंसन संग केल, सैल आगे चली ।
 आली अगम की साख, आँख हिये की खुली ॥८॥

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ में “मन” की जगह “जल” है जो अशुद्ध जान पड़ता है ।

(२) एक लिपि में “चखी” की जगह “पकी” है ।

सुन अठरा के माहिँ, जाइ निख देखिया ।
 आतम से परे भिन्न, परमातम पेखिया ॥९॥
 सुन्न उलट उन्नीस, चेति आगे चली ।
 खिरकी अजब अनूप, पुरुष ता मैं मिली ॥१०॥
 परे पुरुष पद चीन्ह, गई सुन बीस मैं ।
 सत्त पुरुष सुख धाम, सुन्न इक्कीस मैं ॥११॥
 गैब नगर पिय पार, सखी सतलोक ही ।
 चढ़ी अगमपुर धाइ, पाइ पति पै गई ॥१२॥
 सत्त पुरुष की पैज, सेज पति की लई ।
 गई भवन के माहिँ, पाइ जस जो कही ॥१३॥
 बाइस सुन बर्तमान, जान कोइ लेहुँगे ।
 कीनी जिन जिन सैल, संत सोइ कहँगे ॥१४॥
 तुलसी निज तन तूल, मूल मन मैं बसी ।
 जिन बूझा नहिँ भेद, बेद भौ मैं फँसी ॥१५॥

॥ सोरठा ॥

सुति पद परम निवास, चढ़ि अकास पति पै गई ।
 पिय पद सुरति बिलास, सेज बास जस जस कही ॥१॥
 पिय मोरे दीनदयाल, काटि जाल न्यारी करी ।
 अमर बुटी अज माल, सो पियाइ मो कै दई ॥२॥
 पिय पद पूर पियास, अमी पियाइ अमर करी ।
 सूरति अगम निवास, महल बास अपने करी ॥३॥

॥ दोहा ॥

पिय प्रभुता निज धाम, काम टहल मो कै कही ।
 रही भवन के माहिँ, अमल बास मो पै नहीं ॥

॥ सोरठा ॥

पृथ्वी पवन अकास, नीर नास सब होइंगे ।
 अगिन सूर अरु चंद्र, बंद बास पुनि पुनि नसै ॥

॥ चौपाई ॥

पिय संग अजर अमर भया बासा। आदि अंत हमरा नहिँ नासा ॥

॥ मंगल ॥

अमर बूटी मोरे यार, प्यार पिया ने दर्ई ।
 काटी जम की जाल, काल डर ना रही ॥१॥
 मै पिय मोर अनूप, रूप पिय में गई ।
 दरसै एकै नूर, सूर स्तुति से भई ॥२॥
 जुगजुग अमर अहवात^१, साथ पिय के सखी ।
 जावँ न आवौँ हाथ, साथ पिय के पकी ॥३॥
 नैतम निरखि निहारि, सार दसवँ वही ।
 आगे अजब अजूब, खूब खुलि कै कही ॥४॥
 पिय मोरे दीन-दयाल, चाल चीन्हा सही ।
 सुख सागर सुख चौज, मौज मुख से दर्ई ॥५॥
 अंड खंड ब्रह्मंड, कोई करता नहीं ।
 हमरा सकल पसार, सार हम से भई ॥६॥
 धरती गगन अकास, नास सब होइँगे ।
 अग्नि पवन जल नास, हमौँ हम रहैँगे ॥७॥
 ब्रह्मा वेद नसाय, बिस्नु सिव ना बचै ।
 बचै नहीं वैराट, कहनि कहौ को पचै ॥८॥
 कोई न पावै अंत, संत हम को लखै ।
 तुलसी बिधि बेअंत, अंत कहि को सकै ॥९॥

॥ सोरठा ॥

बाइस सुन बर्त्तमान, सुरति छान भिनि भिनि कही ।
 जानै संत सुजान, जिन चढ़ि देखा भेद सब ॥

^१“अहवात” सोहाग को कहते हैं—मुं० दे० प्र० की पुस्तक में “रहाथ” लिखा है जो ठीक नहीं जान पड़ता ।

॥ चौपाई ॥

तुलसी संत चरन बलिहारी । चढ़े अगम जिन सुरति सम्हारी ॥
 लखलख जसजस भेद सुनाई । साखी सद् ग्रंथ मैं गाई ॥
 महुँ पुनि चरन लागि लख बोला । जसजस कृपा संत कर खोला ॥
 संत चरन सुरति भइ चेरी । मति उन सबबिधि भाँति निवेरी ॥
 मैं उन की चरनन बलिहारी । मोहिसेँ अजान जान कियो लारी ॥
 सुन्न सुन्न बाइस कर लेखा । खुलि हिये नैन सुरति से देखा ॥
 और सुन्न का भाखैँ लेखा । कोइ निज संत सुरति से देखा ॥
 तुलसी बूझी मोर अबूझी । जो कोइ संत सैल कर सूझी ॥
 मैं अपनी गति कसकस भाखी । कहँ संत जिन देखी आँखी ॥
 मैं किंकर उन कर निज दासा । जिन जिन देखा अगम तमासा ॥
 सोइ सोइ देखि देखि कै भाखी । नैन से देखि पेखि उर आँखी ॥
 छै सुन का पुनि भेद बताऊँ । न्यारा भिन्न भिन्न दरसाऊँ ॥
 कौन सुन्न मैं कौन निवासा । ता कर भेद कहैँ परकासा ॥
 प्रथम सुन्न मैं है निःनामी । ता की गति मति संतन जानी ॥
 दूजी सुन का भाखैँ लेखा । जहँवाँ सत्तनाम को देखा ॥
 तीजी सुन्न सद् एक होई । सुरति सैल कोइ संत बिलोई ॥
 चौथी सुन्न कहैँ समझाई । पारब्रह्म तहँ रह्यो समाई ॥
 संत ताहि परमात्म भाखी । सो पुनि देखा हिये की आँखी ॥
 पंचम सुन का भेद बताऊँ । पूरन ब्रह्म जीव तेहि नाऊँ ॥
 ता को आत्म वेद बखाना । जीव नाम आत्म कर जाना ॥
 षटवीँ सुनि मन तन केमाई । इंद्रो संग तास लिपटाई ॥
 परमहंस तेहि ब्रह्म बतावै । नेतहि नेत बेद गोहरावै ॥
 सुन तेहि मन कै ब्रह्म बखाना । ता को नाम निरंजन जाना ॥

(१) मुं० दे० प्र० को पुस्तक में इस चौपाई की दूसरी कड़ी यों है—“अहं ब्रह्म करि कै गोहरावै” ।

येही निरंजन जोति कहाई । ब्रह्माबिस्नुसिवसुत है ताही ॥
 तिन पुनि रचा पिंड ब्रह्मंडा । सातौ दीप और नौखंडा ॥
 जोति निरंजन इनको जानी । ता को संतन काल बखानी ॥
 यह जम काल जाल जग डारा । ज्यों धीमर मछरी गहि मारा ॥
 दस औतार निरंजन काला । बाँधे जीव कर्म जग जाला ॥
 तीरथ बरत नेम अरु धरमा । कर्म भाव कहियत है रामा ॥
 ता को जगत जपै मन लाई । बार बार भरमै भव माहीं ॥
 जग सब अंध फंद नहिं बूझै । अंधा भया हिये नहिं सूझै ॥

॥ दोहा ॥

आदि अंत का भेद, कह तुलसी देखा सही ।
 लेखा अगम अलेख, लखि अगाध अदबुद कही ॥

॥ छंद ॥

तुलसी गति गाई अगम सुनाई । सुन्न सुन्न भिन भिन्न कही ॥
 जस जस जेहि लेखा निज निज देखा । आदि अंत गति सार मई ॥
 संतन गति गाई महुँ पुनि पाई । जो उत्पति सब आदि भई ॥
 जिनही जिन जानी सबहि बखानी । तुलसी उनके लार लई ॥

॥ सौरठा ॥

सब ये कहा बिचार, सार पार गति गाइकै ।
 बूझै बूझनहार, जिन ये चाखा अगम रस ॥१॥
 तुलसी तिरन^१ समाने, अगम भान घटि लखि परा ।
 सूझा निज घर धाम, यह अनाम गति यें कही ॥२॥

॥ चौपाई ॥

नभ घट भूमी भान दिखाना । लखि लखि लखा भेद जिन जाना ॥

॥ सौरठा ॥

घट भूमी बिच भान, जानि भेद भिन जिन कही ।
 सखि सुन देस बयान, रमक रीति उलटी लखी ॥

॥ कहेरा ॥

सुन हो सखी इक दिसवा । भूमी ऊँगै भान ।
 दिसवा की उलटी रीती । साधू पालै प्रीति ॥टेक॥
 मछरी गगन पर गाजा । चंदा चुनै नाम ।
 दिसवा उरध-मुख कुइया । गइया चुगै चाम ॥१॥
 गगन उठै धधकारी । धरै सूरति ध्यान ।
 खंभा न महल अटारी । प्यारी पिव धाम ॥३॥
 तारा अवर नहिँ पानी । बानी उठै बिन तान ।
 खिरकी खुली बिन द्वारे । पारे परे ठाम ॥४॥
 नइया कुटी भौ पारा । उतरै बिन दाम ।
 तुलसी अगम गम जानी । सुति पायो निज नाम ॥५॥

॥ सोरठा ॥

साहिब एक अनाम, अगम धाम संतन लखा ।
 भखा भेद जिन जान, तिन तिन बरनि सुनाइया ॥

॥ चौपाई ॥

अब अनाम इक साहिब न्यारा । सुन्न औ महासुन्न के पारा ॥
 वो साहिब संतन कर प्यारा । सोइ घर संत करै दरबारा ॥
 वा घर का कोइ मरम न जाने । नानक दासकबीर बखाने ॥
 दादू और दरिया रैदासा । नाभा मीरा अगम बिलासा ॥
 और अनेक संत कहि गाये । जे जे अगम पंथ पंद पाये ॥
 तुलसी मैं चरनन चित चेरा । उनरज चरनन कीन्ह निघेरा ॥

॥ सोरठा ॥

संत चरन निज दास, तुलसी ताहि बिचारिया ।
 पायौ निज घर वास, आदि अनामी लखि कह्यो ॥

बरनन चार गति बैराग

॥ चौपाई ॥

अब बैराग जोग गति गाऊँ । ज्ञान भक्ति भिनि भिनि दरसाऊँ ॥
 चारि गती बैराग बताऊँ । जोगी चारि गती गति गाऊँ ॥

तीनि ज्ञान का भेद बताई । चौथा ज्ञान जगत जग माई ॥
 तेरा भक्ति भेद बतलाऊँ । भिन्न भिन्न कर कहि समुझाऊँ ॥
 न्यारा भेद भाव सब केरा । जो जस जिन का भया निबेरा ॥
 जो जिन की करनी जस भाँती । सो सब संतन कही सनाथी ॥
 मैं रज पावन उन कर चेरा । निरनय कहौँ छानि इन केरा ॥

॥ सौरठा ॥

भक्ति ज्ञान और जोग, भोग भाव सब बिधि कहौँ ।
 जो जेहि गति जस भोग, सो तस कहौँ बिचारि कै ॥

॥ प्रथम वैराग ॥

॥ चौपाई ॥

अब वैराग तीनि गति गाऊँ । भाखौँ भेद भिन्न दरसाऊँ ॥
 बेरक्ती वैराग सुनाऊँ । ता कर चिन्ह भिन्न बतलाऊँ ॥
 माया मोह जगत नहिँ भावै । काम रु क्रोध लोभ नहिँ लावै ॥
 और जगत संग रहै उदासी । जग संसार करत सब हाँसी ॥
 त्यागी अति संतोष समावा । भूख प्यास निद्रा न सतावा ॥
 और अनेक भाँति रस त्यागी । बन बसि रहै नाम अनुरागी ॥
 बिन सतगुरु धूरि सब जाना । संत सुरति बिन भरमै खाना ॥
 जो कोइ त्याग लाग मन कीन्हा । संगल दीप भोग तेहि दीन्हा ॥
 जो जेहि त्याग भाग जस पावा । सुरति सब्द बिन भौ मैं आवा ॥

॥ द्वितीय वैराग ॥

॥ चौपाई ॥

परम जोग वैराग बताऊँ । रहनी चाल ताहि दरसाऊँ ॥
 अष्टकँवल उलटै हिये माई । उलटै कँवल तत्त मन लाई ॥
 निस दिन तत्त मती गति राखै । पाँचौ तत्त गती सोइ भाखै ॥

(१) विरक्ति ।

तब तन छूटे तत्त समाई । चारि तत्त जिव उपजै जाई ॥
फिर तन छूटै खानि समाना । सो पुनि करै जो लेइ निदाना ॥

॥ त्रितीय बैराग ॥

॥ चौपाई ॥

त्याग बैराग कै बरनि सुनाई । छूटै देह खानि गति पाई ॥
जो जस त्याग भोग तन तैसा । खान पान तन पावै जैसा ॥

॥ चतुर्थ बैराग ॥

॥ चौपाई ॥

तन त्यागी बैरागी भाई । जो जेहि लिया देन सोइ जाई ॥
बार बार छूटै तन जाई । छूटै तन तहँ गर्भ समाई ॥
बहि बहि देइ खाइ पुनि जाई । ऐसे भर्म खानि भरमाई ॥
बिना सुरति नहिँ पावै पारा । भरमै भोग परै भौ धारा ॥

॥ सारठा ॥

चारौ गति बैराग, सुरति लाग न्यारी रही ।
सत मत गति कोइ जाग, संत सरनि उबरा सोई ॥

वरनन जोग

॥ प्रथम जोग ॥

॥ चौपाई ॥

चारौ गति बैराग बखाना । आगे कहैं जोग संधाना ॥
पिरथम परम जोग गति गाऊँ । भिन्न भिन्न तेहि को दरसाऊँ ॥
मुद्रा पाँच अवस्था चारी । तीनि ज्ञान पुनि बानी चारी ॥
सहस कैवलदल सुरति लगावै । आतम तत्त अकास समावै ॥
पुनि तन छुटि पावै नर देही । भोगभुगति पुनि भव रस लेही ॥
पावै मुक्ति बास कर चीन्हा । मुक्ति भोग पुनि होइ अघोना ॥

॥ द्वितीय जोग ॥

॥ चौपाई ॥

दूजा जोग कहौँ समझाई । इड़ा पिंगला सुषमनि माई ॥
 बंक नाल पट मारग जाई । मन भया भिन्न सुन्न के माई ॥
 देखै जोगति निरखि निज नैना । तन छूटै सुपने की सैना ॥
 जो कछु कर्म भाव जग कीन्हा । छूटै देह भोग फल लोन्हा ॥
 सुरति सब्द बिन भये अवीन्हा । ता सौँ हो गये जोग अधीना ॥
 बिन सतसंग भेद नहिँ पावै । ता ते कर्म भोग भव आवै ॥

॥ सोरठा ॥

जोग जुगति गति गाइ, नहिँ अकाय गति पायऊ^१ ।
 बिन सतसंग नसाइ, सुरति सब्द चीन्हे बिना ॥१॥
 ज्ञान गती कथि गाइ, जो अघाइ आगे कही ।
 ताहि पाइ मति माई, सो तुलसी सब बिधि कही ॥

बरनन ज्ञान

॥ प्रथम ज्ञान ॥

॥ चौपाई ॥

अब सुनु ज्ञान ठान गति गाऊँ । ता का भेद भाव बतलाऊँ ॥
 रेधक पूरक कुंभक कहिये । ता का भेद सबै सुनि लैये ॥
 चारि अवस्था तन में भाखो । तुरिया तत्त चारि अभिलाखो ॥
 परमहंस ता की मति जाना । मन करता को ब्रह्म बखाना ॥
 जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति कहाई । तुरिया चौथी भेद न पाई ॥
 तुरियातीत बसै बोहि पारा । सुनि पुनि है मन का व्यौहारा ॥
 मनमत चलै मान मद माई । मन करता को ब्रह्म बताई ॥
 ताते भौ गति मति नहिँ पावै । बार बार भौ माहिँ समावै ॥

(१) मं० दे० प्र० के पाठ में "पायऊ" की जगह "गायऊ" है जो अशुद्ध जान पड़ता है ।

सतगुरु सब्द भेद नहिँ जानै । आपो आप ब्रह्म मन मानै ॥
सास्तर सिंध सार बतलावै । ता ते भौजल पार न पावै ॥
चीन्है संत सुरति गति न्यारी । तौ पुनि उत्तरै भौजल पारी ॥
आपा आप पाप गति खोवै । तब सतसंग संत गति जोवै ॥

॥ द्वितीय ज्ञान ॥

॥ चौपाई ॥

औरहि ज्ञान सुनौ जग केरी । वेद पुरान जाल भौ बेरी ॥
पंडित पढ़ पढ़ ज्ञान सुनावै । आदि गती गम भेद न पावै ॥
झूठी आस बास सब केरी । फिरि फिरि स्वाँस आस भौ बेरी ॥
जो जो कर्म करै सोइ पावै । बार बार भौ भटका खावै ॥
मन में मान मोट कर जानै । ता ते परै नरक की खानै ॥
भक्तो भाव भेद नहिँ पावै । ऊँची जाति मान मन लावै ॥
साध संत मन में नहिँ आवै । ऊँचा ज्ञान आप ठहरावै ॥
नीचा होइ संत को जानै । संत कृपा कछु जानै आनै ॥
संतन भेद वेद से न्यारा । नोच होइ पुनि पावै सारा ॥
ऊँचा मान सदा मन राखै । सोइ सब जगत जीव कह भाखै ॥
पूजन अपनी चाल बतावै । ऐसे सकल जीव भरमावै ॥

॥ सारठा ॥

यहि बिधि जग मत ज्ञान, पंडित भूले भरम में ।
बाक ज्ञान परमान, संत भेद चीन्है नहीं ॥

बरनन भक्ति

॥ चौपाई ॥

अब सुनु भक्ति भाव करलेखा । रामायन में कीन्ह बिबेका ॥
भक्ति भाव नौ बरनि सुनाई । ता से भिन्न चारि पुनि भाई ॥
नौ फल भाव वेद^१ बतलावै । जो जस करै भोग तस पावै ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में 'वेद' की जगह 'भेद' चौपाई ३ में और

नौ की राह मुक्ति नहीं पावै । दसवीं अबिरल भक्ति^१ लखावै ॥
 एकादस अनुपावन लेई । बार बार मुक्ती बर देई ॥
 भेद भक्ति कर भाखौं लेखा । इष्ट भाव मन बसै बिबेका ॥
 अब अभेद का भेद अभेदा । ता को मरम न पावै बेदा ॥
 कोइ कोइ साथ संत गति पाई । जिन की सूरति सद्द समाई ॥
 सूरति सैल करै असमाना । जोगी पंडित मरम न जाना ॥
 परमहंस सन्यासी भाई । उन का मरम नहीं उन पाई ॥
 जगत जाल संसार बिचारा । उन की गति कोइ पावै न पारा ॥

॥ सोरठा ॥

तेरा भक्ति बयान, सो प्रमान संतन कही ।
 तुलसी तनहिं बिचारि, सुरति भेद समझै कोई ॥१॥
 नौ जग माहिं पसार, दसवीं कछु कछु भिन्न है ।
 एकादस मुक्ति मँभार, द्वादस गति मति मुक्ति मय^२ ॥२॥
 अब अभेद गति गाइ, तेरह येहि विधि यों कही ।
 ये साधन के माई, सुरति सद्द जा ने लखी ॥३॥

॥ छद् ॥

चारौ बैरागा जोग समाधा । तीनि ज्ञान गति गाइ दई ॥
 नौ चारौ भक्ती जो निज उक्ती । भाषि भेद सब गाइ कही ॥
 जोई जिन जानी संत बखानी । चरन चेत चित लाइ लई ॥१॥
 सूरति सर चैती छाँड़ि अचेती । सुरति सैल नभ माहिं लई ॥
 फोड़ा असमाना निरखि ठिकाना । पछिम किवारी द्वार गई ॥२॥
 परमात्म पाया जीव छुड़ाया । पारब्रह्म पद कँवल भई ॥
 कँवला निज फूला मिटि गया दूला । जीव गती तजि ब्रह्म भई ॥३॥
 आगे इक द्वारा अगम पसारा । सत्तलोक बोहि नाम कही ॥
 वहाँ है सतनामा ब्रह्म न जाना । वे सत साहिब अगम सही ॥४॥

^१“भक्ति” की जगह “मुक्ति” चौपाई ४ में दिया है जो आगे के वर्णन से अशुद्ध जान पड़ता है । (२) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में “मय” की जगह “मन” है ।

तीनों से न्यारा लोक पसारा । चौथे पद के पार वही ॥
 जहँ है निःनामी कोउ न जानी । तीनों पद के पार रही ॥५॥
 कहैं अगम अनामी ठीक न ठामी । संतन जानी सार सही ॥
 अंबर असमाना मही न भाना । चाँद सुरज तत तारे नहीं ॥६॥
 पानी नहिँ पवना अग्नि न भवना । बेद भेद गति नाहिँ लई ॥
 ब्रह्मा नहिँ बिस्ना राम न किस्ना । सिव सिद्धी नहिँ पार लई ॥७॥
 निर्गुन नहिँ सर्गुन नहिँ अपवर्गुन । पिंड ब्रह्मंड दोउ नाहिँ कही ॥
 जोती नहिँ सोती अगम न होतो । पारब्रह्म की आदि नहीं ॥८॥
 नहिँ कार अकारा नहिँ निरकारा । सत्त नाम सत्त सत्त सही ॥
 नहिँ नाम अनामी तुलसी जानी । जाइ समानी सार मई ॥९॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी अगम अनाम, अगत भेद का से कहैं ।
 कोउ न मानै बात, संत अंत कोउ ना लखै ॥१॥
 निगम न पावै बेद, नेति नेति गोहरावही ।
 ब्रह्म न जानै भेद, सत्त नाम निज भिन्न है ॥२॥
 एक अनीह^१ अनाम, संत सुरति जानै यही^२ ।
 वे पहुँचे वोहि धाम, सो अनाम गति जिन कही ॥३॥
 तुलसी अगम बिचार, सार पार गति पद लखा ।
 वह अलेख का ठाम, तुलसी तरक बिचारिया ॥४॥
 सुरति अटा के पार, आठ अटारी अधर मैं ।
 तुलसिदास लियौ सार, सुरति सिंध से भिनि भई ॥५॥

॥ चौपाई ॥

आठ अटारी सुरति समानी । मंगल ठुमरी करी बखानी ।
 जस जस सूरति चढ़ी अटारी । तस तस बिधि मैं भाखी सारी ॥

(१) बेफ़िकर । (२) मुं० दे० प्र० के पाठ में 'जानै यही' को जगह 'वहाँ जावही' है ।

॥ मंगल ॥

आठ अटारी महल, सुरति चढ़ि चाखिया ।
 ठुमरी माहीं भेद, भाव सब भाखिया ॥१॥
 संत पंथ का अंत, साध कोइ बूझिहै ।
 प्यारी पुरुष मिलाप, साफ सुति सूझिहै ॥२॥
 जस जस मारग रीति, राह समझाइया ।
 प्यारी अटारी माहिँ, जाइ सोइ गाइया ॥३॥
 मन मथ कीन्हा चूर, सूर सति ले चढ़ी ।
 गुरु पद पदम मँझार, पुरुष पै जा खड़ी ॥४॥
 विधि विधि ठुमरी माहिँ, गाइ तुलसी कहो ।
 जो कोइ चोन्है भेद, संत सोई सही ॥५॥

॥ सोरठा ॥

ठीका ठुमरी माहिँ, आठ अटारी अधर की ।
 सूरति पदम बिलास, विधी बयालिस पद मिली ॥

॥ ठुमरी १ ॥

अली अटकी सुरति अटारी । मन हटकर हारा री ॥टेक॥
 यह अँग संग भंग ले लटकी । सूली स्वर्ग नर्क भौ भटकी ॥
 दीन्ही सतगुरु घट की तारो । चटकी मति फटक फटा री ॥१॥
 ये ले लार पार सुति सटकी । निरखी अलख आदि घट घट की ॥
 हक लख^१ लागी गिरह करारो । हिये खटकी कसक कटारी ॥२॥
 नौलख खेल कला ज्योँ नटकी । सूरति सहसकँवल भर भटकी ॥
 लीला सिखर निकर नित न्यारी । दधि मटुकी घिरत मठा री ॥३॥
 तुलसी तोल कही तिल तट की । भइ धुनि रंरकार रस रट की ॥
 ये दस रस बस सुरति सँवारी । पिउ पटकी खोलि किवारी ॥४॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में “लक” है जिस का अर्थ कहीं नहीं मिलता, अलबत्ता “लक” शब्द के अर्थ संस्कृत में ‘बखने’ और ‘पाने’ के हैं।

॥ ठुमरी २ ॥

भाँभरी पिय भाँकि निहारी । सखि सतगुरु की बलिहारी ॥
दीन्हे दूग सुरति सँवारी । चीन्हा पद पुरुष अपारी ॥१॥
चली गगन गुफा नभ न्यारी । जहँ चंद न सूर सिहारी ॥
तुलसी पिय सेज सँवारी । पैढ़ी पलँग सुख भारी ॥२॥

॥ ठुमरी ३ ॥

सलिता जिमि सिंध सिधारी । सूरति रत सब्द बिचारी ॥
जहँ सुन्न न सुन्नी न्यारी । मत मोन महासुन पारी ॥१॥
नहिँ गुन निरगुन मत झारी । निज नाम निअच्छर भारी ॥
जहँ पिंड ब्रह्मंड न तारी । तुलसी जहँ सुरति हमारी ॥२॥

॥ ठुमरी ४ ॥

ए अली आदि अंत अधिकारी । पिय प्यारी प्रीति दुलारी ॥
हम कीन्हा खेल पसारी । सब रचना रीति हमारी ॥१॥
करता नहिँ काल पसारी । हम अगम पुरुष की नारी ॥
ठुमरी सोइ संत बिचारी । तुलसी नित नीच निहारी ॥२॥

॥ ठुमरी ५ ॥

ए गुइयाँ पिय हम हम पिय एकी । कोइ फरक न जानौ नेकी ॥
कोइ बूझै संत बिबेकी । जोइ अगम निगम नहिँ लेखी ॥१॥
जिन अटल अटारी पेखी । पिय रूप न रेख अदेखी ॥
कोइ कंथ न पंथ न भेषी । तुलसी सब मारग छेकी ॥२॥

॥ सोरठा ॥

ठुमरी ठौर ठिकान, अगम भान सुति पद लखा ।
चखा अमर रस ज्ञान, पार पुरुष पद मैं मिली ॥१॥
पिया भवन के माइँ, जाइ जोइ जस जस कही ।
रही पुरुष पद छाइ, लई आदि अपने गई ॥२॥

॥ दोहा ॥

पुरुष पदम सम सोइ, तुलसी सूरति लखि चली ।
ज्यौँ सलिता जल धार, लार सुरति सब्दै मिली ॥

॥ सारठा ॥

हम पिय पिय हम एक, लखि बिबेक संतन कही ।
 भई अगम रस भेष, देखा दुग पिय एक होइ ॥१॥
 हमरा सकल पसार, बार बार हमहीं कही ।
 संत चरन की लार, आदि अंत तुलसी भई ॥२॥

॥ दोहा ॥

निरखा आदि अनादि, साधि सुरति हिये नैन से ।
 करै कोइ संत बिचार, लखि दुखीन सुति सैल से ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी निरखि देखि निज नैना । कोइ कोइ संत परखि है बैना ॥
 जो कोइ संत अगम गति गाई । चरन टेकि पुनि महुँ सुनाई ॥
 अब जीवन का कहौं निबेरा । जा से मिटै भरम बस बेरा ॥
 जब या मुक्ति जीव की होई । मुक्ति जानि सतगुरु पद सेई ॥
 सतगुरु संत कंज मैं बासा । सुरति लाइ जो चढ़ै अकासा ॥
 स्याम कंज लीला गिरि सोई । तिल परिमान जानि जन कोई ॥
 छिन छिन मन को तहाँ लगावै । एक पलक छूटन नहिँ पावै ॥
 सुति ठहरानी रहै अकासा । तिल खिरकी मैं निस दिन बासा ॥
 गगन द्वार दीसै इक तारा । अनहद नाद सुनै भनकारा ॥
 अनहद सुनै गुनै नहिँ भाई । सूरति ठोक ठहर जब जाई ॥
 चूवै अमृत पिवै अघाई । पीवत पीवत मन छकि जाई ॥
 सूरति साथ संध^१ ठहराई । तब मन थिरता सूरति पाई ॥
 सूरति ठहरि द्वार जिन पकरा । मन अपंग होइ मानै जकरा ॥
 चमकै बीज गगन के भाई । जबहि उजास पास रहै छाई ॥
 जस जस सुरति सरकि सत द्वारा । तस तस बढ़त जात उँजियारा ॥
 सेत स्याम सुति सैल समानी । झरि झरि चुवै कूप से पानी ॥
 मन इस्थिर अस अमी अघाना । तत्त पाँच रँग बिधी बखाना ॥

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ में “संध” की जगह “संग” है ।

स्याही सुरख सपेदी होई । जरद जाति जंगाली सोई ॥
 तिल्ली ताल तरंग बखानी । मोहन मुरली बजै सुहानी ॥
 मुरली नाद साध मन सेवा । बिष रस बादि बिधी सब खोवा ॥
 खिरकी तिलभरि सुरति समाई । मन तत देखि रहै टक लाई^१ ॥
 जब उजास घट भीतर आवा । तत्त तेज और जोति दिखावा ॥
 जैसे मंदिर दीप किवारा । ऐसे जोति होत उँजियारा ॥
 जोति उजास फाटि पुनि गयऊ । अंदर चंद तेज अस भयऊ ॥
 देखै तत सोइ मनहि रहाई । पुनि चंदा देखै घट माई ॥
 चंद्र उजास तेज भया भाई । फूला चंद्र चाँदनी छाई ॥
 सूरति देखि रहै ठहराई । ज्यों उजियास बढ़त जिमि जाई ॥
 ज्यों ज्यों सूरति चढ़ि चलि गयऊ । सेता ठौर ठाम लख लयऊ ॥
 देख सैल ब्रह्मंड समाई । तारा अनेक अकास दिखाई ॥
 महि अरु गगन देखि उर माई । और अनेकन बात दिखाई ॥
 कछु कछु दिवस सैल अस कीन्हा । ऊगा भान तेज को चीन्हा ॥
 तारा चंद्र तेज मिटि गयऊ । जिमि मध्यान भान घट भयऊ ॥
 ज्यों दोपहर गगन रबि छाई । तैसे उजास भया घट माई ॥
 ता के मधि मैं निरखि निहारा । घट मैं देखा अगम पसारा ॥
 सात दीप पिरथी नौ खंडा । गगन अकास सकल ब्रह्मंडा ॥
 समुंदर सात प्राग पद बेनी । गंगा जमुना सरसुती बहिनी ॥
 औरै नदी अठारा गंडा । ये सब निरखि परा ब्रह्मंडा ॥
 चारौ खानि जीव निज होई । अंडज पिंडज उपमज सोई ॥
 अस्थावर चर अचर दिखाई । यह सब देखा घट के माई ॥
 भिनि भिनि जीवन कर बिस्तार । चारि लाख चौरासी धारा ॥
 और पहार नार बहुतेरा । जो ब्रह्मंड मैं जीव बसेरा ॥
 कछु कछु दिवस सैल अस कीन्हा । तीनि लोक भीतर मैं चीन्हा ॥

(१) मं० दे० प्र० के पाठ में "टक लाई" की जगह "टकराई" है ।

जो जग घट घट माहिँ समाना । घट घट जग जिव माहिँ जहाना ॥
 ऐसे कइ दिन बीति सिराने । एक दिवस गये अधर ठिकाने ॥
 परदा दूसर फोड़ि उड़ानी । सुरति सुहागिनि भइ अगमानी ॥
 सब्द सिंध मै जाइ सिरानी । अगम द्वार खिरकी निघरानी ॥
 चढ़ि गइ सुरति अगम ठिकाना । हिये लखि नैना पुरुष पुराना ॥
 ता मै पैठि अधर मै देखा । रोम रोम ब्रह्मंड का लेखा ॥
 अंड अनेक अंत कछु नाहीं । पिंड ब्रह्मंड देखि हिये माहीं ॥
 जहँ सतगुरु पूरन पद बासी । पदम माहिँ सतलोक निवासी ॥
 सेत बरन वह सेतइ साँई । वहँ संतन ने सुरति समाई ॥
 सत्तहि लोक अलोक सुहेला । जहँवाँ सुरति करै निज केला ॥
 सुरति संत करै कोइ सैला । चौथा पद सत नाम दुहेला ॥
 परदा तीसर फोड़ि समानी । पिंड ब्रह्मंड नहीं अस्थानी ॥
 जहँवाँ अगम अगाधि अघाई । जहँ की सत गति संतन पाई ॥
 महुँ उन लार लार लरकाई । उन सँग टहल करन नित जाई ॥
 महुँ पुनि चीन्ह लीन्ह वह धामा । बरनि न जाइ अगमपुर ठामा ॥
 निःनामी वह स्वामी अनामी । तुलसी सुरति सैल तहँ धामी ॥
 जो कोइ पूछै तेहि कर लेखा । कस कस भाखौँ रूप न रेखा ॥
 तुलसी नैन सैन हिये हेरा । संत बिना नहिँ होइ निवेरा ॥
 निज नैना देखा हिये आँखी । जस जस तुलसी कहि कहि भाखी ॥

॥ सोरठा ॥

पिंड माहिँ ब्रह्मंड, ताहि पार पद तेहि लखा ।
 तुलसी तेहि की लार, खोलि तीनि पट भिनि भई ॥१॥
 तुलसि संत अनुकूल, कँवल फूल ता मै धसी ।
 लसी जाइ सत मूल, फँसी पाइ सतगुरु सरन ॥२॥
 खुलि गये अगम किवार, लील सिखर के पार होइ ।
 गिरा गगन के पार, पाइ सैल अस बिधि कही ॥३॥

अंडा फूट अकास, होइ निरास सूरति चली ।
 अगम गली निज पाइ, तहँ आसन तुलसी कियौ ॥४॥
 हिरदे हरष समाइ, पाइ ताहि गति कस कही ।
 कोइ कोइ संत समाय, ताही तँ गति तस भई ॥५॥
 ॥ छंद ॥

तीनों पट बाहिर कहूँ नहिँ जाहिर । अगम अगत की राह लई ॥
 खोला वह द्वारा अगम पसारा । सतगुरु पुर के पार गई ॥१॥
 सतलोक दुहेला कीन्ही सैला । अगम अकेला लार भई ॥
 ता से पद न्यारा निरखि निहारा । तासु अनामी नाम नहीं ॥२॥
 फूला निज कँवला सूरति सम्हला । नील सिखर तन तार लई ॥
 अंडा निज फूटा दस दिस टूटा । दूटि सूरति असमान गई ॥३॥
 तुलसी तन सैला घट बिच खेला । संतकृपा से राह लई ॥
 ब्रह्मंड न पिंडा नहिँ नौ खंडा । रबिचंदा तहँ तार नहीं ॥४॥
 पानी नहिँ पवना अगिन न भवना । गगन गिरा के पार भई ॥
 देखा सत्त सैला अगम अकेला । सूरति केला सब्द भई ॥५॥
 तुलसी मत पाई संत लखाई । पास समाई गाइ कही ॥६॥
 ॥ सारठा ॥

तुलसी निरखि निहारि, नैन पार निज देखि कै ।
 यह अदेख की बात, जिन अदृष्टि हिरदे लखा ॥१॥
 तुलसी तुच्छ अबूझ, जबै सूझ सूरति लखी ।
 अलख खलक के पार, निःअच्छर वो है सही ॥२॥
 संत चरन पद धूर, तुलसी कूर कारज कियौ ।
 लिया अगम पद मूर, सूर संत अपना कियौ ॥३॥
 मैं उनकी बलिहार, लार लागि पारै कियौ ।
 चौथा पद निज सार, सो लखाइ संतन दियौ ॥४॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी मैं अति नीच निकामा । मैं अनाथ गति बूझि न जाना ॥
 मैं अति कुटिल कूर कुबिचारी । संत संत संत सरनि निरबारी ॥
 अब मैं अपना औगुन भाखी । निरनय जी^१ की कोइ नहिँ रखी ॥
 अपनी चाल गती गुन गाऊँ । मोहिँ सेँ अंधम और नहिँ नाऊँ ॥
 संत दयाल दीन-हितकारी । मोरे औगुन नाहिँ बिचारी ॥
 संत सरल चित सब सुखकारी । मो को पकरि हाथ निरबारी ॥
 कहँ लगि उनके गुन गति गाऊँ । मोर अचेत लखी नहिँ काहू ॥
 मोरी तपन ताप निज हेरा । तुलसी नीच का कीन्ह निबेरा ॥
 कोटिन जिभ्या जो मुख होई । तौ मैं बरनि सकैँ नहिँ सोई ॥
 कोटिन कल्प-बृच्छ जो होई । तौ सरवर पावै नहिँ कोई ॥
 तिन की तीनिलोकरजपावन । कस बरनौँ मोरे मन भावन ॥
 तिन कै भेद बेद नहिँ पावै । वोहू नेति नेति गोहरावै ॥
 दस औतार और तिरदेवा । वोहु न उनको पावै भेवा ॥
 कहँ लग कहौँ संत गति न्यारी । मोरी मति गति नाहिँ बिचारी ॥
 तीनि लोक का पटतर लाऊँ । उन सम तुलसी कहा दिखाऊँ ॥
 मैं मत त्राहि त्राहिकरि भाखी । ऐसी कै न बताऊँ साखी ॥
 संतन की गति कस कस गाऊँ । अस कोइ देखि परै नहिँ ठाऊँ ॥

॥ छंद ॥

मोरी मति नीची माहुर सींची । संत चरन के लार भई ॥
 करमन कर मैली बिष रस पेली । संत चरन चित जाइ बसी^२ ॥१॥
 मति महा अति रंका मन निःसंका । बिष रस कस की धार मई ॥
 कहँ लग गोहराऊँ अंत न पाऊँ । संत चरन की लार लसी ॥३॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "निरनय जी" के बदले "नेरे नजीक" दिया है जो ठीक नहीं मालूम होता । (२) मुं० दे० प्र० के पाठ में "जाइ बसी" की जगह "चाहि लई" है ।

दरसन पाये करम नसाये । पाप पुन्य सब छार भई ॥
मोहिँ निरमल कीन्हा दयानिधि चीन्हा । ऐसे सिंध दरियाव मई ॥४॥
तिनकी रज पावन तुलसी अपावन । मो से अधम को धाम दई ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी नीच निहार, संत सरन न्यारा किया ।
महुँ पुनि उतरौँ पार, संत चरन रज धूरि धर ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी मन निरमल भयो, सूरति सार सुधार ।
संत चरन किरपा भई, उतरौ भौजल पार ॥

॥ सोरठा ॥

घट रामायन सार, ये अगार गति यौँ कही ॥
बूझै बूझनहार, बिन सतगुरु पावै नहीं ॥

॥ दोहा ॥

सतगुरु चरन निवास, निस दिन सूरति बसि रही ।
संत चरन अभिलाष, पल छिन छिन छूटै नहीं ॥१॥
घट रामायन माहिँ, अर्थ भेद अंदर सही ।
रावन लंका राम, यह अकाम गति ना कही ॥२॥

॥ सोरठा ॥

दसरथ सीता नाहिँ, भरत चत्रगुन ना कह्यौ ।
ये निरखौ घट माहिँ, बाहिर गति मति भरम है ॥१॥
घट रामायन माहिँ, घट बिधिगति मति सब कही ।
परखै परम निवास, यह अकास अंदर मई ॥२॥

॥ चौपाई ॥

रावन राम भेद समझाई । रामायन सब घट बिधि गाई ॥
संतन की गति अगत अगोई । अगम निगम घर सुरति समोई ॥
संत गती गति वेद न जाना । सिम्रित सास्तर और पुराना ॥
पंडित भेष भक्त और ज्ञानी । जोगी परमहंस नहिँ जानी ॥
स्त्रावगं तुरक तोल नहिँ पाया । भरमे सबहि काल गोहराया ॥

॥ दोहा ॥

पंडित ज्ञानी भेष, यह अदेख गति ना लखी ।
स्वावग तुरक न देख, संत सार अंदर चखी ॥

॥ चौपाई ॥

ये सब भूल भाव गति गाई । तन भीतर काहू नहिँ पाई ॥
ये तन भीतर संतन देखा । यह अदेख गति कहैं अलेखा ॥
गंगा जमुना और त्रिवेनी । तन भीतर ब्रह्मंड की सैनी ॥
पृथ्वी पवन गगन आकासा । यह सब देखे घटहि निवासा ॥
पाँच तत्त जल अगिनिसमाना । पिंड माहिँ ब्रह्मंड बखाना ॥
रवि चंद्रा तारागन होई । और अनेक बिधान समोई ॥
बाहिर भर्म भेद गति गावैं । पाहन पानी से लौ लावैं ॥
तीरथ बरत जो चारौ धामा । यह सब पाप पुन्य निज कामा ॥
पूरब पच्छिम फिर फिरि धावैं । सत्त पुरुष की राह न पावैं ॥
सत्त पुरुष सत नाम कहाई । वह अनाम गति संतन पाई ॥
सत्त नाम से निरगुन आया । यह सब भेद संत बतलाया ॥
पाँच नाम निरगुन के जाना । निरगुन निराकार निरबाना ॥
और निरंजन है धर्मराई । ऐसे पाँच नाम गति गाई ॥
सोई ब्रह्म परचंड कहाई । ता को जपै जगत मन लाई ॥
दस औतार ब्रह्म कर होई । ता को कहिये निरगुन सोई ॥
तिन पुनि रचा पिंड ब्रह्मंडा । सात दीप पृथ्वी नौ खंडा ॥
सब जग ब्रह्म ब्रह्म करि गाई । आदि अंत की राह न पाई ॥
यह गतिमति बिधि मै पुनि भाखा । कोई जगत न सूझी आँखा ॥
यह बिधिसतमति भेद बताई । काहू के परतीत न आई ॥
कासी पंडित और अचारी । जोगी परमहंस ब्रह्मचारी ॥
कहै तुलसी कोइ भेद न पाया । यह सब भाव भेद भरमाया ॥

हाल काशी का

॥ दोहा ॥

तुलसी ग्रंथ पसार, कासी नगर सगरे भई ।
पंडित ज्ञानी भेष, जैनतुरक सब मिलि कही ॥१॥
तुलसी बाम्हन साध, गंगाजी पर रहतु है ।
निंदत सिम्रित बेद, यह अभेद गति कहतु है ॥२॥

॥ चौपाई ॥

सब पंडित मिलि मता उठाई । या को करिये कौन उपाई ॥
नैनू नाम इक पंडित भारी । तेहि पंडित मिलि सोच विचारी ॥
तुलसी नाम इक साध कहाये । जिन सब नेम अचार उठाये ॥
ग्रंथ बनाइ कीन्ह एक भाषा । तीरथ बरत एक नहिँ राखा ॥
वा कै भेद भाव सब लीजै । केहि विधि ज्ञान समझ तेहि कीजै ॥
स्यामा समझ एक बतलाई । रहत पास कोइ ताहि बुलाई ॥
पंडित एक कही समझाई । रहत अहीर सोइ भाखि सुनाई ॥
नाम जाति इक हिंदे अहीरा । निसि दिन आवै हमरे तीरा^१ ॥
सुनै कथा पुनि सेवा करई । रात दिवस बस पासै परई^१ ॥
नैनू मिलि सब बाम्हन भाई । तिनि पुनि हिंदे अहीर बुलाई ॥
सब पंडित अस पूछन लाई । कौन ज्ञान यह कहत गुसाँई ॥
बेद भेद मरजाद उठावै । सिम्रित सास्तर ना ठहरावै ॥
गंगा जमुना अंतर मानै । है परतच्छ ताहि नहिँ जानै ॥
पूजा पत्री और अचारा । तीरथ बरत कहै झूठ पसारा ॥
राम रहीम एक नहिँ मानै । यह कछु ठौर और कछु ठानै ॥

॥ दोहा ॥

दीनहा हिंदे जवाब, साफ बात विधि यै कही ।
गति सत संत अपार, पंडित विधि जानै नहीं ॥

(१) यह दोनों कड़ियाँ मुं० दे० प्र० की पुस्तक में नहीं हैं ।

॥ चौपाई ॥

हिरदे अहीर ज्वाब अस दीन्हा । संत गती कोइ बिरले चीन्हा ॥
 मैं तौ अपढ़ जाति अज्ञाना । तुम पंडित पढ़े बेद पुराना ॥
 संतन की गति कहौं बुझाई । तुमहुँ न बेद भेद नहिँ पाई ॥
 पढ़िपढ़ि पंडित पचिपचि हारी । बेद न भेद संत गति न्यारी ॥

॥ सोरठा ॥

नैनू कहै बिचार, यह निकाम कस भाखेऊ ।
 यह जड़ जाति गँवार, बेदन सौं न्यारी कहै ॥

॥ चौपाई ॥

नैनू सुनि पुनि मारनि धाये । पंडित और अनेक बुलाये ॥
 सब से कहै सुनौ तुम ज्ञाना । यह अहीर कस करत बखाना ॥
 सब पंडित मिलि यह बिधि ठानी । या की करौ प्रान की हानी ॥
 यह सब मिलि कर मता उठाई । हिरदे ऊपर लात चलाई ॥

॥ सोरठा ॥

तुरक तकी इक स्वार, जात हते दरबार को ।
 घोड़ा फेरि निहार, यह बिबाद कैसे भई ॥

॥ चौपाई ॥

सेख तकी इक तुरुक सवारा । ते पुनि जात हते दरबारा ॥
 सुन करि बात बाग उन मोड़ा । फेरि लगाम कीन्ह उन घोड़ा ॥
 सेख तकी पूछी पुनि बाता । तैं कहु कौन कौन सी जाता ॥
 केहि कारन यह भगरा होई । सो सब भेद कहौ बिधि सोई ॥

॥ सोरठा ॥

नैनू निरखि पुकार, सेख तकी को देखि कर ।
 ये का कहत गँवार, बिधि कुरान मानै नहीं ॥

॥ चौपाई ॥

नैनू कहै सुनौ मेहबाना । बेद कितेब न मानै पुराना ॥
 राम रहीम एक नहिँ मानै । पंडित काजी झूठ बखानै ॥

॥ सोरठा ॥

हिरदे कही बिचारि, सेख तकी जो तुरक से ।
तुम बूझौ दिल माहिँ, खुदा एक सब मैं कहौ ॥

॥ चौपाई ॥

हिरदे कहै तकी सुनु सेखा । सब मैं कहौ खुदा है एका ॥
गाय मार बकरी तुम खड़या । येहि किताब मैं कहुँ गुसँइयाँ ॥
सब मैं नूर मुहम्मद केरा । काटि गला पुनि पैहौ बैरा ॥
येही कितेब कुरान बखाना । जिन्दा को मुरदा करि जाना ॥
सोई मुसलमान है भाई । नबी नाम हर दम लौ लाई ॥
रोजा कर कर खून बिचारा । ये गुनाह नहिँ बक्सनहारा ॥
झूठा रोजा झूठ निवाजा । झूठा अल्ला करै अवाजा ॥
वा साहिब की राह न पाई । सब जहान में रहा समाई ॥

॥ सोरठा ॥

सेख तकी सुनि बात, जवाब स्वाल बोले नहीं ।
धर्मा जैनी जाति, संग बात कीन्ही सही ॥

॥ चौपाई ॥

धर्मा नाम जाति इक जैनी । उन सब सुनी हमारी कहनी ॥
धर्मा स्यावग कहै बिचारी । जैन मता है सब से भारी ॥
येमति आदि साधनहिँ जानै । तैं मत झूठा बाद बखानै ॥
चौबीसौ तीथंकर जानी । आदि नाथ हैं हमरे स्वामी ॥
तिनकी आदि कहा तुम जानौ । नाहक बेगुन बादि बखानौ ॥

॥ सोरठा ॥

हिरदे कहै सुनु बात, जैन मता पुनि सब कहौ ।
सुनौ भेद बिख्यात, आदि अंत सब समझि कै ॥

॥ चौपाई ॥

हिरदे कहै सुनौ हो भाई । आदि नाथ की आदि सुनाई ॥
जो तुम सुनौ कहौ बिधिनाता । हम सब कहैं सुनौ दै काना ॥

प्रथम जुगल्या धर्म बिचारी। आई छौँक भये सुत नारी ॥
 होते छौँक प्रान तेहि जाई। कन्या पुत्र भये तेहि ठाई ॥
 ता पीछे कुलकर की बाता। चित दे सुनौ कहौँ बिख्याता ॥
 चौधा कुलकर भेद बखाना। ता मैं नभ राजा इक जाना ॥
 मुरा देबि तेहि भाखौँ भेवा। जाकर ऋषबराय भये देवा ॥
 भागवत कहै ताहि अवतारा। तिन का सुनौ आदि निरबारा ॥
 ता ने तप कीन्हौ निरबाना। मुक्ति पाइ पुनि काल समाना ॥
 ऐसे भये और चौबीसा। पुनि पुनि आये मुक्ति पद ईसा ॥
 ता मैं प्रथम ऋषबदेव होई। भाखा तिन जग थापा सोई ॥
 आगे भेद न उनहूँ जाना। यह सुन सार भेद निरबाना ॥
 जग थापा पुनि धर्म चलाई। आदि पुरान मैं देखौ भाई ॥
 कह नौकार जाप बतलाई। जाकी बिधी कहौँ समझाई ॥
 जाप भेद मैं कहौँ पुकारी। दिल अपने मैं लेउ बिचारी ॥
 अरिहँत सिद्ध भाखि बिधि नामा। अरियानं उज्झानं जाना ॥
 लाये सर्व साध को कीन्हा। ये नौकार मंत्र उन लीन्हा ॥
 सुनि धरमा तब चकृत भयऊ। सब बरतंत जैन कै कहेऊ ॥

॥ दोहा ॥

सुनि धर्मा यह भेद, ये अभेद कछु भिनि कहै ।
 जैन मता समझाइ, ये अकाय कछु अगम है ॥

॥ चौपाई ॥

सेख तकी पंडित भये एका। धर्मा धर्म कि बाँधी टेका ॥
 ये तीनों तुलसी पै आये। हिरदे ऊपर बाँह चढ़ाये ॥
 और अनेक मूरख बहुतेरे। कोइ सूधे कोइ चलै अनेरे ॥
 हिंदे अहीर चले सब भारी। जहँ तुलसी ने कुटी सँवारी ॥
 हिंदे अहीर साथ भख भारी। तब तुलसी ने मता बिचारी ॥
 सब चलि आये कुटी के पास। जब तुलसी मन कियौ हुलासा ॥

उठि के चरन गहे सब केरे । कीन्ही दया दीन तन हेरे ॥
 बाम्हन पंडित धर्मा जैनी । सेख तकी से कीन्ही सैनी ॥
 नैनू पंडित सैन सँवारा । धर्मा हिये उठै जस भारा ॥
 यह दोनौ मिलि मता बिचारी । सेख तकी को आगे डारी ॥
 नैनू नोक टोक इक भारा । यह इनके हैं गुरु बिचारा ॥
 पूछो भेद कहैं निरबारा । इन कस भाखा झूठ पसारा ॥

॥ सोरठा ॥

हिरदे कहै निहोर, स्वामी तुलसी बिधि सुनौ ।
 मैं कछु कही न और, ये अबूझ बूझो नहीं ॥

॥ चौपाई ॥

हिरदे कहै सुनौ हो स्वामी । मैं कछु कही रीति गति ज्ञानी ॥
 नैनू पंडित कहै बिचारी । इन सब ज्ञान कही गति न्यारी ॥
 इन सब धर्म कर्म जग पेला । अस कस ज्ञान कहै यह चेला ॥
 इन सब बेद कितेब उठावा । जागी जैन नहीं ठहरावा ॥
 और अनेक बात नहिँ मानै । अस कह मंत्र सुनायौ कानै ॥
 तब तुलसी सुनि आदर कीन्हा । प्रीति भाव उठि आसन दीन्हा ॥
 दीन बिधी सब अपनी गाई । चरन परसि कै सीस चढ़ाई ॥
 मैं अनाथ हूँ तुम्हरौ बारा । छिमा करौ मैं दास तुम्हारा ॥
 मैं औगुन की खानि अपारा । तुम गुन सीतल अपरम्पारा ॥
 तुम पंडित मैं अपढ़ अयाना । करौ दया तुम कृपानिधाना ॥
 ये हिरदे कछु ज्ञान न पावा । औगुन ज्ञान जो तुम्हें सुनावा ॥
 सीतल भये धीर तब आई । सुनि अस बचन बैठि भुँइ माई ॥

॥ सोरठा ॥

तकी तुरक कह बात, तुलसी सुनियौ भेद अब ।
 सब हिरदे बिख्यात, जो गुनाह इन ने किया ॥

॥ चौपाई ॥

सेख तकी जब बचन सुनाई । तुलसी सुनियौ चित्त लगाई ॥

हिरदे कुफर बात सब कीन्हा । रोजा निमाज मेटि सब दीन्हा ॥
और कितेब कुरान उठाये । खुदा नबी कर खोज मिटाये ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी तकी बिचार, सब सँवारि बिधि मैं कहौं ।
कहुँ कुरान निरधार, जो किताब भाखी सबै ॥

सम्बाद साथ तकी मियाँ के

॥ चौपाई ॥

तुलसी कहै तकी सौं वाता । या का तकी सुनौ बिख्याता ॥
चौधा तबक कुरान बतावा । और चौबीस पीर पुनि गावा ॥
फजल मुहम्मद कीन्ह जहाना । आव ताब पट अवर निदाना ॥
तबक भिन्न चौधा बतलावौ । भिनि चौबीस पीर दरसावौ ॥
कौन तबक मैं कौन बयाना । सो तकी कहिये हक्क इमाना ॥
कौन तबक मैं नबी का बासा । तबक तबक का कहौ खुलासा ॥
सुनकर तकी जवाब अस दीन्हा । कहौं हक्क जो करौ यकीना ॥
अल्ला ने मुख कही जुबाना । जा से भये कितेब कुराना ॥
जाहिर किये पैगम्बर भाई । सब जहान खिलकत के माई ॥
कर सरियत सब राह चलाई । तकी कहै म्याँ तुलसी साँई ॥
खिलकत खबर जहान जनावा । पैगम्बर पर हुकम चलावा ॥
सरा^१ राह सरियत^२ की बाँधौ । अल्ला हुकम राह को साधौ ॥
मुसलमान जो नाम कहावै । हक्क इमान कुरान बतावै ॥

॥ तुलसी साहिब बाच ॥

॥ दोहा ॥

तकी तोल जाना नहीं, कहौ कुरान की बात ।
दिल दरियाफ्त अपने करो, जो कुरान बिख्यात ॥१॥
खुदा चून बेचून^२ है, अस अस कहत कुरान ।
बिन जुबान अल्ला मियाँ, कस कस किया बखान ॥२॥

अल्ला अलिफ जुवान, बिना बदन जाहिर नहीं ।
जुवाँ बदन के माहिँ, तौ बेचूँ कहना नहीं ॥३॥

॥ चौपाई ॥

तकी मियाँ हक बोल सुनावौ । अल्ला तौ बेचून बतावौ ॥
उनके बदन जुवाँ नहिँ भाई । कैसे कितेब कुरान बनाई ॥
कागद स्याही कस लिख मारा । बिन जुवान कैसे बिस्तारा ॥
अल्ला मियाँ कितेब बनाई । कहौ जुवाँ बिन कैसे गाई ॥
ये तौ दिल बिच साँच न आवै । तुलसी तकी बोल नहिँ भावै ॥
बिन जुवान मुख कहा कुराना । अल्ला के नहिँ बदन जुवाना ॥
चूँ बेचून नमून न जवाबा । सुनौ तकी मियाँ कहै किताबा ॥
वहि कितेब कह खुदा जुवाना । अल्ला मुख से भये कुराना ॥
जो जुवान नहिँ उनके भाई । तौ कस कहे कुरान बनाई ॥
या की तकी तोल बतलावौ । दिलमैं समझ बूझ समझावौ ॥
दिल और रूह राह बतलैयै । तब कुरान का गाना गैयै ॥
रूह रकान असमान ठिकाना । केहि बिधि गई राह पहिचाना ॥
सो घर का म्याँ भेद बतावौ । चौधा तबक तोल समझावौ ॥
सुनकर तकी तका नहिँ बोला । मुख भया बंद जुवाँ नहिँ खोला ॥
तुलसी कहै कहौ कस भाई । जा से दिल बिच होइ निसाई ॥
सुनकर तकी जवाब अस दीन्हा । मुरसिद मियाँ मरम हम चीन्हा ॥
तुलसी तकी दीन जब देखा । तब भाखा बिधि भेद बिसेखा ॥
साँची महजित तन को जाना । जा मैं चौधा तबक समाना ॥
मक्का भिस्त हज्ज येहि माई । मुल्ला काजी राह न पाई ॥
मुहम्मद नूर जानि सब केरा । दोजख भिस्त मैं किया बसेरा ॥
नूर नबी ने सब का कीन्हा । तुम हलाल बकरी कस कीन्हा ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में “न जवाबा” की जगह “जवावा” है जो ठीक नहीं जान पड़ता ।

गुनहगार दोजख की रीती । करौ खून ये बहुत अनीती ॥
 जो महजित उन आप बनाई । सो हलाल करि कै तुम खाई ॥
 मिटो महजित कबर बनाई । झूठा हक ईमान बताई ॥
 साँची महजित तन मन साँई । खिलकत खुदा खलक के माँई ॥
 नूर नबी सब माँहि बिराजा । जाकी हर दम उठै अवाजा ॥
 नूर नबी सब माँहि बिचारा । तब दोजख से होइहै न्यारा ॥
 नासुत मलकुत जबरुत भाई । लाहुत राह नबी की पाई ॥
 लामुकाम रब साहिव साँई । वाको खोज भिस्त तब पाई ॥
 सेख तकी तक थक रहे भाई । जवाब स्वाल मुख से नहिँ आई ॥

॥ चौपाई ॥

सुनौ तकी कहूँ खोज न पावै । कहा किताब जवाब नहिँ आवै ॥
 काजी मुल्ला पढ़े कुराना । खुदा खुदा कहे खोज न जाना ॥
 खोलि कितेब देखिये भाई । खुदा आदि कहौ कहँ से आई ॥
 खुद खुदाइ कर कहै कुराना । खुद खुदाइ का मरम न जाना ॥
 ये खुदाइ ना कहिये भाई । ये तौ खुद खुदाइ की छाँहौ ॥
 जहँ खुदाइ रहता है साँई । उस खुदाइ का अंत न पाई ॥
 तकी खुदा तुम एक बतावो । खुद खुदाइ का खोज लगावो ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी तकी तलास, खुदा बास कहु कहँ हता ।
 नहिँ जब जिमीँ अकास, कोइ किताब स्वाँसा नहीं ॥

॥ दोहा ॥

मंसूर मियाँ पस्तो कहै, तकी बूझ दिल माँई ।
 खुद खुदाइ की राह का, खुदा खोज नहिँ पाई ।

॥ पस्तो १ ॥

खोल देखो रे किताबै, आद अव्वल कौन था (म्याँ) ।
 नहिँ जमीँ असमान खिलकत, खुद खुदा तब था कहाँ ॥१॥
 कुफल खोले रे कुराना, मूल म्याना भेद का ।
 था कलम स्याही न कागज़, और न था आदम मियाँ ॥२॥

नहिँ मुहम्मद रब न रे जब, नहिँ पैयम्बर पीर थे ।
नहिँ नबी का नाम निसबत, भिश्त दोजख नहिँ रचे ॥३॥
काज़ी मुल्ला रे बेहेशो, खोज करो दिलदार का ।
मन मुआ मनसूर जब से, आशिक जो चश्मे यार का ॥४॥

॥ पश्तो २ ॥

यह खुदा ना है रे कुदरत, खुद खुदा कोइ और है (म्याँ) ।
जिन खुदा को तख़्त बख़शा, वह सकस कहा कौन है ॥१॥
दिल दिया और रूह रोशन, है हसन तन हुसन को ।
जब तबक चौथा दिये हैं, आदि खुदा को जानिये ॥२॥
कुल जहाँ आलम है कुन से, पट अबर अल्ला से है ।
यह हर इक ना कोइ किसी पै, भेद दोस्ती दिल मिलै ॥३॥
महरम मियाँ मनसूर आशिक, वह है बेचूँ बेनमूँ ।
यह किताबों में नहीं है, खुद खुदा का राज़ है ॥४॥

॥ पश्तो ३ ॥

ऐन अन्दर चश्म को रे, खोल देखो कौन है (म्याँ) ।
कुल खलक आलम इसम बिच, दिल हिये में खसम है ॥१॥
नहिँ किताबों में रे है कुछ, कुल कुरानै छूँछ है ।
वह पिया आलम की आँखियाँ, और कहीं नहिँ पूछ ले ॥२॥
हसन है रे हंस जा से, हुसन तन बिच में रहा ।
भूल अपनी आद अव्वल, कट मरे मन मौज में ॥३॥
हेश गाफ़िल है रे दोजख, दिल दिया नहिँ यार को ।
बूझ बिल-आखिर ख़राबी, इश्क़ ज्यों मनसूर हो ॥४॥

॥ पश्तो ४ ॥

देख कुछ नहिँ इस जहाँ में, सब फ़ना हो जायेंगे (म्याँ) ।
रहै रब का नाम मरदो, लोग लशकर कूँच है ॥१॥

(१) अंत को ।

चार दिन खूबी खलक मैं, अन्त मरना हक है (भ्याँ) ।
 ज्यों धुएँ का मेघडम्बर, कुल मिटै इक पलक मैं ॥२॥
 तन को देखो आशिको, वस खून चमड़ी हाड़ है ।
 जब निकल जावै पवन, तब गाड़ मिट्टी मैं मियाँ ॥३॥
 यार अजीजों ने कफ़न मैं, बाँध धरा ताबूत पर ।
 जोरू अम्मा कुल कुटम सब, मनसूर तन मन झूठ है (भ्याँ) ॥४॥

॥ पशतो ५ ॥

खोज मुरशिद रे मुरीदो, राह रोशन यार को (भ्याँ) ।
 रूह मेहर मुरशिद के दसतों, दिल फ़ज़ल दिलदार मैं ॥१॥
 रूह चढ़ावौ रे अबर को, हो खबर उस यार को ।
 ला पै जब रब राह चीन्है, पल मैं लखै इसरार को ॥२॥
 कुफल खोले रे अधर के, रूह से फोड़ असमान भ्याँ ।
 जान मलकूत नासूत को, जबरूत की कर क़दर भ्याँ ॥३॥
 जा मिलै लाहूत रे जघ, होश हो हाहूत का ।
 लौ लगी जो ला के अन्दर, रब मिले मनसूर को ॥४॥

॥ दोहा ॥

रब्ब राह लौ लाह मैं, खुदा खोज दिल माहँ ।
 रब खोदाइ से अलग है, खुद खुदाय तेहि नावँ ॥१॥
 बूझै खोज किताब मैं, सब कुरान कुल झार ।
 कर तलास काजी सुनौ, कहि मनसूर पुकार ॥२॥

॥ सौरठा ॥

तुलसी तकी निहार, कहि पुकार मनसूर ने ।
 मुरसिद खोज बिचार, बन मुरीद मुरसिद मिलै ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी कहै तकी सुन बाता । खुद खुदाइ मालिक है दाता ॥
 उनका खोज खुदा नहिँ पाया । नहिँ कितेब लिखने मैं आया ॥
 काजी मुल्ला खोज न पावै । दे दे बाँग खुदा गोहरावै ॥

अब खुदाइ का खोज बताओं । खुदा राह और भिस्त लखाओं ॥

॥ रेखता ॥

अजब अनार दो भिस्त के द्वार पै ।
लखै दुरवेस फक्कीर प्यारा ॥१॥
ऐन के अधर दोउ चरम के बीच मैं ।
खसम को खोज जहँ झलक तारा ॥२॥
उसी बिच फकत खुद खुदा का तखत है ।
सिस्त से देख जहँ भिस्त सारा ॥३॥
तुलसी तत मत मुरसिद के हाथ है ।
मुरीद दिल रूह दोजख नियारा ॥४॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी भिस्त मिलाप, खुदा खोज येहि बिधि मिलै ।
चौधा तबक निवास, कहाँ कुरान किस बिधि कहै ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी तबक तरक पहिचानौ । तब मियाँ तकी भिस्त को जानौ ॥
बिन मुरसिद पावै नहिँ घाटा । ये सब समझ खोज ले बाटा ॥
सुनकर तकी बहुत भये दीना । बन्दा गुनहगार नहिँ चीन्हा ॥
चरन पकड़ पुनि सीस गिरावा । तुम फक्कीर हम मरम न पावा ॥
तुम खुदाइ की जाति अजाती । हम इनके संग भये संगती ॥

॥ दोहा ॥

तकी कहै तुलसी मियाँ, तुम गुरु पीर हमार ।
गुनह बक्स अपना करौ, बंदा तकी तुम्हार ॥१॥
तकी दीन तुलसी लखा, पका दीन मत माइँ ।
झका तका अपनी तरफ, गुनहगार तुम पाइँ ॥२॥
तकी तबक जाना नहौं, तबी नूर नहिँ पाइ ।
भिस्त दोजख मैं तुम रहे, कैसे मिलै खुदाइ ॥३॥

॥ रेखता नसीहत ॥

तुलसी तबक जाना नहीं, बेहोस गाफिल हो रहा ।
जिस ने तुझे पैदा किया, उस यार को चीन्हा नहीं ॥१॥
नाहक अदम दम खोवता, मुरसिद पकड़ नहीं डूबही ।
तुलसी खलक कुल खयाल है, आसिक मुहब्बत कर सही ॥२॥
खोजो मुहम्मद दिल-रहम, जिस इस्म से आलम हुआ ।
तुलसी नबी निरखै नहीं, जहाँ लग मुसल्लम है नहीं ॥३॥
रब रूह मरहम ना हुआ, रब देख अंदर है सही ।
तुलसी तकी बूझा नहीं, जग में जिया तो क्या हुआ ॥४॥
गन्दा नजिस क्यों हो रहा, इस जक्त में रहना नहीं ।
अरे ऐ तकी तल्लास कर, तुलसी फना होना सही ॥५॥
चारे चसम^१ को खोल कर, देखो जुलम जालिम वही ।
जबरील को तैं ना लखा, तुलसी खबर खोजा नहीं ॥६॥
रोजा निमाज हर दम किया, उस यार को दिल ना दिया ।
खोजा नहीं अपना पिया, तुलसी तकी दोजख लिया ॥७॥
नासूत मलकूत जबरूत हैं, लाहूत लौ तैं ना लिया ।
हाहूत हिये खोजा नहीं, ला मैं रबी जीता पिया ॥८॥
तुलसी तकी तालिम^२ दिया, हर दम गुनह बंदा हुआ ।
मुरसिद मुरीदी दस्त है, पावै तकी अपना किया ॥९॥
तुलसी रहम राजी हुआ, तोला तकी अपना किया ।
दिया दस्त दरदी जान कै, तुलसी तकी मुरसिद हुआ ॥१०॥

॥ दोहा ॥

तकी दीन तुलसी लखा, दीन्हा पंथ लखाइ ।
सूरति सैल असमान कर, चढ़े गगन को धाइ ॥

॥ चौपाई ॥

तकी दीन गति गाइ सुनाई । दीन्हा सूरति पंथ लखाई ॥

(१) अंतर और बाहर की दृष्टि । (२) शिक्षा ।

॥ सरन में आना तकी मियाँ का ॥

॥ दोहा ॥

तकी दस्त दोउ जोड़ि कै, करि सलाम सिर टेक ।

नेक नजर अपनी करौ, बंदा तकी निहाल^१ ॥

॥ चौपाई ॥

नेक निहाली नजर निहारौ । तुलसी बंदा तकी सम्हारौ ॥

हमरा गुनह माफ सब कीजै । फजल करौ फिर अज्ञा दीजै ॥

चले तकी मारग को जाई । कासी नगरी पहुँचे आई ॥

॥ दोहा ॥

चले तकी मारग गये, बीच बजार मँभार ।

कर्मा पल्लोवाल की, गये दुकान के पास ॥

संवाद जैनियों के साथ

॥ चौपाई ॥

कर्मचंद इक पल्लोवाला । सावग जैन धर्म मत पाला ॥

सो करै बनिज बजाजी कोरा । ताहि दुकान बाग तेहि मेरा ॥

कर्मचंद ने कीन्ह सलामा । आदर बहुत कीन्ह सनमाना ॥

सेख तकी कहै सुन रे भाई । कहौं फकीर अकर^२ खुदा गुसाई ॥

ता को सब बरतंत सुनावा । कर्मचंद तुलसी ढिंग आवा ॥

कर्मचंद और धर्मा जैनी । सब पूछी पुनि हमरी कहेनी ॥

कौन धर्म यह साध कहावा । जैन को धर्म मर्म जिन पावा ॥

धर्मचंद और कर्मा जैनी । थापी उन निज अपनी कहेनी ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

कहि तुलसी तुम मर्म बताओ । जैन धर्म का भेड़ सुनाओ ॥

॥ उत्तर कर्मचंद और धर्मा ॥

कर्मचंद और बोले धर्मा । होइ मुक्ति जब काटै कर्मा ॥

तप कर संजम बन को जावै । हरी त्याग कर जीव बचावै ॥

(१) मु० दे० प्र० की पुस्तक में "लेवो लको अलेक" है । (२) या कि ।

टाटक ध्यान जपै नौकारा । जब या जीव को होइ उबारा ॥
 कोसिस ऐसी कठिन अपारा । काटै कर्म जीव निरबारा ॥
 तीथंकर चौबोसो जाना । कर्म काटि पहुँचे निरबाना ॥

॥ सोरठा ॥

धर्मा कही जनाइ, जैन धर्म संजम बिधी ।
 तुलसी सुनौ समाइ, तब पुनि फिरि आगे कहौ ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी पूछै ताइ, भेद कही निरबान को ।
 तुम कस पायौ जाइ, सो देखी अपनी कहौ ॥

॥ चौपाई ॥

तुम देखी अपनी बतलावौ । करनी और और की गावौ ॥
 साँची करनी अपनी भाई । तुम कुछ और और की गाई ॥
 तीथंकर पहुँचे निरबाना । कर्म काटि वे जाइ समाना ॥
 तुम तेहि करनी भाखि सुनाई । हाथ कहा कहौ तुम्हरे आई ॥
 जीवत मिले देखिये आँखी । ता की करनी कह कर भाखी ॥
 खावै भूख जाइ पुनि ताही । ऐसी बात कहौ समझाई ॥
 अब जो तुरत तलब सो पावै । तब तुलसी की प्यास बुझावै ॥
 तुम तौ कही जुगन की बानी । देखौँ अबै सुनौँ जो कानी ॥
 देखौँ अबै तो मन पतियावै । ऐसी तत्त बात मन भावै ॥
 ये सब कही सुनौ हम जानी । मुए मुक्ति की करौ बखानी ॥
 मूए पर कोइ आवै न भाई । जीवत मैं केहु पहुँचि न पाई ॥
 तौ की खबर साँच कस आई । सो धर्मा तुम कहौ सुनाई ॥
 ये तौ अंध अंध कर लेखा । मानौ जो जोइ नैनन देखा ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी तुरत बताइ, जो निज नैनन लखि परै ।
 सरै जीव को काज, परे पार गति देखिये ॥

॥ चौपाई ॥

सो साँची मानैँ हम भाई । ऐसी धर्मा कहाँ सुनाई ॥

॥ उत्तर धर्मा ॥

॥ दोहा ॥

कहै धर्मा तुलसी सुनौ, कहौँ भेद बिस्वास ।

बिन संजम पावै नहौँ, तप जप बिना उपास ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

॥ सोरठा ॥

सुनु धर्मा बिधि बात । संजम तप मुक्ती नहौँ ॥

पद पावै निरबान । चढ़ि अकास मुक्ती मिलै ॥१॥

निज निरबान बिधान । कहौँ भेद भिन भिन सुनौ ॥

पद निर्बान निज पार । संत सार आगे चखै ॥२॥

॥ रेखता ॥

निकट निरबान की सान जग मैँ लखौ ।

फटिक बिच सिला पर स्याम माई ॥१॥

काल की जाल दरहाल जा को कहै ।

भये चौबीस भौ मुक्ति पाई ॥२॥

गुन मिलि गोह चौधा गुनष्ठान है ।

चौधा जमराय जहँ बसत भाई ॥३॥

अधर अठबीस लख लोक राजू कहै ।

काल निरबान रत रहत राही ॥४॥

देव मुनि दैत्य गंधर्व और मानवी ।

केवली^१ काल मुख सकल जाई ॥५॥

दास तुलसी निरबान पद निरखि कै ।

छाँड़ि ये राह घर अधर माई ॥६॥

(१) पूरा ज्ञानी जो मुक्ति का अधिकारी हो गया है उस को जैन मत में "केवली" कहते हैं ।

॥ गज़ल १ ॥

जैनी जो जैन नैन सूझै नाई ।
 आतम को छाँड़ि पुजै पाहन जाई ॥१॥
 कर कर पूजा विधान अष्टक गावै ।
 भादौ विधि मंदिर सब स्थावग आवै ॥२॥
 चावल रँग माँड मँडै मनसैं आप का ।
 नंदेसुर पूजि दीप करैं बाप का ॥३॥
 और अढ़ाई दीप माँडि करते पूजा ।
 अंदर आतम्म ब्रह्म नाहीं सूझा ॥४॥
 करते कल्याण पाँच कामधेनु की ।
 पूजै बेहोस फूटि हिये नैन की ॥५॥
 जिन ने तन साज किया जानौ भाई ।
 वा की विधि भूलि भाव पाहन लाई ॥६॥
 तुलसी ये फंद कीन्ह काल पसारा ।
 धरमन की टेक बाँधि बूड़े सारा ॥७॥

॥ गज़ल २ ॥

ढूँढत गिरिनार सिखरि आबू जाते ।
 सतगुरु बिन मेहर नहीं काबू पाते ॥१॥
 बूझै सतसंग संग संतन माई ।
 अंदर पट खोल बोल देत दिखाई ॥२॥
 जिन के बड़े भाग सोई निरखि निहारा ।
 रहते जग बीच बीच जग से न्यारा ॥३॥
 उनकी वोहि चाल हाल घट में देखै ।
 पूछै कोइ चीन्है नहिं बात बिसेखै ॥४॥
 खोजत पहाड़ सिखर मूरति माई ।
 तुलसी नौकार जपै सूझै नाई ॥५॥

॥ चौपाई ॥

पद निरबान भूमि बतलाई । केवलि ज्ञान तिथंकर गाई ॥
तप संजम पूजा बिधि बानी । ये गति चारि माहिँ भै खानी ॥

॥ दोहा ॥

जप नौकार निकाम सब, आदि सार नहिँ जान ।

पद निरबान के पार की, तुलसी करत बखान ॥

॥ शब्द ॥

अद्भुत आज अलेखा री, सखि सइयाँ कै भेषा ॥ टेक
उदित मुदित दोइ सहर सुहावन, स्याम सेत नित देखा ।
अजर खेत्र नभ फटिक सिला पर, पद निरबान बिसेखा ॥१॥
सिलि पिलि बिजै खेत्र बिंदा चल, लील सिखर पर ठेका ।
समुँदर सात पार जल खंडा, अंडा अब ले पेखा ॥२॥
निरखत चारि खानि गति चारी, बिधिबिधि जीव बिसेखा ।
केवलि ज्ञान होत गुंकारा, देखे केवली अनेका ॥३॥
ये निरबान भूमि मत मारग, आगे जान न लेखा ।
खावग जैन धर्म मत माहीं, इनके वोही टेका ॥४॥
आतम ज्ञान ध्यान बतलावै, आगे भेद न पावै ।
सास्तर साखि भाखि बिधि देखै, खोजत मुए अनेका ॥५॥
या के परे भिन्न गति न्यारी, सुनि बाइस बिधि देखा ।
ता के परे पार सत साहब, सो पद संतन लेखा ॥६॥
सुन्न सुन्न प्रति प्रति पद माहीं, जहँ निरबान न पेखा ।
केवलि ज्ञान आतमा नाहीं, धरम करम नहिँ एका ॥७॥
सूर चंद नहिँ धरनि अकासा, तेज पवन जल छेका ।
ता के परे पार निखि न्यारा, तुलसी हिये दृग देखा ॥८॥

॥ दोहा ॥

तुलसि भूमि निरबान की, धर्मा सुनौ बयान ।

केवलि ज्ञान गोंकार का, तुलसी करत बखान ॥९॥

फटिक सिला नभ ऊपरै, केवलि करत बखान ।
 तुलसी चढ़ि असमान पर, निरखा भिनि भिनि छान ॥२॥
 निरबान निरखि आगे चली, सुनि अँड बाइस पार ।
 नहिँ निरबान गति वहँ चलै, तुलसी देखा झार ॥३॥
 जीव अचर चर अंड के, जो ब्रह्मंड के माइँ ।
 सूरति चढ़ि असमान पर, तुलसी देखा जाइ ॥४॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी धर्म बिलोके सारी । तुरक जैन बाम्हन मत झारी ॥
 जग थापन जैनी बतलावैँ । ऋषब देव कीन्हा बिधि गावैँ ॥
 तीथंकर चौबीसौ बानी । तुरक पीर चौबीस बखानी ॥
 मुहम्मद थापन कीन्ह जहाना । बाम्हन ब्रह्मा वेद बखाना ॥
 मुहम्मद तुरक बाम्हन बतलावैँ । तीसर जैनी अस अस गावैँ ॥
 अस अस तीनौँ कहत बखाना । झूठ साँच कहौ केहि को माना ॥

॥ दोहा ॥

गुनष्टान चौधा कहे, जैन मते मैं जान ।
 तुरक तबक चौधा कहे, बाम्हन भवन बखान ॥१॥
 चौधा भवन बाम्हन कहैँ, तीनौ मत इक सार ।
 आदि पार कोइ ना कहै, लखा न रचनेहार ॥२॥

॥ रेखता ॥

चौधा तबक किताब कुरान मैं ।
 पीर चौबीस पुनि वोहू गावा ॥१॥
 अल्ला रचि खेल सब जहान आलम किया ।
 आव और ताब पट अबर आवा ॥२॥
 सरा का खेल मुहम्मद से करि कहैँ ।
 येही बिधि तुरक तकरीर लावा ॥३॥

जैन मत माहिं गुनष्टान चौधा कहैं ।
 बिधी भगवान चौबीस गावा ॥४॥
 ऋषवजी रचन संसार की थापना ।
 आपने मते की वोहू लावा ॥५॥
 बेद पुरान संसार बाम्हन कहै ।
 बिधी भगवान चौबीस गावा ॥६॥
 चतुरदस लोक लीला बरनन करैं ।
 रचा बैराट जग बिधि बनावा ॥७॥
 झूठ और साँच कहौ कौन को कीजिये ।
 हिन्दू और तुरक पढ़ भूल पावा ॥८॥
 जैन सोइ जिंद बुँद आदि को ना लखा ।
 तीनि में किनहुँ नहिं चीन्ह पावा ॥९॥
 दास तुलसी कहै अगम घर अधर है ।
 संत बिन भेद नहिं हाथ आवा ॥१०॥

॥ चौपाई ॥

बाम्हन तुरुक जैन मत माडैं । करता की गति केहु न पाई ॥
 मत अपने अपने की गावैं । तीनों करता तीनि बतावैं ॥
 थापा जग रचि एक बनाई । ये तीनों मिलि तीनि बताई ॥

॥ सोरठा ॥

धर्मा धर्म पसार, जैन बिधी कस कस कही ।
 भिनि भिनि कहौ बिचार, तप संजम उपवास बिधि ॥

॥ चौपाई ॥

व्रत संजम जप तप बतलावौ । कहै तुलसी भिनि बिधि दरसावौ ॥
 कस कस चलन बात बिधि कहिये । स्त्रावग बिधि पुनि धर्म सुनइये ॥
 स्त्रावग कौन बात बिधि पालैं । सोई कहौ कौन बिधि चालैं ॥
 धर्मा अष्टक बाँचि सुनाई । तुलसी सुनियौ चित्त लगाई ॥

॥ उत्तर धर्मा ॥

॥ अष्टक १ ॥

जल नीर निरमल मिष्ट । हिमकर वासनं^१ ॥१॥
 धार ते भंडार भौ के । चरन श्रीपति चर्चनं ॥२॥
 सोइ पूजि पावै सेव सुखदाता । दुरियत कर्म के खंडनं ॥३॥
 श्रीपारसनाथ जप सूरज जैनराई । मूल नायक बंदनं ॥४॥
 तुम चंद्र - बदनी । चंदा पूरी परमेशुरा ॥५॥
 कैलास गिरि पर ऋषब जनवर । चरन कैवल हृदे धरा ॥६॥

॥ अष्टक २ ॥

कुमकुम जो मंजन सगर केसर । मलयागिरि घिसि चंदनं ॥१॥
 अकल दुक्ख निरवार भौ के । चरन श्रीपति चर्चनं ॥२॥
 सोइ पूजि पावै सेव सुखदाता । दुरियत कर्म के खंडनं ॥३॥
 श्रीपारसनाथ जप सूरज जैनराई । मूल नायक बंदनं ॥४॥

॥ अष्टक ३ ॥

बेल फूल चमेलि चंपा । काम कमोदिनि केतकी ॥१॥
 तास परमल वास ऊधौ । अगर आगर सेवती ॥२॥
 सोइ पूजि पावै सेव सुखदाता । दुरियत कर्म के खंडनं ॥३॥
 श्रीपारसनाथ जप सूरज जैनराई । मूल नायक बंदनं ॥४॥

॥ अष्टक ४ ॥

खरि खरेला दाख खिरनी । आम स्त्रीफल लाइया ॥१॥
 नारियल नौरंग केला । प्रभुजी के चरन चढ़ाइया ॥२॥
 मोरी इतनी बिनती दयाल कै । प्रभुनाथ के गुन गाइया ॥३॥
 तुम चंद्र - बदनी । चंदा पूरी परमेशुरा ॥४॥
 कैलास गिरि पर ऋषब जनवर । चरन कैवल हृदे धरा ॥५॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "नहिँ मकर वासन" दिया है जिसका अर्थ समझ में नहीं आता ।

॥ चौपाई ॥

धर्मा पूजा बिधी बताई । सुनि तुलसी संजम समझाई ॥
 स्त्रावगभिन्न भिन्न जेहि जाती । स्त्रावग धर्म जो भये सँगाती ॥
 तिनकी बात कहौँ समझाई । जेहि जेहि बिधी आदि चलि आई ॥
 प्रातहिँ उठि अस्नानहिँ जावै । पानी छानि आपु फिर न्हावै ॥
 पूजा बिधी बिधान करावै । पूजा करि फिर आरति लावै ॥
 मंदिर बैठि करै पुनि जापा । माला सूत्र लेय सोइ साफा ॥
 दरसन करि पुनि घर को आवै । हरी बस्तु कछु नाहीं खावै ॥
 दुइज पंचमी पालै सोई । आठैँ ग्यारस यह बिधि जोई ॥
 चौदसि पाँच बरत नित पालै । स्त्रावग धर्म येही बिधि चालै ॥
 ता कर होय स्वर्ग में बासा । देव लोक पुनि करै निवासा ॥
 और उपास बिधी बतलाऊँ । स्त्रावग धर्म कर्म गति गाऊँ ॥
 मासिक मन पखवारा कीन्हा । मुख धोवन मुख पानी लीन्हा ॥
 अठवाई तेल जिन जाना । और अनेक उपास बिधाना ॥
 बेला बिधि और करै घनेरा । साथै कर्म कटै भौ बेरा ॥
 ऐसा धर्म कर्म जोइ जाना । सो प्राणी पहुँचे निरखाना ॥
 आदि नाथ केवल अस भाखी । सास्त्र पुरान कहौ सब साखी ॥
 और जो सुनौ आदिकी बानी । जो केवली मुख कहौ बखानी ॥
 आदि पुरान प्रथम यौँ भाखा । जुगल्या धर्म बखानी साखा ॥
 एक पुरुष इक नारी होई । आवत छौँक मुए पुनि दोई ॥
 नासिका माहिँ छौँक होइ सोई । कन्या पुत्र भये पुनि दोई ॥
 ऐसे कछु दिवस गये बीती । चौधा कुलकर की यह रीति ॥
 चौधा माहिँ एक नभ जानो । मुरा देवी ताही की रानी ॥
 तिनके ऋषय देव पुनि भयेऊ । काटि कर्म तीर्थंकर कहेऊ ॥
 तिन पुनि जगत भाव बिधि थापा । कह्यो नौकार मंत्र पुनि जापा ॥
 ता की साखि सुनौ चित लाई । जाप बिधी में कहौँ सुनाई ॥

॥ सोरठा ॥

सेठ सुदरसन एक, सूली चार मारग दियौ ।
मंत्र सुनायौ कान, तुरत चार स्वर्गें गयौ ॥

॥ चौपाई ॥

सूली चार एक जो दीना । सेठि सुदरसन जाप यकीना ॥
अरिहंत सिद्ध दोइ नाम सुनावा । पूरा मंत्र होन नहिं पावा ॥
स्वर्ग बिमान तुरतही आवा । चार प्रान सुरलोक पठावा ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहेब ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी पूछै बात, धर्मा यह बिधि कस भई ।
जैन बिधी कही झार, सो बृतंत पूछौं तुही ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी कहै सुनौ तुम भाई । धर्म आपना भाखि सुनाई ॥
ता में बहम एक मोहि आवे । ताकी बिधि भिनि भाखि सुनावे ॥
सेठ सुदरसन मंत्र सुनावा । सूली चार स्वर्ग कस पावा ॥
अब तुम को बरतंत सुनाऊँ । तुम्हरे सास्तर से दरसाऊँ ॥
ये पुरान मैं देखौ जाई । ता की बात कहौं समझाई ॥
सेठ सुदरसन जाप सुनावा । ता का भर्म भेद मोहि आवे ॥
तुम पुरान की भाखौ कहनी । सेठ एक रहे खावग जैनी ॥
ता की कथा कहौं बिधिनाना । सो बृतंत बिधि सुनियौ काना ॥
उन इक नेम जाप कर लीना । दीपक तेल रहै जाप यकीना ॥
दीपक तेल करै सोइ जापा । खुटै तेल तब सूझै आपा ॥
ऐसी कठिन ठान तेहि ठानी । जाप इष्ट दूजा नहिं मानी ॥
ता के घर इक नार सयानी । उन का इष्ट नेम सोइ जानी ॥
वा के पुत्र एक रहे भाई । ता कर ब्याह कीन्ह बहू आई ॥
सो अजान कछु मरम न जाना । तेल दिया तेहि देखि बिहाना ॥

बैठा ससुर जाप तेहि देखा । तेल खुटै तब डारै पेखा ॥
 डारत तेल राति गइ बीती । वो अजान कछु जानै न रीती ॥
 प्यासमाहिँ उन प्रान गँवाया । मैँडक जनम जाइ जल पाया ॥
 सासु रही बहू के ढिँग सोई । उन जानी बहू जागत होई ॥
 यह बरतंत सत्त है भाई । सो पुरान मैँ देखै जाई ॥
 ऐसी टेक जाप तिन कीन्हा । जनम जाइ मैँडक कै लीन्हा ॥
 सेठ सुदरसन मंत्र सुनावा । कैसे चोर स्वर्ग पहुँचावा ॥
 ऐसी जाप टेक जिन कीन्हा । अंत जनम मैँडक कै लोन्हा ॥
 सो तुम हम को भेद बतावो । कैसे भई बहुरि समझावो ॥
 कहै तुलसी धर्मा सुनु बाता । आगे कहौ सुनौ बिख्याता ॥
 तुम्हरा सास्तर कहै बखानी । ये पुरान मैँ देखै बानी ॥
 जबै सेठानी पानी जाई । मैँडक गगरी बैठा आई ॥
 मैँडक अपने घर को लाई । पानी पनैड़े मैँ लै जाई ॥
 आदिहि नाथ समोसन भयऊ । सैन कराय दरस को गयऊ ॥
 मैँडक हाथी पाँव कुचाना । भया देवता कहँ पुराना ॥
 देव भया कहौ कहँ कै गइया । केते दिवस देव तन रहिया ॥
 सेठ जीव पुनि कहौ समाना । या कै आगे करौ बखाना ॥

॥ सारठा ॥

कहै तुलसी धर्मा सुनौ, लखि पुरान बिख्यान ।

देव भोगि मृत लोक मैँ, आये उन के प्रान ॥

॥ चौपाई ॥

देव माल पुनि जाय सुखाई । चारैँ गति जिव जाइ समाई ॥
 पुनिपुनि जीव कर्म बस रहिया । जाप प्रताप यहो बिधि भइया ॥
 आगे या को कहौ बखाना । सेठ जीव पुनि कहौ समाना ॥
 यह पुरान तुम्हरा बिधि गावै । येही मुक्ति भाव दरसावै ॥
 कहौ धर्मा यह साँची बाता । तुम्हरे मत का कहा बिख्याता ॥

ऐसे स्वर्ग मुक्ति को भाखै । ये तौ कर्म भोग बस राखै ॥
 पुनिपुनि आवै पुनिपुनि जाई । बार बार भौ भटका खाई ॥
 वा घर को है पंथ नियारा । खाजि जीव भौ उतरै पारा ॥
 जो कोइ जिवत आदि घर पावै । सतगुरु पलक माहिँ दरसावै ॥
 हिया खुलै नैनन से देखै । तुलसी सोई बात परेखै ॥
 स्वर्ग नर्क तुम भाखौ भाई । यह तौ झूठी मन नहिँ आई ॥
 वा घर जीव बतावै चैना । ता की तुलसी मानै बैना ॥
 कर्म पलक में तोड़ि बिनासै । ऐसे सतगुरु का मन भासै ॥
 धर्मा कहौ सेठ की भाई । सो जिव कहौ कहाँ भरमाई ॥
 जप नौकार बिधी अस भाखी । या से परे काल की फाँसी ॥

॥ दोहा ॥

धर्मा यह बिधि यों भई, मन में लेउ बिचार ।
 स्वर्ग नर्क और मुक्ति कहि, बाँधे कर्म करार ॥१॥
 आगे आदि पुरान की, सुनौ साखि बिस्तार ।
 आदि नाथ केवलि कह्यो, जुगल्या धर्म बिचार ॥२॥
 तुलसी कहै धर्मा सुनौ, जुगल्या धर्म बिचार ।
 कहौ उन को किनने कियो, सो बिधि कहौ सम्हार ॥३॥

॥ चौपाई ॥

प्रथम जुगल्या बिधि कहि भाखी । आदि पुरान बतावै साखी ॥

॥ सारठा ॥

तुलसी कहै पुकार, कहौ जुगल्या कस भयौ ।
 उन तन कौन सँवार, कुलकर नभ कस कस कहै ॥

॥ उत्तर धर्मा ॥

॥ चौपाई ॥

सुनियौ तुलसीदास गुसाँई । कहि पुरान सोइ साखि सुनाई ॥
 इनका करता बिधी न भाई । ऐसे सास्तर साखि बताई ॥
 अंडा मृष्टी आदि अनादा । फूटै न बनै येही बिधि साधा ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

बिन करता कौने बिधि भयेऊ । जुगल्या जन्म नाम कस कहेऊ ॥
याकी भिनि भिनि चीन्ह चिन्हावौ । करता बिन कस कस बतलावौ ॥

॥ उत्तर धर्मा ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी सुनौ समझ यह जाना । जस जस आदि पुरान बखाना ॥
जुगल्या परे धर्म नहिं गावा । जो बूझा सो बरनि सुनावा ॥

**तुलसी साहिब का वाक्य कि जैन मत के अनुसार
उत्पत्ति जुगल्या और जगत की कैसे हुई**

॥ चौपाई ॥

सुनु धर्मा उत्पत्ति बतलाऊँ । सार सवैया में समझाऊँ ॥
जस जस भया जैन कै लेखा । भिनि भिनि भाखौं भेद बिबेका ॥
धर्मा सुनौ कान दे भाई । जैन धर्म की आदि बताई ॥

॥ सवैया—नभ रीति जैन मत ॥

जैन को जान कहौं मत छान, सो आदि बखान निरबान की बानी ।
आदि पुरान कहौं जो प्रमान, सो ताके बयान में जैन की जानी ॥
जुगल्या धर्म जो प्रथम कही, सोइ छौं कत प्रान तजे नर नारी ।
सोइ छौं क से होइ कन्या सुत दोइ, सो ऐसी कहै बिधि बात बिचारी ॥
अब पीछे केहि की साखि देऊँ, भये चौधा कुलकर तेहि कहाये ।
धेनु जो काम कही कल्प बृच्छ, सो ताहि समय में रहे अस गाये ॥
ताहि के माहिं रहे नभ राइ, सो साखि पुरान में भाखि सुनाये ।
चौधा में एक रहे नभ नेक, सो रानी मुरादेबी नाम धराये ॥
ता के भये सुत नाम ऋषब, सो जब से पाँच धनुष की काया ।
ता ने कियो तप ध्यान निरबान, सो जाना जोई जा में मुक्ति को आया ॥

आगे का भेद न जाने निखेद, सो खेद भये पुनि काल ने खाया ।
 मुक्ति भये जग जीव रहे, पुनि आतम अंड को खंड बताया ।
 सो यहि बिधि आदि पुरान सही, सो कही जग जैन मती अस गाथा ॥
 आँवले प्रमान जो अंड लखा, सो भखा तीनों लोक के जीव की जाती ।
 यहि बिधि आदि पुरान कहै, सो देखि लई बिधि भेद की बाती ॥
 केवलि ज्ञान कहौ जो प्रमान, सो गुन गोंकार से साख बनाये ।
 गंद्रपसेन से वैन सुने, सो गुने मन माहि जो भाखि सुनाये ॥
 बोही पुरान करै जो प्रमान, सो देव ऋषय ने थापन ठानी ।
 मंत्र नौकार दियौ येहि कार, सो अरिहंत सिद्ध की कीन्ह बखानी ॥
 अरिथानं नाउँ उज्जानं भाउ, सो सरबइ साध सो लैय लगाये ।
 पाँचोइ पद पैतीसोइ अच्छर, सो सब जैन मती गति गाये ॥
 जोइ निरबान को काल बखान, सो केवली खाइ चौबीस नसाये ।
 वे जो दयाल बिधी बिधि भिन्न, सो चिन्ह चौबीसोइ नेक न पाये ॥
 ये बिधि भेद कहै तुलसी, तत आतम जोग तीथंकर गाये ।
 आगे का अंत कहै सब संत, सो पंथ मते मत नेक न पाये ॥

॥ सवैया २ ॥

कोइ स्रावग होइ चरचा मुख सोइ, तौ भाखौ बिधी जाकौ भेद बतावै ।
 तुम्हरे मत ज्ञान का व्यान कहौ, जो पुरान की पूछौ सो भाखि सुनावै ॥
 जुगल्या जोइ धर्म प्रथम्म कहै, तन छूटि मरै पुनि कहाँ समावै ।
 नाक की नीक से छौंक कही, सुत कन्या सरीर को कौन बनावै ॥
 जुगल्या जोइ नाम कह्यौ केहि काम, सो केहिकी जुबान से नाम धरावै ।
 तब केवलि ज्ञान नहीं भगवान, न भाखी पुरान नाम कस पावै ॥
 औरहु एक कहौ तुम नेक, सो देइ कुलकर को कौन बनावा ।
 तिथि थापन नहिं बाह्यन जाइ, न पुरान सुनाइ तौ कुल कस पावा ॥
 कहै नभराइ मुरादेबी ताहि, सो ऋषय बनाइ कहौ को कहावा ।
 कर्महि काटि ऋषय जो गये, सो निरबान ठिकान कहौ केहि ठाँवा ॥

आँवले प्रमान जो अंड कह्यौ, सो हथेली के बीच में कैसे दिखावा ।
 केवल कार कहौ गोंकार, सो सीस के पार कौने बिधि आवा ॥
 टाटक ध्यान कहा जो बखान, सो कहौ मन को केहि राह चढ़ावा ।
 या की बिधी बिधि बात कहै, सुन सावग नाम जो ता कौ कहावा ॥
 पाहन पूजे से सूझा नहीं, हिये नैन से जानि निहारि कै पावै ।
 नौकार की जाप करै नित आप, सो ताप तीनेँ तन साफ सतावै ॥
 मुए करै आस स्वर्ग की बास, परै जम फाँस को भेद न पावै ।
 तुलसी तत माहिँ निहारि पकै, सो लखै बिधि आतम माहिँ समावै ॥

॥ सवैया ३ ॥

तुलसी जो बखान कहै सुनि कान, सो भूले पुरान में भेद न पायौ ।
 पहिले भयौ नभ नाम अकास, सो बास कियौ तन आस में आयौ ॥
 सरीर में जोड़ मुराड़ रह्यौ, मुरादेबी ता कौ नाम बतायौ ।
 जो ये मन जब ऋषब भयौ, सो रह्यो रस धाम ऋषद्वय कहायौ ॥
 आगे सुनौ सोइ बात गुनौ, जुगल्या मन इच्छा से द्वैत में आयौ ।
 छौंकि जो नाक में स्वाँस करै, सो मरै जो अकास को तेज नसायौ ॥
 जब नासिका स्वाँस में बास भयौ, सो कह्यौ मन इच्छा के पुत्र बनायौ ।
 मन इच्छा मिलि कुल भास भई, सो गुन इंद्रि कुल प्रकृति कहायौ ॥
 ता को बैराट कहँ भगवान, चौधा जम कुलकर बास बसायौ ।
 काल कौ बृच्छ सरीर कह्यौ, सो कामना काम जो धेनु सुनायौ ॥
 आपने आप कियौ जग थाप, सो मन निरगुन नौकार बतायौ ।
 जगत भुलाइ जो धर्म चलाइ, सो टेक बंधे चारौ गति में आयौ ॥
 जगत जहान कौ भर्म दियौ, सोइ कर्म बताइ जो आपहु आयौ ।
 येही बिधि जगत कौ नास कियौ, पुनि आपनी राह कौ भेद न गायौ ॥
 इंद्रि बस कीन्ह ऋषब देव चीन्ह, सो टाटक गुन में ध्यान लगायौ ।
 सुनि नासिका ध्यान कियौ जो प्रमान, सो जोग अरंभ से आतम पायौ ॥

येहि कार के लार गुंकार भयौ, त्रिकुटी मध बीच अवाज सो आयौ ।
 येहि तत्त में मन जो लाग रहौ, सो अँवले प्रमानै अंड कहायौ ॥
 अंड के बीच से जीव सही, सो केहि बिधि मुक्ति की बात को गायौ ।
 मुक्ति भई भौ खानि मई, पुनि मुक्ति को भोग के जीव कहायौ ।
 येहि बिधि तोलि कहै तुलसी, सो आगे कै भेद उनहुँ नहिँ पायौ ॥

॥ सवैया ४ ॥

स्वावग ख्यात कहौ जो बिख्यात, सो आदि अनादि की बात सुनाऊँ ।
 जुगल्या जोइ धर्म न कुलकर कर्म, ऋषब न नभ मुरादेबी नाऊँ ॥
 पानी न पवन जमी नहिँ भवन, सो अगिनि अकास न तत्त न ठाऊँ ।
 चंदा न सूर न आतम मूर, नहिँ मन कूर जा कै भेद बताऊँ ॥
 जब पिंड न अंड नहिँ ब्रह्मंड, सो कहे नव खंड बने न बिसाऊ ।
 जबै सतपुरुष रहे सुख धाम, सो वा मैं बसै सतलोक कहायौ ॥
 ता ने कियौ सब ठाट बैराट, सो सोला निरबान को ता ने बनायौ
 सोला में एक को दीन्ह निकार, सोई निराकार ने जगत भुलायौ ॥
 पुरुष के अंस से जोति भई, सो वही निराकार की कहियै लुगाई ।
 ता के पुत्र भये पुनि तीन, सो ब्रम्हा बिस्नु महेस कहाई ॥
 कुंभ निरबान के अंग से जान, लिये पाँचौ तत्त बैराट बनाई ।
 काल निरबान जो ठाट कियौ, सो बैराट में जोति और काल समाई ॥
 ता कै कहै भगवान अज्ञान, सो जाही ने जीव चराचर खाई ।
 सो ताही को पूजि चलै नर चालि, सो काल निरबान ने जाल बिछाई ॥
 अंड के पार कह्यो नहिँ सार, सो जार पसार रहे गति माई ।
 मुक्ति बताय दई सो कही, बड़े भाग भये कहि भाखि सुनाई ॥
 औरहु फंद कहौ दुख दंद, सो अंधेइ जीव को मुक्ति बताई ।
 मुक्ति भये जग जीव रहे, बहु पंचम काल में दीन्ह उड़ाई ॥
 ये सब काल निरबान की जाल, सो जीव को डालि कै काल चबाई
 सास्तर धान किये जो पुरान, सो धर्म की टेक में जीव बुड़ाई ।
 तुलसी बिधि बात कहौ जो धनी, सो धनी को भुलाइ भ्रमाइ छिपाई ॥

॥ सवैया ५ ॥

तुलसी नर जीव निरबान कहूँ, पति पार पिया घर आदि लखाऊँ ।
थिर थोव सुरति से तत्त लखै, सो पकै नभ नाल कँवल के ठाऊँ ॥
तेहि के महु मिलै दल द्वार, सो पार चढ़ै दल आठ में आई ।
जहँ जोति कै बास अकास के पास, सो तत्त के पार से सार दिखाई
पुनि सुति सैल से खेल चढ़ै, नव लाख कँवल के दल के माई ।
ता में लखै रवि चंद की संध, सो तारा अनेक अकास सुहाई ॥
पुनि ता के परे दल सहस कँवल, सो जल में जानि निरबान के ठाई ।
ता के परे जल केर के धोर, सो अविगति काल ने जाल बिछाई ॥
ता पै फटिक सिला पै मिला, नभ स्याम कै बास बसै येहि माई ।
आगे चली सुनि साखि अली, सो आतम ताल के तट में आई ॥
ता के परे दल दोइ कँवल, सो सुन्न प्रमातम बास कराई ।
ता के परे सत सब्द का बास, सो चढ़ी सत सूरति सब्द में आई ॥
ता के परे दल चारि कँवल, सो साहिव सत्त पुरुष कहलाई ।
ता के आगे की गैल की सैल कहौँ, खिरकी बिन द्वार में पार है भाई ॥
जहाँ निःअच्छर नाम के पार, सो सार अनाम का धाम न ठाई ।
सूरति सैन की चैन कहौँ, पल माहिँ पिया पद आवै न जाई ॥
सुन जोग न ज्ञान बैराग नहीं, तप संजम ध्यान की कौन चलाई ।
सूरति सैल करै असमान, सो फोड़ निसान को पार चढ़ाई ॥
जो कहौँ मत संत कै अंत नहीं, सो वही घर संत बसै नित जाई ।
जहँ काल निरबान की गम्म नहीं, तहँ केवली काल परे मुख जाई ।
कोइ सूरति राह चढ़ै सोइ संत, सो पंथ पिया तुलसी कै कहाई ॥

॥ सौरठा ॥

धर्मा धर्म बिचार, जैन सार सगरी कह्यौ ।

कुलकर जुगल्या लार, नभ राजा और ऋषब सब ॥१॥

सार सवैया माइँ, गाइ भेद बिधि सब कही ।

जस जस जैन जनाइ, जो उत्पति सुनि सब भई ॥२॥

सास्तर संध बिचार, बिधि पुरान मत देखि कै ।
धर्म जैन जस कार, पुनि अगार तुलसी कही ॥३॥

॥ उत्तर धर्मा ॥

॥ चौपाई ॥

धर्मा सुनि मन बात बिचारी । तुलसी कही जैन से न्यारी ॥
संत मता है अगम अपारा । स्त्रावग जैन धर्म से न्यारा ॥
हम ने जुगल्या प्रथम बताया । ता के परे भेद नहिं पाया ॥
और कुलकर नभ राइ बखाना । हम आगे का मर्म न जाना ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

जुगल्या प्रथमहिं कौन बनावा । कहौ उन तन कैसे कर पावा ॥
तन बिन दैह कौन बिधि आवा । ता कै पहिले कौन बनावा ॥
तन तत पाँच कहाँ से अइया । सो धर्मा बिधि बरनि सुनइया ॥
पाँच तत्त बिन कैसे कहिया । तत्त बिना कैसे बिधि भइया ॥
पिंड ब्रह्मंड धरती आकासा । केहि बिधि भया कहौ परकासा ॥
पाँच तत्त जब कहँ से आये । कौन जुगल्या जबै बनाये ॥
कर्म धर्म कछु हते न भाई । तब ये जीव कहाँ से आई ॥
सो घर हम से भाखि सुनावै । तब तुलसी के मन में आवै ॥
पद निरबान कहौ तेहि भाई । ता की बिधि कहौ कौन बनाई ॥
या की बिधी कहौ समझाई । पद निरबान कहाँ से आई ॥
नहिं निरबान हता जब अंडा । तब को हता परे ब्रह्मडा ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी मानै जान, या के आगे भिनि कहौ ।
हता नहीं निरबान, सो बिधि बरनि सुनाइये ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी धर्मा सुनु बाता । आगे कहैं बिधि बिख्याता ॥
छौँक होत उपजे सुत नारी । कन्या पुत्र कहौ बिधि सारी ॥
कहँ से आये कहाँ पुनि गइया । इनकी रचना केहि बिधि भइया

॥ सोरठा ॥

कहौ धर्मा समझाइ, या के आगे को हता ।
उन तन कौन बनाइ, भाखौ या की आदि सब ॥

॥ चौपाई ॥

और आगे बिधि पूछौं भाई । पूजा तुम ने भाखि सुनाई ॥
अष्टक जल चंदन तुम कहिया । और नैवेद्य पुष्प बिधि लइया ॥
केवली केवल की कही साखी । कहौ का की पूजन उन भाखी ॥
तब केवली प्रतच्छ रहाई । मूरति बिधि जब होती न भाई ॥
उन पूजा कहौ किनकी कहिया । मूरति खोज तबै नहिं रहिया ॥
तब पूजा कहौ केहि की भाखी । या कौ भेद बतावौ साखी ॥
नायक^१ मूल बंदना कीन्हा । तुम पाहन पूजा कस लीन्हा ॥
उन कछु और भेद कहि भाखी । सो तुम्हरी सूझा नहिं आँखी ॥
कही धर ध्यान देख उन चाखा । तुम पाहन पूजा कस राखा ॥
अपने घर का भेद न जानी । औरत से कहौ ज्ञाने बखानी ॥

॥ सोरठा ॥

धर्मा कहौ बखान, पाहन पूजा कस करौ ।
नायक^१ मूल बिधान, ता की पूजा बिधि कहौ ॥

॥ चौपाई ॥

तप संजम उपवास बताई । जो त्यागै सो पावै भाई ॥
तप कर राज मिलै पुनि जाई । राज भोग पुनि नर्क समाई ॥
कष्टे फल पावै पुनि भोगा । परै चारि गति उपजै सोगा ॥
इंद्री दवन उपास कराई । बार बार भौसागर आई ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "नाइ के" है ।

इंद्री भोग करै पुनि सोई । अस बिधि इंद्री संजम होई ॥
 जीवन मुक्ति पलक में पावै । सो संजम हमरे मन भावै ॥
 जीवत मुक्ति देखिये आँखी । ऐसी बिधि कोइ कहिये भाखी ॥
 एक पहर में मुक्ति बतावै । सो सतगुरु मोरे मन भावै ॥
 आदि और अंत पलक में पावै । सारा भेद नजर में आवै ॥
 जब देखै हम अपने नैना । तब मानै सतगुरु के बैना ॥
 कष्ट करै तप बन को जावै । मरे गये का खोज बतावै ॥
 ऐसी झूठ बात नहिँ मानै । देखा परै सुनै जो कानै ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी धर्मा सौं कही, कर्मा सुनियौ बात ।
 दोइ मिलि भेद बतायऊ, कर्मा धर्मा साथ ॥

॥ चौपाई ॥

कर्मा धर्मा भेद बताई । ये बिधि तुम्हरे सास्तर गाई ।
 या से हम कछु भिनि दरसाई । ता 'का' भेद कहौ समझाई ॥
 तुम्हरे मत की पूछौं बाता । ता की प्रथम करौ बिख्याता ॥
 ये बिधि भिन्न भाँति कहि भाखी । कर्मा कहौ याहि की साखी ॥
 या की बिधी बिधी बतलावै । सो सब भेद भाव दरसावै ॥
 हम जोइ पूछि पूछि बिधि बानी । सो सो सब सब कहौ बखानी ॥

॥ उत्तर धर्मा और कर्मा ॥

॥ चौपाई ॥

कर्मा धर्मा यौं कहि बोले । भेद हमार सबै तुम खोले ॥
 सास्तर हमरे जो बिधि गाई । सो तुलसी तुम भाखि सुनाई ॥
 या सौं भिनि हम कहा बतावा । भिन्न भिन्न सब तुम दरसावा ॥
 कर्मा धर्मा ये बिधि बोला । बुद्धि हमारि खाइ झकझोला ॥
 तुलसी तुम तौ अगम बखाना । नहिँ सास्तर नहिँ जानै पुराना ॥
 पुनि इक भर्म भाव दिल आई । स्वामी तुलसी भाखि सुनाई ॥

तुम तौ मुक्ति आज दरसावा । या कैा भर्म बहुत मोहिँ आवा ॥
 और सबै भाखी तुम खासी । पुनि इतनी मोरे नहिँ भासी ॥
 मुक्ति गती तुम आज बतावा । सो नहिँ जैन मते मैँ गावा ॥
 चौथे काल मुक्ति बतलावै । पंचम काल जैन नहिँ गावै ॥
 स्वामी तुलसी यह बिधिकहिये । ता मैँ मुक्ति आज बिधि पढ़ये ॥
 ऐसी कैान जो बिधी कराई । ता सोँ आज मुक्ति गति पाई ॥
 जो जो तुम ने भेद बखाना । सो तो हम सुपने नहिँ जाना ॥
 जो जो सास्तर कहै पुराना । सो तुम मुख से करी बखाना ॥
 सो साँची सब मन मैँ आई । चित मैँ खूब खूब ठहराई ॥
 तुम ने आगे भेद बखाना । हम पुनि परे कछू नहिँ जाना ॥
 ये तौ सत्त सत्त कहि भाखी । मुक्ति आज होइ कहिये साखी ॥
 हम तुम्हरे चरनन बलिहारी । कहा धर्मा हम सरन तुम्हारी ॥
 हम अजान कछु बूझि न बाता । तुम कही आदि अंत बिख्याता ॥
 मुक्ति भाव मो को दरसावौ । मोरे दिल का भर्म नसावौ ॥

॥ सोरठा ॥

धर्मा अस बिधि बोल, स्वामी दीन दया करौ ।
 मुक्ति बिधी गति खोल, भाखि अगम गम सब कहौ ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी कहत बुझाई, कर्मा धर्मा सब सुनौ ।
 आगे कहौँ लखाई, मुक्ति बिधी दरसाई कै ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी सुन अगम सँदेसा । आदि अंत दरसाओँ देसा ॥
 प्रथम रहे इक पुरुष अनामा । चौथे पद के पार ठिकाना ॥
 जब नहिँ रहे गगन आकासा । चंदा सूरज नहिँ परकासा ॥
 धरती अगिन न पवन निवासा । पानी जगत रहे नहिँ बासा ॥

पिंड ब्रह्मंड लोक नहीं होई । और अलोक बिधी नहीं सोई ॥
 चौथा पद रचना नहीं ठानी । ता के आगे पुरुष अनामी ॥
 तासु लहर सत साहिव भयेऊ । सत्त नाम संतन ने कहेऊ ॥
 या की बिधी बिधी गति गाई । बिन सतसंग नहीं दरसाई ॥
 होइ सतसंग कहैं सब लेखा । खुले नैन हिरदे से देखा ॥
 तीनों लोक पार है चौथा । ता के परे अनामी सो था ॥
 तासु लहर उपजा सत नामा । चौथे पद की रचना ठाना ॥
 ता से भये सोला निरबाना । जिन में एक की करैं बखाना ॥
 सोला निरगुन है निरबानी । निराकार जाही को जानी ॥
 जोति निरंजन सोई कहाई । ता को संत काल गोहराई ॥
 सास्तर नाम कहै निरबाना । सोई जीव को काल निदाना ॥
 जा ने जग जम जाल पसारा । जगत थापना कीन्ह बिचारा ॥
 दस औतार जाहि के चीन्हो । ब्रह्मा बिस्नु महेसा तीनों ॥
 जिन ने भाखा बेद बिचारा । जग में फैला काल पसारा ॥
 पूजा पत्री नेम अचारा । देवल पूजा बिधी सँवारा ॥
 संजम और उपवास बतावा । ता में सकल जीव उरभावा ॥
 ये निरबान काम अस कीन्हा । मुक्ति राह का भेद न दीन्हा ॥
 मुक्ति काल चौथे बतलाई । पंचम काल जो दीन्ह छिपाई ॥
 सास्तर अस पुनि कीन्ह पुराना । धर्म चलाइ जीव उरभाना ॥
 ये सब भेद कहा हम जानो । यह बिधि जैन धर्म निरबानी ॥
 सोई काल सब जाल बिछाई । सत्त पुरुष की राह न पाई ॥
 सत्त पुरुष का भेद तियारा । जहँवाँ संत करैं दरबारा ॥
 संत सरन जो प्राणी जावै । ता को संत राह बतलावै ॥
 धर्मा कर्मा चकृत भयेऊ । ये तौ अगम गाइ गति कहेऊ ॥
 बिन सतसंगति पावै नाहीं । तुलसी कहै सबै गोहराई ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी तत्त विचार, संत भेद न्यारा कहौं ।
 सो पहुँचै वहि द्वार, अगम सार तेहि लखि परै ॥१॥
 मुक्ति कहौं निरवार, संत चरन लागी रहै ।
 फिरै संत की लार, करै संत निरवार जेहि ॥२॥

॥ चौपाई ॥

संत सुरति से चढ़ै अक्रासा । गगन फोड़ि वो करै निवासा ॥
 पाँच तत्त का वहाँ न बासा । चंद सूर जल पवन न स्वाँसा ॥
 पार परे सत पुरुष अकेला । संत सुरति नित करती सैला ॥
 जो कोइ दीन लीन होइ आवै । ता को सतगुरु राह बतावै ॥

॥ दोहा ॥

मुक्ति कहौं समझाइ, संत चरन डोलत फिरै ।
 सो आदरै न ताइ, पाइ लगन लागी रहै ॥

कहै तुलसी सुन मुक्ति बखाना । धर्मा कर्मा सुनियौ काना ॥
 मुक्ति संत की निस दिन दासी । परी रहै चरनन के पासि ॥
 संत जिवत दरसावै जाई । सतसँग करै बहुत लौ लाई ॥
 तुम कहौ पंचम काल न पावै । चौथे काल मुक्ति को जावै ॥
 अब तुम सुनियौ चित्त लगाई । तुम्हरे सास्तर संध लखाई ॥
 महाबार तीथंकर कहिया । बरस अठारासै तेहि भइया ॥
 जेहि तुम कहौ मुक्ति को गयऊ । मुक्ति पाइ तीथंकर भयऊ ॥
 जेहि तुम कहौ मुक्ति गति गाई । पंचम काल मुक्ति कस पाई ॥
 तुम कहौ आज मुक्ति नहि जाई । तौ उन ने कहौ कहँ से पाई ॥
 सो उन को तीथंकर कहिया । पंचम काल मुक्ति कस भइया ॥
 या की विधि मन माहीं पेखो । सास्तर संध जाइ कै देखो ॥
 अपनी भूल न बूझौ भाई । मुक्ति भई सो कहौ सुनाई ॥
 आज मुक्ति ततकालहि पावै । संत चरन में जो लौ लावै ॥

॥ शरण में आना कर्मा और धर्मा का ॥

॥ छंद ॥

तुलसी यह भाखा सुनि सब साखा, कर्मा धर्मा दीन भये ।
 इन कही बुझाई सब बिधि गाई, भिन्न भिन्न दरसाइ दये ॥१॥
 हमरा मत भाखा दीन्ही साखा, सास्तर बिधिविधि साखि दई ।
 हमरे मन मानी बहु बिधि जानी, सत्त सत्त सब तत्त कही ॥२॥
 झूठा जंजाला सब बिधि काला, हम अपने मन जानि लई ।
 तुलसी तुम स्वामी सत्त बखानी, धर्मा कर्मा चरन लई ॥३॥
 चरनन लिपटाने तुम को जाने, दीन जानि अब सरन लई ।
 स्वामी मति बूझा आँखी सूझा, पूजा दूजा दूर भई ॥४॥
 तुलसी प्रतिपाला होउ दयाला, करौ निहाला सरन लई ।
 प्रभु दाया कीजै सरनै लीजै, दीजै चरन मति नाहिँ बही ॥५॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी देखि बिहाल, तुरत निहाल ता पर भये ।
 सुरति सैल बतलाइ, तब जिव की संसय गई ॥१॥
 धर्मा कर्मा जाइ, तुरत सोस चरनन धरे ।
 लीन्ही अज्ञा पाइ, उठे धाइ घर को चले ॥२॥

**करिया नामी जैन स्त्री का तुलसी साहिब
 के दर्शन को आना और शरण लेना ।**

॥ चौपाई ॥

धर्मा कर्मा मारग जाई । कासी नगर लौटि कै आई ॥
 अपना अपना मारग लीन्हा । अपने भवन गवन जिन कीन्हा ॥
 कर्मा घर इक नारि सयानी । पूजै साध महातम जानी ॥
 जैन धर्म में बहुत मलीना । सुनि कर बात कान उन दीन्हा ॥
 भोर भये देखौ कब चरना । दीन होइ जाऔं उन सरना ॥

करिया नाम नारि कर होई । कर्मा कही दीन जिन रोई ॥
 बिरह माहिं जिन राति बिंताई । भोर भये उठि कै चल धाई ॥
 सखि सोइ साथ जात कोलीन्ही । पाँच नारि मिलि चलीं अधीनी ॥
 पूछत पूछत मारग जाई । पाँच पचीस मिले मग माई ॥
 कोइ न सुनै बात दै काना । पूछै तुलसी केर ठिकाना ॥
 पूछत पूछत हिरदे भेटी । जिन पुनि जाइ बताई कूटी ॥
 कुटी आइ चरनन उनलीन्हा । दीन डंडवत बिनती कीन्हा ॥
 मैं तो सरन तुम्हारे स्वामी । चरन देहु मोहिं अंतरजामी ॥

॥ दोहा ॥

नारि दीन तुलसी लखी, बोलै बचन रसाल ।
 हीन दीन जेहि देखि कर, दरसन दिये बिसाल ॥

॥ चौपाई ॥

करिया देखि तुलसी अस कहिया । कहौ कहाँ सेँ आवन भइया ॥
 पुरुष नाम तेहि सखी बताई । कर्मा नारि दरस को आई ॥
 तुलसी दीन हीन जेहि जानी । करिया पूछ बचन मन मानी ॥
 हाथ जोरि करिया कहै स्वामी । जग संसार भाव भ्रम खानी ॥
 जीव गती की राह बतावौ । जग मैं आइ महा दुख पायौ ॥
 तुलसी कहै जगत सुख भारी । काहे उदास भई तुम नारी ॥
 कन्या पुत्र सकल परिवारा । सुख संपति भोगो तुम सारा ॥
 करिया कहै इक अरज हमारी । या जग सँग संसार दुखारी ॥
 तन बिनसै जैसे जल ओरा । जग जम जाल करत है जोरा ॥
 तन सराय दिन चारि बसेरा । या मैं कोऊ न काहू केरी ॥
 धन संपति दिन चारि बिलासा । पुनि तन छूटि झूठ सब आसा ॥
 ऐसे या जग का व्यौहारा । जनम जात जूवा जस हारा ॥
 जैसे रंग पतंग उड़ाई । हवा जात तन जैसे जाई ॥

ये तन मन दिन चारि निवासा । छूटै तन जमपुर में बासा ॥
 भाई बंद सकल परिवारा । त्रिया पुत्र सब झूठ पसारा ॥
 या के संग बूढ़त जग जाना । छूटै तन फिर नर्क समाना ॥
 ये जग संग रंग भंग जाना । आदि अंत नहिँ मिलै ठिकाना ॥
 या से साथ संग सुखकारी । ऐसे ज्वाब दीन्ह तेहि नारी ॥

॥ दोहा ॥

करिया कहै स्वामी सुनौ, झूठा जगत पसार ।
 लोभ मोह मद फँसि रहे, क्यों कर उतरै पार ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी करिया बहुत भुलाई । ता के मन मैं एक न आई ॥
 पहिले जगत भाव दरसावा । ता के मनहिँ झूठ सब भावा ॥
 ऐसी नारि पोढ़ जब जानो । मन तेहि केर मरम पहिचानी ॥
 बुद्धि सुद्ध सीतल चित गाता । हित कर बचन प्रीति की बाता ॥
 बिरह भाव बिधि हिरदे भीनी । ऐसी नारि पार रस चीन्ही ॥
 ऐसा तोल बोल जब जाना । तब तेहि सगरा भेद बखाना ॥
 गुप्त भेद सत सत दरसावा । ता कर हिया उमँगि अस आवा ॥
 दीन्ही सुरति संध तेहि हाथा । अज्ञा ले पुनि नायौ माथा ॥
 संग सखी सब अचरज लाई । कान बस्तु येहि कान सुनाई ॥
 घट का चार बसेरा पाई । पुनि सिर नाथ पाँय घर आई ॥
 कर्मा नारि पूछ बिख्याता । कहौ कहाँ गइ कैने साथी ॥
 तब करिया बरतंत सुनावा । तुलसी बरनन बिधी बतावा ॥
 सुनि कर्मा मन भयो अनंदा । अब तोर छूट काल कर फंदा ॥
 करिया संग सखी इक जैनी । ता कर नाम रहै पुनि सैनी ॥
 तुलसी दरस गई दरबारा । पुरुष भेद सुनि पायौ सारा ॥
 सुना पुरुष तेहि भर्म समाना । नारि गई घर भया बिराना ॥
 पुरुष नाम है कालू जेही । नग्र लोग कहि बरजत तेही ॥

कालू नारि धाड़ धमकाई । ये फकीर ढिँग जान न पाई ॥
 कालू कहै मोर दुखदाई । जक्त लोग थूकै मुख माई ॥
 मेरो पाग आव' तैं खेवा । अस कहि धाड़ धाड़ कै रोवा ॥
 पाड़ पड़ासन अस समझावै । अब यह कहूँ जान नहिँ पावै ॥
 सब घर टेरि टेरि कह दीन्हा । घर बाहर इन जानन दीन्हा ॥
 निकर सकै नहिँ बाहर जाई । घर मैं बैठि हिये दुख पाई ॥
 तुलसी ज्ञान तेहि हिये समावा । कर तुलसी तुलसी गोहरावा ॥
 पुनि तेहि नारिकार एक कीन्हा । हेमा कहार बुलाइ उन लीन्हा ॥
 तेहि सन कहि तुलसी बिधि सारी । दरसन करौँ स्वामी दरबारी ॥
 वा को दिये टका दुइ चारी । गये तुलसी जहँ कुटी सँवारी ॥
 हिरदे अहीर मिल्या तेही बाटी । हेमा ताहि भँटि चढ़ि घाटी ॥
 जिन सैनी बरतंत सुनाया । हिरदे चल ता के घर आया ॥
 सैनी हिरदे से लै लाई । स्वामि कुटी मोहिँ देव बताई ॥
 ता के जाइ मैं परसौँ पाँई । दरसन मिलै और नहिँ चाहौ ॥

॥ सोरठा ॥

हिरदे कहै सुन बात, सैनी साबित धीर धर ।
 ये सब जगत लबार, या से बच करि चालिये ॥

॥ दोहा ॥

सैनी मन धीरज नहीं, बिरह बिथा की लार ।
 सार भेद मो से कहौ, तब दिल समझि सिहार ॥१॥
 हिरदे कहै सैनी सुनौ, सूरति देउँ लखाइ ।
 लै लगाइ ऊपर चढ़ौ, निज घर अपना पाइ ॥२॥

॥ चौपाई ॥

हिरदे तेहि को सुरति लखाई । पुनि उठि कै अपने घर आई ॥
 तुलसी से सब कथा सुनाई । सुनि तुलसी कै मन सुख पाई ॥

एक दिवस ऐसी बिधि भयऊ । सैनी करिया के ढिँग गयऊ ॥
 करिया ने अस बचन उचारा । तुलसी पै चलिहँ दोउ लारा ॥
 प्रात राति चलिहँ दोउ संग । तँ अपना चित करौ न भंगा ॥
 समझ बूझ अपने घर आई । चलनेकी बिधि मति ठहराई ॥
 निस पुनि बीत गई अधराती । पुनि दोउ उठि चालीँ संग साथी ॥
 पहुँचीं तहाँ कुटी निज साजा । तुलसी तुलसी करै अवाजा ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी पूछै बांत, अर्ध राति कस आइया ।
 करिया कहि बिख्यात, सैनी के संग मैं चलो ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी कहै सुनौ तुम बाता । कस आई तुम आधी राता ॥
 करिया सैनी कहै कर जोरा । तुम्हरे दरसन को मन दौरा ॥
 अब इक अरज सुनौ हो स्वामी । तुम मोहिँ दीन्ह सुरति सहदानी ॥
 सुरति सैल हम निस दिन पाला । सो तुम सुनिचै दीनदयाला ॥
 दृग द्वारे दीसै इक खिरकी । ता मैं होइ सुरति मोरि सरको ॥
 चढ़ि गइ चटक जाइ वहि द्वारा । फटिक सिला के होगइ पारा ॥
 वहँ जो कैतुक देखा जाई । सो स्वामी सब भाखि सुनाई ॥
 तहँवाँ लोक अलोक समाना । ता का कहिये कौन बिधाना ॥
 ता के परे अधर रस देखा । नहिँ तहँ लोक अलोक अलेखा ॥
 जो निज नैन निरखि कै जानी । मुक्ती भरै वहाँ कै पानी ॥
 अस अस कहत रात गइ बीती । मन परतीत काल सोँ जोती ॥
 भोर भयो जब आज्ञा लीन्ही । सूरति उठी गवन तब कीन्ही ॥
 करिया सैनी चरन पखारी । आज्ञा लेकर भवन सिधारी ॥

॥ सोरठा ॥

गई भवन के माहिँ, तुलसी सब्द निरखत चलै ।
 उठै घोर घर माहिँ, ता मैं निस दिन बसि रहै ॥

॥ चौपाई ॥

करिया सैनी घरहि सिधाई । अपने अपने मंदिर आई ॥
 निस दिन उठै गगन घनघोरा । ता मैं अटक रहै मन मोरा ॥
 कर्मा धर्मा रहे पुनि दोई । भोर भये उठि पहुँचे सोई ॥
 तीजे सेख तकी उठि धाये । तीनों मिलि तुलसी पै आये ॥
 बैठे भेद भाव सब चीन्हा । तीनों बात आपनी कीन्हा ॥
 धर्मा कर्मा भेद बतावा । निज निरबान भेद हम पावा ॥
 सो निरबान पार इक द्वारा । निरखा फटिक सिला के पारा ॥
 जहँवाँ देखा पुरुष नियारा । ता की सोझा अगम अपारा ॥
 ता का भेद निरबान न पावै । नैन सौं देखि नजर मैं आवै ॥
 कर्मा धर्मा बोले बोली । गुप्त राखि परगट नहिँ खोली ॥
 दोउ मिलि भाखी अस अस बाता । तुलसी समझि लीन्ह बिब्याता ॥
 सेख तकी उठि कै तब बोला । अपनी बिधी बात सब खोला ॥
 खुदावंद इक अरज हमारी । मैं मुरीद मुरसिद की लारी ॥
 फजल नजर मेरे पर कीजै । मेरी अरज चित्त मैं दीजै ॥
 बंदे ने बकसीसी पाई । सो हजरत मैं कहौं सुनाई ॥
 एक रोज फजल अस कीदा । रूह चढ़ गई अगम के दीदा ॥
 चौधा तबक देख वहँ जाजा । जहाँ नबी की उठै अवाजा ॥
 रूह दौड़ पट अबरा तोड़ा । चौधा तबक रूह से फोड़ा ॥
 लै लगि जाइ लाह के माई । साहिब रबब बसै तेहि ठाँई ॥
 चूँ बेचूँ बेजवाबी साँई । वो साहिब दिल अंदर पाई ॥
 खुद खुदाइ वो मालिक प्यारा । मुहम्मद खुदा दोऊ से न्यारा ॥
 अल्ला नबी रसूल न जाना । चौधा तबक से अधर ठिकाना ॥

॥ सारठा ॥

तकी तका निज खेल, मुरसिद तुलसी सौं कहै ।
 यहि बिधि कीन्ही सैल, सो अदबुद अंदर लखा ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तकी सुन मुरसिद प्यारे । मिहर फजल से जाइ निहारे ॥
 हर दम रूह लहर लहराई । बिरह भाव हर वक्त सताई ॥
 रूह लिपट लिपट तेहि बूझै । साम सुबह कुछ और न सूझै ॥
 दम दम बिरह लहर अकुलानी । जेहि बिधि मीन भुलानी पानी ॥
 अस्त रबी जस कँवल बँधाना । चंदा अस्त क मोदनि जाना ॥
 चंदा अस्त बीत जय जाई । तब वा की कहँ बिरह समाई ॥
 ये जहान खिलकत है अंधा । बिरह भाव बूझै कोइ बंदा ॥

॥ सोरठा ॥

कमोदनी बिलखाइ, चंद अस्त आसिक गये ।
 बिलखै बिरह बेहाल, चंद देखि निस हरखही ॥

॥ चौपाई ॥

सेख तकी दिल बिरह समानी । आवै न बात नैन बहै पानी ॥
 दम दम बिकल खुदाइ पुकारी । तन मन सुध बुध सकल बिसारी ॥

॥ शेर ॥

बेहोशिये आदम से, वह ख्याल जुदा है ।
 बाहर जो है मुहम्मद, अंतर में खुदा है ॥

॥ सदा^१ ॥

ऐ बेहोश प्यारे तैं यार बिसारा ।
 खिलकत का खेल सबै भूठ पसारा ॥ १ ॥
 इक पल में फना होत देख जक्त असारा ।
 इन नैनों से देख तेरा कौन है यारा ॥ २ ॥
 अपनी तू आदि देख कहँ से आया ।
 उस यार को बिसार के लौ कहँ को लाया ॥ ३ ॥
 हम ने दिल बीच यार अंदर पाया ।
 उस बिरहिन के तन में रोम रोम में छाया ॥ ४ ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में यह सदा नहीं है ।

वो मरती बेहाल पिया पिया पुकारै ।
 तन मन में नहिँ होश नहीं बदन निहारै ॥ ५ ॥
 ऐसी बेहोश सहै सूल कटारी ।
 जैसे तन बीच सेल तेगा मारी ॥ ६ ॥
 ऐसी बिरहिन के बीच बिरह सँवारी ।
 सोई बिरहिन तो लगै पिउ को प्यारी ॥ ७ ॥
 जा का यह हाल सोई अधर सिधारी ।
 तुलसी सो नारि भई जग से न्यारी ॥ ८ ॥

॥ गज़ल १ ॥

अरे ऐ तकी तकते रहो, मुर्शिद ने दस्त पंजा दिया ।
 बेहोश बिरह बिरहिन लिया, पिय पीर की बातें कहै ॥१॥
 अरे ऐ शिताबी आ पिया, बिरहा सरप मुक्त को डसा ।
 निसरै न चंदा जाय के, सूझा नहीं नैनन किया ॥२॥
 चंदा बेदरदी तँ हुआ, दरदी कमेदिन क्या किया ।
 हर दम बिरह में हूँ बिकल, चंदा बिना दम दम मुआ ॥३॥
 बिरहिन पिया बेहोश है, तन मन बदन सूझै नहीं ।
 बूझै चशम बिन क्या कहै, दिल हेर रहम-दिल दोस्त है ॥४॥
 हर वक्त हाज़िर मैं खड़ी, नैना नज़र नदियाँ बहीं ।
 याँ कोई मेरा महरम नहीं, अब तो चरन मैं आ पड़ी ॥५॥
 आशिक़ इशक़ हर दम लहर, दिल से जुदा दरदी हुआ ।
 कहौँ क्या जो सिर खटकै जुवा, हर दम हिये बिच मैं लहर ॥६॥
 इस इशक़ में गाफ़िल फिरौँ, कहूँ बस नहीं बेहोश हौँ ।
 दम की खबर कुछ ना रहै, अब तो दिलै बिच मैं मरौँ ॥७॥
 पल पल इसम दिल यौँ किया, ये तलब के ताईँ चहौँ ।
 तुलसी तकी खुब समझ के, तब यार का मारग़ लिया ॥८॥

॥ गज़ल २ ॥

अरे ऐ तकी दीदार दिल, दिल दिल दिलों बिच तिल में दिल ।
 नैना नज़र से आन मिल, खिलखिल खुशी दिल कर मियाँ ॥१॥
 चल गैल गैद तक आज पिल, ऐसे हिये बिच आन हिल ।
 भोका न दे दर्दी ज़लल, अरे हाल मिल फिर ना निकल ॥२॥
 दिल दूर से दरदी फ़ज़ल, इस राह से पहुँचै मँज़ल ।
 अरे बूझ ले सूझै अदल, उसकी मेहर दिल में शकल ॥३॥
 मन मार हो दिल मैं कुसल, प्यारा अधर आवै अजल ।
 ये वक्त फिर आवै न कल, पानी बिना पावै न थल ॥४॥
 देखो नज़र कोइ ना अचल, भल भल भला सोई सयल ।
 तुलसी तकी मुर्शिद से मिल, कर दोस्ती फिर बेख़लल ॥५॥

॥ गज़ल ३ ॥

तिल में नक़ल न्यारी अक़ल, मुर्शिद शकल रूह राह चल ।
 चल आज मिल पावै असल, पी प्यार मिल सोवै अचल ॥१॥
 नल राह रल गुस्ले कँवल, पावै तु फल होवै सुफल ।
 अरे ऐ मुसाफ़िर जल्द चल, होगा वहाँ तुझ पर फ़ज़ल ॥२॥
 अज आज अल कूकै कँवल, स्वाँसा निकल हर दम ख़लल ।
 भल भिल भिलल आमिल अमल, पल पल परे पर पाख़िलल ॥३॥
 तकी जो तुल तुलसी अतुल, देखौ ज़लल ये जहान फल ।
 कुछ ना असल हमहँ अबल, आख़िर निकल न्यारा हुआ ॥४॥

॥ रेख़ता २ ॥

दिल दिल हिया हुलसै पिया, दीदा लहर हर दम मेहर ।
 पाजँ खुशी आशिक़ रहूँ, दिल से रहम-दिल यारिया ॥१॥
 मेरे मियाँ मैं प्यारिया, तन मन बदन सब वारिया ।
 बदनाम सुढ़ बिसारिया, रहूँ लै लपट नैनों जिया ॥२॥

(१) अजल (अरबी शब्द) = तुर्त । (२) यह रेख़ता, मुं० दे० प्र० की पुस्तक में नहीं है ।

माँगूँ मेहर कीजै किया, इस इश्क से आशिक लिया ।
 लागी रहूँ हर दम हिया, मानो मनो सब कुछ दिया ॥३॥
 पाऊँ मेहर महलन रहूँ, आजँ अटारी कर कहूँ ।
 बिजली अँधारी सम चहूँ, उमगै कड़क बदरी सहूँ ॥४॥
 चुनरी रँगोली रँग चुवा, पानी घटा हर दम धुआँ ।
 कोइ ना अकेलो लार लै, हर दम मियाँ मनुआँ मुआ ॥५॥
 खिलकत खलक थूकै सुवा, तन मन बदन हारी जुआ ।
 पौँढी पलँग हर वक्त सुवा, जागूँ मेहर माँगूँ दुआ ॥६॥
 अरे ये अधर आदर करौ, ये जक्त की जाली जरौ ।
 भावै नहीं जेवर जहर, तुलसी तकी खिलकत मरौ ॥७॥

॥ दोहा १ ॥

तुलसी तकी निहार, निकर न्यार पारै हुआ ।
 खुद खुदाइ की लार, जग जहान सगरा सुआ ॥

॥ छंद १ ॥

तुलसी तक पाया अगम लखाया, गिरा गजल सोइ भाखि कही ॥
 सूरति चढ़ि जागी अगम को भागी, लखा अलख की आदि भई ॥
 देखा सब न्यारा अगम पसारा, मुरसिद ने जद राह दर्ई ॥
 तकी तलब बुझानी प्यारा जानी, खुद खुदाइ की राह लई ॥
 मुरसिद मत पाया दस्तन आया, फजल मेहर की मौज भई ॥
 रूह चढ़ी असमाना फोड़ निसाना, देखि आदिकी आदि कही ॥

॥ दोहा ॥

तकी तलब मुरसिद भरी, तुलसी पीर हमार ।
 दस्त फजल अपना करौ, रहम रब्व दरबार ॥१॥
 मुरसिद फजल गुलाम पर, करौ रहम-दिल प्यार ।
 अबै हुकम मुक्त पर करौ, अज्ञा होइ दीदार ॥२॥

(१) यह दोहा और छंद मुं० दे० प्र० की पुस्तक में नहीं हैं।

॥ चौपाई ॥

तुलसी हुकम तकी को दीन्हा । पुनि चलि कै मारग उन लीन्हा ॥
मारग चलि पुनि कासी आये । अपने घर को आन सिधाये ॥

॥ दोहा ॥

कर्मा धर्मा अरु तकी, करिया सैनी नार ।
बस्तु पाइ मारग गहे, दीन्हा पंथ लखाइ ॥

सम्बाद माना, नैनू, स्यामा, पंडितों के साथ ।

॥ दोहा ॥

नैनू पंडित और सब, स्यामा सब मिलि झार ।
कहै भेद तुलसी सुनौ, तुम कीन्हा झूठ पसार ॥

॥ सौरठा ॥

नैनू गुसा गुहार, हार हिये मन तमक से ।
बोला बचन बिकार, तुलसी तुम मिथ्या कहो ॥१॥
स्यामा सोच विचार, अनल झार हिये उठत जिमि ।
क्रोध कुबुधि की लार, लटो लटो कर कर कहो ॥२॥
माना मान अपूर, झूर झूर बोले सबै ।
धुधि बल मत काकूर, चूर अंग अज्ञान में ॥३॥

॥ चौपाई ॥

नैनू स्यामा यों कर बोले । नाक फुलाइ बचन अस खोले ॥
नैन सुरख और मूछें मोड़ी । भुजा चढ़ी पुनि भौहैं टेढ़ी ॥
मुख सों कड़कि स्वाल अस डारा । तुलसी तुम से करिहैं रारा ॥
तुलसी कहौ आदि बिख्याता । नैनू पूछै सब बिधि बाता ॥
वेद पुरान आदि गति गावौ । और ब्रह्मा की आदि बतावौ ॥
सिव स्वामी अरु बिस्नु बिचारा । कहौ आदि रचना बिस्तारा ॥
भये भगवान दसौ औतारा । और बैराट का कहौ पसारा ॥
ब्रह्मा कहौ कहाँ से अइया । उन रचना कैने बिधि करिया ॥

सातौ दीप और नौखंडा । केहि बिधि रचा सकल ब्रह्मंडा ॥
 तब साधू तुम पूरे ज्ञानी । आदि श्रंत की करौ बखानी ॥
 स्थावग तुरक मता दरसावा । ये गरीब को जवाब न आवा ॥
 हम पंडित बिद्या बिधि आगर^१ । बेद बिधी से कहौ उजागर ॥
 हम संग जीति जाव गुरुजानी । तुम्हरा साध मता तब जानी ॥
 बिना पुरान ज्ञान कहँ पावा । बिन सास्तर कहौ कहँ से आवा ॥
 बेद बिना काहू नहिँ पावा । या के परे कोऊ नहिँ गावा ॥
 व्यास मुनी जो पुरान बनाये । नारद सुकदेव को समझाये ॥
 रामकृष्ण बिधि भाख्यो भेवा । जोगी ऋषी मुनी सब देवा ॥
 सब उठाइ अपना मत ठानै । बेद बिधी बिन हम नहिँ मानै ॥
 सब पंडित मिलि टेकी टेका । बिना निसा नहिँ मानै एका ॥
 होहोकार सबन बहु कीन्हा । कासी माहिँ रहन को दीन्हा ॥
 कैान मते का साध कहावै । सब को झूठ झूठ बतलावै ॥
 यह पुनि साध कहाँ से आवा । कैान गुरु यह ज्ञान पढ़ावा ॥
 नैनु नैन गुसा भरि लाये । सरक सरक हमरे ढिँग आये ॥
 कह तुलसी तुम कहौ जवावा । अब कस मौन बैठि मोरे बाबा ॥

॥ दोहा ॥

नैनु पंडित तमक सौँ, कह तुलसी से बात ।
 इक इक बिधि बतलाइ दे, नहिँ होइ है उतपात ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिव ॥

॥ दोहा ॥

कह तुलसी नैनु सुनौ, मोरी मनिहौ बात ।
 पूछा सोई बताइहौँ, जो चित बसै बिख्यात ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी जवाब धीर सौँ दीन्हा । सुनौ भेद भाखौँ मैं चीन्हा ॥
 भाखौँ आदि साध गति न्यारी । नैनु बूझौ बुधि अनुसारी ॥

(१) श्रेष्ठ ।

कह तुलसी सुन नैनू पाँडे । पंडित सुनौ सबै चित माँडे ॥
 कौन वेद की आदि बखानौ । पंडित कहौ सोई मैं मानौ ॥
 वेद चारि ब्रह्मा निज कीन्हा । पंचम सुषम वेद को चीन्हा ॥
 छठवाँ प्रसंगै वेद कहाई । वा की बिधी सुनौ हो भाई ॥
 चारि वेद जो गुप्त रहाई । ता में कागद लगै न स्याही ॥
 ता को भेद वेद नहिँ जानै । ता के परे कहे को मानै ॥

॥ सोरठा ॥

वेद दसौ बिधि गाइ, का की पूछौ आदि तुम ।
 सो मैं देऊँ बताइ, नैनू स्यामा भाखिये ॥

॥ चौपाई ॥

तब नैनू कुछ जवाब न दीन्हा । मौन रहे कुछ बोल न कीन्हा ॥
 तुलसी दसौ वेद बिधि गाई । कौन वेद की आदि बताई ॥
 और ब्रह्मा की आदि बखानी । ब्रह्मा अनेक भये उतपानी ॥
 कइ उपजे कइ बिनसे भाई । कइ कइ परे कर्म भौ माई ॥
 पूछौ जौन कहौं जेहि नामा । भाखौ सोइ मैं कहौं बिधाना ॥
 सिव बिरनू पुनि भये अनेका । नाम कहौ बरनन करौं जिन का ॥
 और भगवान दसौ औतारा । जिन का कहौ कहौं निरबारा ॥
 बहुत बहुत औतारी भइया । जेहि पूछौ तेहि की हम कहिया ॥
 पुनि बैराट पूछिया ज्ञाना । भये बैराट अनेक बिधाना ॥
 फूटै बनै बनै फिरि फूटै । ऐसे अनेक बार पुनि टूटै ॥
 जैसे कुम्हरा घड़ा बनाई । फूटै घड़ा काम नहिँ आई ॥
 झूठा अस बैराट बनावा । ज्यौं बाजीगर आम लगावा ॥
 आम लगाइ जगत दिखलावै । पुनि कैड़ी माँगन को आवै ॥
 रूप बैराट अनेकन कहिया । पुनि पुनि नास सबन को भइया ॥
 पुनि पुनि आवै पुनि पुनि जाई । ये सब हैं परलय के माई ॥
 जिन के भये दसौ औतारा । अंधा जग तेहि कहै करतारा ॥

कर्म बंध वे उपजे आई । पुनि पुनि उपजे पुनि पुनि जाई ॥
 कइ बैराट नास हूँ गइया । औतारी कैसे कर रहिया ॥
 ता कै नाम कहौ भगवाना । आये पुनि पुनि बहुरि नसाना ॥
 नासपाल बिधि इनकी होई । और बैराट नसे सब कोई ॥
 ब्रह्मा नाभि कँवल से भाखौ । फिरि फिरि नास भयौ पुनि ता कै ॥
 ब्रह्मा बिस्नु की कहौ बुझाई । नसि बैराट येहू नसि जाई ॥
 चारि खानि के जीव बिचारा । इन का कौन करै निरबारा ॥
 मरिहै धरती पवन अकासा । पानी मरै अगिनि का नासा ॥
 ऐसे सब बैराट नसाना । सो ब्रह्मा का कौन ठिकाना ॥

॥ उत्तर नैनू पंडित ॥

॥ दोहा ॥

नैनू कहै तुलसी सुनौ, सब बैराट नसाइ ।
 भगवान रहै इक बृच्छ पै, जब जल बास रहाइ ॥

॥ चौपाई ॥

नैनू कहै जल रहै निदाना । अछै बृच्छ पर श्रीभगवाना ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

तुम कहौ जल तत रहै निवासा । तौ बैराट कहाँ भयौ नासा ॥
 जल के जीव जलहि में होई । जल तत जीव जगत रहा सोई ॥
 रहै भगवान और कोइ नाहीं । तुम अस कहि बिधि भाखि सुनाई ॥
 नौलख जोनि खानि जल माहीं । जल रहिया वे कैसे जाहीं ॥
 पिरथी बिन जल कैसे रहिया । पंडित यह बिधि बरनि सुनइया ॥
 अछै बृच्छ रहै जल जाना । ता पर सैन कीन्ह भगवाना ॥
 या की बिधि बिधि कहौ बुझाई । पंडित सुनियौ चित्त लगाई ॥^१

(१) यह चौपाई मुं० दे० प्र० की पुस्तक में नहीं है ।

॥ प्रलय की सवैया १ ॥

बाम्हन वेद बताइ कहैं, भगवान महाप्रलय सैन कराई ॥
 भये तत नास बैराट अकास, अछैबट बृच्छ सो पात के माई ॥
 आतस पिरथी जो पवन नहीं, तब थो न कछू जल जलहि बताई ॥
 ये बिधि भाखि बिचारि कहैं, तौ कहौ थल बिन जल कैसे रहाई ॥
 नीर रहै जल जीव सभी, सो पिरथी भये बिन नीर न भाई ॥
 बैराट बिनास तो ब्रह्मा की नास, तो वेद बिनास भयौ जलमाई ॥
 कागद स्याही न कलम बची, तुलसी तब की बिधि कौन सुनाई ॥

॥ सवैया २ ॥

महा परलय जल वेद कहै, सुन भेद बिना सब भूठ कहानी ॥
 पाँचहि तत्त बैराट नसौ, और ब्रह्मा नसौ नसौ वेद की बानी ॥
 नाद गये नस वेद बहे, जब कौन कही बिधि बात बखानी ॥
 ज्ञान बिचार से बूझि कहौ, तब सूझि परै हिये आँखि निसानी ॥
 नीर भयौ जल तत्त रह्यौ, पिरथी बिन तत्त रह्यौ कस पानी ॥
 पिरथी भई जुग तत्त सही, पिरथी और नीर के तत्त में खानी ॥
 जो कोइ जानि बयान करै, भगवान की नाक में स्वाँस समानी ॥
 स्वाँस बसे तत तीन फँसे, सो अकास रहे बिन स्वाँस न बानी ॥
 चारिहि तत्त रहे रस मन्त्र, तौ अगिनि कहौ बिधि कैसे नसानी ॥
 पाँचाइ तत्त कौ ठाट रह्यौ, बैराट नसौ कहौ कैसे बखानी ॥
 तुलसी तत तोल के बोल कहै, तिन की हिये आँखि से भाखौ बखानी ॥

॥ सवैया ३ ॥

बास बैराट भयौ तत नास, सो पाँच कौ बास न स्वाँस रखौ थो ॥
 आदि अकास कौ भास नसौ, पिरथी और पवन निवास नहीं थो ॥
 और अनल जल रह्यौ कछु नाहिँ, यह बोल रह्यौ जाको बास कहाँ थो ॥
 तुलसी जब की बिधि बात कहौ, जब कागद स्याही न वेद रह्यौ थो ॥

॥ उत्तर पंडित ॥

॥ सवैया ४ ॥

बाम्हन ज्वाब दियौ तुलसी, परलय जल और रहै कछु नाहीं ॥
यहि बिधि बेद बताइ कहै, सोइ स्वाँस मैं बेद भयौ सो बताही ॥
सबही बैराट नसै कोइ नाहीं, जल वृच्छ भगवान सो पात के माहीं ॥
और कहै कछु रहत नहीं, सोइ स्वाँस मैं बेद रहै बतलाहीं ॥
तुलसी सुनि कै मन मौन गही. सुन बोल बैराट मैं स्वाँस नसाही

॥ सवैया ५ ॥

पवन रही जोइ प्रलय कही, ये तो बिधि बात मिली नहिँ भाई ॥
अकास और स्वाँस सब तत्त रहै, सोइ मत्त येही बिधि बेद बताई ॥
नास भये कोइ नाहिँ रहै, जब जोइ रह्यो जाके पार सुनाई ॥
पंडित तोल न बोल कही, तुलसी चुप बैठि न बात बताई ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ सवैया ६ ॥

पंडित मौन कहै तुलसी, अब भाखि कहौँ सुन भेद बताई ॥
नास अकास पवन पिरथी, जल नास अनल न कोइ रहाई ॥
ब्रह्मा और बेद बैराट नसौ, सिव चंद न सूर न तारे तराई ॥
निरगुन नास निवास नहीं, सोइ सरगुन सृष्टि की कौन चलाई ॥
ये लखि भेद कहै तुलसी, पुनि परलय भइ ता की लेख लखाई ॥

॥ सवैया ७ ॥

आदि अनादि अगाधि बिधी सुन, याद करिले कहौँ महाप्रलय गाई ॥
प्रथम पवन कै भास नस्यौ, पुनि नीर नस्यौ मिलि स्वाँस के माई ॥
नीर औ स्वाँस मैं मन अगिनी, चलै तीनों भास अकास मैं जाई ॥
चारिहि तत्त के मत्त मिलै, पुनि पिरथी नसी बोहि वास मैं आई ॥
पाँचहि तत्त कै नास भयौ, नासि आइ समाने अलख के माई ॥
आदि अलख और जाति नसी, सो बसे अविगति मैं जाइ जो भाई ॥

अविगति नास की बात कहौं, नसि जाइ कै हंस मैं बास कराई
 आतम हंस प्रमातम बंस, सो ये दोउ नसि गये सुन्न के माई ॥
 सुन्न नसी और धुन्न नसी, सोइ जाइ लसे दोउ सब्द के माई ॥
 सब्द का नास कहौं पुनि बास, सो सत्तपुरुष मैं जाइ समाई ॥
 सत्तपुरुष कै नास नहीं, सुन महा प्रलय बिधि ऐसी बताई ॥
 कोटि प्रलय बिधि आदि अनादि, सो सत्तपुरुष पै एक न जाई ॥
 ता' के परे पद आदि अनाम, सो संत बसैं वोहि धाम के माई ॥
 तुलसी निज देखि कै बास बिधी, सोइ पास अनाम के संत समाई ॥

॥ सवैया ८ ॥

बिस्व बैराट हता नहिं ठाट, सो ब्रह्म की बाट कै घाट कहाँ थो ॥
 जीव नहीं तब सीव नहीं, पति पीउ के प्यार मैं जीव बसो थो ॥
 जहँ काल कराल की जाल नहीं, तब साह की कोठी मैं माल धरो थो ॥
 पिंड ब्रह्मंड न अंड हतौ, तब जीव अजीव न खानि परो थो ॥
 जब ब्रह्मा न बेद न खेद हतौ, तब आयौ अभेद न मारे मरो थो ॥
 तोल कहै तुलसी निज कै, जब जक्त के जीव को सार कहाँ थो ॥

॥ सवैया ९ ॥

अंड ब्रह्मंड बैराट न पिंड, अखंड जो ब्रह्म की बाट बताऊँ ॥
 जीव अजीव न ब्रह्म हतौ, जब जोइ हतौ ता कै भेद सुनाऊँ ॥
 वोहू नहीं कछु और कही, सुन और से भिन्न का भेद लखाऊँ ॥
 आदि न अंत कहै सोइ संत, सो पंथ परे पर पार दिखाऊँ ॥
 तुलसी तब की बिधि बात कहूँ, जब कोइ न थो जा के रूप न नाऊँ ॥

॥ सवैया १० ॥

अब सत्तहि सत्त कहौं मत मूल, नहीं अस्थूल न नाम कहायौ ॥
 आदि अनादि की आदि कहौं, सो अगाध उपाध जो एक न गायौ ॥
 आदि पुरुष निःनाम अनाम, सो ठाम न ठौर न धाम कहायौ ॥
 तास हिलोर भया इक सार, सार लहरि समुद्र की खाइ कहायौ ॥
 खाइ का ब्यान कहौं सत नाम, सो धाम रहै सतलोक मैं आयौ ॥

नाम निअच्छर की लघुता, रँग ता से भये सोला ब्रह्म जनायौ ॥
तुलसी बिधि ब्रह्म की आदि कही, अब ब्रह्म भयौ जग जीव जो भायौ ॥

॥ सवैया ११ ॥

निरगुन सोला को साखि कहैं, सोइ बास बसै सत दीप के माई
निरगुन एक की नेक कहैं, बिधि बेद कहै परमात्म ताई ॥
सोइ परमात्म सुन्न बसै, ता को धुन्न से आत्म जीव कहाई ॥
मान सरोवर घाट बसै, येहो आत्म जीव की बाट बताई ॥
आत्म तत्त तमात्म मारग, तत्त भये अविगति कहाई ॥
तुलसी बिधि बात निहारि कहै, सो पुकारि पुकारि कै कहत सुनाई ॥

॥ सवैया १२ ॥

अविगति रीति करी जग प्रीति, सो ध्यान से जीति कै मान बढ़ायौ ॥
सत्त पुरुष की डोरि गही, सो पुरुष के अंस से जीव जो आयौ ॥
जीव के तेज से जोति भई, जिव जोति मिले भगवान कहायौ ॥
ता को बैराट कहै नर अंध, सो फंद गुना गुन तीन में गायौ ॥
अब तत्त की साखि कहैं बिधि भाखि, सो लाग की लाख कौ ताख बनायौ ॥
कुंभ के उद्र अकास औ स्वाँस, अकास जो तीनोई तत्त में आयौ ॥
पाँचहि तत्त भये बिधि एक, सो याहि कै नाम बैराट कहायौ ॥
अकास के नूर से सूर भयौ, तत तारे के बंद से चंद चलायौ ॥
सब ही बिधि बंद बैराट बनौ^१, बिधि भूलि पिया चित नेक न लायौ ॥
तुलसी जब की नहि बात लखी, जब जाही में नाम अलख्य कहायौ ॥

॥ सवैया १३ ॥

अलख निरंजन नाम सोई, जिन जोति से भोग कियौ भग जाई
तीनिहि बंद के तीनि भये, सोइ ब्रह्मा बिस्नु महेस ह भाई ॥
पहिले जग जीव अलख्य हतौ, गुन तीनि में मन सो लख्य कहाई
तुलसी बिधि भास में बास बस्यौ, सो फँस्यौ बिधि बेद से खानि में आई ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में “बनौ” की जगह “नसौ” है जा अशुद्ध जान पड़ता है।

॥ सवैया १४ ॥

चारोइ बेद की आदि कहैं, पुनि पंचम स्वाँस सुषम्न से आयौ ॥
 बेद सुषम की छाया लई, ता से ब्रह्मा ने चारोइ बेद बनायौ ॥
 षटवाँ सोइ बेद प्रसंग जोई, सो आये सुषम्न प्रसंग से गायौ ॥
 ये षट बेद का भेद कही, सो रहे पुनि चार सो संत बतायौ ॥
 चारोइ बेद की आदि कही, सोइ कागद स्याही न लेख लिखायौ
 सुनौ दस बेद कहै तुलसी, सो कहौ पुनि पंडित कौन बनायौ ॥

॥ सवैया १५ ॥

लख्य रहा गुन तीनि गहा, सो पलक्क^१ मैं आ कियौ बास बसेरो ॥
 ऐसे बैराट भयौ सब ठाट, सो घाट तीनों गुन बाट मैं घेरो ॥
 रजो कहूँ ब्रह्मा सतो कहूँ बिम्नु, कियौ तम संकर साज घनेरो ॥
 भया भगवान बैराट बिधान, सो माया की चाट मैं काल कौ चरो
 चंदा रबि नैन नहीं सुख चैन, सो राहु बिमान करै नित फेरो ॥
 देखि दुखी मन राम फिरै, गुन गोरस खानि मैं कामना पेरो ॥
 तुलसी बिधि आदि बिख्यात कही, भगवान नसौ नहिँ कीन्ह निबेरो ॥

॥ सवैया १६ ॥

चारोइ खानि भयौ भगवान, सो याही से नाम अनेक कहायौ ॥
 काल बली कियौ जाल छली, सोइ बाँधि चले जो अनेकन आयौ
 जोगी जती जग ज्ञान मती, सोइ सीता सती और राम को खायौ
 ऋषि मुनि रोवैं सीस धुनी, और ब्रह्मा बिस्नु महेस चवायौ ॥
 तुलसी तत छान बिचार कहै, जब जोइ बच्यो जा को संत बचायौ ॥

॥ सवैया १७ ॥

पंडित भाखि कहैं बिधि ब्रह्मा ने, चारोइ बेद बनाइ लिये ह ॥
 साम जजुर जो भये हैं लघू, ऋगु बेद अथरवन चारौ किये हैं ॥
 येहि बिधि जगत सुनाइ कहैं, सो बनाइ कै गाइ जनाइ दिये हैं ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में “पलक” की जगह “खलक” है।

झूठी जो बात करै जग साथ, अनाथ अनारी ने मान लिये हैं ॥
ये भी खानि करी तुलसी, सो बेद ने मारि कै घानि किये हैं ॥

॥ सवैया १८ ॥

पंडित बेद का भेद कहैं, जा की उत्पति भाखि कै साखि सुनाऊँ ॥
जक्त रहा पीछे बेद भया, जा की आदि कहैं बिधि बात लखाऊँ
पिरथम बैल किसानी हती, धरती बन बोड़ कै सन्न^१ कहायौ ॥
ता की रसी कर टाट बन्यो, फिर कागदी कूटि कै धोड़ ले आयौ ॥
पुनि चूने दिवाल पै लेप कियौ, सो भयौ बिधि कागद लेख लिखायौ ॥
तिली जो तेल कियौ पुनि पेल, सो तेल से काजल स्याही बनायौ
स्याही भई पुनि कलम सही, लिखि ब्रह्मा ने याही से बेद सुनायौ
तुलसी तत तोल बिचार कहै, जग बेद के भेद से खानि मैं आयौ

॥ सवैया १९ ॥

पंडित झाड़ की आड़ लई, कहैं ताड़ के पात पर जात लिखो थो
येहि बिधि बेद बखान करै, सो अजान न जानै जो बेद कहैं थो
अस्थावर बावर बृच्छ हते तरु, तीस जो लाख में कौन नहीं थो ॥
अठरा बन भाँति की जाति सभी, सो सभी संसार को कार सही थो
उषमज अंडज पिंड हतो, अस्थावर चारि चौरासी बनो थो ॥
पात प्रथम भयौ तरु कै, तुलसी पीछे पात के बेद भयौ थो ॥

॥ सवैया २० ॥

बेद मथौ जिन पुरान कथौ, बहु सिम्रित सास्त्र को ज्ञान हतौ ॥
नेम अचार अचारज रीति, सो जीतै नहीं जम खायौ खतौ ॥
परमहि हंस बँधे जड़ संग, सो ब्रह्म अरंग न जानौ मतौ ॥
जगत अजान रहा रस खान, सो माया के मान में रंग रतौ ॥
तुलसी जब जानि कै मौन गह्यौ, सो कह्यौ पद साखी मैं सारो पतौ

॥ सवैया २१ ॥

अरे मन मान अचेत अजान, सो ऊसर खेत में काह मिलैगो ॥
ये जग संग पतंग कै रंग, सो माते मतंग से घानी पिलैगो ॥

ये जम जाल महा बिकराल, सो खालहिँ खैंचि के भूस भिलैगो ॥
तुलसी तब की बिधि याद करौ, तन छूटै न दँही से माल मिलैगो

॥ सवैया २२ ॥

तेल फुलेल करै रस केल, सो माया के फेल मैं सार भुलानौ ॥
मात पिता सुत नारि निहारि, सो झूठ असार को देखि भुलानौ ॥
ये दिन चार बिचार न लार, सो भूलि असार के संग तुलानौ ॥
तासे कहै तुलसी निज कै, तन छूटि गये जम देत उलानौ १ ॥

॥ सवैया २३ ॥

दृष्टि पसारि के देखि तुही, जग माहिँ रह्यौ कोइ ब्रूझ अमाना ॥
पंडो भभीषन भीम बली, गये खोज गली केहि राह समाना ॥
रावन लंकपती पै हती, सो रती भर संग न देखि निदाना ॥
तू केहि लेखे मैं देख कहौँ, तुलसी सतसंग से होत न हाना ॥

॥ सवैया २४ ॥

किये तन काज की लाज करौ, सो बनाइ कै साज ले तोहि पठायौ ॥
ता को बिसारि दियौ मतिमंद, जगत के फंद मैं बंद बँधायौ ॥
अंत जो कौन बिचार करौ नर, जा ने रच्यौ ता की याद न लायौ ॥
लेत हिसाब बनै नहिँ ज्वाब, सो ख्वाब के खेल मैं तोहि भुलायौ ॥
तुलसी तब बात बिचार पढ़ै, जब आनि चढ़ै जम छाती पै धायौ

॥ सवैया २५ ॥

सुनौ सतसंग का रंग कहौँ, सो उतंग अमोल जो मोल न आवै ॥
कहँ सबही सब संत पुकारि, बिना सतसंग नहीं कछु पावै ॥
संत मिलै सतपंथ चलै, सो कुपंथ कलह सब दूरि बहावै ॥
ज्ञान बिबेक बैराग लखै, मन मान मनी बिधि सारो नसावै ॥
संत मता कछु और लखै, सो पकै गुरु मारग में सुति लावै ॥
तुलसी तत तोल बिचार कहै, सो अमोल पिया घर सहज समावै

॥ सवैया २६ ॥

सतसंग में भेद अभेद मिलै, सुति सैल दुर्बोन को माँजा करै ॥
मन की मत झार निहार लखै, सो पकै सुति घाट पै आनि धरै ॥
पच्छिम बास की आस तकै, नित नेम सुती सत चाह करै ॥
येही बिधि डोर लगी निस बास, पिया पद खेल कै माल भरै ॥
तुलसी निज सूझ कै बूझ परी, जिन को पति प्यार से कार सरै ॥

॥ सवैया २७ ॥

संत मता अज आद अलग, ^१ बिलग ^१ बिधी कोउ नेकन जाना
राह रसी रजु ^२ पोढ़ करै, लागी डोर की मोर पै सुरति ठिकाना ॥
पील पै लील की खील करै, सो अपील अकास को मारि निसाना
मानसरोवर हंस बसै, तेहि माहिँ अन्हाइ के देस दिखाना ॥
तुलसी तत आतम भेद कही, पुनि आगे चले पर और कहाना ॥

॥ सवैया २८ ॥

मानसरोवर पार चली, ता की आली सुनौ सत सैन लखाऊँ ॥
जाहि सखी सुन सुन्न सुमारग, पार कै ब्रह्म परमात्म नाऊँ ॥
जाहि चढ़ी सत सुरति सुहागिल, पाइ लखौ ब्रह्मंड कै ठाऊँ ॥
जीव चराचर जाति सभी, सब देखि निहार कै भाख सुनाऊँ ॥
तुलसी गुरु से सुति राहलखी, बिधि सोई अगोचर ताहि बताऊँ ॥

॥ सवैया २९ ॥

सत्त पुरुष को भेद कहौँ, सतलोक में जाहि कै बास बसेरो ॥
संत सबै रस राह लखैँ, सो चखैँ वोहि मारग साँझ सवेरो ॥
सहस कँवल चढ़ै चक देस, सो जाइ लखै जा मैं जोति को डेरो ॥
ताहि के पास निरंजन बास, सो स्वाँस बसै वोहि धाम के नेरो ॥
ता के परे दल दोइ के पास, अकास के पास अलख्य को पहेरो ॥
ताहि के मध्य भरन्न के पार, अवीगत काल के जाल को घेरो ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में “अलग” की जगह “अलाप”, और “बिलग” की जगह “बिलाप” है जो समझ में नहीं आता । (२) रस्सी ।

ता के परे तट ताल मैं हंस, सो बंस अवीगत है तेहि केरो ॥
 ता के परे पर बेनी को घाट, प्रमातम ब्रह्म सो सुन्न मैं हेरो ॥
 आगे सखी बिधि बात कहौ, दल चारि परे सतलोक निबेरो ॥
 ता के परे खिरकी से नियार, सो साहिब सत्त पुरुष है मेरो ॥
 जा के रोमहिरोम ब्रह्मंड औ अंड, सो कोटि रबो जा के रोम उजेरो ॥
 सोइ सतनाम कहौ सत साहिब, ता को भयौ तुलसी निज चेरो ॥

॥ सवैया ३० ॥

एक अगत्त अगाध अनाम, सो धाम न गाम न ठाम ठिकाना ॥
 जहँ लख्य अलख्य कै खेल नहीं, सो खलकू बिचारे ने काहे को जाना ॥
 ता की बिधी कोइ संत लखै, सो अपेल अकेल का रूप न नामा ॥
 आतम हंस प्रमातम बंस, सो इन दोउ नहिँ यह देस पिछाना ॥
 जहँ ब्रह्म न जीव अजीव को बास, सो चंद न सूर जमीँ असमाना ॥
 पिंड ब्रह्मंड जो तत्त नहीं, जहँ सत्तहि लोक नहीं असथाना ॥
 सो साहिब सत्त के पार बसै, सो अगार अनाम जो संत समाना ॥
 जा की बिधि तुलसी लखि पाई, सो देखि अनाम को जानि बखाना ॥

॥ सवैया ३१ ॥

संत का भेद अभेद अपार, सो सार वोही वोहि देस को जानै ॥
 सूरति सैल से खेल करै, सो अपेल अकेल की साखि बखानै ॥
 वेद पुरान नहीं मत ज्ञान, सो जोगी कै ध्यान न पहुँचै निदानै ॥
 ता की कहै तुलसी बिधि तोल, सो संत बिना नहिँ भेद पिछानै ॥

॥ सवैया ३२ ॥

नीर निरंजन काल बिधी, सो कराल बसै मन ऐन के माई ॥
 चैन अचैन बिचैन करै, सोइ नीत अनीत मैं देत भुलाई ॥
 जगत जहान करै जे हैरान, सो खानि मैं डारिकै घानि पेरार्इ ॥
 जो कोइ जानि बिचार करै, सोइ संत के पाँउ परै नित आर्इ ॥
 वे सो दयाल करै प्रतिपाल, सो काल के जाल से लेत छुड़ाई ॥
 ये तत बात कहै तुलसी, सो बसी निज सूरति सत्त मैं जाई ॥

॥ सवैया ३३ ॥

गीता की भाखि कहैं पुनि साखि, सो आँखि से पोथी में देख बिचारो
 कहा भगवान अरजुन सुन कान, सो साँचे बिधान को जानि निबेरो ॥
 अरजुन ठाढ़ रहै रन माहिँ, सो कैरौ को मारि कै राज सम्हारो
 अरजुन देखि बिचारि कहै, परिवार मरै ऐसे राज को जारो ॥
 येहि बिधि ज्ञान उठौ मन माहिँ, सोई धनु बान पलक में डारो ॥
 कृष्ण कह्यौ पुनि ज्ञान बैराग, सो जोग बिज्ञान बिधी से पछारो
 अरजुन भक्त गरीब अजान, सो जानै नहीं या को फंद पसारो ॥
 अरजुन गह्यो जो नहीं धनुवाँ, सो बताइ त्रिलोकी को डाढ़ में चारो
 अरजुन जो देखि भयंक भयो, सो कह्यो बिधि कैरौ को सख ले मारो
 ये छल दाव दियो धनुवाँ, सो कह्यो अरजुन से मारि बिडारो ॥
 तो को कछू नहिँ पाप लगै, सो करै करता कछु तोहि न भारो ॥
 येहि बिधि भाखि कहौ भगवान, सो काटि कै मारि कुटुम्ब सँघारो ॥
 धनुवाँ अरजुन उठाइ लियौ, सो भिड़ौ रन खेत कुटुम्ब को मारो
 अरजुन जीति गहे जब पाँइ, सो पाप लगाइ कै दूरि निकारो ॥
 दूरि रहै सिर पाप गह्यौ, सो हत्या कै पाप लगौ तोहि सारो ॥
 जज्ञ करौ असुमेद जबै, सो तबै कुल हत्या से होइहौ न्यारो ॥
 अरजुन जज्ञ कियौ मत मान, सो हत्या कै पाप भयौ नहिँ न्यारो
 अरजुन भाखि कह्यौ भगवान, सो देही हिवारे में जाइ कै गारो ॥
 पाँचोइ पंडा हिवारे गरे, सो मरे गये नर्क में चारो के चारो ॥
 जोइ युदिष्ठिर एक बचौ, जा को कहत स्वर्ग में भयौ सुख सारो ॥
 अरजुन मित्र बड़े भगवान, सो मारि कै ताहि को नर्क में डारो ॥
 नर्क की जाल भया सो बेहाल, सो काल जो कृष्ण ने ऐसे बिडारो
 ऐसे कुटिल से प्रीति करी, दुख पाइ कै कर्महि कर्म पुकारे ॥
 मित्र बड़े सोइ नर्क परे, सो कहे नहिँ कृष्ण के भारी थे प्यारे ॥

वोही जो कृष्ण को इष्ट करै, सो मती भई भ्रष्ट जो दुष्ट के लारे ॥
प्रतच्छ जो कृष्ण ने ऐसी करी, तुलसी कहै मूरति कैसे उबारे ॥

॥ सवैया ३४ ॥

भागवत बूझि बिचार करौ, सो कहै सतसंग से संत हैं न्यारा ॥
आतम ज्ञान की बात कहै, दुतिआ असकंध मैं बूझि बिचारा ॥
नेम अचार अनेकन कार, सो झूठि असार कै सार निकारा ॥
पुनि जो धर्म अनेकन कर्म, सो जीव कै काज न एक सँवारा ॥
भागवत माहि कहै परसंग, सो नेक बिबेक से देखि निहारा ॥
भये नृगराइ^१ कहैं पुनि गाइ, सो गाइ के गोसठि देत अपारा ॥
देतहि देत जो जनम गयौ, सो भयौ गिरगट जो दँहि को धारा ॥
पुन जतन कियो बहु भाँति, सो कर्म के भोग टरे नहिँ टारा ॥
पुन से जीव कै काज नहीं, सो परे नृगराइ कुए बिच डारा ॥
बाम्हन पुन से स्वर्ग कहै, तुलसी सब बात अनीति पसारा ॥

॥ सवैया ३५ ॥

ऊधौ के मित्र बडे भगवान, सो प्रीति करी जा की रीति बखानी
भोजन साथ करैं बहु भाँति, सो ऊधौ बिना सुख नेक न मानी ॥
कृष्ण गये तजि दँह निवास, सो ऊधौ ने रोइ दियौ सोइ जानी ॥
बद्रिका जाइ कै तप कस्यौ, सोइ रोइ कै तप कै कीन्ह निदानी ॥
जो कहूँ कृष्ण से मुक्ति हुती, तो करौ तप कष्ट कहौ केहि कामी ॥
तुलसी बिधि बूझि कै बात लखौ, तुम्हरी गति मुक्ति की कैसे बखानी ॥

(१) राजा नृग ने जो साठ हज़ार गऊ रोज़ दान देते थे एक गऊ को धोखे में दो ब्राह्मणों को दान कर दिया, जब दोनों ब्राह्मण भगड़ते हुए राजा के निकट न्याय को आये तो राजा सोच में दोनों की बात पर सिर हिलाता रहा जिस पर एक ब्राह्मण ने सराप दिया कि तुम गिरगिट की भाँति सिर हिलाते हो सो वही योनि पाओगे। इस सराप से राजा नृग को गिरगिट योनि मिली और एक अन्ये कुए में पड़े रहे जब कृष्णावतार हुआ तब श्रीकृष्ण ने अपना चरण छुआ कर इसका उद्धार किया।

॥ सवैया ३६ ॥

भागवत के मत्त की गत्ति कहैं, सो परीछित को सुकदेव सुनाई ॥
व्यास कथे जो पुरान बिधी, ता के पीछे संवाद कहै कस गाई ॥
व्यास प्रथम्म अरम्म कियौ, सुकदेव परीछित ग्रंथ म लाई ॥
पुरान लिखे भये व्यास मुनी, ता के पीछे परीछित को समझाई
पंडित या की बिधी कहै भाई, सो तोल कहै तुलसी को बुझाई

॥ सवैया ३७ ॥

जो तुम पंडित ज्वाब कहौ, सुकदेव सुनावन पीछे गयौ ॥
व्यास पुरान में पहिले कही, सो त्रिकाल के तेज से भाखि कह्यौ ॥
पंडित ता कै जुवाब सुनौ, सुकदेव चले मोह व्यास भयौ ॥
मोह भयौ सँग लारे लयौ, तबही जड़ बृच्छ ने ज्ञान दयौ ॥
या को कहौ सुन भाख बिधी, सो त्रिकाल कहौ तब काँह हिरानौ
तुलसी तब की बिधि छान कहौ, सोइ जानि परै या की बूझ मिलायौ ॥

॥ सवैया ३८ ॥

एक बिचार की और कहैं, ता की ठीक बिधी बिधि भाखि सुनावा ॥
जबही रच साज बैराट भयौ, तब देव उठावन कैसे कै आवा ॥
ता की बिधी को बिचार कहौ, सो पहिले जो देवन कौन बनावा
और पुरान जो और कहै, सोइ ब्रह्मा को कस्यपदेव बतावा ॥
या की कहौ सही कौन बिधी, सो बैराट को देव उठावन आवा
तुलसी बिधि तोल के बात कहौ, जो ब्रह्मा के पुत्र से देव कहावा

॥ सवैया ३९ ॥

पंडित एक बिचार कहैं, जोइ बात सुन्यौ ता को भर्म समाई ॥
कहत तुम्हीं नित बात पुनी, भागवत्त सुनी जिन मुक्ति को पाई
ऐसी बिधी बिधि भाखि कहौ, पुनि वाहू को भूत की जोनि बताई
जोई पुरान सुनै नित कान, किरिया करि वाही को भूत बनाई ॥
पुरान सुनै सोइ भूत बनै, भागवत के मत्त की साखि जो जाई ॥
एक बिचार कहौ तुम सार, तुलसी बिधि सहज में भाखि सुनाई ॥

॥ सर्वैया ४० ॥

और जो एक बयान करौं, सुन पंडित प्रेम से कान लगाई ॥
 गऊ करन बरन कहौं, धुंधकारी कथा बिधि जाइ सुनाई ॥
 भागवत के मत्त की साखि सुनौ, सोइ भूत भयौ ऐसी कहत बुझाई
 उठै कथा भास फुटै तब बाँस, छुटै तब भूत से मुक्ति बताई ॥
 ऐसी बिधी बिधि भाख कहौ, ये तौ व्यास लिखी तब ग्रंथ बनाई ॥
 ग्रंथ लिखे भये व्यास मुनी, धुंधकारी सुनी जा के पीछे जो जाई ॥
 ये तो आगेइ व्यास ने भाखि लिखी, सो पुरान बने जा के पाछे सुनाई ॥
 धुंध जो कारी तौ पहिले लिख्यौ, सो वा की कहौ बिधि मोहिँ बताई ॥
 सातहि पोरि कै बाँस कह्यौ, सोइ बाँस को भेद बतावौ आई ॥
 जंगल के बीच में बाँस बसै, की कहौ बाँस जो और है भाई ॥
 या कै बिचार करौ मन में, तुलसी कहै बूझ सो सूझ मैं लाई

॥ सर्वैया ४१ ॥

एक प्रसंग बिधी बिधि बात, कहौं सोइ बूझि कै भेद बतावौ ॥
 एक बयान सुनौ सोइ कान, सो गूलर फल ब्रह्मंड सुनावौ ॥
 व्यास कही कथ ग्रन्थ सही, सोइ अंड को गूलर खोज लगावौ ॥
 कौन ठिकाने को ठाट कह्यौ, सो बैराट भयौ ता मैं भेद सुनावौ ॥
 ता की बिधी भिनि भाखि कहौ, तुलसी हिये आँखि से देखि बुझावौ

॥ सर्वैया ४२ ॥

बेदांत कहै जग ब्रह्म मई, सो ईसुर कर्म मीमांसा ने गायौ ॥
 कथन पातंजल जोग कह्यौ, सो बिसेसिक^१ सार समय जो बतायौ
 न्याय जो गाइ करतार कहै, सोइ सांख्य ने नीत अनीत सुनायौ
 तुलसी षट् रीति प्रपंच करी, सो कस्यौ जिन जक्त को जानि बुझायौ

॥ देहा ॥

ज्ञानी पंडित भेष सब, परमहंस ब्रह्मचार ।

ये सब भूले षट् महीं, कर्म भूप की लार ॥१॥

(१) मुं० दे० प्र० और हमारी दोनों लिपियों में “बिसेसर” लिखा है ।

परमहंस बेदांत से, ब्रह्म जो कहत लवार ।
 पातंजल जोगी ठगे, जक्त मिमांसा लार ॥२॥
 ज्ञानि बैरागी पंडिता, समय लिखै निहार ।
 और कहौ काकी कहौ, बहे भर्म की धार ॥३॥
 पंडित भूले बेद में, सास्तर पढ़त पुरान ।
 ये गति मति है कालकी, बूझै संत सुजान ॥४॥
 पंडित बूझौ भेद को, देखि लखौ पद सार ।
 लार ग्रंथ पढ़िकै कहौ, ये सब झूठ पसार ॥५॥
 अगम निगम से भिन्न है, पंडित लखा न जाइ ।
 संत मिलै कोइ महरमी, पल में देत लखाइ ॥६॥

॥ चौपाई ॥

या की पंडित कहौ बुझाई । अया बैराट नास कस भाई ॥
 पाँच तत्त का रहा पसारा । नास बेद कस कहत पुकारा ॥
 या कौ भाखि सुनावौ लेखा । अस बेदन कस कही बिबेका ॥
 या की बिधी बतावौ भाई । जा मैं लेखा लगै बनाई ॥
 या की निसा भिन्न भिन दीजै । पुनि घर गवन आपने कीजै ॥
 हम परलय बिधि कही बनाई । या की बूझ समझ मैं लाई ॥
 और अनेक भाँति कहा लेखा । जवाब स्वाल लखि कहौ बिबेका ॥

॥ सोरठा ॥

पंडित कहौ बिचार, वार पार परचा लखौ ।
 बेद पुरान नहिं सार, अगम ज्ञान कस लखि सकै ॥

॥ चौपाई ॥

संत मता सुन अगम अपारा । ब्रह्मा बेद न पावै पारा ॥
 और बैराट ठाट भगवाना । संत मता उनहूँ नहिं जाना ॥
 संत रीति गति सब से न्यारी । कहि कहि थाके नेति पुकारो ॥
 तुम ने बेद बेद ठहरावा । बेद नेति कहि भेद न पावा ॥

साखि ताहि की करौ बखाना । बूझ नहीं हिये तिमिर समाना
जल जल रहा कहौ अस भाई । अस अस बेद कहै बिधि गाई ॥
जल तत रहा बूझ अस ज्ञाना । थल बिन जल केहि बिधि ठहराना
॥ सोरठा ॥

ऐसी बूझ बिचार, लार तत्त जल थल रहा ।
जल थल तत्त मँझार, दुइ तत के जिव सब रहे ॥
॥ चौपाई ॥

नौ लख जीव जाति जल माई । पिरथी लाख सताइस भाई ॥
ये सब जल थल जीव समाना । अछै बृच्छ कस रहे भगवाना ॥
थल बिन बृच्छ रहा कस भाई । बिन थल बृच्छ बहा जल माई ॥
और जीव जल माहिँ रहाई । अस भगवान रहे उन माई ॥
थल बिन बृच्छ कौन बिधि रहिया । अछै बृच्छ पुनि जल में बहिया
और जीव रहे जल माई । तस भगवान रहे तेहि ठाई ॥
ब्रह्मा बेद कहाँ तब राखा । जल में कागद रहै न आँका ॥
पुनि आगे का कहौ बिबेका । तेहि पीछे भयो कस कस लेखा
हमरे मन में संसय आई । सो नैनू तुम कहौ बुझाई ॥

॥ उत्तर नैनू पंडित ॥

॥ चौपाई ॥

ऐसी बेद कहत गोहराई । साख पुरान कहै सब गाई ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

जल में कागद रहा न होई । परलय माहिँ बचा नहिँ कोई ॥
परलय ब्रह्मा बचान भाई । ये बेदन कस कस गोहराई ॥

॥ उत्तर नैनू पंडित ॥

स्वाँसा माहिँ बेद तब रहिया । तिन सब यह बरतंत सुनैया ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

स्वाँसा पवन तत्त जब भयऊ । पवन तत्त जिव जग सब रहेऊ ॥
तुम तौ कहौ पवन तत नासा । जल पुनि पवन तत्त रहा बासा ॥

कस बैराट कहौ तुम नासा । पानी पवन रही पुनि स्वाँसा ॥
 आई स्वाँस कस बिना अकासा । या कै भाखौ भेद खुलासा ॥
 बिना अकास स्वाँस नहिँ आवै । या की बिधि हम प्रगट सुनावै ॥
 देखौ निरखि गगन को भाई । जहँ से स्वाँस सिमटि सब आई ॥
 पिँड ब्रह्मंड बिधि एक बखाना । तन मैं स्वाँसा गगन समाना ॥
 गगन रहै स्वाँसा भइ नासा । बेदन कस कस कहा तमासा ॥
 जल पिरथी बिन केहि बिधि रहिये । नैनू या की समझ सुनैये ॥
 जल रहिया तुम ऐसी भाखी । स्वाँसा पवन बतावौ साखी ॥
 तौ अकास होइहै पुनि सोई । जल पुनि रहै प्रिथी पुनि होई ॥
 जल पवना पुनि गगन अकासा । रही अगिनि चारौ मैं बासा ॥
 तुम कहौ पाँच तत्त कर नासा । ये बिधि पाँचौ रहे निवासा ॥
 तुम कहिया इक जलहि रहाई । ऐसे बेद कहै गोहराई ॥
 पाँच तत्त से जग रहा सोई । कहौ या की कस परलय होई ॥
 जल के रहे सभी पुनि रहिया । झूठी सकल बेद बिधि कहिया ॥
 एक तत्त कधी रहत बतावौ । पाँच तत्त कधी नास सुनावौ ॥
 ऐसा कस कस ज्ञान तुम्हारा । या कर कहौ भेद निरबारा ॥

॥ उत्तर श्यामा पंडित ॥

पाँच तत्त पाँचौ मैं जाई । मरना जीना ना कछु भाई ॥
 जल मैं जल पवना मैं पवना । गगन मैं गगन अगिनि मैं अगिना
 प्रिथी प्रिथी मैं जाइ समानी । ऐसे पाँच तत्त अलगानी ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

ये पाँचौ पाँचौ मैं रहिया । पुनि पुनि नास कौन बिधि भइया ॥
 अंडा नसि तत कहाँ समाना । ता का हम से कहौ ठिकाना ॥
 कहिये तत्त कौन उपजाई । इन की आदि कहाँ से आई ॥
 जब ही ठाट बैराट नसाना । तब तत रहि कहौ कौन ठिकाना ॥

कहौ तत पाँच पाँच में जाहौं। मरन जिवन औरै कछु नाहौं ॥
 पुनि तेहि पाप पुन्य बतलावा। तुम कहौ कीन्ह दीन्ह तस पावा ॥
 तीरथ व्रत सुभ कर्म बतावौ। कहौ उन्हें पुनि कस कस पावौ ॥
 पाँच तत्त पाँचौ में जाई। पाप पुन्य कहौ कैान भुगाई ॥
 जज्ञ करै सो स्वर्गें जाई। पाँच तत्त तौ रहै न भाई ॥
 पाँच तत्त पाँचौ में जाई। स्वर्ग भोग कहै कैान कराई ॥
 नैनू स्यामा पाँडे भाई। या की बिधि बरतंत सुनाई ॥
 ये सब ज्वाब बतावौ भाई। तब तुम हम से जाने पाई ॥
 नैनू मन में गुनन बिचारा। या कैा कहा करौं निरबारा ॥
 बुधि चित मन में कछु न आवा। बुधि चित ज्ञान बहुत दौड़ावा ॥
 एकहु ज्वाब साफ नहिं दीन्हा। बुद्धि गई मानौ मतिहीना ॥
 बोले न ज्वाब काँप अस आई। या की कैान बिधी समझाई ॥
 जौन जौन बरतंत सुनावा। तौन तौन सुपने नहिं पावा ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी पूछै बात, खोल बुद्धि कछु कछु कहौ।
 हिये माहिं खिसियात, सूझ बूझ आवै नहीं ॥

सम्बाद तुलसी साहिब और माना पंडित का

॥ चौपाई ॥

पंडित रहैं तीन सै साठा। देखे एक एक से भाठा ॥
 तिन में इक पंडित रहे माना। ता घर रहैं बहुत से दामा ॥
 मन में मस्त बिद्या बिधि माई। बहुत पढ़े मद कहा न जाई ॥
 माया मद बिद्या मद दोई। ब्राह्मन जाति पाँति मद सोई ॥
 चारि बरन में ऊँच बखाना। ता मद का कहौ कैान ठिकाना ॥
 माना पंडित का कहौं कैसा। सब भैंसिन में मानो भैंसा ॥
 बोले बचन मान मद मारे। काल न चीन्है साँझ सबारे ॥
 कासी नगर छत्र कर थापा। मान मई सूझै नहिं आपा ॥

ज्ञान बिधी बिद्या बल ठाने । आदि अंत की खबर न जाने ॥
माना पंडित बोले बानी । बेद बिधी इन एक न जानी ॥
बेदन कही आदि चलि आई । ता को छाँड़ि अंत कहँ जाई ॥
बेद से कैन बात है न्यारी । ता को हूँदै हाथ पसारी ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी तुम सीतल होई । भाखौं भेद बेद कहै जोई ॥
बाहिर भेद नहीं कछु गावा । बेद कहै हम भेद न पावा ॥
नेतहि नेत बेद गोहरावा । ऐसी कैन बस्तु नहिँ पावा ॥
ता कर मन मैं करौ बिचारी । उन से कैन बस्तु रही न्यारी ॥
निराकार को नेति पुकारा । जोति सरूप होत उँजियारा ॥
ऐसे बेद कहै समझाई । कहै बेद हम भेद न पाई ॥
ताकी महिमा साखि बखाना । बेद कहै हम मरम न जाना ॥

॥ सोरठा ॥

माना मन मैं रोस, तुलसी से पूछै सबै ।

आदि जगत की बेद, सो तुलसी बरनन करौ ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी सुन माना बाता । बेद बिधी बिद्या बिख्याता ॥
सब पहिले संसार रचाना । ता के पीछे बेद पुराना ॥
अंडज पिंडज उषमज खाना । अस्थावर चर अचर बखाना ॥
चारि लाख चौरासी धारा । जब जग का था सकल पसारा ॥
जा के पीछे बेद रचाना । ता कै परथम कीन्ह बखाना ॥

॥ प्रश्न माना पंडित ॥

॥ चौपाई ॥

कहै माना तुलसी सुन बानी । ये तौ तुम ने कूर बखानी ॥
जग के पीछे बेद बतावा । यह हमरे मन में नहिँ आवा ॥
तुम तो कहौ जगत है पहिले । पुनि फिर रचा बेद का खेले ॥

ऐसी बात अनीति बखानी । अब सुनियौ हम से सहदानी ॥
 कहौ बैराट रूप भगवाना । नाभि कँवल ब्रह्मा उतपाना ॥
 तिन पुनि बेद चारि रचि लीन्हा । ऋगु और साम जजुर को कीन्हा
 और अथर्वन कीन्हा बनाई । ता पोछे सृष्टी उपजाई ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

पंडित माना सुन बिधि बाता । या की कहौँ सकल बिख्याता ॥
 अब मैं कहौँ सत्त सत भाई । चित दे सुनियो कान लगाई ॥
 अब कहौँ अगम निगम गति भाखी । बेदन मैं मिलि है नहिँ साखी
 ब्रह्मा बिस्नु महेस न रहिया । नहिँ बैराट निरंजन भइया ॥
 दस औतार नहिँ थे भाई । पाँच तत्त नहिँ दैही पाई ॥
 आदि अंत मध्य कछू न होती । अकथ कथा की भाखौँ पोथी ॥
 अब कहौँ आदि अंत की बानी । भाखौँ आदि भेद सहदानी ॥
 पिरथम पुरुष अनाम अकाया । रहै नहिँ बैराटी माथा ॥
 जिन से सत्त नाम भया जाना । चौथा पद सोइ संत बखाना ॥
 जहँ सोइ सत्त नाम अस्थाना । सत्त लोक की करौँ बखाना ॥
 सत्त लोक से निरगुन आया । आदि अंत का भेद सुनाया ॥
 जा सुत सोलहा निरगुन होई । ता की बिधि भाखौँ सुन सोई ॥
 चंद न सूर गगन नहिँ तारा । धरति न पानी पवन अकारा ॥
 सेस कुरम नहिँ दस औतारा । आदि अंत नहिँ कीन्हा पसारा ॥
 ब्रह्मा बिस्नु बेद बिधि नाहौँ । बिधि बैराट रचौ नहिँ जाई ॥
 तब नहिँ बेद बेद का करता । रूप रेख बिन रहै अकरता ॥
 निरगुन पुत्र पुरुष को सोई । ता कर नाम निरंजन होई ॥
 चौथा पद सतनाम दयाला । ता कर पुत्र निरंजन काला ॥
 जिन पुनि तप कीन्हा बहु ध्याना । सत्त नाम जिन निजकर जाना
 उन माँगा होइ दीन अधीना । तीनि लोक ता कै पुनि दीन्हा ॥

धरती नीर पवन असमाना । ता से रचिया सकल बिधाना ॥
 पाँच तत्त वाही पर आवा । पुनि तिन रचि बैराट बनावा ॥
 जोती तेज पुरुष से आई । जीव अंस दै ताहि पठाई ॥
 जोती निरगुन के ढिँग आई । रति कर भोग कीन्ह पुनि ताही ॥
 तीनि बार रति कीन्हा जाई । ब्रह्मा बिस्नु कीन्ह उपजाई ॥
 तीजे संभू छोटे भाई । येही बिधि इनकी आदि बताई ॥
 ता पीछे जग कीन्ह पसारा । चारि लाख चौरासी धारा ॥
 सृष्टि भई तब अगम अपारा । जोति निरंजन जाल पसारा ॥
 सुषम बेद स्वाँसा से आवा । आदि बेद उनहूँ नहिँ पावा ॥
 सुषम बेद की छाया लीन्हा । ब्रह्मा बेद बनाइ जो कीन्हा ॥
 अब या की मैं बिधी बताऊँ । चारि बेद की आदि लखाऊँ ॥
 जग संसार थपा था पहिले । पुनि फिरि रचा बेद का खेलै ॥
 अब या की हम बिधी बताई । माना सुनियौ चित्त लगाई ॥
 धरती बैल किसानी होई । सन कर खेत भया पुनि सोई ॥
 बृछ बढ़ई जब काटा होई । हल बनाइ धरती पुनि बोई ॥
 डारा बीज भयौ सन साजी । रसरी कीन्ह ताहि की भाँजी ॥
 भया टाट तब क्रिया बिछाना । सड़ा टाट तब हुआ पुराना ॥
 ता को जाइ कागदी लीन्हा । कूट काट कर सूधा कीन्हा ॥
 नदी माहिँ पुनि धोय सँवारा । तब कीन्हा ता का बिस्तारा ॥
 गाय भैंस जब होइहै भाई । पुनि कागद की बिधी बताई ॥
 चूने दिवाल लेप ठहराना । तब कागद पर बेद लिखाना ॥
 जग मैं नद्दी नाला होई । टाट बनाइ कागदी धोई ॥
 कागद पीछे बेद लिखाया । सो ता को तुम आदि बताया ॥
 तिल्ली तेल पेल जब लीन्हा । रुई कपास की बाती कीन्हा ॥
 अग्नि तत्त जब होइहै भाई । दिया बारि काजर भइ स्याही ॥
 बन बरुई से कलम कर लीन्हा । ब्रह्मा बेद लिखन जब कीन्हा ॥

चारि बेद की आदि बताई । जो ब्रह्मा से उपजे भाई ॥
 ता कर नाम गती गुन गाऊँ । पिरथम साम बेद तेहि नाऊँ ॥
 ऋग जजुर कै भाखि सुनाऊँ चौथा अर्थ अथरवन गाऊँ ॥
 ऐसे चारि बेद बतलावा । ताकी आदि बिधी बिधि गावा ॥
 ता से सास्तर भये पुराना । करमी जीव बहुत लपटाना ॥
 पूजै पानी पत्थर देवा । तीरथ बरत बताई सेवा ॥
 ऐसे जीव खानि भरमावा । आदि अंत का मर्म न पावा ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी कहै पुकार, माना पंडित सब सुनौ ।
 रहा जो होइ सम्बाद, कहौं बहुरि जो फिरि कहौ ॥

॥ छंद ॥

कहौं यह बिधि गाई तुमहि सुनाई । आदि अंत सब भाख भई ॥
 बेदन बिधि चारी कहौं पुकारी । सिव ब्रह्मा की आदि कही ॥
 निरगुन मति गाई जोति सुनाई । जो रचना ब्रह्मंड मई ॥
 सिमित समझाई पुरान सुनाई । अस अस सब की आदि भई ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी कहै माना सुनौ, स्यामा नैनू बात ।
 तीनों मिलि यह बिधि कहौ, पूछौं सब बिख्यात ॥

॥ सोरठा ॥

दसौ बेद की आदि, जो तुम से मैं भाखिया ।
 कहा पाँच बिख्यात, रहे पाँच सो तुम कहौ ॥

॥ चौपाई ॥

सुषम बेद बिधि सबहि सुनाई । साम जजुर और ऋगू बताई ॥
 और अथरवन भाखि सुनावा । ऐसे पाँच बेद बिधि गावा ॥

रहे पाँच सो भाखि सुनावौ । तिन की आदि अंत समझावौ ॥
 और सतनाम आदि हम कहिया । कहौ निरगुन ता से कम भइया ॥
 और जोति की बिधी बताई । ब्रह्मा बिस्नु कैान बिधि आई ॥
 कैान बिधी से बेद लिखाही । जग तब कागद रहै न स्याही ॥
 ऐसी भिन्न भिन्न दरसैहौ । तब तुम हम से जाने पैहौ ॥
 सब जग लूटि लूटि कर खाई । अब नहिँ छोड़ै तुलसी गुसाई ॥
 नैनू स्यामा माना पाँडे । ये सब कहौ बिधी बिधि माँडे ॥
 बिन कहे ज्वाब न जाने पैहौ । कासी ढिंढोरा पुनि पिटवैहौ ॥
 जग कैा पुन्य दान बिधि साजा । सो सब अपने पेट के काजा ॥
 तीरथ थापि चलाई राही । ये सब अपने पेट के ताई ॥
 बितीपात परदोस बताई । ये सब झूठी बात चलाई ॥
 एकादसि चौदस और अठमी । ऐतवार मंगल और नौमी ॥
 तीज चतुरदसि करवाचौथी । झूठे बरत बतावै पोथी ॥
 जो कोइ करै बरत से प्रीती । ये सब कर्म खानि की रीती ॥
 जो कोइ बर्त राह चलै भाई । पुरखा तास नर्क में जाई ॥
 गंगा जमुना चारौ धामा । ये सब जैहँ भव की खाना ॥
 कातिक और बैसाख अन्हारवै । ये सब नीच जोनि में आवै ॥
 देवल देव पखान पुजावै । ये सब भौसागर भरमावै ॥
 राम राम जो जपै अघाई । जा कैा जनम अकारथ जाई ॥
 सिव पूजै और देवो पूजै । नीच होइ नीचा मत सूझै ॥
 कथा पुरान जो सुनै अघाई । बार बार भौ भटका खाई ॥
 जो जो बाम्हन कहै बिचारा । काल खानि ये जम की जारा ॥
 ऐसे पंडित जाल बिछाई । कोई जीव बचन नहिँ पाई ॥
 अज्ञानी को बरत बतावा । ज्ञानी को पोथी समझावा ॥
 अस अस पंडित डारी जारा । ता से न उतरै भौ के पारा ॥
 ता कैा अब बरतंत सुनाऊँ । भागवत की बिधि मैं अरथाऊँ ॥

पिरथम पंडित योँ कर भाखै । भागवत बिना मुक्ति नहिँ राखै ॥
 और पुनि भाखि कहै परभावा । जिनजिनकीन्हातिनतिन पावा ॥
 ऐसी कहि कहि कै समभावै । या बिधि सकल जीव भरमावै ॥
 माना स्यामा तुमहिँ सुनाई । नृग राजा परसंग बताई ॥
 ता को पुन बिधि बिधि अनुसरई । प्रात दान गोसठि सो करई ॥
 तिरपित बाम्हन भोजन देवै । यहि बिधि पुन्य जज्ञ सोइ सेवै ॥
 ऐसे पुन्य बरत तेहि ठाना । भागवत ऐसी करत बखाना ॥
 दई गऊ बाम्हन की आई । सो गोसठि में आन समाई ॥
 राजा भूलि और को दीन्हा । बाम्हन बाम्हन भगरा कीन्हा ॥
 पुनि तिन स्याप ताहि को दीन्हा । गिरगट दँह राइ ने लीन्हा ॥
 याही पुन्य की करौ बड़ाई । अंत जनम गिरगट कै पाई ॥
 भोजन पुन्य कीन्ह बहुतेरा । किंचित सँग न चला तेहि केरा ॥
 इतना पुन्य कीन्ह उन भाई । और गया पुनि अंधा चाही ॥
 सर्व गया चौथाई पावै । तौ हमरे परतीती आवै ॥
 चौथाई में कछु नहिँ पावै । ऐसे बाम्हन पुन्य करावै ॥
 ऐसा पुन्य कीन्ह तेहि राजा । ता के आयौ कछु न काजा ॥
 जिन जिन को तुम पुन्य कराई । वे बपुरे कैसे करि पाई ॥
 जग अंधा तुम हूँ पुनि अंधा । या से मचि गया अंधाधुंधा ॥
 मूए पुन्य बतावै पावै । कोई मुए की खबर न लावै ॥
 झूठहि झूठ रचा सब ठाटा । ता से जगत न पावै बाटा ॥

॥ उत्तर माना और स्यामा पंडितोँ का

॥ चौपाई ॥

माना स्यामा योँ करि बोले । तौ पुनि रचा झूठ का खेले ॥
 व्यास भागवत कही बखाना । सुनै मुक्ति जो होइ निदाना ॥
 सुनिया की मैं साखि बताऊँ । सुकदेव कह्यौ परीछित राज ॥
 सपता सात दिवस उन भाखा । भागवत कहै सुनौ तुम साखा ॥

(१) अंधा या सूखा कुआ ।

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

भागवत तौ पिरथम्म लिखाना । परीछित सुकदेव नाम बखाना ॥
 ये पिरथम कहि ग्रंथ बनावा । सुकदेव नृप दोउता मैं आवा ॥
 सुकदेव राजहि कथा सुनावा । ऐसे व्यास भागवत गावा ॥
 व्यास भागवत लिखी बनाई । पुनि सुकदेव राय समझाई ॥
 ये तौ व्यास पहिले लिखि गयेऊ । भागवत मैं बरनन करि कहेऊ ॥
 को सुकदेव परीछित होई । ता की मुक्ति बताई सोई ॥
 पहिले व्यास ने कथा बनाई । पीछे सुकदेव नृपहि सुनाई ॥
 सुकदेव कथा सुनावन गइया । तब प्रीछित की मुक्ती भइया ॥
 व्यास मुक्ति पहिले लिखि गाई । ता पीछे सुकदेव सुनाई ॥
 कैान परीछित मुक्ती पाई । ये तौ बिधी मिली नहि भाई ॥
 व्यास ग्रंथ मैं पहिले गावा । तुम ने ये सुकदेव बतावा ॥
 वो नृप कैान परीछित होई । ता की व्यास मुक्ति कहि सोई ॥
 ये तौ पीछे जाइ सुनाई । व्यास ग्रंथ लिखि पहिले गाई ॥

॥ उत्तर माना पंडित ॥

॥ चौपाई ॥

तब माना तुलसी से भाखी । या की बिधी कहैँ सुनु साखी ॥
 थे औतार व्यास तिरकाली । अगमन कही ध्यान ब्रत ताली ॥
 या से अगमन भाखि सुनाई । येहि बिधि व्यास भागवत गाई ॥
 जो तिरकाल लखै पुनि भाई । अगम भेद सोइ भाखि सुनाई ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

माना यह बिधि बरनि सुनाऊँ । या की पहिली साखि बताऊँ ॥
 महादेव ये मंत्र सुनावा । बीजक पारबती मन लावा ॥
 सब पंछिन कैा दीन्ह उड़ाई । सुवा छंद इक रहा छिपाई ॥

बन पंछी सब जाति उड़ाई । सुवा अंड इक रहा लुकाई ॥
 तबै मंत्र इक भाखि सुनावा । पारबती सुनि निद्रा आवा ॥
 पुनि सुनि सुवा हुँकारी दीन्हा । महादेव कोप तब कीन्हा ॥
 सुवा भागि व्यास त्रिय गर्भा । गर्भ रहा बिधि भाखौँ सर्वा ॥
 बारा बरस गर्भ म रहिया । यह पुरान बिधि ऐसी कहिया ॥
 गर्भ बढ़ा तिरिया अकुलानी । निकसै नहीं मंत्र बिधि जानी ॥
 गये भगवान तीर पुनि व्यासा । व्याकुल तिरिया गर्भ तिरासा ॥
 सौँघ भाव जस राई भेवा । माया भिन्न भये सुकदेवा^१ ॥
 नारि उठाइ हाथ मै लीन्हा । तप को चले कहौँ अस चीन्हा ॥
 व्यास मोह उपजा दुख लागा । पुत्र पुत्र कहि पीछे भागा ॥
 पुत्र मोह व्याकुल बहु क्रोधा । तब पुनि कीन्ह बृच्छ ने बोधा ॥
 तब तिनका तिरकाल हिराना । गई बुद्धि मति मोह भुलाना ॥
 ताकौ कहौ अगम तिन भाखा । बुढ़ी गई मोह अभिलाखा ॥
 सुकदेव परमहंस नहिँ जाना । कस कस कीन्हा अगम बखाना ॥
 तिरिया गर्भ पीर के काजा । व्याकुल सोग मोह उपराजा ॥
 तिरकाली भगवान बतावौ । चौबीसन मै भाखि सुनावौ ॥
 सुन माना यह भेद बताई । सुनि कै समझिलेउ मन माई ॥
 अब परिछित की बूझै बाता । और सुकदेव सुनौ बिख्याता ॥
 सुकदेव सप्ता पीछे कीन्हा । परिछित कथा सुनायौ चीन्हा ॥
 कथा सुनावन पीछे गयेऊ । मुक्ती तौ पहिले होइ गयेऊ ॥
 ये सब झूठ झूठ सी होई । अस अस समझि परा बिधि सोई ॥
 सुने सुने मुक्ती बर होई । तौ सब जग बूढ़ै नहिँ कोई ॥
 सुने सुने मुक्ती जो पावै । गुड़ गुड़ कहे मीठ मुख आवै ॥
 ताका मै भरतंत बखानूँ । पंडित तुम सुनियौ दै कानूँ ॥

(१) जितनी देर सौँघ की नोक पर राई ठहर सकती है अर्थात् तत्काल सुकदेव जी माता के गर्भ से बाहर आये ।

माल दिसावर तेजी होई । चिट्ठी मैं लिखि भेजा सोई ॥
 चिट्ठी सुनि कर माल लदावा । ता का नफा तिनै पुनि पावा ॥
 प्रदे सुने कछु हाथ न आवै । ज्यों बैपारी रोता जावै ॥
 सुनि कर करै सोई है गाजी । सुनि सुनि मरि गये कोटिन पाजी ॥
 मुए मुक्ति की खबर बतावै । मूए जनम काग कै पावै ॥
 ये पंडित तुम्हरो ब्यौहारा । जनम जात जूवा जस हारा ॥

॥ उत्तर माना पंडित ॥

॥ चौपाई ॥

मुक्ती हमरे हाथ न सोई । जो भगवान करै सो होई ॥
 मुक्ती तौ भगवान से पावै । जो कोइ उनके सरनै जावै ॥
 हम अपंग मारग नहिं जाना । पल मैं मुक्ति करै भगवाना ॥

॥ श्लोक ॥

मूकं करोति बाचालं पंगुं लंघयते गिरिम् ।
 यत् कृपालमहं बंदे परमानंद माधवः ॥^१
 हम तो हैं उनकी सरनाई । तन मन बचन परे उन पाँई ॥
 हमरे नेत्र दोइ पुनि होई । प्रभु के नेत्र अनेकन सोई ॥

॥ श्लोक ॥

द्वै द्वै लोचनं सर्वानां विद्या त्रय लोचनं ।
 सप्त लोचन ज्ञानीनां भगवान अनंत लोचनं ॥^१
 हम तौ उन चरनन सरनाई । अरजुन ऊधौ पार लगाई ॥
 जैसी ऊधौ की उन कीन्हा । हमहूँ सरना उनकी लीन्हा ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ सौरठा ॥

तुलसी कहै पुकार, ऊधौ की भइ सो सुनौ ।
 अरजुन सुनौ बिचार, वै लवार कैसी करी ॥

(१) यह दोनों श्लोक मुं० दे० प्र० की पुस्तक में नहीं हैं ।

॥ चौपाई ॥

ऊधो के मित्र बड़े भगवाना । एकादस में कीन्ह बखाना ॥
 जिन की मित्र भाव की करनी । प्रीति अधिक कछु जाइ न बरनी
 जब भगवान धाम कियौ गौना । भाखा ऊधो से कहौ जौना ॥
 तुम तप करौ बद्रिका जोई । तब ऊधो ने दीन्हा रोई ॥
 जब उन अपने प्रान गँवाये । तब ऊधो तप करने आये ॥
 उन को मुक्ति न दीन्ही भाई । तुम पुनि मुक्ति कहाँ से पाई ॥
 मित्र प्यार कीन्हा बहुतेरा । नहिँ उन उनका कीन्ह निबेरा ॥
 जो उन की मुक्ती होइ जाती । तौ तप को जाते केहि भाँती ॥
 उन की मुक्ति न कीन्ही भाई । तुम भूले केहि लेखे माई ॥
 और अरजुन की कथा सुनाई । उनके बड़े मित्र थे भाई ॥
 उन बंधुन से जुड़ करावा । बन्धु मराइ पाप सिर लावा ॥
 जज्ञ करा पुनि पाप न छूटा । जबै कृष्ण की देही टूटा ॥
 उन से कहा हिवारे जावौ । ता मैं देही जाइ गरावौ ॥
 पुनि सो परे नर्क के माई । गोता मैं देखौ तुम जाई ॥
 अरजुन मुक्ति न पाई भाई । माँगौ उन से केहि बिधि जाई ॥
 कृष्ण काल सब जग को खाई । ता कै जपौ बहुत मन लाई ॥
 ऐसी तुम्हरी मती हिरानी । काल से माँगौ मुक्ति निसानी ॥

॥ दोहा ॥

सुनि पंडित मन मैं गुनो, तुलसी कहत प्रमान ।
 ये तौ दरसै यहि बिधी, गीता करत बखान ॥

॥ प्रश्न माना पंडित ॥

॥ चौपाई ॥

तब माना बोले कर जोरे । ये तौ फुरि आई मन मोरे ॥
 ऊधो एकादस मैं गाये । गीता मैं अरजुन समझाये ॥
 मुक्ति न भई तबै तप कीन्हा । येहि बिधि से मोहिँ भयो यकीना ॥

माना पंडित बिनती लाई । इक संसय मोरे मन आई ॥
भागवत सुने मुक्ति होइ जाई । अस अस साख सनातन गाई ॥
सो तुलसी मोहि समझ सुनावौ । या की समझ बूझ समझावौ ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

सुनु माना बरतंत बताऊँ । भागवत बिधिसब साख सुनाऊँ ॥
पहिले पंडित करत बखाना । भागवत मति बिन मुक्ति न जाना ॥
सुनते सुनते जनम बिताना । मुए भूत का किया बिधाना ॥
पुनि घट साध बनायो साजा । तबहुँ न भयौ मुक्ति कै काजा ॥
किरिया करिके पिंड बनाई । तबहुँ न उन मुक्ती को पाई ॥
गंगा माहि उड़ाई छारा । तबहुँ न भया जीव निरबारा ॥
दसवाँ करिके मूछ मुड़ावा । तबहुँ न मुक्ति गती को पावा ॥
बाम्हन भोजन पंच खवाये । मुक्ति बाट तबहुँ नहिँ पाये ॥
गया जाइ कै पिंड सँवारा । तज न पाया मुक्ती द्वारा ॥
मास पाख छैमासी बरसी । मुक्ति न भई खानि गति परसी ॥
ये सब झूठ मुक्तिकी आसा । मुक्ति रहै संतन के पास ॥
इतनी मुक्ति जुक्ति बतलावै । तबहुँ न प्रानी मुक्ती पावै ॥
अस बिधिकहै भागवत भाई । मुक्ति बताइ के भूत बनाई ॥
और अनेकन जतन करावै । भौ मै जाइ मुक्ति नहिँ पावै ॥
अस अस भाखा झूठ पसारा । मुक्ति न होइ न होइ उबारा ॥

॥ प्रश्न माना ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी स्वामी मुक्ति न पावा । ये पुरान झूठे गोहरावा ॥
सिद्धित सास्तर झूठ बनावा । ये तौ आदि अंत चलिआवा ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

माना सुनियौ काल पसारा । वो दयाल पद इन से न्यारा ॥
ब्रह्मा बिष्णु काल की जारा । इन सब कीन्हा झूठ पसारा ॥
कर्म कराइ जगत बौराया । ता से आदि अंत नहिं पाया ॥

॥ प्रश्न माना ॥

॥ चौपाई ॥

माना कहै सुनु तुलसी स्वामी । तुम तौ औरइ और बखानी ॥
मुख से बचन जोई जोइ भाखा । भिनि भिनि वा की दीन्ही साखा ॥
जो जो मुख से भाखि बखानी । ता की निसा दीन्ह सहदानी ॥
जो जो बात कही मुख गाई । सो सो दरपन सी दरसाई ॥
एक भरम मोरे मन आवा । ता को स्वामी भाखि सुनावा ॥
तीरथ धाम बरत अरु पूजा । या में मो कै कछु न सूझा ॥
पुनि स्वामी इक पूछैँ बाता । तीरथ में कछु आवै न हाथा ॥
न्हाय धोय कछु हाथ न आया । तीरथ सब बिधि झूठ बनाया ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

सुनु माना तोहि भाखि सुनाऊँ । या की बिधी बिधी दरसाऊँ ॥
कर्म ख्याल सब जाल पसारा । इन सँग से चौरासी धारा ॥
लोमस ऋषी एक जो भइया । भाखा उन सब बिधि बिधि कहिया ॥
उन पुनि तीर्थ बर्त बहु ठाना । तप जप पुन्य अनेक बिधाना ॥
पितु से पूछि मुक्ति की बाता । गंगा का फल कहौ बिधाता ॥
गंगा का फल भाखि सुनाई । गंगा आदि मुक्ति की दाई ॥

(लोमस ऋषि)

॥ चौपाई ॥

सहस इकादस गंगा न्हाया । जा से जोनि मच्छ की पाया ।
अनेक जीव मारि मोहिँ खाया । ऐसे बहुत बहुत दुख पाया ॥

जे जे तीरथ सबै अन्हाये । जल जिव जोनि माहिँ भरमाये ॥
ऐसी कौन कौन बिधि गाऊँ । जल आसा जल माहिँ समाऊँ ॥
ऐसी जुक्ति मुक्ति बतलावौ । भौजल पार उतरि कै जावौँ ॥

(पिता)

॥ चौपाई ॥

लोमस ऋषि यह सुनिये भाई । सेवा ठाकुर कीजै जाई ॥
चरनामृत व्रत साधौ सोई । सहजै में मुक्ती पुनि होई ॥

(लोमस ऋषि)

॥ चौपाई ॥

सहस बरस ठाकुर को सेवा । दूजा जाना और न भेवा ॥
बिधि बिधि ध्यान बिधी से कीन्हा । फल जोनी पाहन की लीन्हा
सेवा सिव कीन्ही बिधि भाँता । फूल पत्र जल अच्छत साथी ॥
येहि बिधि पूजा करी बनाई । अंत जोनि पाहन की पाई ॥
अनेक दिवस पाहन कर आसा । अंत तहाँ पुनि लीन्ही बासा ॥
ऐसी कहाँ कहाँ की गाऊँ । जेहि पूजौँ तेहि माहिँ समाऊँ ॥

(पिता)

॥ चौपाई ॥

पूजा तुलसी प्रीति लगाई । पीपर में जल नाओ जाई ॥
ऐसी भक्ति करै मन लाई । सहजै में मुक्ती होइ जाई ॥
एक दिया तुलसी पै लावै । सो तौ कोटि जज्ञ फल पावै ॥

(लोमस ऋषि)

॥ चौपाई ॥

सहस तीन तुलसी कै पूजा । बृच्छ जोनि पाई येही बूझा ॥
पीपर पूजा बरस हजारा । ता की बिधि भाखौँ निरबारा ॥
कानखजूरा देही पाई । बार बार भौ में भरमाई ॥

(पिता)

॥ चौपाई ॥

एकादसी करौ तुम जाई । ता से मुक्ति सहज मै पाई ॥

(लोमस ऋषि)

॥ चौपाई ॥

सहस बरस एकादसि कीन्हा । अंत जनम माखी कै लीन्हा ॥
 ऐसे बर्त कीन्ह बहुतेरा । ता का सुनु बरतंत निबेरा ॥
 पिरथम ऐतवार को कीन्हा । ता से जनम चील्ह कै लीन्हा ॥
 मंगल बहु बिधि बरत रहाई । ता से जनम सुवर कै पाई ॥
 अरु पुनि बरत तीज कै कीन्हा । कूकर जनम ताहि से लीन्हा ॥
 अरु परदोस नेम से कीन्हा । खर कै जनम ताहि से लीन्हा ॥
 ब्रितीपात बिधि से बिधि कीन्हा । जनम जाइ बंदर कै लीन्हा ॥
 नौमी बरत अष्टमी कीन्हा । ता से जनम घूस कै लीन्हा ॥
 अरु अनंत चौदस पुनि कीन्हा । ता से जनम ऊँट कै लीन्हा ॥
 और चतुरथो बरत बखाना । ता से जनम भैंस कै जाना ॥
 और बरत करे भार बनाई । पुनि मुक्ती हम ने नहिँ पाई ॥

(पिता)

॥ चौपाई ॥

पुन्य गऊ का सब से भारी । या से मुक्ती होइ बिचारी ॥

(लोमस ऋषि)

॥ चौपाई ॥

गऊ दान दीन्हा बहुतेरा । जनम मिला जो बकरी केरा ॥
 बाम्हन भोजन दिये अघाई । बिच्छू जनम ताहि से पाई ॥
 और अनेक पुन्य बिधि कीन्हा । जा से जोनि जोनि दुख लीन्हा ॥
 जो तुम कही सभी हम कीन्हा । मुक्ति न पाई रह्यो अधीना ॥
 जो जो मुक्ति जुक्ति बतलाई । सो सो सब मै कीन्ह बनाई ॥

(पिता)

॥ चौपाई ॥

लोमस ऋषि मैं कहैं बिचारा । संत सरनि से होइ उबारा ॥
तीरथ ब्रत सब झूठ पसारा । नहिं होइ है या से निरबारा ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी कहै बुझाई, माना पंडित सुन बिधी ।
लोमस ऋषि सम्बाद, तीरथ ब्रत बिधि यों कही ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

सुन माना स्यामा और नैनू । ये सब भाखि सुनाओं बैनू ॥
तीरथ ब्रत का सुनौ बिचारा । लोमस ऋषि बिधि कीन्ह सँवारा ॥
तीरथ ब्रत का ऐसा लेखा । लोमस ऋषि ये सब करि देखा ॥
ये सुन कर पंडित घबराना । ज्वाब न आवै मती हिराना ॥

॥ माना स्यामा और नैनू ॥

॥ चौपाई ॥

तब तीनौ मिलि बोले बानी । ये बातें तौ अकथ कहानी ॥
हम तौ वेद बिधी मैं भूला । ये सब आहि कर्म बिधि मूला ॥
तुम तौ स्वामी और सुनावा । वेद बिधी को सब समझावा ॥
सब बिधि भिन्न भिन्न कर भाखी । तब सूझा हमरी निज आँखो ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

ये तुम्हरी कछु भूल न भाई । या की बिधी कहैं समझाई ॥
सत्तनाम इक साहिब स्वामी । सो निज रहै अगमपुर धामी ॥
तिन के पुत्र निरंजन होई । जा ने रची सकल बिधि सोई ॥
जोति अंस स्वामी से आवा । दोनो मिलि बैराट बनावा ॥
आई जोति निरंजन पासा । निराकार जोती को ग्रासा ॥

जब पुनि पुरुष दीन्ह तेहि स्त्रापा । लच्छ जीव करिहौ नित ग्रासा
जाउ निरंजन होइहौ काला । जग मैं रचिहौ बहु जंजाला ॥
ऐसा जवाब पुरुष मुख डाला । भया निरंजन जग मैं काला ॥
तीन लोक मैं रहै समाई । चौथे मैं नहिं जाने पाई ॥
ऐसा स्त्राप पुरुष ने दीन्हा । काल निरंजन को अस चीन्हा ॥
पुरुष पुत्र जग जाग्रत नामा । ता को हुकम दीन्ह तेहि ठामा ॥
निरंजन काल जोति को ग्रासा । जाहि काटि आवौ हम पास ॥
जग जाग्रत नख भव पर मारा । पटकि निरंजन जोति निकारा ॥
जग जाग्रत गये अपने धामा । रहिया जोति निरंजन ठामा ॥
दोनों भये एक रस राजी । तीन बार भग भोगे साजी ॥
तीन पुत्र ता ने उपजावा । ब्रह्मा बिस्नु महेस कहावा ॥
ब्रह्मा पिता ध्यान को गयऊ । पायौ न पिता चारि जुग भयऊ ॥
जोती मैल काटि जब लीन्हा । रच कन्या गायत्री कीन्हा ॥
कन्या ब्रह्मा लेन पठाई । गायत्री ब्रह्मा पर आई ॥
गायत्री कहै चलिये भाई । माता तुम कै लेन पठाई ॥
ब्रह्मा कहै कौन बिधि जाई । पिता दरस अजहूँ नहिं पाई ॥
माता से ऐसी कहौ साखी । परस्यो पिता देख निज आँखी ॥
येहि बिधि हमरी साखि सुनाये । तब तुम्हरे संग हम चलि जाये ॥
गायत्री अस बचन उचारी । कहिहौ झूठी साखि सम्हारी ॥
चलौ बेग माता पै भाई । माता तुम को लेन पठाई ॥
गायत्री अस बचन सुनइया । तब ब्रह्मा उनके संग गइया ॥
दोनों आये माता पास । पिता भेद पूछा परकासा ॥
पिता दरस माता मैं पावा । दोनों मिलि ये सद् सुनावा ॥
जोती मन मैं सोच बिचारा । झूठी बात करै लबारा ॥
वे तो काल कराल कसाई । वा से बचै कौन बिधि भाई ॥
जानेउ पिता दरस नहिं पावा । मिथ्या साखि भाखि गोहरावा ॥

जोती झलक क्रोध तन तापा । तब पुनि दीन्ह दोऊ को स्त्रापा ॥
 गायत्री को स्त्राप सुनाई । बृछ तन धरौ केतकी माई ॥
 ब्रह्मा कुल परपंची जोई । मैला मन बुधि सुधि नहिं होई ॥
 माता स्त्राप यही बिधि दीन्हा । माना सुन कर करौ यकीना ॥
 ब्रह्मा स्त्राप जो कहूँ बिचारी । सब मिलि कै सुनियौ बिधि सारी ॥
 तुम्हरा कुल परपंच दुखारी । मति का हीन लाभ संसारी ॥
 आगे होइ है साखि तुम्हारी । मिथ्या पाप करै बहु भारी ॥
 प्रगट नेम जो करै अचारा । अंतर मैल पाप बिस्तारा ॥
 राम कृष्ण की भक्ति दृढ़ावै । आप करै सोइ और सिखावै ॥
 बिस्नु भक्ति से करै हंकारा । ता से परै नरक को धारा ॥
 कथा पुरान और समझावै । चालि बेहूद आप दुख पावै ॥
 इनसे और जो सुनि है ज्ञाना । सो परि है चौरासी खाना ॥
 झूठा वेद बिधी बिधि गावै । दछिना कारन गला कटावै ॥
 जा को सिष्य करै पुनि जाई । परमारथ तेहि नाहिं लखाई ।
 अपना स्वारथ ज्ञान सुनावै । अपनी पूजा ज्ञान दृढ़ावै ॥
 परमारथ के निकट न जाई । स्वारथ हेत सबै समझाई ॥

॥ देहा ॥

ब्रह्मा को भयौ स्त्राप, तुम्हरा कुल मिथ्या परै ।
 झूठ चलावै चाल, उद्र काज नरकै परै ॥

॥ चौपाई ॥

जोति स्त्राप ब्रह्मा को दीन्हा । तुम्हरा कुल होइ है मति हीना ॥
 तुलसी कही भई बिधि मूला । स्त्राप पाप से ब्रह्मा भूला ॥
 स्त्राप बिधी निरगुन ने जानी । उन पुनि स्त्राप जोति पर ठानी ॥
 द्वापर जुग आवैगा सोई । जब तुम पंच भरतारो होई ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "पंच औतारी" है जो अशुद्ध जान पड़ता है ।

॥ सोरठा ॥

अस अस दीन्है स्याप, बाम्हन की मति यैँ गई ।
ता से न मानै बात, बुद्धिहीन मानहिँ मरै ॥

॥ चौपाई ॥

ता से बाम्हन की मति मैली । मन और बुद्धि पाप से फैली ॥
देवी बकरा गला कटावै । मछरी मास बहुत बिधि खावै ॥
ऐसा कर्म करै सोइ भाई । का को कहिये और कसाई ॥

॥ श्लोक ॥

कामार्त्तस्य कुतो लज्जा, निर्द्धनस्य कुतः क्रिया ।
सुरापस्य कुतः शौचं, मांसाहारे कुतो दया^१ ॥

॥ चौपाई ॥

या से तुम को परै न सूझा । तुम्हरी मति अस भई अबूझा ॥

सम्बाद मानगिरी सन्यासी के साथ ।

॥ चौपाई ॥

सब पंडित मिलि दीन्ह बिचारा । माना स्यामा नैनू हारा ॥
सुन कर परमहंस इक आवा । मानगिरी सन्यासी नाँवाँ ॥
पंडित से भगरा सुनि पावा । सो बिधि सुनि हमरे पर आवा ॥
ईसुर ब्रह्म एक नहिँ मानै । बेद बेदांत नहिँ कछु ठानै ॥
गीता की मानै नहिँ भाई । हैकोइ ऐसा तुलसी गुसाँई ॥
ये सुनि के हमरे ढिँग आये । जहँ सब पंडित बैठि रहाये ॥

॥ परमहंस उवाच ॥

मानगिरी बोले अस बाचा । जो बेदांत कहै सो साचा ॥
जो बेदन ने कही बखाना । गीता सत्त कहै परमाना ॥

(१) कामी शरम को, निर्द्धन क्रिया को, शराबी सफ़ाई को, और गोश्तख़ार दया को नहीं जानता ।

एक ब्रह्म है सब के माई । और कोई दूजा है नहीं ॥
 ये वेदांत कहै गोहराई । गीता में भगवान सुनाई ॥
 मानगिरी कहै सुनौ गुसाई । मैं वेदांत कहौं समझाई ॥
 आत्म सब में ब्रह्म बखाना । ता को नाम निरंजन जाना ॥
 सो तो ब्रह्म हमों हैं भाई । हम को छाँड़ि अंत नहिं पाई ॥
 सब जग हम हम माहिं समानौ । हम से कोई और नहिं जानौ ॥
 जग भूला आँखी नहिं सूझै । केवल ब्रह्म न हम को बूझै ॥
 ये संकल्प जग जीव भुलाना । यों अज्ञानी जग्त कहाना ॥
 बालक रूप ब्रह्म को भाखा । त्याग सबै कोपीनै राखा ॥
 ब्रह्म रूप सब जग्त बिचारै । येहि बिधि आत्म ब्रह्म निहारै ॥
 जाग्रत सुपन सुषोपति त्यागी । तुरियातत्त रहै अनुरागी ॥
 चारौ बानी को हम जाना । परा पसंता भेद बखाना ॥
 और बैखरी भाखि सुनाऊँ । सो सब जग मैं प्रगट दिखाऊँ ॥
 पाँचौ मुद्रा कहौं बखानी । चाचरि भूचरि खेचरि जानी ॥
 और अगोचरि उनमुनि जाना । सब जोगिन का भेद बखाना ॥
 परमहंस ऐसी बिधि बोला । तुलसी तोल स्वाल अस खोला ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

कहै तुलसी स्वामी सुन बाता । परमहंस वेदांत सनाता ॥
 अब हम तुम से पूछै बाता । ब्रह्म कहौ तुम आदि सनाता ॥
 तुम तो ब्रह्म आप को जाना । रहो तत पाँच सरीर बिधाना ॥
 तुम पुनि पाँच तत्त कस आया । रूप रेख बिन रहौ अकाया ॥
 पिता बीज माता रक्तानी । तब सरीर की रचना ठानी ॥
 माता पिता तत्त नहिं रहिया । तब कहँ हते सोई निज कहिया ॥
 पाँच तत्त बैराट सरीरा । तब तत नहीं बसौ केहि तीरा ॥
 पाँच तत्त मैं केहि बिधि आये । तत्त नहीं तब कहाँ रहाये ॥
 धरती अग्नि अकास न रहिया । पानी पवन भवन नहिं भइया ॥

तब तुम कहाँ रहे सोइ भाखी । तब की आदि बताओ साखी ॥
 तुम कहाँ सब मैं हमों समाना । जब नहीं रहे सुन्न असमाना ॥
 नहीं सरीर बैराट बनाया । पाँचौ तत्त न उपजी माया ॥
 जब बेदांत हतो नहीं भाई । तब नहीं गीता कथा बनाई ॥
 जब तो तुम्हीं तुम्हीं तुम रहिया । गीता साखि कौन बिधि कहिया ॥
 नहीं सरीर नहीं लिखनेहारा । कागद स्याहि न कलम सँवारा
 तब बेदांत कहाँ था भाई । सो ता की तुम साखि बताई ॥
 तब तो तुम्हीं तुम्हीं निज रहिया । तब की बात बिधी बतलइया ॥
 तब हमरे मन साँची आवा । बिना भेद सब झूठ कहावा ॥
 अब गीता की साख सुनावौ । और बेदांत बिधी बिधि गावौ
 जो जो कही बचन बिधि भाखी । सो सो समझिलीन्ह सब साखी
 पाँच तत्त रचि बास बनावा । कर्म भोग फिरि भौ मैं आवा ॥
 तुम ता को कहाँ ब्रह्म बखानी । ये तो भरमै चारो खानो ॥
 ये बैराट खानि भौ माहीं । ब्रह्मा बिस्नु कहाँ कहें रहहीं ॥
 पाँच तत्त नहीं रहत सरीरा । तब कहें हते कहाँ केहि तीरा ॥
 प्रथमहि कहाँ कहाँ से आया । नहीं तब तन बैराट बनाया ॥
 तब की कहाँ सकल बिधि गाई । तो तुलसी के मन में आई ॥

॥ परमहंस ॥

॥ चौपाई ॥

ये बेदांत कहै सब साखी । गीता की तुम एक न राखी ॥
 गीता कहै ईस्वर सब माई । आत्म ब्रह्म बेदांत बताई ॥
 ये तुम्हरे मन में नहीं आई । सब को तुम ने दीन्ह उड़ाई ॥
 ब्रह्म सनातन सब मैं भाखा । सो तो तुम ने एक न राखा ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

ब्रह्म ब्रह्म सब तुम्हीं बखानौ । आदि ब्रह्म की कछू न जानौ ॥
 भाखी ब्रह्म कहाँ से आया । कहाँ ब्रह्म को कौन बनाया ॥

जग नहिँ हता ब्रह्म कहँ रहिया । कहौ ब्रह्म को कैन बनइया ॥
ऐसा परमहंस मत गावौ । नहिँ ब्रह्म की आदि बतावौ ॥
बिन सतसंग भेद नहिँ जाना । करता ब्रह्म नहिँ पहिचाना ॥

॥ साखी ॥

नर पंछी मन पीँजरा, ज्ञान पंख भयौ नास ।
सतसंग बृछ पाये बिना, ब्रह्म अकास न पास ॥

॥ चौपाई ॥

अब गीता की साखि बताऊँ । तुम भगवान कहनि मुख गाऊँ ॥
गीता मैं पांडो बिधि भाखी । कैरौ जुटि कही सब साखी ॥
अरजुन ज्ञान धनुष चढ़वावा । सब कैरौ का नास करावा ॥
पुनि फिर तिनहिँ हिवारे गारे । नर्क माहिँ अरजुन को डारे ॥
मित्र बड़े उन के दुख पावा । और जीव की कैन चलावा ॥

॥ साखी ॥

कृष्ण समीपी पंडवा, गरे हिवारे जाइ ।
लोहे को पारस मिलै, तौ काहे काई खाइ ॥

॥ चौपाई ॥

मानगिरी सुन बचन हमारा । आदि अंत वेदांत बिचारा ॥
सास्तर ब्रह्मा वेद बनाई । और बैराट ब्रह्म बिधि गाई ॥
आतम और परमातम बानी । कहूँ ब्रह्म की आदि बखानी ॥
जो वेदांत ज्ञान गति गाई । सास्तर आतम अंत सुनाई ॥
नाम भेद भिनि भिनि बतलाऊँ । गुन गति ज्ञान गिरा समझाऊँ ॥
ठेका ठामी ठौर ठिकानी । पिंड ब्रह्मंड की करौँ बखानी ॥
जहँ से ब्रह्म आतमा आई । सो पद द्वार सुनाऊँ गाई ॥
भिनि भिनि कर बरतंत सुनाऊँ । मानगिरी सुन ज्ञान लखाऊँ ॥

॥ दोहा ॥

ब्रह्म वेद बैराट की, भिनि भिनि भाखूँ आद ।
आतम अंत वेदांत की, बूझै बिरले साध ॥१॥

बेद मता मत काल ने, कीन्हा झूठ पसार ।
ब्रह्म बेद बेदांत से, संत मता है पार ॥२॥

॥ चौपाई ॥

मानगिरी सुनि कै चित लाऊ । आदि अंत बिधि बरनि सुनाऊँ ॥
नसिहत-नामा भाखि सुनाऊँ । या की बिधि ता मैं दरसाऊँ ॥

नसीहत-नामा

॥ रेखता ॥

एरी अली खोज खबर धसि धाई ॥टेक॥
गवन भवन भिन भेद लखाऊँ, तत मत जोति नाद नहिं जाई ।
अलख जोति बिन खलक समाना, जाना जिन जिन गाई ॥१॥
नाम निवास बास सत लोका, जेहि का कँवल तेज सुन माई ।
परमात्म पद सुन परे धामा, सुन धुनि आत्म आई ॥२॥
आत्म बास बसै सरवर मैं, वहि तत बास अकास कहाई ।
अली अकास चारौ तत कीन्हा, तत बैराट बनाई ॥३॥
सुन नभ वार तार सुत स्यामा, ता मैं आत्म मनहिं कहाई ।
पँच इंद्री कर्म ज्ञान पाँच मैं, दस बस फाँस फँसाई ॥४॥
इंद्री कर्म असुभ बस बाँधे, सुभ करिकै गति ज्ञान गिराई ।
सुभ अरु असुभ कर्म मन मारग, ये दोउ भव भुगताई ॥५॥
आसा बास बसै कर्मन मैं, फिरि फिरि जनम जोनि भरमाई ।
यहि बिधि आवागवन भवन मैं, फिरि फिरि खानि समाई ॥६॥
यहि बिधि संत सभी सब गावैं, सब्द साखि सब बरनि सुनाई ।
बूझै न मूढ़ चलै मन मत के, सत सत बचन उड़ाई ॥७॥
आत्म ज्ञान ब्रह्म बन बैठे, कहते लाज न मन बिच आई ।
द्वैत भाव भर्म मन बरतै, अद्वैतो दरसाई ॥८॥

तजि मन मूढ़ कूड़ पाखँड को, झूठ झूठ सब धोखा खाई ।
 तन कर नास बास चौरासी, फिरि फिरि जम धरि खाई ॥९॥
 या से मान मनी मति डारौ, लख गुरु गगन गवन बतलाई ।
 सूरति डोर लील बिच खेलौ, फोड़ि कै पछिम समाई ॥१०॥
 लीला सेत स्याम सुन पारा, न्यारा द्वार दोदा दरसाई ।
 जहँ परमात्म आत्म नाहीं, खिरकी पुरुष लखाई ॥११॥
 जहँ सत लोक मोष पर बेनी, मंजन करिके सहज अन्हाई ।
 चढ़ि कर द्वार देखि सत साहिब, सुभ और असुभ नसाई ॥१२॥
 जे जे बंद फंद कर्मन के, सत्त पुरुष दरसत नसि जाई ।
 यहि बिधि भाँति सुरति से खेलै, सतगुरु कहत बुझाई ॥१३॥
 सतसंग रंग दीन दिल पावै, मोटे मन तन बूझ न आई ।
 जिन मन नीच कीच सम कीन्हा, उनकी दृष्टि समाई ॥१४॥
 जागी भेष भर्म मन ज्ञानी, परमहंस बैरागी गुसाई ।
 करि करि खोज रोज पचि हारे, वा की खबर न पाई ॥१५॥
 साख संग बिधि साखि बिचारै, बिधि बेदांत ब्रह्म बतलाई ।
 बेद नेति कर कहत पुकारा, ब्रह्मा आपु हिराई ॥१६॥
 बिधि बैराट कँवल नाभीमँ, खोजत खोजत फिरि फिरि आई ।
 ब्रह्मा भूले बेद कहै नेता, ये दोउ भेद न पाई ॥१७॥
 ये बेदांत ब्रह्म कस गावै, या को कहौ किन बूझ बताई ।
 या के गुरु का भेद बतावौ, बिन गुरु कहौ कस गाई ॥१८॥
 पिरधम बन बैराट बनावा, ता पीछे ब्रह्मा उपजाई ।
 ब्रह्मा पीछे बेद बिधाना, ये सब खोज न पाई ॥१९॥
 बेद बिधी से सास्तर कीन्हा, ता पीछे बेदांत बनाई ।
 ये तौ ब्रह्म बूझ कहि गावै, वा ने नेति सुनाई ॥२०॥
 या की साखि समझ नहिँ आवै, झूठ साच निरनै न बुझाई ।
 सोल पोल बिधि कोइ न बिचारै, टेकै टेक चलाई ॥२१॥

ब्रह्मा बाप बैराट कहावै, जा मैं आतम ब्रह्म समाई ।
 सूर चंद दोउ नैना वा के, राहु बिमान सताई ॥२२॥
 ब्रह्मा बाप आप भये रोगी, भोग रोग नित राहु सताई ।
 उन का बाप आप दुख पावै, ता का दुख न छुड़ाई ॥२३॥
 बेद भेद संग जगत उबारै, अस अस पंडित कहत सुनाई ।
 पीछे सास्तर नाती कहिये, आज्ञा दुर्ग दुख पाई ॥२४॥
 जग बेदांत ब्रह्म कहै ज्ञानी, राहु बैराट ब्रह्म दुखदाई ।
 पंडित बूझ सूझ समझावै, ये कहौ समझ सुनाई ॥२५॥
 तन को तेल फुलेल रसिक मैं, खान पान पोसाक सुहाई ।
 नित नित सैल करै बागन मैं, तन नित माँजि अन्हाई ॥२६॥
 ये सब मौज चौज सुख संगी, तन हबूब बुल्ले सम जाई ।
 पल पल घट घड़ियाल पुकारै, जग जम सोंटे खाई ॥२७॥
 लेत हिसाब ज्वाब नहिँ आवै, आतम ज्ञान गैल गिरि जाई ।
 ब्रह्म बूझि बैराट दुखारी, परलय माहिँ नसाई ॥२८॥
 ता के भीतर चेतन बासी, परलय तन तत कहाँ रहाई ।
 ब्रह्मा नसि और बेद नसाना, जब का भेद सुनाई ॥२९॥
 पिरथम पवन अकास नसाना, ब्रह्मा बेद बैराट नसाई ।
 कागद स्याही न लिखनेहारा, तब की बिधि समझाई ॥३०॥
 बिधि बैराट नास सब जानै, आगे भेद न कहत सुनाई ।
 जेहि जेहि पूछै सोइ अस गावै, आगे न खबर सुनाई ॥३१॥
 काल जाल सब चालि बखानै, बेद नेति सास्तर समझाई ।
 या मैं जोग ज्ञान फँसि मारे, सब को भर्म भुलाई ॥३२॥
 अगम निगम पर नेक न पावै, बेद नेति आतम कहि गाई ।
 सोइ सास्तर सुनि मुनि जन गावै, आगे भेद न पाई ॥३३॥
 आतम ब्रह्म अवाच बतावै, कहत दृष्टि नहिँ देत दिखाई ।
 बिन देखे बरनन जिन कीन्हा, नहिँ परमान कहाई ॥३४॥

कहत बेद कोइ देख न पावै, पुनि अबाच कहौ कौन सुनाई ।
 बिन बाचा सास्तर नहिं भयऊ, अरी अबाच किन गाई ॥३५॥
 वह अबाच कहौ बोलत नाहीं, बाचा बिन किन खबर सुनाई ।
 सुनि कहौ बेद नाद बाचा से, या को भेद बताई ॥३६॥
 पूछौ जित जो अबाच बतावै, बाचा मैं बरतंत सुनाई ।
 बाचा बचन न जाने पावै, पूछौ कहौ सुनाई ॥३७॥
 बाक बचन कहौ यातन मानै, बिन बाचा मैं कहौ समझाई ।
 सुनि द्वैति बिन बाच न आवै, बचन बिना दरसाई ॥३८॥
 ये सब काल जाल जग बाँधा, ज्ञानी पंडित भेष भुलाई ।
 मान मनी मद अहं बतावै, यहि बिधि जाल जमाई ॥३९॥
 पढ़ि पंडित रुजगार चलावै, कुटुंब काज परपंच बसाई ।
 ता मैं ज्ञानी जगत अबूझा, सो सुनि समझि सुनाई ॥४०॥
 यहि बिधि बुधि बेदन सँग बाँधो, संत मता बेदन सम गाई ।
 नाद बेद से सत निधारे, सो नहिं कोइ गति पाई ॥४१॥
 ये अबाच पर और अबाचा, सो कोइ संत भेद बतलाई ।
 उन देखा सुत से चढ़ि चौथे, सो सब संत सुनाई ॥४२॥
 पिरथम एक अनाम अबाचा, वा की गति मति संत जनाई ।
 सत्त लोक पर नाम अबाचा, सो पद चौथे माई ॥४३॥
 परमात्म पद सुन पै अबाचा, सुनि धुनि नीचे आतम आई ।
 मानसरोवर तेहि कर धामा, सोइ आकास समाई ॥४४॥
 जड़ अकास चेतन जिन्ह कीन्हा, स्याम सेत बिच नाम गुसाई ।
 सोइ निज नाम निरंजन भाखा, बेद अबाच सुनाई ॥४५॥
 सहस कँवल मध धाम कहावै, ता परतीनि अबाच रहाई ।
 ब्रह्मा बेद बैराट न पावै, ऋषि मुनि भ्रम मन माई ॥४६॥
 सास्तर मिलि पुनि आतम गावा, काल की कला अबाच सुनाई ।
 पंडित पढ़ि गुनि ज्ञान गठाने, या से जग बैराई ॥४७॥

निरगुन कंज राह नहिँ पावै, संत सुरति से नित नित जाई ।
 जो वाहि देस भेस के भेदी, जिन जिन खबर जनाई ॥४८॥
 उनको जग नास्तिक ठहरावै, बोल बचन उनके न सुहाई ।
 वे पुनि चढ़ि चढ़ि अगम निहारै, बिधि सब कहत सुनाई ॥४९॥
 काल निरंजन बाच अबाचा, कहत नाद बिच बेद बनाई ।
 आतम तमा अबाच कहावै, येहि बिधि काल जनाई ॥५०॥
 संत मता कछु और पुकारै, आतम जीव मानसर माई ।
 परमातम सुन खिरकी पारा, संतन देख जनाई ॥५१॥
 आगे सत्तलोक चौथे में, सो अबाच सत पुरुष कहाई ।
 जहँ नहिँ निरगुन बेद बिचारा, ये सब वार रहाई ॥५२॥
 चौथे पार अनाम अमाया, नाम न रूप अगम गति गाई ।
 सो सब संत करै दरबारा, ये गति बिरले पाई ॥५३॥
 ये गति धाम अगमपुर ठामा, जाहि देत जो जाइ जनाई ।
 या की साखि बेद नहिँ जानै, संत कृपा से पाई ॥५४॥
 संत सरन बिन पंथ न पावै, सतगुरु गैल खेल खुलि गाई ।
 मन होय छोट मोट छल छाँड़ै, तब सत सुरति लखाई ॥५५॥
 सत मत रीत जीत जब जानै, ज्ञान मान मद दूरि बहाई ।
 मन और कर्म बचन बुधि^१ साँची, काँची कुबुधि उठाई ॥५६॥
 संत दयाल चाल जब चीन्है, लीन दीन दिल लेत लगाई ।
 सब अस भाँति जाति पक^२ परखै, तरकै तन बिच जाई ॥५७॥
 वे अंतर घट घाट बिचारै, कर कर फैल गैल नहिँ पाई ।
 कूड़ कपट सब झारि निकारै, जब रस राह लखाई ॥५८॥
 सत मत सुरति निरति नित न्यारी, सारी समझ बूझ बतलाई ।
 लील सिखर पट परदे माहीं, पल पल मनहिँ लगाई ॥५९॥

(१) मं० दे० प्र० की पुस्तक में "बिधि" है जो सही नहीं मालूम पड़ता । (२) पक्ष ।

काग भसुंड धाम धसि पावै, कँवल कंज करिया के माई ।
 ता पर सेत सुरति सत द्वारा, चढ़ चढ़ सुन्न समाई ॥६०॥
 सुनि धुनि ताल तरंग आतम जिव, पछिम दिसा दिस देन दिखाई ।
 खिरकी खोल अबोल अवाचा, सो रचि जीव जनाई ॥६१॥
 ताल निहार पार चलि आगे, सुन्न सिखर फाटक मैं जाई ।
 तहँ कहँ ताक भाख दोउ द्वारा, पारब्रह्म पद पाई ॥६२॥
 सुरतिसैल जहँ खेल निहारी, लख लख गगन अंड अरथाई ।
 जा बिच सुरति सिरोमनि पेरो, ज्योँ चौंटी सम जाई ॥६३॥
 अस भसुंड भिन अंड निहारा, राम रमा मुख जाइ समाई ।
 रामायन लखि साखि सुनाऊँ, हिये दृग देत दिखाई ॥६४॥
 चर और अचर खानि सब सारी, भिन भिन भेद भसुंड सुनाई ।
 काग भसुंड काया के माहीं, लखि जिन जानि जनाई ॥६५॥
 या से परखि पार पद न्यारा, पारै चढ़ि चल चरम चिन्हाई ।
 सुनि धुनि आतम पद परमात्म, इन के पार लखाई ॥६६॥
 ये दोउ वार पार सतलोका, परदा तीनि फोड़ जोड़ जाई ।
 सुरति सब्द पुरुष पद पारा, जब घर अपने आई ॥६७॥
 ता पर धाम नाम नहिँ न्यारा, तारा चंद न सुरज रहाई ।
 धरती न गगन गिरा नहिँ बानी, जानी जिन जिन गाई ॥६८॥
 पिंड ब्रह्मंड न अंड अकारा, न्यारा अली अलोक कहाई ।
 जहँ सब संत पंथ पद माहीं, नित नित सैल समाई ॥६९॥
 सतगुरु साथ हाथ हित पावै, संत सरन सुत सार लखाई ।
 सतसंग संत बिना नहिँ पावै, फिर फिर कर्मन माई ॥७०॥
 आगे सुन गुन ज्ञान बताऊँ, जीव कर्म बस ब्रह्म बँधाई ।
 ब्रह्म जीव बस कर्म बिचारै, जड़ संग ज्ञान गिनाई ॥७१॥
 अब या की सुन साखि सुनाऊँ, भागवत मत बिधि व्यास बताई ।
 जब बैराट ठाट ब्रह्म भइया, देवन जाइ उठाई ॥७२॥

नहिँ बैराट उठा बिन आतम, पुरुष अंस आतम जब आई ।
 मध बैराट जीव आतम अस, तब तन तुरत उठाई ॥७३॥
 अंस जीव आतम कहौ कहँ से, आया सो बिधि खोज कराई ।
 सो स्वामी का कहौ कहँ बासा, जिन से अंस जो आई ॥७४॥
 अंस बुंद आतम तन बासा, सिंध खोज कहँ अंत रहाई ।
 यहि बिन संत पंथ नहिँ पावै, फिरि फिरि जड़ तन माई ॥७५॥
 बिन साखी संध फंद न टूटै, छूटै न ज्ञान जो कोटि कराई ।
 बिन बिधि सुरति सिंध नहिँ पावै, बिन सिंध बुंद बहाई ॥७६॥
 चेतन जड़ तन गाँठि बंधानी, छूटे बिन बस ब्रह्म न भाई ।
 छूटै गाँठि गगन चढ़ चीन्है, तब बिधि ब्रह्म कहाई ॥७७॥
 जैसे गगन रबी रहै बासा, किरनि भास भूमी पर आई ।
 जब सब सिमटि भास गति रबि मैं, बुंदा सिंध कहाई ॥७८॥
 नास अकास सूर सत्र बिनसै, तब रबि रहै कहौ कहँ जाई ।
 सो ठेके का खोज लगावौ, वो पद कौने ठाई ॥७९॥
 सास्तर ने गति गैल भुलाई, ब्रह्म बाँधि जड़ जीव रहाई ।
 यहि बिधि भूल फूल मन मारग, या से गति नहिँ पाई ॥८०॥
 ज्ञान ठान दृढ़ सास्तर भाखा, परमहंस ज्ञानी उरभाई ।
 चारि अवस्था भाखि बताई, सो सब कहत सुनाई ॥८१॥
 सब ज्ञानी तुरिया गति गावै, पूछौ भेद सो मन मुख माई ।
 जाग्रत सुपन सुषोपति तुरिया, तुरियातीत सुनाई ॥८२॥
 जाग्रत सुपन का भेद न बूझै, सुषोपति तुरिया मुख से गाई ।
 तुरियातीत रीत मन मारग, आगे भेद न पाई ॥८३॥
 बानी चार लार कर बोलै, परा पसंता मधिमा भाई ।
 बैखरी बिधि बोलै सुन बाली, कँवल पेट के माई ॥८४॥
 यहाँ से बानी उठत बतावै, बिष्टा बास बतावत आई ।
 जहाँ से बानी उठत अबाचा, वहाँ का खोज न पाई ॥८५॥

ज्ञान तीन गति गाइ सुनावै, रेचक पूरक कुंभ कहाई ।
 ये सब ज्ञानी बानी बूझै, मन संग बुद्धि बहाई ॥८६॥
 मन बिधि ज्ञान बुद्धि बस देखै, ब्रह्म ब्रह्म कर कहत सुनाई ।
 आतम को अद्वैत बतावै, या से बूझ न आई ॥८७॥
 आतम कुबुध बंध कर्मन में, ब्रह्म ज्ञान गति कहत बुझाई ।
 रहै अज्ञान घास जड़ दैही, ता बिच गाँठि बँधाई ॥८८॥
 ठट कर ठाट ठटै जब सूरति, झंड़ा फोड़ अगम गति पाई ।
 सब्द सिंध सूरति चढ़ जावै, जब पावै पद आई ॥८९॥
 तुलसी तुच्छ कुछ नहिं जानै, संत सत्त कहि कहत सुनाई ।
 मैं मति नीच कीच सम किंकर, सतसंग समझ सुनाई ॥९०॥

॥ चौपाई ॥

मानगिरी बूझौ बिधि सारी । संत अंत गति सब से न्यारी ॥
 गीता ज्ञान ब्रह्म समझावा । अरजुन छले नर्क बिच नावा ॥

॥ प्रश्न परमहंस ॥

॥ चौपाई ॥

सुन कर परमहंस अस बोला । ये बरनन गीता मैं खोला ॥
 पुनि अस भेद सबै सब गावा । सास्तर सुध आतम समझावा ॥
 सब ने सब मैं ब्रह्म बताई । और बेदांत साखि समझाई ॥
 या को मरन जिवन कछु नाई । आवै नहीं नहीं कहूँ जाई ॥
 सोई सनातन सत्त समाना । आतम आवागवन न जाना ॥
 ऐसे सास्तर साखि बतावै । सबहिमहातम अस अस गावै ॥

॥ दोहा ॥

परमहंस अस भाखेऊ, सब मैं ब्रह्म समान ।
 सब सास्तर अस अस कहै, और स्तुति कहत पुरान ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

सास्तर सब मैं ब्रह्म बखाना । पाँच तत्त जड़ चेतन जाना ॥
 जीवत पाँच तत्त से छूटै । गगन चढ़ै असमान जो फूटै ॥
 वहँ से अधर और है धामा । जीवत चढ़ै जाइ वोहि ठामा ॥
 पाँच तत्त जड़ चेतन छूटै । ऐसे चढ़ै अधर तब टूटै ॥
 वोही धाम धसि जाइ समाना । अस चढ़ि चलै ब्रह्म जेहि माना ॥
 ज्ञान दृष्टि से बूझै कोई । सो नहिँ ब्रह्म ब्रह्म गति होई ॥
 जो जो सास्तर करत बखानी । उन ने सब सास्तर की जानी ॥
 स्वाँस उपर का भेद न जाना । ता की कहा करै परमाना ॥
 सास्तर में इस लोक बखाना । वे उस लोक का मरम न जाना ॥
 पढ़ि पढ़ि सुनि सुनि साखि बतावै । ब्रह्म अदेख देख बतलावै ॥
 तब तो हमरे मन मैं आवै । और बात मन नाहिँ समावै ॥

॥ प्रश्न परमहंस ॥

॥ चौपाई ॥

परमहंस पंडित से बोले । तुलसी और और बिधि खोले ॥
 परमहंस मन मैं संकुचाना । ये तो भेद हमहुँ नहिँ जाना ॥
 पंडित परमहंस भये एका । तुलसी भाखा अगम अलेखा ॥
 हमरी बुद्धि न पहुँचै ताहीं । ये तो अकथ कथा गति गाई ॥
 परमहंस कहै ब्रह्म समाना । सुन पंडित ये और बिधाना ॥
 मन मैं पंडित करत बिचारा । परमहंस अंतर मन हारा ॥
 तुलसी स्वामी अगम बखानी । सब पंडित मिलि ऐसा जानी ॥
 परमहंस पंडित भये दीना । तब हम से पूछन इक कीन्हा ॥
 तुलसी स्वामी मन को रहिया । पूछौ ब्रह्म कहाँ से भइया ॥
 पवना कहौ कहाँ से आई । हम को यह बिधि कहौ बुझाई ॥
 या के परे और कछु भाखा । जा की संध बतावौ साखा ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

पंडित परमहंस सुन ज्ञानी । अब या का हम भेद बखानी ॥
सत्त पुरुष इक साहिब स्वामी । ता सुत भया निरंजन जानी ॥
मन का नाम निरंजन होई । आतम ब्रह्म कहै सब कोई ॥
मन से पवन भई उतपानी । तब मन बँधा देह में आनी ॥
॥ प्रश्न पंडित और परमहंस और उत्तर तुलसी साहिब ॥

(१)

स्वामी जी—(१) मन, (२) पवन, (३) शब्द, (४) ब्रह्म, (५) जीव, (६) सीव कौन हैं ?

(१) मन चकोर है, (२) पवन घोर, (३) शब्द अडोल, (४) ब्रह्म निरंजन काल, (५) जीव काल कर्म बंध, (६) सीव कर्ममुक्ता ।

(२)

स्वामी जी—(१) मन, (२) पवन, (३) शब्द, (४) ब्रह्म निरंजन, (५) जीव, (६) सीव, (७) प्रान, (८) हंस, (९) काल, (१०) सुन्न का कहाँ बासा है ?

(१) मन और (२) पवन का नभ गगन में बासा है, (३) शब्द का हृदय अधर में, (४) ब्रह्म निरंजन का सुषमना में, (५) जीव का काया में, (६) सीव का मन में, (७) प्रान का निरन्तर में, (८) हंस का गगन पार, (९) काल का कलह में, (१०) सुन्न का अनूप में ।

(३)

स्वामी जी—(१) जब गगन नहीं था तब मन कहाँ रहता था, (२) जब नभ नहीं था तब पवन कहाँ रहता था, (३) जब हृदय नहीं था तब शब्द कहाँ रहता था, (४) जब निरन्तर

नहीं था तब प्राण कहाँ रहता था, (५) जब ब्रह्मंड नहीं था तब ब्रह्म कहाँ था, (६) जब गगन नहीं था तब हंस कहाँ रहते थे, (७) जब कलह नहीं था तब काल कहाँ था, (८) जब अनूप नहीं थी तब सुन्न कहाँ था, (९) जब काया नहीं थी तब जीव कहाँ था, (१०) जब जीव नहीं था तब सीव कहाँ था ?

तब (१) मन जोति सरूप में रहता था, (२) पवन निराकार में, (३) शब्द ओंकार में और ओंकार की उत्पत्ति के पहिले सुन्न में रहता था, (४) प्राण निरंजन में और निरंजन की उत्पत्ति के पहिले अविगत में रहता था, (५) ब्रह्म सत्तनाम में, (६) हंस सहज में, (७) काल सुन्न में, (८) सुन्न रंकार में, (९) जीव सीव में, (१०) सीव निरंजन में ।

(४)

स्वामी जी—(१) निरंजन, (२) मन, (३) सीव, (४) जीव, (५) हंस, (६) काल, (७) शब्द, (८) पवन इनकी उत्पत्ति कहाँ से हुई ?

(१) अक्षर से उत्पत्ति निरंजन की हुई, (२) निरंजन से मन की, (३) मन से सीव की, (४) सीव से जीव की, (५) हंस और (६) काल की सत्तनाम से, (७) शब्द की नाम से, और (८) पवन की सुन्न से ।

(५)

स्वामी जी—ये सब कहाँ कहाँ समाते हैं—(१) मन, (२) पवन, (३) शब्द अनाहद, (४) प्राण, (५) ब्रह्म, (६) हंस, (७) जीव, (८) सीव, (९) निरंजन, (१०) जोति ?

(१) मन जोति सरूप में समाया, (२) पवन निराकार में, (३) शब्द अनाहद ओंकार में, (४) प्राण अविगत में (५) ब्रह्म हंस में, (६) हंस सत्तनाम में, (७) जीव सीव में, (८) सीव निरंजन अथवा ब्रह्मांडी मन में, (९) निरंजन जोति में, (१०)

जोति अलख में, अलख अबिनाशी में, अबिनाशी अगम में, अगम सत्तपुरुष में ।

सत्तनाम चौथे पद स्थान, आवै न जाय, मरै न जन्मै ।

शेष तीन लोक बैराट स्थान ब्रह्म, बैराट, आतमा, भगवान मन, औतार, बेद, ब्रह्मा, बिष्णु, शिव, जक्त, उदर में रहे, ब्रह्म नाश, बैराट नाश, आतमा नाश, जोति नाश, निराकार नाश, आकार नाश, ब्रह्मा बिष्णु शिव नाश, ओंकार शब्द नाश, बेद शब्द नाश, अंडा तीन लोक सीव नाश ।

(६)

स्वामी जी—तीन लोक बैराट नाश होकर कहाँ समाते हैं ?

ब्रह्म निराकार जोति तीन लोक बैराट नाश होकर सुन्न में समाता है । सुन्न नाश हो कर महासुन्न में समाता है । महा सुन्न के परे सत्तलोक है जहाँ सत्त साहिब रहता है, यहाँ प्रलय और महा प्रलय की गम नहीं ।

सत्त साहिब की लहर से महासुन्न होता है, महासुन्न से सुन्न, सुन्न से शब्द, शब्द से ब्रह्म, ब्रह्म से जोति निराकार, निराकार जोति से मन, मन से जक्त, ब्रह्मा बिष्णु शिव बेद सब उत्पन्न होते हैं ।

॥ प्रश्न परमहंस ॥

॥ चौपाई ॥

स्वामी तुलसी पूछैँ बाता । औतारी नसि कहाँ समाता ॥
तीनि लोक जस नास कहाई । ब्रह्मा नसि कहाँ समाई ॥
सिव बिस्नू और बेद नसाना । ये सब नसि कहो कहाँ समाना ॥
पारब्रह्म और जोति नसाना । निराकार नसि कहाँ समाना ॥
सुन्न नसी पुनि कहाँ समानी । मन भया नास कहाँ कहैँ को जानी ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

दस औतार नास जो भइया । सो ये सब मन माहिँ समइया ॥
 और सब जगत नास जब होई । सो सब मन के माहिँ समोई ॥
 ब्रह्मा बिस्नु और महादेवा । नास भये मन मत के भेवा ॥
 मन को नास सुनौ पुनि भाई । मन नसि गया निरंजन माई ॥
 नास निरंजन ब्रह्म समाना । ब्रह्म जो नसा सब्द में जाना ॥
 सब्द नास जो सुन्न समाना । सुन्न नास महासुन में जाना ॥
 यहुँ से उतपति परलय होई । आगे भेद न जानै कोई ॥
 वहुँ से आवै यहुँ लै जावै । आगे भेद न कोई पावै ॥
 सत्तलोक महासुन्न कहाई । तीनि लोक सब सुन में जाई ॥
 तीनि लोक करता नहिँ जावै । वा पद को कोइ संत समावै ॥
 वो पद है संतन कर सारा । वहुँ कोइ संत करै दरबारा ॥
 निराकार जोती नहिँ जावै । जम और काल गम्म नहिँ पावै ॥
 दस औतार न पहुँचै भाई । ब्रह्मा बिस्नु की कौन चलाई ॥
 सत्तलोक सत साहिब साई । मिलै कोइ संत अंत जब पाई ॥
 संत दयाल दया जो करई । लख लख भेद जीव निस्तरई ॥
 संत अगम कोइ बिरले पावा । होइ दीन जब भेद लखावा ॥
 अपना ज्ञान मान मत डारै । नीच होइ सोइ सहज निहारै ॥
 दीनदयाल नाम उन केरा । दीन होइ जब होय निबेरा ॥
 मोट उँचाई अपनी मानै । अपना ज्ञान ऊँच कर ठानै ॥
 ता से संत नजर नहिँ आवै । नीचा होइ ताहिँ दरसावै ॥
 संत दयाल बड़े सुखदाई । निमिख एक में देत लखाई ॥
 नीचा होय होय निरबारा । ज्ञान मान बस फिरै लबारा ॥
 ज्ञानी मान खानि की रीती । संत कृपा से भौजल जीती ॥
 संत कृपा जेहि हेत निहारै । कोटिन कर्म काटि कै डारै ॥

संतन की गति अगम अपारा । ब्रह्म राम दोउ लखै न पारा ॥
 ब्रह्म राम से नाम नयारा । सो घर है संतन कर प्यारा ॥
 सत्त नाम सतलोक दुहेला । जहँवाँ संत करै नित केला ॥
 जा को सतगुरु संत लखावै । एक पलक में लोक दिखावै ॥
 उन की कृपा दृष्टि जब होई । दीन होय पद पावै सोई ॥
 परमहंस सुनि कै भय माना । तुलसी तो कछु और बखाना ॥
 ये तो भेद पार पद न्यारा । ऐसा मन में किया बिचारा ॥
 तुलसी संत भेद बिधि गाई । संत भेद सब अगम लखाई ॥
 बिना संत नहिं होइहै न्यारा । संत सरन से उतरै पारा ॥
 परमहंस ये मन में जानी । ये तो अकथ अगाध बखानी ॥
 ये वेदांत वेद में नाई । गीता सास्तर भेद न पाई ॥
 संत मता कछु इन से न्यारा । सो तुलसी ने कही बिचारा ॥
 हम अपने मन त्याग बिचारा । ये सब आहि कर्म भौ जारा ॥
 त्यागै जोइ जोई पुनि पैहै । बार बार भौसागर औहै ॥
 बिन कोपीन बख बिन रहिया । अपने कर भोजन नहिं खइया ॥
 मुखहिं न बोला मौनि बिचारा । ये सब झूठा फैल पसारा ॥
 ऐसी बूझ बात मन लावा । तब चरनन पर हाथ चलावा ॥
 तुलसी पकरि हाथ तेहि लीन्हा । परमहंस पूछै इक चीन्हा ॥

॥ प्रश्न परमहंस ॥

॥ चौपाई ॥

परमहंस पूछत सकुचाया । परमहंस मत कब से आया ॥
 सो तुलसी मुख भाखि सुनाई । या की आदि अंत बतलाई ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

मानगिरी सुन बात हमारी । काल रचा बैराट सँवारी ॥
 पाँच तत्त से पिंड बनाया । पुरुष अंस चेतन जब आया ॥

जड़चेतन दोउ गाँठि बँधानी । सोइ निज ज्ञान जानि मन मानी ॥
 मौन रहै सुख बोलत नाई । करि कपड़ा कोपीन बनाई ॥
 बालक रूप ब्रह्म मन जानै । दुइत भाव और नहिँ आनै ॥
 निराकार ने वेद उपाया । ज्ञान ब्रह्म बिधि भाखि सुनाया ॥
 मन से ब्रह्म आप को माना । जड़चेतन की गाँठि न जाना ॥
 करि करि कर्म रहे भौ खाना । ता को कहौ ब्रह्म कस माना ॥
 ये मत काल जाल परचावा । ब्रह्म ज्ञान जड़ गाँठि बँधावा ॥
 ता से आदि अंत नहिँ जाना । बोलै सब मैं हमीँ समाना ॥
 भौजल काल जाल उरझाया । परमहंस मत यहि बिधि आया ॥
 आदि मते का खोजन पावै । बिना संत कहौ को दरसावै ॥
 मानगिरी कहै सरना लीजै । आद अरु अंत भेद मोहिँ दीजै ॥
 चरन सरन में राखौ स्वामी । हमरी भूल भेद हम जानी ॥
 परमहंस गति दीन बिचारी । दीन्हा उन आपा सब डारी ॥
 कपड़ा फारि कोपीन बनाई । परमहंस को ले पहिराई ॥
 सूरति संध पंथ दरसावा । चौथे पद की राह बतावा ॥
 भेद भाव और ताला कुँची । दीन्ही परमहंस को सूची ॥
 चरन सीस धरि पंथ सिधारे । बिधो देख पंडित सब हारे ॥
 परमहंस गति दीन निहारे । तब पंडित मन माहिँ बिचारे ॥
 अपनी गती गती गति धारी । दीन होय मग भवन सिधारी ॥
 नैनू स्यामा माना भाई । पंडित तीन रहे ठहराई ॥
 कुटी राति रह कीन्ह बसेरा । राति रहे दिन भया सबेरा ॥
 भोर भये तेहि संध लखाई । तीनों गिरे चरन पर आई ॥
 भेद भाव बिधि सब दरसावा । सीस टेकि कै भवन सिधावा ॥
 कासी नगर पहुँचे जाई । जहँ कबीर चौरा नियराई ॥
 पहुँचे पहर दिवस भयौ भ्याना । गये कबीर चौरा अस्थाना ॥
 चौरा ऊपर पहुँचे आई । फूलदास महंत मोहराई ॥

संवाद फूलदास कबीर पंथी के साथ ।

॥ फूलदास उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास पंडित से बोलेउ । तुलसी बचन बिधी बिधि खेलेउ ॥

॥ पंडित उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

माना महंत से कहै बुझाई । फूलदास सुनियो चित लाई ॥
 तुलसी गत मत कहैं बिचारी । उन सम मता नहीं संसारी ॥
 साध संत मत भये अनेका । तुलसी सम हम एक न देखा ॥
 मत तुम्हरा हमहूँ पुनि जाना । तुलसी मता अगाध बखाना ॥
 सुनि महंत तनतमक समानी । को कबीर सम करत बखानी ॥
 खुद कबीर अविगति से आया । पुरइन पात वो भया अकाया ॥
 सत्त पुरुष की आयस लाये । जग मैं जीव नेग मुक्ताये ॥
 उन सम मता न जानो भाई । होइहै यह कोइ साध गुसाई ॥
 हम पूछै सोइ भेद बतावै । फूलदास के मन जब आवै ॥
 जो कबीर मुख अपने भाखा । सो बिधि देखै अपनी आँखा ॥
 सत्त लोक की करै बखाना । पूरा साध ताहि हम जाना ॥
 सत्त सत्त जो सत्त कबीरा । उन भाखा अदबुद मत हीरा ॥
 आदिअंत उन भाखि सुनावा । सो तुलसी पै कहँ से आवा ॥
 तुम पंडित जानै नहि भाई । तुम को ज्ञान दीन्ह समझाई ॥
 हमरे सनमुख बात न आवै । एक सद्द मैं दैह धुजावै ॥
 अब हम उन को देखब जाई । केहि बिधि ज्ञान कहै समझाई ॥
 पंडित कहै भौर तुम जइये । हम अपने घर से पुनि अइये ॥
 पंडित उठि मारग को लीन्हा । घर को गवन अपने कीन्हा ॥
 पुनि घर पहुँचे अपने आई । करी जुगति तुलसी जो बताई ॥

निसिदिन सुरति निसाना लावै । निरखि परै तुलसी पै आवै ॥
 फूलदास भेरहि चलि आई । पूछत कुटिया तुलसी गोसाँई ॥
 पूछत पूछत हिरदे पाई । उन पुनि कुटी दीन्ह बतलाई ॥
 हम पुनि जानि साधकोइ आवा । आदर भाव करन मन लावा ॥
 तब सुखपाल पास नियरानी । तुलसी गति मतिदीन बखानी ॥
 लारै भीर भार बहु भारी । चौँर दुरै सुखपाल सवारी ॥
 जब निज चालि कुटी पर आवा । उठे चरन पर सीस चढ़ावा ॥
 आदर भाव चरन लिये दोनो । साल प्याल को कियो बिछौनो ॥
 आदर भाव दीन गति गाई । मैँ मति नीच साध सरनाई ॥
 बड़े भाग साधू के सरना । कुटी पुनीत भई तुम चरना ॥
 स्वामी गवन कहाँ से कीन्हा । भाखौ नाम कहौ अस चीन्हा ॥

॥ प्रश्न फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास तब बचन बखाना । सत्त कबीर पंथ अस जाना ॥
 फूलदास महंत अस नामा । कासी कबीरचौरा अस्थाना ॥
 महिमा सुनि पुनि हमहूँ आये । दरस कीन्ह सुख मन उपजाये ॥
 फूलदास तब बचन उचारा । गुरु पंथ बिधि कहौ बिचारा ॥
 को है गुरु पंथ को कहिये । कौन मते के साध कहइये ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

संत गुरु और पंथ न जाना । येही संत पंथ हित माना ॥
 दूजा इष्ट न जानौँ कोई । संत सरनि नित सुरति समोई ॥

॥ प्रश्न फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

संत गुरु बिन पंथ न होई । अपना गुरुमंत भाखौ सोई ॥
 सतगुरु बिना ज्ञान नहिँ आवै । सतगुरु बिना भेद नहिँ पावै ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

कहौ कैसे गुरु भेद लखावै । कौन राह से पंथ बतावै ॥
ताकी बिधी कहौ तुम साखी । सो किरपाल दया करि भाखी
हम अजान कछु मरम न जाना । तुम हौ साधू परम निधाना ॥
तुम को कस सतगुरु दरसावा । भाखि भेद सोइ मोहि सुनावा
मैं अति दीन दया कर कीजै । होउ दयाल भेद पुनि दीजै ॥

॥ उत्तर फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसीदास सुनौ चित लाई । पंथ भेद मैं कहौ सुनाई ॥
सत्तपुरुष रहै पुहप मैंभारा । संपुट कँवल खुले तेहि बारा ॥
सत्तपुरुष तेहि बचन उचारा । ज्ञानी बेगि जाउ संसारा ॥
काल देत जीवन को त्रासा । सत कबीर काटौ जम फाँसा ॥
पिरथम चले जीव के काजा । सतजुग चले पास धर्मराजा ॥
धर्म देखि अस बोले बानी । जोगजीत कित कीन्ह पयानी ॥
तब कबीर अस कही पुकारी । जीव काज मैं जगत सिधारी ॥
सत्त पुरुष अस कहा बुझाई । जग में जाइ जीव मुकताई ॥
धर्मराइ अस बचन सुनाई । तुम भौसिंधु बिगारन चाही ॥
तब कबीर बोले अस बाता । तुम्हरी करहुँ प्रान को घाता ॥
पुरुष बचन अब देहौ टारो । तौ हम तुम को देहि निकारो ॥
मन मैं सोचि धरम सकृचाना । तब कबीर जग कीन्ह पयाना ॥
सतजुग नाम मुनिंद्र धरावा । चौका करि जिव लोक पठावा ॥
चौका करि परवाना पावै । छूटै जीव मुक्ति को जावै ॥
और त्रेता जुग कीन्ह चौका । जीव मिले बहु किये बिसोका ॥
द्वापर जुग की कहौ बखानी । धुंधल सुपच खेवसरी जानी ॥
मुक्ति लोक जिव किये पयाना । अस अस जीव मुक्ति को जाना ॥

चौका करि परवाना पावा । नरियर मोड़ि तिनुका तुरवावा ॥
 कलजुग नाम कबीर कहाये । पुरइनि सेत पान पर आये ॥
 कासी नगर कीन्ह कर काया । नूरा नीमा के घर आया ॥
 बालक जानि चीन्ह नहिँ पाये । कई दिवस अस बीति सिराये ॥
 एक दिवस धर्मदास चितावा । चौका करि परवाना पावा ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

भर्म एक मोरे उपजाई । चौका बिधी कहौ समझाई ॥
 चौका कीन्ह दीन्ह परवाना । सो बिधि मो से कहौ बखाना ॥
 धर्मदास जस चौका कीन्हा । जस कबीर वा को कहि दीन्हा ॥
 सो बिधि मो को बरनि सुनावै । दया भाव यह बिधि दरसावै ॥

॥ उत्तर फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसीदास सुनौ तुम काना । चौके का मैं कहौं बिधाना ॥

॥ छंद ॥

निज भाव आरति सुनौ खेवसरि, तोहि कहौं समझाइ कै ॥१॥
 मिष्टान पान कपूर केरा, अष्ट मेवा लाइ कै ॥२॥
 पाँच बासन सेत बस्तर, कदली पत्र अछेदना ॥३॥
 नारियर और पुहप सेतहि, सेत चौका चंदना ॥४॥

॥ सारठा ॥

और आरति अनुमान, सब बिधि आनी साज तुम ।

पुंगीफल परमान, सब्द अंग चौका करौ ॥

॥ चौपाई ॥

और बस्तु आनी सुंठि पावन । गऊ चिर्त और सेत सुहावन ॥
 ऐसे सिष्य सिखापन मानै । ततखन सब बिस्तार जो आनै ॥
 सेत चदरवा दीन्हेउ तानी । आरति कीन्ह जुगति बिधि ठानी ॥
 चौका पर बैठक जब लयऊ । भजन अखंड सब्द धुनि भयऊ ॥

पाँच सब्द का दल जब फेरा । पुरुष नाम लीन्है तेहि बेरा ॥
 नरियर मोड़त बास उड़ाई । सत्त पुरुष को जाइ जनाई ॥
 छिन मैं पुरुष परस पद आयै । सकल सभा उठि आरति लाये ॥
 पुनि आरति बिधि दीन्ह मड़ाई । तिनुका तोरे जल अचवाई ॥
 सोइ सिष हाथ दीन्ह जब पाना । पावै पान सोइ लोक पयाना ॥
 सब्द अंग दीन्हो समझाई । सिष्य बूझि कै सुरति लगाई ॥
 पहुँचै लोक अगम के द्वारा । चौका बिधी कबीर पुकारा ॥
 येहि बिधि जीव करै जो चौका । जा का मिटि गया संसय सोका ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसिदास मन मैं मुसिकानी । मौन रहे कछु कही न बानी ॥

॥ प्रश्न फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास बिधि कहै सुनाई । कहौ तुलसी कछु मन में आई ॥
 कहै तुलसी नहिँ बूझ बयाना । फूलदास मन में रिसियाना ॥
 तुलसी रीस ताहि पहिचानी । दीन होइ जोरे जुग पानी ॥
 फूलदास अस कहै बिचारी । तुलसी कैसे मौन सम्हारी ॥
 चौका कबीर भाखि बतलावा । तुम्हरे मन कछु एक न आवा ॥
 सत्त कबीर जो बिधी बताई । सो हम तुम को भाखि सुनाई ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

कहि कबीर जो चौका गावै । सो बिधि कहौ तो मन में आवै ॥
 दासकबीर जो कही बखाना । सो बिधि चौका है परमाना ॥
 वा का भेद बिधी बिधि गावै । तब तुलसी के मन में आवै ॥
 उन पुनि चौका कैान बताया । तुम ने कैान बिधी ठहराया ॥

नरियर उन पुनि कौन बतावा । मोड़ि तास जो बास उड़ावा ॥
 तुम बजार से नरियर लावा । ता की बिधि तुम हमें सुनावा ॥
 जो कबीर नरियर फरमावा । सो तौ तुम्हरी बूझ न आवा ॥
 सिलिपिलि दीपसे नरियर लाये । ता के पाँच फूल बतलाये ॥
 पाँच फूल का नरियर होई । ता कै भेद बतावौ सोई ॥
 सिलिपिलि दीपसे नरियर आवा । ता के पाँच फूल बतलावा ॥
 वोही दीप जलखंडी राजा । ता से आना नरियर साजा ॥
 सो नरियर का भेद बतावै । तब तुलसी के मन में आवै ॥
 नरियर बास उड़ावत जानौ । ता की बिधि तन भीतर मानौ ॥
 जो जो मुख से संतन भाखा । सो काया के भीतर राखा ॥
 पिंड ब्रह्मंड दोऊ हैं एका । होइहै नरियर पिंड बिबेका ॥
 ता की बिधी भेद दरसावौ । सो बिधि हम को भाखि सुनावौ ॥
 पान प्रवाना भाखा लेखा । ता का मन में उठै बिसेखा ॥
 बेचै बरई पान बतावा । सो परवाना मन नहीं आवा ॥
 अंबू सागर देखौ जाई । नरियर पान की बिधी बताई ॥
 चौधा हाथ पान बतलावा । सो कबीर अपने मुख गावा ॥
 चौधा हाथ पान बतलावौ । सो परवाना भाखि सुनावौ ॥
 वो भी काया में कहूँ होई । संत कृपा से पावै सोई ॥
 अठ मेवा तुम भाखि सुनावा । छ्वारा दाख बदाम मँगावा ॥
 ये हमरे मन में नहीं आवै । कही कबीर सो भाखि सुनावै ॥
 कबीर बिधी अठ मेवा भाखी । पुरुष आठ मेवा कहौ साखी ॥
 और कपूर उन भाखि सुनावा । तुम दुकान बनिये से लावा ॥
 वो कपूर काया के माई । ता की बिधि कोइ संत बताई ॥
 गऊ घिर्त जो भाखि बतावा । सो तुम दही दूध मथि लावा ॥
 सो कबीर बिधि और बतावा । गो इंद्री का घिर्त कहावा ॥
 कदली पत्र कहा उन गाई । काया में सादृष्ट दिखाई ॥

कदली पत्र छेदन बनलावा । काटि पेड़ तुम खंभ गड़ावा ॥
 कदली छेदन कैन बखाना । तुम ता की बिधि नहिं पहिचाना ॥
 बासन पाँच कबीर बतावा । तुम ताँबा पीतर मँगवावा ॥
 पाँचौ बासन काया माई । करता ठठेरे आपु बनाई ॥
 सो बासन का कहौ बिचारा । तब जिव उतरै भौजल पारा ॥
 तुम जो बस्तर सेत सुनावा । धोया कपरा आनि मँगवावा ॥
 बस्तर सेत कबीर बखाना । सो बिधितुम ने नहिं पहिचाना
 संत सरन सेवा चित लड़हौ । कोई साध बिरले से पड़हौ ॥
 पुंगीफल उन भाखि सुपारी । ता का मरम न जानि बिचारी
 निकरै पवन सुपारी माहीं । सो फल पुंगी चौका गाई ॥
 पवन सुपारी संतन पासा । दीन होय पावै निज दासा ॥
 पाँच सब्द चौका उन भाखा । भिनि भिनि भेद बतावौ ता का
 एक सब्द काया के माई । और चारि का भेद बताई ॥
 चारि चारि बिधि कैन ठिकाना । न्यारा न्यारा कहौ मकाना ॥
 न्यारी न्यारी बिधि बतलइया । पाँचौ सब्द कबीर सुनइया ॥
 चौका कीन्ह सब्द धुनि गाजा । कहौ सब्द केहि ठाम बिराजा ॥
 और चार की बिधी बतावै । तब तुलसी के मन में आवै ॥
 सेत चदरवा दीन्ह तनाई । सो कबीर ने कहा बताई ॥
 कपड़ा तानि चदरवा कीन्हा । कही कबीर सो बिधि नहिं चीन्हा ॥
 आरति करन साज बतलाई । सूरत रित रति मरम न पाई ॥
 आवै सुरति सब्द रित माहीं । सो कबीर ने भाखि सुनाई ॥
 चौका कैन ठिकाने कीन्हा । ता की राह रीति नहिं चीन्हा ॥
 कही कबीर चौका सोइ साजा । जहेवाँ सब्द अखंडित गाजा ॥
 चौका माहि सब्द तुम गाई । स्वाँस थकै खंडित होइ जाई ॥
 आठ पहर चौँसठ घड़ि गाजा । या बिधि सब्द अखंडित साजा
 ता चौके का करौ बयाना । सो कबीर मुख आप बखाना ॥

कही कबीर सोई बिधि हेरै । पाँच सब्द के दल को फेरै ॥
 सो दल सब्द कौन केहि ठामा । या की बिधि भिनि भाखि बखाना ॥
 कौन ठिकान पाँच दल फेरा । पुरुष नाम केहि ठीके हेरा ॥
 नरियर मोड़त बास उड़ाई । सो नरियर मोड़ा केहि ठाई ॥
 नरियर बनिये हाट मँगावा । सो नरियर मनमैं नहिँ आवा ॥
 नरियर मोड़त बास उड़ानी । सो कहौ बातैं ठीक ठिकानी ॥
 नरियर मोड़त बास उड़ाई । तुरत पुरुष के दरसन पाई ॥
 सो ततवर कहौ पुरुष दिखाना । सो ठीके का करौ बयाना ॥
 नरियर ऐसे कबीर बतावै । मोड़त छिन पद पुरुष दिखावै ॥
 तुम तो नरियर मोड़े अनेका । उमर गई पुनि पुरुष न देखा ॥
 चौका करि परवाना लोन्हा । तन बीता पुनि पुरुष न चीन्हा ॥
 मिलन कबीर आज बतलावा । पूछै कोइ नहिँ भेद बतावा ॥
 कहा कबीर जीवत कर लेखा । तन बीता सुपने नहिँ देखा ॥
 परवाना सत लोक पठावै । जिवत मिलै न मुए कोइ पावै ॥
 कह कबीर छिन लोकै जाई । सो परवाना भेद न पाई ॥
 सत कबीर परवाना भाखी । सो तुम्हरी सूझा नहिँ आँखी ॥
 तिनुका तोरि के जल अचवाई । ये बिधि तुम ने भेद बताई ॥
 तिनुका तुरन कबीर न गावा । तिनुका कौन मरम बतलावा ॥
 सिष के हाथ पान पुनि दीन्हा । कौन पान भाखा उन चीन्हा ॥
 चौधा हाथ पान बतलावा । तुम बरई की हाट मँगावा ॥
 पावै पान सो लोक पयाना । ये कबीर ने करी बखाना ॥
 तुमहूँ पान लिये हैं हाथा । देखा कहौ लोक बिख्याता ॥
 जोइ जोइ कहौ देखि दुग अपना । हाल मिला कहौ कहौ न सुपना ॥
 जाना बिधि बिधि पाइन होई । पाये कहैं कबीर बिलोई ॥
 सब्दै अंग कबीर बुझाई । सिष्य बूझि के सुरति लगाई ॥
 पहुँचे सिष्य अगम के द्वारा । चौका सुरति कबीर पुकारा ॥

निरत कबीर द्वार दुग भाखा । सूरति सब्द मिलै सिख साखा
 सूरति सब्द मिलै चढ़ि चाँपा । घर लिपाय चौका तुम थापा
 नौतम चौका द्वार लिपाई । ये कबीर चौका नहिँ गाई ॥
 चौका नौतम भेद बतावौ । तब कबीर का गाना गावौ ॥
 जो कबीर बिधि भाखा चौका । सो मेदै जिव संसय सोका ॥
 देखो तुम अपने मन माहीं । संसय सोक अनेक सताई ॥
 चौका करै सोक नहिँ आवै । ये तौ सोक अनेक सतावै ॥
 चौका कहौ कौन है भाई । ता से संसय सोक नसाई ॥
 करि करि चौका लोक सुनावै । छिन छिन संसय सोक मिटावै
 ये चौका परतीत दृढ़ाया । सो तुलसी के मन नहिँ आया
 चौका करि पावै परवाना । एक पलक मैं लोक पयाना ॥
 लोक बिधी सिष आइ बखानै । सो चौका मोरे मन मानै ॥
 चौका पान अनेकन खाया । बपुरे कोई लोक नहिँ पाया ॥
 चौका करिकै साख बतावै । जीवत कोई लोक नहिँ पावै ॥
 चौका करिकै जन्म सिराना । अब मरने का भया ठिकाना ॥
 मूए पर मुक्ती नहिँ पावै । ये कहौ लोक कौन बिधि जावै
 जो कबीर ने चौका गाया । सो चलि आज लोक निज पाया
 जो कछु पंथ कबीर चलाया । पंथ भेद कोई मरम न पाया ॥
 पंथ कबीर जौन बिधि भाखी । सो ता की बिधि सूझि न आँखी
 पंथ कबीर कौन बिधि गावा । गये कबीर सोइ मारग पावा ॥
 पंथ नाम मारग कै होई । मारग मिलै पंथ है सोई ॥
 बिन मारग जो पंथ कहावा । सो उन नहिँ पंथ को पावा ॥
 पंथ कबीर सोई है भाई । गये कबीर जेहि मारग जाई ॥
 ये नहिँ पंथ कहावै भाई । चेला करि सिष राह चलाई ॥
 ये सब जाति पाँति कर लेखा । या से गुरु सिष तरत न देखा ॥
 अब कबीर की साख सुनाई । जो कबीर अपने मुख गाई ॥

पुरइनिसेत पान कियौ चौका। चीन्हौ पुरइनि छाँड़ौ धोका ॥
 पुरइनिसेत का खोज लगावौ। ढूँढ़ि ताहि पर चौका लावौ ॥
 तुम धरती पर चौका ठाना। पुरइनि सेत, कबीर बखाना ॥
 ये तौ बिधी मिली नहिँ भाई। कही और तुम और चलाई ॥
 ये तुम बनिया हाट लगावा। कहा कबीर सो मरम न पावा ॥
 जो कबीर ने बिधी बताई। सब्द राह मारग समझाई ॥
 सब्द चीन्ह कर बूझि बिचारा। केहि बिधि सब्द कहै निरबारा ॥
 जा को कहिये साधु सुजाना। सब्द चीन्ह सोइ बूझै ज्ञाना ॥
 सोई साध बिबेकी होई। कहा कबीर पद बूझै सोई ॥
 सब्द पंथ सब राह बतावै। भिन्न भिन्न बिधि बिधि दरसावै ॥
 कोऊ न बूझै सुरति लगाई। चौका पढ़ा औरहि गाई ॥
 सब कहि भिन्न भिन्न दरसाई। सो पंथिन को दृष्टि न आई ॥
 पंथ और मग औरै जाई। कही कबीर सो राह न पाई ॥
 अब कबीर-मुख साखि सुनाऊँ। फूलदास सुनि मन मैं लाऊ ॥
 चौका राह पंथ दरसाऊँ। कहि कबीर-मुख सब्द सुनाऊँ ॥
 तुलसी सब्द कबीर सुनाई। फूलदास सुनि सुरति लगाई ॥

॥ मंगल १ ॥

खोजो साध सुजान, सो मारग पीउ का ।
 परख सब्द गहौ सरन, मूल जहँ जीव का ॥१॥
 भौजल अगम अपार, लहर बिकरार है ।
 कठिन ये पाँचौ मगर, बीच जम जार है ॥२॥
 इंद्रादिक ब्रह्मादिक, पार न पावहीं ।
 गुरु बहियाँ कड़िहार, जो पार लगावहीं ॥३॥
 निरखि पकरि कड़िहार, तो घर पहुँचावहीं ।
 देत नाम की डोरि, तो दुख बिसरावहीं ॥४॥

बैठि के आनँद महल, परम गुन गावही ।
 सुखमन सेज जगाइ, तो पिया रिभावही ॥५॥
 बिन जल लहर अनूप, तो मोती फिलमिलै ।
 देखि छत्र उँजियार, तो हंसा हँस मिलै ॥६॥
 अग्र जोति उँजियार, तो पंथ सिधावही ।
 कोटिन भान निछावर, आरति साजही ॥७॥
 का लिखि दीन्हे पान, तो तिनुका तोरई ।
 का नरियर के मोरे, जो जम धरि बोरई ॥८॥
 सत लिखि दीन्हे पान, सो तिरगुन तोरई ।
 सुरति फूल बरमूल, सो नरियर मोरई ॥९॥
 नरियर भेद अगम्म, संत जन मोरई ।
 कहै कबीर तेहि जाचौ,* तो बंदी छोरई ॥१०॥

॥ मंगल २† ॥

तेरो संगी निकरि गयो दूर । सोहागिल आइ मिलौ ॥टेक॥
 आया सँदेसा आदि घरै का । लिये सब्द तकसार ॥१॥
 सतगुरु घाट अगम तोहि चढ़ना । चढ़न के पंथ सिधार ॥२॥
 नवएँ धाम खोलिये कुंजी । दसएँ गुरु परताप ॥३॥
 चौका चार गुप्त हम कीन्हा । ता का सकल पसार ॥४॥
 कह कबीर धर्मदास से । ये चौका है निरधार ॥५॥

॥ चौपाई ॥

ये कबीर चौका अस भाखा । मूल वृच्छ तजि पकरौ साखा ॥
 पंथ राह चौका अस जाना । सोइ कबीर-पंथी को माना ॥
 कही कबीर सो राह उठाई । अपनी मन मत राह चलाई ॥
 झूठा पंथ जगत सब लूटा । कहा कबीर सो मारग छूटा ॥
 कहा कबीर जीवत निरबारा । तुम लै उलटी फाँसी डारा ॥

* माँगो । † यह शब्द मुं० दे० प्र० की पुस्तक में नहीं है ।

॥ प्रश्न फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

सुनकर फूलदास सकुचाना । तुलसी बचन सत्त कर माना ॥
 तुम कबीर बिधि भाखी रीती । या में एक न कही अनीती ॥
 जो कबीर ने पंथ चलाई । सोही तुमने राह बताई ॥
 साहिब ने एक बानी भाखा । धरमदास कुल दीन्ही साखा ॥
 बंस बयालिस तुम्हरे होई । अटल राज भाखा पुनि सोई ॥
 ऐसी सब्द साखि सब गावैं । और ग्रंथ ये भेद बतावैं ॥
 अस कबीर अपने मुख भाखा । अटल बयालिस वंसी साखा ॥
 या की तुलसी कस कस भइया । कहौ बुझाई कैसी बिधि कहिया ॥
 कहि कबीर ने बंस बखाना । सो कहौ तुलसी केहि बिधि जाना ॥
 बंस बयालिस अटल बतावा । कस कस धरमदास सोइ गावा ॥
 या की बिधि बिधि भेद बतइये । सो तुलसी बरतंत सुनइये ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

बंस बयालिस भाखि सुनाऊँ । मुख कबीर बिधि मैं समझाऊँ ॥
 जो कबीर मुख भाखे बैना । ता की बिधि सुनाऊँ सैना ॥
 काया बीर कबीर कहाई । सब्द रूप है घट के माई ॥
 ता को नाम कबीर कहाई । सो कबीर है जग के माई ॥
 चौथे पद से सब्द जो आवै । सत कबीर सोइ नाम कहावै ॥
 निज निज पद से सब्द जो आवै । धरमदास तेहि नाम कहावै ॥
 काया बीर कबीर कहाई । धरमदास ये मन है भाई ॥
 एक सब्द और एक कबीरा । धरमदास मन भया अनीरा ॥
 धरमदास को पंथ बतावा । धरमदास मन सब्द समावा ॥
 ता की पंथ राह बतलाई । ये कबीर मुख अपने गाई ॥
 काया बीर कबीर कहावा । धरमदास मन को दरसावा ॥

बंस बयालिस मन के भाई । ता की बिधी कहूँ समझाई ॥
 चालिस बंस बास मन केरा । इकतालिस सुत सार बसेरा ॥
 बिधी बयालिस सब्द बखाना । ऐसे बयालिस अटल कहाना ॥
 ये कबीर मुख भाखि सुनाया । तुम कछु और और ठहराया ॥
 मन और सुरति सब्द मैं जावै । अस अस बयालिस अटल कहावै ॥
 मन और सुरति सब्द भया मेला । अस कबीर भाखा निज खेला ॥
 ग्रंथ माहिँ पुनि देखौ साखी । ये कबीर मुख अपने भाखी ॥
 अब आगे का कहूँ बखाना । फूलदास सुनियौ दै काना ॥
 भिनि भिनि भाखूँ भेद बुझाई । आदि अंत सुन गुन मन माई ॥
 अगम निगम भिनि भिनि कर भाखी । कह कबीर सुति समझौ वा की ॥
 औरौ और संत सब गाये । जोइ जोइ अगम पंथ पद पाये
 जिन की सुरति अगमपुर धाई । तिन तिन की पुनि साखि सुनाई ॥
 कही कबीर सोइ पिरथम भाखा । छूटै तिमिर होय अभिलाखा ॥
 सुन और महासुन्न के पारा । जहँ वो सार सब्द बिस्तारा ॥
 येहि अलोक कबीर लखावा । ता पीछे सतलोक बतावा ॥
 सुन और महासुन्न उन गावा । हम अनाम निःनाम सुनावा ॥
 सत्त पुरुष सतलोक कहाये । ता को हम सतनाम सुनाये ॥
 सोला सुत^१ कबीर बखाना । हम ने सोला निरगुन ठाना ॥
 सोला माहिँ निरंजन पूता । हम भाखा निरगुन मजबूता ॥
 सोई निरंजन मन भया भाई । जा ने जग रचना उपजाई ॥
 हम निरगुन से सरगुन भाखा । मन को सरगुन कहि कर राखा
 मन सरगुन सब जग उपजाई । कही कबीर तुलसी पुनि गाई ॥
 मनहिँ कबीर निरंजन गावा । ब्रह्मा बिष्णु सिव पुत्र बतावा ॥
 निरगुन से सरगुन मन भाखा । हम पुनि तीनि गुनन मैं राखा

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में “सुत” की जगह “सुनि” है लेकिन आगे की कड़ी से “सुत” ही शुद्ध जान पड़ता है ।

तीनों गुन मन से उपजाई । ब्रह्मा बिस्नु सिव गुन के नाई
 सरगुन मनहिं निरंजन कहिया । मनहिं निरंजन निरगुन भइया
 ये कबीर बिधि तुलसी कहिया । सोइ कबीर निज मुखहि सुनइया ॥
 संत मता बिधि एकहि जाना । नाम कही बिधि आनहि आना
 ता से तुम को बूझ न आवै । अनि अनि नाम धरे बिधि गावै
 सत साहिब सत नाम सुनावा । सार सो सब्द अनाम कहावा ॥
 निरगुन नाम निरंजन जाना । राम कहा सोइ मनहिं बखाना
 कहि कहि संतन भाखि सुनाई । सोइ कबीर अपने मुख गाई ॥
 और संत और बिधि समझाई । येहि कबीर और बिधि गाई ॥
 मत पहुँचे पहुँचे पर एका । जो अबूझ सो बाँधै टेका ॥
 जिन जिन अनुमौ भाखि सुनावा । अगम पंथ बिधि एकहि गावा ॥
 पुरइनि पात कबीर सुनाये । पुरइनि सोई संत सब आये ॥
 पुरइनि सेत कबीर सुनावा । सोइ सब सेत संत बतलावा ॥
 सूरति सब्द कबीरहि खेला । सार सब्द मत अगम अकेला ॥
 सूरति सत्त नाम कियौ सैला । सूरति सार सब्द करै मेला ॥
 निःअच्छर सोइ आदि अमेला । कहिये सार सब्द तेहि खेला ॥
 जो जो संतन कही अगारा । सो सो दास कबीर पुकारा ॥
 या मैं भर्म न कीजे भाई । संत द्रोह नीच ऊँच न गाई ॥
 संत को नीच ऊँच बतलावै । आद अरु अंत नर्क गति पावै ॥
 संत दैस गति अगम बखाना । फूलदास तुम राह न जाना ॥
 चौका पंथ ये हाट बजारा । चौका संत पंथ गति न्यारा ॥
 फूलदास सुनि सीतल भइया । तुलसी स्वामी अगम सुनइया ॥
 हम तो पंथ भेष मैं भूला । तुम कहा सार भेद पद मूला ॥
 फूलदास ऐसी बिधि बोला । तब हम अपनि दीन गति खोला
 तुलसि निकाम संतन कर चेरा । संत कृपा से अगम पद हेरा ॥
 संत चरन परसादी पाई । ता से सब कहै तुलसि गुसाई ॥

सब मिलि कै पुनि कहै गुसाँई । मैला मन मत बुद्धि न पाई ॥
 मैं किंकर संतन कर दासा । संत चरन बिन और न आसा ॥
 दास कबीर संत है स्वामी । उन सम फूलदास को जानी ॥
 तुम साधू है चतुर सुजाना । तुलसी जानौ दास समाना ॥
 मैं साधन कर दास बिचारा । संत चरन की लागौ लारा ॥
 दीन जानि किरपा करि हेरा । वे दयाल सब कीन्ह निबेरा ॥
 तुमहूँ साध दया के स्वामी । फूलदास तुम चरन नमामी ॥
 भूल न मोरी अचरज मानौ । मैं तुम्हरे चरनन लपटानौ ॥

॥ फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास कहै स्वामी सूक्ता । है कबीर तुलसी नहिँ दूजा ॥
 मैं महंत मन मान निकामा । मैं मति नीच न तुम को जाना ॥
 हाथ चरन पर तुरत चलावा । दीन होय सिर चरन गिरावा ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी धाड़ पाँड़ को लीन्हा । चरन सीस तेहि आपन दीन्हा ॥
 तुलसी कहै ऐसी नहिँ कीजै । कृपा चरन अपना मोहिँ दीजै ॥
 फूलदास बिधि कैसी भाखी । दीन साधना क्या कहूँ जा की ॥

॥ प्रश्न फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास कहै अंध अचेता । तुलसी स्वामी दीन्ही चेता ॥
 मोरा मन मैला अति नीचा । ये महंत मत मन सम कीचा ॥
 मोरी मति पर दृष्टि न दीजै । फूलदास अपना करि लीजै ॥
 तुम्हरे चरन माहिँ निरबारा । बिना चरन नहिँ होइ उबारा ॥
 जो कबीर सो तुम हो स्वामी । दया करहु मोहिँ अंतरजामी ॥

मैं अपनी गति कस कस गाऊँ। सुरति न छाँड़ै तुम्हरा पाऊँ ॥
 एक बात मेरे मन आई। भाखै स्वामी तुलसी गुसाँई ॥
 है सरीर में बीर कबीरा। सात दीप नौ खंड अमीरा ॥
 ऐसी साखि कबीर पुकारा। बूझै यह बिधि कै न बिचारा ॥
 या कै भेद भर्म मोहि आवा। भाखै स्वामी भर्म नसावा ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास सुनिये दै काना। या का भाखूँ सकल बिधाना ॥
 धरमदास मनहीं को जानौ। काया बीर कबीर बखानौ ॥
 बिधि कबीर संबाद बखाना। धरमदास मन तुलसी जाना ॥
 काया बीर मन कहि संबादू। ये कबीर मुख भाखी आदू ॥
 सातौ दीप कबीर समाना। सो कबीर मन माहिँ भुलाना ॥
 मन भूला इंद्रो सँग साथी। काया बीर दैह मैं राता ॥
 सात दीप नौ खंड समाई। रहत कबीर भर्म उपजाई ॥
 तन सँग कर्म माहिँ किया बासा। उपजै बिनसै पुनि पुनि नासा ॥
 तन सँग पाइ हिये रहै सोगा। उपजै बिनसै दुख सुख भोगा ॥
 मन से इंद्रो बास उड़ाई। सो मन धर्मदास है भाई ॥
 काया बीर जो धर्म न जानै। होइ कबीर आदि पहिचानै ॥
 सुरति सैल जो चढ़ै अकासा। फोड़ि अकास अमर पद बासा ॥
 सत्त गहै सतगुरु पद पासा। सत्त लोक सत पुरुष निवासा ॥
 ता के परे अगमपुर धामा। देखै लोक अलोक अनामा ॥
 सत कबीर होइ वहाँ को जाई। और कबीर भौ भटका खाई ॥
 सत कबीर जाहि कर नामा। चढ़ै सुरति सतलोक समाना ॥
 सतगुरु सत्त पुरुष है स्वामी। सो गुरु करै चेला परमानी ॥
 सतगुरु सत्त पुरुष है सैला। वो कबीर सतगुरु का चेला ॥
 वो कबीर जेहि राह बतावै। सुरतिसैल सोइ अगम लखावै ॥

वो कबीर भौ पार लगावै । और कबीर भौ भटका खावै ॥
 और गुरु चेला झूठ पसारा । दोनोँ बूढ़े भौजल धारा ॥
 सतगुरु सत्तपुरुष की बाटा । चेला चढ़ै सुरति से घाटा ॥
 सोइ चेला है पद परवाना । और सगरा जग निगुरा जाना ॥
 कनफूका से काज न होई । दोनोँ जाहिँ नर्क में सोई ॥
 सत्त सोई गुरु गगन प्रकासा । जा से मिटै काल की त्रासा ॥
 गगन चढ़ै सोइ सतगुरु पाई । नहिँ तो चेला निगुरा भाई ॥
 गगन चढ़ै गुरु परसै आई । चेला से पुनि गुरु कहाई ॥
 सत्त कबीर ताहि कर नाई । काया कबीर को राह बताई ॥
 कनफूका गुरु जग ब्यौहारा । उन से न उतरै भौजल पारा ॥
 सतगुरु सत्त कबीरहि पावै । चौका की बिधि बिधी बतावै ॥
 सुरति सब्द की डोर लखावै । चौके से चौथा पद पावै ॥
 सब्द सार जो उठै अखंडा । सुरति राह से चढ़ि गई डंडा ॥
 होवै सत्त पुरुष पद मेला । सो कबीर सतगुरु का चेला ॥
 सो कबीर चौका बिधि जानै । चौथे पद की राह बखानै ॥
 चौका बिधि भिनि भिनि बतलावै । पंथ राह सतगुरु दरसावै ॥
 सूरत चढ़ै पंथ जब पावै । चौका पंथ राह सोइ आवै ॥
 ये चौका कबीर बतावा । चौका राह रीति समझावा ॥

॥ प्रश्न फूलदास ॥

॥ दोहा ॥

फूलदास बिनती करै, तुलसी स्वामी साथ ।
 चौका बिधि बतलायऊ, कस कस बिधि बिख्यात ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ दोहा ॥

फूलदास बिधि बिधि सुनौ, चौका बिधि सब सार ।
 जो कबीर मुख भाखिया, सो बिधि हम निरबार ॥

॥ चौपाई ॥

चौका बिधि काया मैं गाई । जो कबीर ने कही लखाई ॥
 सिलिपिलिदीप जलखंडी राजा । ये सब बिधि काया मैं साजा ॥
 पाँच फूल नरियर के गावा । सो सब काया माहिँ लखावा ॥
 सतगुरु मिलै तो भेद लखावै । नरियर मोड़त बास उड़ावै ॥
 बहुतक नरियर मोड़ेव भाई । पत्थर पर फोड़ेव तुम जाई ॥
 नरियर मोड़त बास उड़ाई । तुम ने गंध बास ठहराई ॥
 यां से भेद मिलै नहिँ भाई । ठूँठौ बनिये हाट बिकाई ॥
 अब वो पान का भाखौँ लेखा । पान परे पर आवै न पेखा ॥
 तुम बरई का पान मँगावा । बीरा करि करि ताहि खवावा ॥
 बीरा पान कबीर लखावा । सोई पान घट माहिँ बतावा ॥
 सतगुरु मिलै पान पर आना । बिन सतगुरु कोइ राहन जाना ॥
 मेवा आठ बखाने जोई । वह अठमेवा पुरुष होई ॥
 सत कबीर ऐसी बिधि भाखा । मेवा फल लीन्हे सिष साखा ॥
 काया पूर जोति है ताई । तुम कपूर बनिये से लाई ॥
 इंद्री पाँच बासना नासा । पाँचौँ बासन तन मैं बासा ॥
 तुम लीन्हा ताँबा और काँसा । या से भूले अगम तमासा ॥
 पुंगीफल सूपारी गाई । स्वाँसा पवन चलै तेहि माई ॥
 सो पारी पारी पद जाई । तुम बनिये की हाट मँगाई ॥
 सेतै बस्तर बास बतावा । तुम बजार से कपरा लावा ॥
 उन चंदा दर तानि बतावा । तुम घर कपरा बाँधि तनावा ॥
 उन तन्दुल सेर सवा बतावा । तुम चौके चाँवल मँगवावा ॥
 कदली पत्र छेदन उन कहिया । तुम केले के खंभ गड़इया ॥
 सेत मिठाई उन बतलाई । तुम गुड़ मीठा खाँड़ मँगाई ॥
 नौ के तम चौका चिन्हवावा । तुम सगरा घर जाइ लिपावा ॥
 आवै रित उन साज बतावा । तुम दीपक की आरति लावा ॥

पाँचौ सब्द अखंडित कहिया । तुम खँजरी पर सब्द सुनइया ॥
 पाँच सब्द का कहौं बिधाना । न्यारा न्यारा ठाम ठिकाना ॥
 सत्त सब्द पहिले परवाना । सो कोइ साधू बिरले जाना ॥
 सत्त सब्द सतलोक निवासा । जहँवाँ सत्तपुरुष कर बासा ॥
 दूजा सब्द सुन्न के माई । तीजा अच्छर सब्द कहाई ॥
 चौथा ओंकार बिधि गाई । पंचम सब्द निरंजन राई ॥
 चढ़ि ब्रह्मंड फोड़ असमाना । सुरति सब्द में लगै निसाना ॥
 ताहि पार सतलोक बिराजा । अखंड सब्द ता ऊपर गाजा ॥
 मिलै संत कोइ भेद बतावै । तब वोहि पंथ संत से पावै ॥
 दीन होइ गरुवाई डारै । संत कृपा से उतरै पारै ॥
 पंथी भेष टेक नहिं राखै । सुरति चीन्हि कै द्वारा ताकै ॥
 चौका काया कबीर बतावा । बोली चीन्ह भेद जिन पावा ॥
 जो समान चौका कर साजा । सो समान तन माहिं बिराजा ॥
 जो जो बस्तु चौका में गाई । भिनिभिनि घट भीतर दरसाई
 अंतर घट जो चौका कीन्हा । मरम सत्तलोक सोइ चीन्हा ॥

॥ छंद ॥

चौका बिधि गाई भाखि सुनाई, जो कबीर मुख आप कही ।
 तुलसी सब भाखी देखा आँखी, जब कबीर की साखि दर्ई ॥१॥
 घट भीतर जाना भेद बखाना, फोड़ि निसाना पार गई ।
 अंतर गति गाई भेद सुनाई, तन भीतर बिधि बात कही ॥२॥
 देखा सतलोका अगम अलोका, चौका चौथे पार गई ।
 येहि बिधि हम भाखा नैनन ताका, सेत पुरइन तन तार लई ॥३॥
 तोरा तन ताला खोलि किवारा, अगम निगम का भेद कही ।
 तुलसी कहै साँची यह बिधि बाँची, सब्द सुरति गुरु गैल गई ॥४॥

॥ मंगल ॥

सतगुरु मारग चीन्ह दीन दिल लाइ कै ।
 बूझै अगम की राह पाइ पद जाइ कै ॥१॥

द्रुग पर चौका पान जानि जब पाइये ।
 नरियर सीस सँवारि सार समझाइये ॥२॥
 तत मत गुन हैं तीनि सो तिनका तोरिया ।
 सुरत निरत निज नैन नारियर मोरिया ॥३॥
 सुरति चढ़ै असमान पोढ़ि^१ सुत डोरि है ।
 दीन्हा दीनदयाल काल सिर फोड़िहै ॥४॥
 इंद्री बासन पाँच बासना जाइया ।
 अठमेवा है पुरुष बाट तब पाइया ॥५॥
 काया मढ़े पूर कपूर जनाइया ।
 पाँच तत्त तन अगिनि जोति दरसाइया ॥६॥
 होत जोति उँजियार पार सुत से लखौ ।
 सार सब्द सत द्वार लार सुत से पकौ ॥७॥
 मन बैठक है बास स्वाँस सुन से भई ।
 पान सुपारी सेत सोई चौका कही ॥८॥
 गगन चढ़ै असमान चदरवा तानिया ।
 सेत माहिँ है स्याम पान सोइ आनिया ॥९॥
 नौतम द्वार लिपाइ सोई नौ द्वार है ।
 अष्ट कँवल दल फूल मूल सोइ सार है ॥१०॥
 येहि बिधि चौका चार सार सोइ भाखिया ।
 और चौका जग रोति चित्त नहिँ राखिया ॥११॥
 येहि बिधि चौका चाह थाह जब पाइया ।
 अगम चढ़े सोइ संत पंथ दरसाइया ॥१२॥
 धरमदास धरि ध्यान सुरति समझाइया ।
 सुरति फोड़ असमान सब्द जब पाइया ॥१३॥

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ में "फोड़ि" अशुद्ध है ।

अटल बयालिस बंस राज अस गाइया ।
 या को भाखूँ भेद भाव दरसाइया ॥१४॥
 चालिस सेर मन फेर इकतालिस सुत भई ।
 बिधी बयालिस सब्द अटल ऐसे कही ॥१५॥
 जो कोइ मिलिहै संत भेद अस भाखिया ।
 मन चढ़ि सुरति सँवारि सब्द मैं राखिया ॥१६॥
 सुरति सब्द मन मेल सैल समझाइया ।
 अटल बयालिस बंस राज अस गाइया ॥१७॥
 तुलसी भाखा भेद भाव दरसाइया ।
 चौका कीन्ह कबीर हंस मुकताइया ॥१८॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी कहै पुकार, फूलदास चौका बिधी ।
 ये गति तनहिँ बिचार, जो कबीर चौका कहा ॥१॥
 चौका चार चिताव, सुरति सब्द तुलसी कहै ।
 दीन लीन मन भाव, भेद संत दरसावही ॥२॥

॥ चौपाई ॥

अस चौका कबीर पुकारा । पुरइनि पात पर साज सँवारा ॥
 जो जल पुरइनि बूझन लावौ । तन मैं पुरइनि खोज लगावौ ॥
 ता पर बैठि करौ चित चौका । सुरति चढ़ै मिटै मन धोका ॥
 जब कोइ संत सुरति लखवावै । पुरइनि सेत सत चौका पावै ॥
 पुरइनि पात नभ गगन अकासा । पावै सोइ सतगुरु का दासा ॥
 ता कर भेद लखावै संतो । पावै सोइ कबीरा पंथो ॥
 पान फोड़ि कै सुरति चढ़ावै । सहस कँवल दल अंदर पावै ॥
 दोइ दल कँवल द्वार मैं ताकै । सुन की धुन्न सुरति से राखै ॥
 धरती ऊपर तरे अकासा । ता के चारि कँवल मधि बासा ॥
 वा के बीच नाल नल जानी । धधकै जोर गगन से पानी ॥

तानाली चढ़ि सुरति सँवारा। निरखै पिंड ब्रह्मंड पसारा ॥
 ता के परे अगमगढ़ घाटी। हिये दृग नैन निरखिये बाटी ॥
 जोड़ा कँवल दोइ दल चारी। तिरबेनी सोइ संत पुकारी ॥
 सुरति अन्हाइ सुन्न के पारा। ता के परे अगम का द्वारा ॥
 पुनि सुन महा सुन्न के पारा। सत्त लोक सत पुरुष अपारा ॥
 सूरति सतगुरु मिलै ठिकाना। तुलसी चौका भाखि बखाना ॥
 सूरति सिष्य सबद गुरु पावै। चौथा पद सतगुरु गति गावै ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी समझ बिचार, फूलदास चौका बिधी ।

ये गति मति है सार, जो कबीर चौका कहा ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास चौका बिधि जाना । ये कबीर तन माहिँ बखाना ॥
 चौका तन के माहिँ सँवारा । ये कबीर बिधि माहिँ पुकारा ॥

॥ फूलदास उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी राह पंथ बिधि गाई । सो सब समझ परा मन माई ॥
 बिन सतसंगति राह न पावै । सत्त सत्त तुलसी गोहरावै ॥
 मन महंत कछु कान न आवै । अंत बाद नरकै लै जावै ॥
 ये सब भूल भाव हम चीन्हा । चौका पहा जगत अधीना ॥
 चौका से कछु काज न होई । वे चौका औरै बिधि जोई ॥
 तुलसी स्वामी चौका भाखी । बिधि बिधान बिधी कहि जा की
 काया माहिँ रीति बतलाई । सोइ चौका सत सत्त चिन्हवाई ॥
 ये सब और पखंड पसारा । भौजल खलक खानि की धारा ॥
 जो कबीर चौका बिधि गाई । सो स्वामी तुम समझ सुनाई ॥
 चौका काया माहिँ पुकारा । जस कबीर कहि तुलसी सारा ॥
 खूब खूब मन मैं ठहरानी । तुलसी बचन सत्तकर मानी ॥
 तुलसी कबीर भेद नहिँ दूजा । हमरी बुधि नैनन अस सूझा ॥

जग अजान कछु मरम न जाना । डिंभि पखंडि भेष भरमाना ॥
 ये जग रीति जीति नहिँ पावै । भेष पंथ सब पोल चलावै ॥
 माला कंठी सेली माहीं । भूले पंथ भेष यहि राही ॥
 जो कोइ मंत्र जंत्र को जानै । उन को बड़े संत करि मानै ॥
 जो रथ गाड़ी बैल चलावै । जग सोइ बड़े साध ठहरावै ॥
 गाय भैंस और खेती होई । चेला गाँव महंती सोई ॥
 माया मोह बँधा संसारा । जिन को साधू कहै लबारा ॥
 जग अंधा अंधा भया भेषा । ये दोउ पंथ इष्ट की टेका ॥
 जग में इष्ट टेक लौ लावै । भेष टेक पंथी गोहरावै ॥
 जग अंधा पुनि भेष भुलानो । ये सब काल राह रस जानो ॥
 जहँ लग अंत पंथ जग माई । भूले फिरँ राह नहिँ पाई ॥
 चेला करै द्रव्य के काजा । भोजन खान पान कर साजा ॥
 येहि आसा बस फिरँ अयाना । बंधन जीव काल नहिँ जाना ॥
 जिन से मुक्ति जगत सब माँगै । आपा संग रह भोग न त्यागै ॥
 जस जस रीति जगत की होई । तस तस साधू समझि बिलोई ॥
 अस अस साध जगत में लेखा । जो कथि कही सो नैनन देखा ॥
 संत रीति रस जगत न जाना । डिंभ करै तेहि संत बखाना ॥
 संत दयाल दरस नहिँ चीन्हा । उन बिन फिरै कर्म लौलीना ॥
 वे दयाल के दरसन पावै । मुक्ति राह और अगम लखावै ॥
 जिनके बड़े भाग जग माई । नित प्रति संत चरन लौ लाई ॥
 काल जाल और जम की फाँसी । दरसन संत कर्म भये नासी ॥
 वे साधू बिरले जग माई । जग जल में जस कँवल रहाई ॥
 वे सज्जन सत साध कहावै । उन की गति मति बिरले पावै ॥
 संत भेद भिनि कोउ कोउ जाना । भेष डिंभ सब भर्म भुलाना ॥
 ये सब जग में कीन्ह दुकाना । या में जगत भेष लपटाना ॥
 जीव लोक की राह नियारी । कृपा संत बिन पावै न पारी ॥

हम तो जनम बादि सब खेवा । समझि परी तब सिर धुनि रोवा ॥
 बार बार नर दैह न पावै । ये तन दुरलभ सब गोहरावै ॥
 जोगी ऋषी मुनी अरु देवा । तप जप जोग ज्ञान बहु सेवा ॥
 पुनि निज नर दैही नहिँ पाया । हम अबूझ तन बादि गँवाया ॥
 अब ये समझि परा सब लेखा । भेष पंथ मैं कछू न देखा ॥
 भेष पंथ मद राह अबूझा । सब अबूझ बस काहु न सूझा ॥
 मान बढ़ाई दोजख काजा । जिभ्या इंद्री सब सुख साजा ॥
 ये कबीर ने कहा पसारा । उन सब कीन्ह जीव निरबारा ॥
 ना कोई बूझी समझ बिचारा । इन सब कीन्ह दुकान बजारा ॥
 ये दुकान से लोक जो जावै । तौ सब जगत रहन नहिँ पावै ॥
 साँच झूठ सब परा निबेरा । चित्त चीन्ह नैनन से हेरा ॥
 तुलसी बिधि बिधि सत्त बखानी । मन मैं ठीक ठीक पहिचानी ॥
 तुलसी स्वामी संत सुजाना । अस अस बूझ सुनाई काना ॥
 तन और प्रान छूटि सब जाता । ये पुनि भेद हाथ नहिँ आता ॥
 साखी सब्द अनेकन देखा । ग्रंथ कबीर अनेक बिबेका ॥
 सो सब देखि देखि पचि हारी । बस्तु न पाई रहे अनारी ॥
 सार भेद संतन ने जाना । सो ग्रंथन मैं नाहिँ बखाना ॥
 साखी सब्द पढ़ै जो कोई । बस्तु न पड़ै सिर धुनि रोई ॥
 कह्यो कबीर सार पद गुप्ता । परगट माहिँ लखे सब थोथा ॥
 ये तो संत गुप्त मत भाखी । ता की नकल ग्रंथ मैं राखी ॥
 ठूँढ़ै अब या मैं अज्ञाना । पचि पचि मूरख भये हैराना ॥
 ये सब ग्रंथ देखि हम भूला । साखी सब्द माहिँ बहु भूला ॥
 आँखी फार फार हम जोवा । जनम अकारथ बादहिँ खेवा ॥
 सब्द साखी जो पढ़ि पढ़ि चलि है । संत दृष्टि बिन कछू न मिलि है ॥
 जो कबीर मुख कहि कर भाखी । संत दृष्टि बिन परैन आँखी ॥
 ता से संत चरन सिर दीजै । कारज और बात मैं छोड़ै ॥

जो कबीर ग्रंथन मैं कहिया । सो तो भेद संत पै रहिया ॥
हम जूझे ग्रंथन के माई । केहि बिधि हमरे हाथे आई ॥
संत सुरति चढ़ि गये जो पारा । पावै तिन से भेद नियारा ॥
जगत भेष नहिं भेद बिचारै । ये कहा समझै सार असारै ॥
दीन होइ सतसंगति तौला । जा से सूझै वस्तु अमोला ॥
तौलै दीन होइ निज दासा । सो खुति सार मिलै उन पासा ॥
हम तो सरन संत कर लीन्हा । और बात नहिं आइ यकीना ॥
जो कोइ लाख लाख समझावै । हमरे मन में एक न आवै ॥
कहो कोखोज सार कर दीन्हा । हम तो स्वामी तुलसी चीन्हा ॥
संत कही और दास कबीरा । जो जो अगम पंथ पद धीरा ॥
जिन जिन स्वाद पाइ पद हेरा । होइ हैं उन चरनन कै चरा ॥
चरन लाग तुलसी के तीरा । उनहिं लखाया अद्बुद हीरा ॥
अब कहूँ चित्त लगै नहिं भाई । तुलसी वस्तु अमोल लखाई ॥
बार बार चरनन सिर नाई । करिहैं तुलसी मोर सहाई ॥
अब तौ पोढ़ पोढ़ कर पकड़ा । तुलसी चरनन मैं मन जकड़ा ॥
और कहूँ मोहिं बोध न आवै । जो कोइ कोटि कोटि समझावै ॥
समझि परा सब बात बिधाना । तुलसी बिन सूझै नहिं आना ॥

॥ दोहा ॥

फूलदास बिनती करै, पुनि पुनि सरन तुम्हार ।
मैं अचेत चेतन कियौ, तुलसि उतास्यो पार ॥

॥ वचन तुलसी साहिब ॥

॥ दोहा ॥

फूलदास सज्जन बड़े, तुम चित मति बुधि सार ।
संत चरन अब मन बस्यौ, पैहौ सतसंग सार ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास तुम साध सुजाना । तुम्हरी बुधि निरमल परमाना ॥
दिन दोपहर भयौ मध्याना । अब परसादी करौ समाना ॥

आटा चून चना कर होई । करौ प्रसाद भाजी सँग सोई ॥
 घीव न पास न पैसा होई । नोन मिरच चटनी सँग सोई ॥
 किरपा कर परसाद बनाई । पुनि वा को सब भोग लगाई ॥

॥ फूलदास उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

हम नहिँ अपने हाथ बनैहैं । सीत उचिष्ट चरनामृत पैहैं ॥
 तुलसी उठि परसाद बनावा । भया प्रसाद साध सब आवा ॥
 सब साधू मिलि भोग लगाई । भोजन करि आसन पर आई ॥
 फूलदास बंदगी सिर नाई । सीस टेक कर परसे पाँई ॥
 हाथ जोड़ कर बिनती लाई । स्वामी मोहिँ भव पार लगाई ॥
 हमहूँ दीन दंडवत कीन्हा । सीस नवाइ चरन पुनि लीन्हा ॥



संतबानी पुस्तकमाला

कबीर साहिब का साखी-संग्रह	॥१॥
कबीर साहिब की शब्दावली और जीवन-चरित्र, भाग १ तीसरा एडिशन	॥२॥
" " " भाग २	॥३॥
" " " भाग ३	॥४॥
" " " भाग ४	=)
" " ज्ञान-गुदड़ी, रेखते और भूलने	॥५॥
" " अखरावती	॥६॥
धनी धरमदास जी की शब्दावली और जीवन-चरित्र	॥७॥
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की शब्दावली मय जीवन-चरित्र भाग १	॥८॥
"				॥९॥
"				॥१०॥
"				॥११॥
"				॥१२॥
गुरु न				॥१३॥
"				॥१४॥
दादू द				॥१५॥
"				॥१६॥
सुंदर				॥१७॥
पलटू				॥१८॥
"				॥१९॥
"				॥२०॥
"				॥२१॥
"				॥२२॥
"				॥२३॥
"				॥२४॥
"				॥२५॥
"				॥२६॥
"				॥२७॥
"				॥२८॥
"				॥२९॥
"				॥३०॥
"				॥३१॥
"				॥३२॥
"				॥३३॥
"				॥३४॥
"				॥३५॥
"				॥३६॥
"				॥३७॥
"				॥३८॥
"				॥३९॥
"				॥४०॥
"				॥४१॥
"				॥४२॥
"				॥४३॥
"				॥४४॥
"				॥४५॥
"				॥४६॥
"				॥४७॥
"				॥४८॥
"				॥४९॥
"				॥५०॥
"				॥५१॥
"				॥५२॥
"				॥५३॥
"				॥५४॥
"				॥५५॥
"				॥५६॥
"				॥५७॥
"				॥५८॥
"				॥५९॥
"				॥६०॥
"				॥६१॥
"				॥६२॥
"				॥६३॥
"				॥६४॥
"				॥६५॥
"				॥६६॥
"				॥६७॥
"				॥६८॥
"				॥६९॥
"				॥७०॥
"				॥७१॥
"				॥७२॥
"				॥७३॥
"				॥७४॥
"				॥७५॥
"				॥७६॥
"				॥७७॥
"				॥७८॥
"				॥७९॥
"				॥८०॥
"				॥८१॥
"				॥८२॥
"				॥८३॥
"				॥८४॥
"				॥८५॥
"				॥८६॥
"				॥८७॥
"				॥८८॥
"				॥८९॥
"				॥९०॥
"				॥९१॥
"				॥९२॥
"				॥९३॥
"				॥९४॥
"				॥९५॥
"				॥९६॥
"				॥९७॥
"				॥९८॥
"				॥९९॥
"				॥१००॥

दरिया साहिब (बिहार वाले) का दरियासागर और जीवन-चरित्र ...	१-
” ” के चुने हुए पद और साखी ...	२)॥
दरिया साहिब (मारवाड़ वाले) की बानी और जीवन-चरित्र ...	१)॥
भीखा साहिब की शब्दावली और जीवन-चरित्र ...	२)॥
गुलाल साहिब (भीखा साहिब के गुरु) की बानी और जीवन-चरित्र ...	१-१)॥
बाबा मलूकदास जी की बानी और जीवन-चरित्र ...	२)॥
गुसाईँ तुलसीदासजी की बारहमासी ...	१)॥
यारी साहिब की रत्नावली और जीवन-चरित्र ...	१)॥
बुल्ला साहिब का शब्दसार और जीवन-चरित्र ...	२)॥
केशवदास जी की अमीर्धूँट और जीवन-चरित्र ...	१)॥
धरनीदास जी की बानी और जीवन-चरित्र ...	१)॥
मीरा बाई की शब्दावली और जीवन-चरित्र (दूसरा एडिशन) ...	१-१)॥
सहजो बाई का सहज-प्रकाश जीवन-चरित्र सहित (तीसरा एडिशन विशेष शब्दों के साथ) ...	१-१)॥
दया बाई की बानी और जीवन-चरित्र ...	२)॥
संतबानी संग्रह, भाग १ [साखी] प्रत्येक महात्मा के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित ...	१)
भाग २ [शब्द] ऐसे महात्माओं के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित जिन की साखी भाग १ में नहीं दी है	१)

दूसरी पुस्तकें

लोक परलोक हितकारी [जिसमें ७७ स्वदेशी और विदेशी संतों और महात्माओं और विद्वानों और ग्रंथों के २३७ चुने हुए बचन पहले भाग में और १७५ दूसरे भाग में छापे गये हैं]	॥२) बेजिल्द
अहिल्याबाई का जीवन-चरित्र अंग्रेजी पद्य में ...	१-) जिल्ददार

दाम में डाक महसूल व वाल्यू-पेअवल कमिशन शामिल नहीं है वह इसके ऊपर लिया जायगा।

मनेजर, बेलवेडियर प्रेस,

इलाहाबाद।

घट रामायन

[भाग २]

सतगुरु तुलसी साहिब (हाथरस वाले)
की रची हुई

यह ग्रंथ दो प्रमानिक लिपियों का मिलान करके
बड़ी शुद्धता से दो भागों में पूरा छपा
गया है, मय उन महात्मा के

जीवन-चरित्र

के

THE UNIVERSITY LIBRARY
RECEIVED ON

15 MAY 1924

All rights reserved

ALLAHABAD.

[कोई साहित्य बिना इजाज़त के इस पुस्तक को नहीं छाप सकते]

इलाहाबाद

बेलवेडियर स्टीम प्रिंटिंग वर्क्स में प्रकाशित हुई

सन् १८९७ ई०

दूसरा एडिशन]

[दाम प्रति भाग २]

॥ संतबानी ॥

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जक्त-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी और उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और जो छपी थीं सो प्रायः ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप में या छेपक और वृष्टि से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ हस्तलिखित दुर्लभ ग्रंथ या फुटकल शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नकल कराके मँगवाये। भर सक तो पूरे ग्रंथ छापे गये हैं और फुटकल शब्दों की हालत में सर्व-साधारण के उपकारक पद चुन लिये हैं, प्रायः कोई पुस्तक बिना दो लिपियों का मुकाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी गई है और कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत फुट-नोट में दे दिये हैं। जिन महात्मा की बानी है उन का जीवन-चरित्र भी साथ ही छपा गया है और जिन भक्तों और महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उन के वृत्तांत और कौतुक संक्षेप से फुटनोट में लिख दिये गये हैं।

दो अंतिम पुस्तकें इस पुस्तक-माला की अर्थात् संतबानी संग्रह भाग १ [साखी] और भाग २ [शब्द] छप चुकीं जिन का नमूना देख कर महामहा-पाध्याय श्री पंडित सुधाकर द्विवेदी वैकुण्ठ-वासी ने गद्गद होकर कहा था—“न भूतो न भविष्यति”।

एक अनूठी और अद्वितीय पुस्तक महात्माओं और बुद्धिमानों के वचनों की “लोक परलोक हितकारी” नाम की गद्य में सन् १९१६ में छपी है जिसके विषय में श्रीमान महाराज काशी नरेश ने लिखा है—“वह उपकारी शिक्षाओं का अचरजी संग्रह है जो सोने के तेल सस्ता है”।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष उन की दृष्टि में आवें उन्हें हम को कृपा करके लिख भेजें जिस से वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें।

यद्यपि ऊपर लिखे हुए कारणों से इन पुस्तकों के छापने में बहुत खर्च होता है तो भी सर्व-साधारण के उपकार हेतु दाम आध आना फी आठ पृष्ठ (रायल) से अधिक नहीं रक्खा गया है।

प्रोप्रेटर, बेलवेडियर छापाखाना,

मार्च सन् १९१७ ई०

इलाहाबाद

तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की

घट रामायन

भाग २

रेवतीदास चरित्र

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास सँग रहि इक साधा । मनमुख और मान मद माता ॥
रेवतीदास ताहि कर नामा । फूलदास देखि घबराना ॥
पुनि बोला मन मैं रिसियाना । स्वामी अब चलिये अस्थाना ॥
फूलदास कहै आज न आवौं । तुम सब मिलि अस्थानै जावौ ॥
हमहूँ भोर बिहानै अइहूँ । राति यहाँ चरनन मैं रहिहूँ ॥
तिन पुनि तरक कीन्ह इक बाता । तुमहूँ रहिहौ इनके साथी ॥
हमको सूक्ति परा अस लेखा । तुम्हरी मति बुधि अचरज देखा ॥

॥ फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

गुसा खाइ बोले अस बोली । लै उतार दीन्ही सोइ सेली ॥
फूलदास दीन्ही तेहि हाथा । रेवती सीस नवायौ माथा ॥
गल बिच डारि महंती दीन्हा । सुखपालै बकसीसी कीन्हा ॥
तुम तौ करौ महंती जाई । अब हम नहिँ अस्थानै आई ॥
चेला चला बैठि सुखपाला । फूलदास भया और हवाला ॥
चेला मारग मता बिचारा । मनमें सोच किया अधिकारा ॥
छाँड़ि महंती हम को दीन्हा । या से अधिक बात कछु चीन्हा ॥
सब सुख भोग मनै नहिँ लाये । ये तौ अधिक बात कछु पाये ॥

जो महंत पद होता भारी । तौ छाँड़त ये देत न डारी ॥
 ये सब बात तुच्छ सम होई । तब हमरे सिर डारी सोई ॥
 ये बिचार मन माहिँ समाना । मति भई सुदृ उठा अस ज्ञाना ॥
 फिरि पीछे मारग से आये । सुखपालै अस्थान पठाये ॥
 सब मिलि कै जावौ अस्थाना । हम महंत संग उपज्यो ज्ञाना ॥
 मंगलदास रहे गुरु भाई । टोपी सेली तेहि पहिराई ॥
 आये पुनि महंत के पासा । जहँ तुलसी की कुटी निवासा ॥
 चौरदार सुखपाली गइया । चौरा पर उन खबर जनइया ॥
 मंगल चेला सुनि पछिताना । चौरा सून भया अस्थाना ॥
 पुनि बिचार कीन्हा मन माई । यह अस्थान महंती जाई ॥
 ये दोनों मिलि कीन्ह बिचारा । हम छाँड़ै तौ होय बिगारा ॥
 जो कछु होइ होइ सो होई । अब निबाह बिन बनै न सोई ॥
 मंगल मन में बहुत रिसाना । सेली पहिरि बैठि अस्थाना ॥
 रेवतीदास कुटी पर आवा । ले पकरे तुलसी के पाँवा ॥
 रेवतीदास बोले अस बानी । मैं रहिहौँ इन के ढिँग स्वामी ॥
 कुटी सामने कुटी बनाई । दोनों रहे कुटी के माई ॥
 रेवतीदास दीन दिल आनी । स्वामी से पूछौँ इक बानी ॥
 गुरु चेला कर कैसा लेखा । सो स्वामी मोहिँ कहौ बिबेका ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

रेवतीदास सुनौ तुम भाई । याकी बिधी कहौँ समझाई ॥
 नहिँ कोइ गुरु नहीं कोइ चेला । बोलै सब में एक अकेला ॥
 जो कोइ गुरु चेला कर जाना । सोइ सोइ परे नर्क की खाना ॥
 एक बोल सब माहिँ बिराजा । गुरु चेला दोइत बिधि साजा ॥
 चेला होइ नीकि बिधि भाई । गुरु होइ चौरासी जाई ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी मैं तू जो तजै, रहै दीन गति सोइ ।
गुरू नवै जो सिष्य को, साथ कहावै सोइ ॥ १ ॥
तुलसी कह रेवती सुनौ, कहौ कबीर मुख बात ।
कहि कबीर सब मैं बसौ, को गुरु चेला साथ ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

कह कबीर सब माहिँ बिराजौ । सब मैं किया सभी मैं साजौ ॥
कह कबीर हम सब के माई । सब हम किया सभी सब ठाई ॥
सब के माहीं बासा कीन्हा । सब मैं हमीं हमीं को चीन्हा ॥
जो महंत चेला करै भाई । सब मैं रहा कबीर समाई ॥
ये बिधि बिधी कबीर पुकारा । का को चेला करै लबारा ॥
घट घट माहिँ कबीर समाना । का को चेला करै हैवाना ॥
कह कबीर मोहिँ सब मैं बूझा । चेला करै आँखिनहिँ सूझा ॥
है कबीर सब काया माई । ता को तुम चेला ठहराई ॥
कह कबीर सब ठाम ठिकाना । सोई कबीर का फूँकौ काना ॥
तुम्हरी मति कहौ कैन हिराई । कहा कबीर हम ठामै ठाई ॥
कहते तुम को लाज न आई । कहौ कबीर फिरि गुरू कहाई ॥
कहौ कबीर सब माहिँ समाना । गुरु कबीर की करौ बखाना ॥
तुम कबीर को स्वामी गावौ । पुनि वा को चेला ठहरावौ ॥
कस कस ज्ञान तुम्हारा भाई । भूल न अपनी देखौ जाई ॥
अगम निगम का ज्ञान सुनावौ । अपने घर की भूल न पावौ ॥
कहि कबीर मुख गाना गावौ । सब्द न खोजौ पोल चलावौ ॥
नहिँ कोइ तुम को पकरनहारा । सो धन सब्द समझ की लारा ॥
ता से सोल पोल तुम लाई । पकरै तो कछु ज्वाब न आई ॥
और अनेक बात अस नासी । कैन कैन कहूँ तुम्हरी फाँसी ॥
अपना मता ऊँच करि ठानौ । ऊँचे का कछु मरम न जानौ ॥

कहि कबीर मुख साँची बानी । तुम अबूभकछु परख न जानी ॥
 कहि कबीर कथनी को गावै । बूझै जवाब न ता कौ आवै ॥
 एक स्वाल हम पूछै भाई । कँवल चौरासी कैने ठाई ॥
 या की भेद राह बतलाई । कौन ठाम वे कँवल रहाई ॥
 नौलख कँवल कबीर बखाना । कहौ तुम उन का कौन ठिकाना ॥
 सहस कँवल दल सो पुनि भाखा । अष्ट कँवल दल भेद कहौ ता का ॥
 चारि कँवल दल देव बताई । दोइ दल कँवल कौन से ठाई ॥
 ये सब कँवल जोग से न्यारा । जोगी न जानै भेद बिचारा ॥
 कँवल चक्र षट जोगी गाई । उन कँवलन से न्यारे भाई ॥
 या की बिधि बिधि कहौ बुझाई । कही कबीर पंथ तेहि नाहीं ॥
 जो कबीर मुख भाखि बखानी । ता की तुम से पूछौ बानी ॥

॥ चौपाई ॥

अब सुन भेद कहौ समझाई । रेवतीदास सुन चित्त लगाई ॥
 षष्ट कँवल जोगी पुनि गाई । या का तुम को भेद बताई ॥
 रहै चार दल गुदा के माई । और दूजे की बिधी बताई ॥
 छः दल कँवल नाम के नीचे । अष्ट दल कँवल पुहमी के बीचे ॥
 पखड़ी बारह हिरदे माई । सोला पखड़ी कंठ रहाई ॥
 उदित मुदित दुइ दीप कहावै । ता में सहस कँवल को पावै ॥
 कँवल चक्र षट खुल के कहिया । संत कँवल भिनि न्यारे रहिया ॥
 ये कँवला षट चक्र से न्यारा । उन को जानै संत बिचारा ॥
 षोड़स द्वार काया के माई । तुम जानौ दस द्वार रहाई ॥
 छः त्रिकुटी काया के माई । तुम जानौ पुनि एकै भाई ॥
 नाल सताइस काया माई । अट्ठाइस पुनि बंक कहाई ॥
 बाइस सुन्न संत बतलावा । ये कबीर मुख अपने गावा ॥
 मान सरोवर सुषमनि नारी । तिरबेनी ब्रह्मंड के पारी ॥
 इतना भेद कहा हम गाई । भिन्न भिन्न कर दिया बुझाई ॥

ये हम कहा भाखि सोइ देखा । ये कबीर ने भाखा लेखा ॥
 जो कोइ या का भेद बखानै । पंथ कबीर जाहि को जानै ॥
 कहि कबीर की भाखि सुनावै । ये झूठै औरन की गावै ॥
 अपना चखा स्वाद बतलावै । और की करनी काम न आवै ॥
 और की करनी बूझ बुझावै । सो अपना कारज नहिँ पावै ॥
 गुरु चेला का बूझा लेखा । सो गुरु कामैं कहौं बिबेका ॥
 जगत गुरु नहिँ संत पुकारा । सतगुरु भेद जगत से न्यारा ॥
 जो कोइ चढ़ै गगन को धावै । सो सतगुरु के सरनै आवै ॥
 सतगुरु सत्त पुरुष हैं स्वामी । सो चौथा पद संत बखानी ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी कहै बिचार, रेवती यह बिधि गुरु लखौ ।
 चखौ अमरपद सार, देखि आदि अंदर मई ॥

॥ प्रश्न रेवतीदास और फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

सुनि रेवती मन संसय आनी । तुम ने औरै और बखानी ॥
 जस जस बचन बिधी समझावा । अस आगे कोउ संत न गावा ॥
 औरै संत गये बोहि राही । सो अब उनकी साखि सुनाही ॥
 सत्त सुधा रस जिन की बानी । कहिये नाम भेद गुर छानी ॥
 येहि बिधि फूलदास पुनि बोला । पूछै बिधी गुरु और चेला ॥
 स्वामी या की साखि सुनाई । अगम पंथ को संतन पाई ॥
 भिनि भिनि न्यारा नाम बताई । जिनकी साखी सब सुनाई ॥
 अनुभौ भिनि भिनि सब कर न्यारा । भाखौ एक एक बिस्तारा ॥
 संत संत की न्यारी बानी, एक एक की कहौ निसानी ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी तुम सुनियो काना । संत सब्द का करौं बखाना ॥
 दादू मीरा नाभा भाई । नानक दरिया सूर सुनाई ॥

अरु कबीर पुनि भाखा भाई । और अनेक संत बिधि गाई ॥
 जो जो संत अगमपुर धाये । जिन जिन साखी सब्द सुनाये ॥
 संत चरन रज तुलसीदासा । कछु कछु भाखा अगम बिलासा
 तुलसी संत चरन की लारा । मेरी बुद्धि न उन अनुसारा ॥
 संत चरन महिमा पुनि भाखै । उनके चरन सीस पर राखै ॥

॥ दोहा ॥

संत सब्द बिधि बिधि कहैं, सुनियो फूलादास ।
 जो जो सब्द उन भाखिया, कहैं चरन होइ दास ॥

॥ शब्द ॥

तुलसी तुल जाई, गुरु पद कंज लखाई ॥ टेक ॥
 मैं तो गरीब कछू गुन नाहीं, मो को कहत गुसाई ।
 जो कछु कीन्ह कीन्ह करुनामय, मैं उनकी सरनाई ॥ १ ॥
 मैं अति हीन दीन दारुन गति, घट रामायन बनाई ।
 रावन राम की जुहु लड़ाई, सो नहीं कीन्ह बनाई ॥ २ ॥
 ये तत सार तती निज जानत, जो ये लखै लखाई ।
 काल काया परिवार मयाई, ये गुन ग्रंथन गाई ॥ ३ ॥
 ता मैं सार पार पद न्यारा, सो कोइ संत जनाई ।
 पंडित भेष जगत अरु ज्ञानी, भेद कोऊ नहीं पाई ॥ ४ ॥
 अब बरतंत कहैं याही कै, भरत चत्रगुन भाई ।
 दसरत सीता और कैसिल्या, सिया लछमन कहाई ॥ ५ ॥
 काग भसुंड गरुड सबै सब, मंथ्रा अरु केकाई ।
 रघुपति रंग संग परिवारा, येहि बिधि जगहि सुनाई ॥ ६ ॥
 और सुनौ रावन रंग राई, सब परिवार बताई ।
 कुंभकरन भाभीषन भाई, इंद्रजीत सुत राई ॥ ७ ॥
 रानी राइ मंदोदरि सोई, सब परिवार सुनाई ।
 ये घट माहि घटा घट ही मैं, रामायन बनाई ॥ ८ ॥

रावन ब्रह्म बसै त्रिकुटी मैं, लंक त्रिकूट बनाई ।
 कुंभ तनै करता मनहीं को, कुंभकरन कहाई ॥९॥
 भय भौ खानि भभीषन भाई, सो भौ माहिँ भमाई ।
 इंद्रजीत जीतै मनहीं को, सो इंद्रजीत कहाई ॥१०॥
 रावन ब्रह्म बसै मन दौरी, ता को मँदोदरी बनाई ।
 मन की दौर को दूर बहावै, त्रिकुटी ब्रह्म कहाई ॥११॥
 दस इंद्री रत दसरत कहिये, राम रमा मँन जाई ।
 सत की सीता असत सिया को, कुमति कैसिल्या बसाई ॥१२॥
 मन थिर सुरति करै थिर कोई, सो मन मंथू कहाई ।
 वहँ की बात कहौ कौन सुनाई, कर्मन थिर केकाई ॥१३॥
 ले छै रस मनही को भाई, लछमन बीर बड़ाई ।
 गो मैं रूढ़ गरूढ़ गिनाई, भय ले भसुंड भुलाई ॥१४॥
 भय रत भरम भरत है सोई, चाह त्रिगुन गिनाई ।
 ता को नाम चतुरगुन कहिये, ये सब भेद बताई ॥१५॥
 ये नौ द्वार काया के माहीं, सो हनुमान हँसाई ।
 ये तो चिन्न भिन्न बिन देखे, जोग करै सो जनाई ॥१६॥
 काया सोध कसै इंद्रिन को, त्रिकुटी ध्यान लगाई ।
 स्वाँसा धाड़ बंक खुल खोलै, सहस कँवल दल पाई ॥१७॥
 जो कोइ जोग जुगति करि लाई, जेहि घट ब्रह्म दिखाई ।
 जोगी का जोग इष्ट जगही को, ये गति यौं बिधि गाई ॥१८॥
 दूजा जोग ज्ञान गति गाई, आत्म तत्त लखाई ।
 मुद्रा पाँच अवस्था चारी, ज्ञान तीनि गति गाई ॥१९॥
 चाचरि भूचरि और अगोचरि, खेचरि खेह लगाई ।
 उनमुनि उमै अकास के ठाड़, ज्ञान बिधी बतलाई ॥२०॥
 रेचक पूरक कुंभक कहिये, येहि बिधि ज्ञान गिनाई ।
 और अवस्था अरथ बताई, ज्ञानी किनहुँ न पाई ॥२१॥

जाग्रत सुपन सुषोपति कहिये, तुरियातीत कहाई ।
 तुरियातीत बसै वैहि पारा, जो या करै तिन पाई ॥२२॥
 चारो बानी का भेद बताई, सास्तर संध लखाई ।
 परा पसंता मधिमा सोई, बैखरी बेर बताई ॥२३॥
 ये सब जोग ज्ञान गति गाई, ज्ञानी यही बताई ।
 इनके परे भेद है न्यारा, सो कोइ संत जनाई ॥२४॥
 और सुनौ जो अगाध अघाई, संतन की गति गाई ।
 जा को भेद बेद नहिं जानै, जोगी किनहुं न पाई ॥२५॥
 परमहंस बैरागी गुसाँई, जगत् की कौन चलाई ।
 ये कहूँ देखि कहूँ न कहाई, काहू प्रतीति न आई ॥२६॥
 तुलसी तोड़ फोड़ असमाना, सूरति सार मिलाई ।
 सरकी चाँप चली धौ धाई, धनुवा धनुष चढ़ाई ॥२७॥
 तीनि लोक तिल खेई पारा, चौथे जाइ समाई ।
 वो साहिब सतनाम अपारा, तिन मोहिं अंग लगाई ॥२८॥
 या के पार परे गति न्यारी, सो कोइ संत जनाई ।
 जा को नाम अनाम अमाई, केहि बिधि कहौं बुझाई ॥२९॥
 ता के रंग रूप नहिं रेखा, नाम अनाम कहाई ।
 तुलसी तुच्छ कुच्छ नहिं जानै, ता घर जाइ समाई ॥३०॥
 सब संतन के चरन सीस धरि, आदि अजर घर पाई ।
 तीनि लोक उपजै और बिनसै, चौथे के पार बसाई ॥३१॥

॥ सोरठा ॥

येहि बिधि रघुपति रंग, रावन संग प्रसँग भयो ।
 सुरति चढ़ा चित चंग, ज्योँ पतंग डोरी गह्यो ॥

॥ शब्द १ दादू साहिब ॥

दादू देखा अदीदा, सब कोइ कहत सुनीदा ॥टेक॥
 हवा हिरस अंदर बस कीदा । तब यह दिल भया सीधा ॥१॥

अनहद नाद गगन चढ़ गरजा । तब रस पिया अमीँ दा ॥२॥
 सुखमनि सुन्न सुरति महलैँ नभ । आया अजर अकीदा ॥३॥
 अष्ट कँवल दल म दूग दरसन । पाया खुद खुदी दा ॥४॥
 जैसे दूध दूध दधि माखन । बिन मथे भेद न घी दा ॥५॥
 ऐसे तत्त मत्त सत साधन । तब टुक नसापियपीदा ॥६॥
 नहिँ यह जोग ज्ञान मुद्रा तत । यह गति और पदीदा ॥७॥
 जो कोइ चीन्हलीन्ह यह मारग । कारज हो गया जी दा ॥८॥
 मुरसिद सत्त गगन गुरु लखिया । तन मन कीन्ह उसी दा ॥९॥
 आसिक यार अधर लखि पाया । हो गया दीदम दीदा ॥१०॥

॥ शब्द २ दादू साहिब ॥

जानै अंतरजामी अचरज अकथ अनामी ॥ टेक ॥
 नौ लख कँवल जुगल दल अंदर । द्वादस साहिब स्वामी ॥१॥
 सूरत कड़क कँवल दल नभ पर । झटकि झटकि थिर थामी २
 जैसे जहाज चलै सागर में । बरदबान^१ बहै धीमी ॥३॥
 तैसे यार प्यार लखि पाया । तब सूरति ठहरानी ॥४॥
 सूरति सब्द सब्द में सूरति । अगम अगोचर धामी ॥५॥
 का से कहैं पिया सुख सारा । ज्येँ तिरिया मुसकानी ॥६॥
 नहिँ ये जोग ज्ञान तुरिया तत । यह गति अकथ कहानी ॥७॥
 चंद न सूर पवन नहिँ पानी । क्योंकर करौँ बखानी ॥८॥
 सुन्न न गगन धरन नहिँ तारा । अल्ला रब्य न रामी ॥९॥
 कहा कहैं कहिये की नाहीं । जानत संत सुजानी ॥१०॥
 बेद न भेद भेष नहिँ जानत । कोऊ देत न हामी ॥११॥
 दादू दूग दीदार हिये के । सूरति करति सलामी ॥१२॥
 मैं पिया प्यार प्यार पिय अपने । मिलि रहे एक ठिकानी ॥१३॥
 सूरति सार संध लखि पाई । ये गति बिरले जानी ॥१४॥

॥ शब्द नानक साहिब ॥

उधरा वह द्वारा वाह गुरु परिवारा ॥ टेक ॥
 चढ़ गड़ चंग पतंग संग ज्यौँ । चंद चकोर निहारा ॥१॥
 सूरति सैर जोर ज्यौँ खोलत । कुंजी कुलफ किवारा ॥२॥
 सूरति धाड़ धसी ज्यौँ धारा । पैठि निकसि गड़ पारा ॥३॥
 आठ अटा की अटारि मँभारा । देखा पुरुष नियारा ॥४॥
 निराकार आकार न जोती । नहिँ वहँ बेद बिचारा ॥५॥
 औँकार करता नहिँ कोई । नहिँ वहँ काल पसारा ॥६॥
 वे साहिब सब संत पुकारा । और पखंड पसारा ॥७॥
 सतगुरु चीन्ह दीन यह मारग । नानक नजर निहारा ॥८॥

॥ शब्द दरिया साहिब ॥

दरिया दरबारा खुल गया अजर किवारा ॥ टेक ॥
 चमकी बीज चली ज्यौँ धारा । ज्यौँ बदरी बिच तारा^१ ॥१॥
 खुलि गया चंद बंद बदरी का । घोर मिटा अँधियारा ॥२॥
 लै लगी जाड़ लगन के लारा । चाँदनी चौक निहारा ॥३॥
 सूरति सैल करै नभ ऊपर । बंक नाल पट फारा ॥४॥
 चढ़ि गड़ चाँप चली ज्यौँ धारा । ज्यौँ मकरी मुख तारा ॥५॥
 मैं मिलि जाड़ पाय पिया प्यारा । ज्यौँ सलिता जल धारा ॥६॥
 देखा रूप अरूप अलेखा । लेखा वार न पारा ॥७॥
 दरिया दिल दरवेस भये तब । उतरे भौजल पारा ॥८॥

॥ शब्द मीरा बाई ॥

मीरा मन मानो सुरति सैल असमानी ॥ टेक ॥
 जब जब सुरति लगै वा घर की । पल पल नैनन पानी ॥१॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में “बीज” की जगह “बीच” और “बदरी” की जगह “बिजुली” है जो ठीक नहीं जान पड़ता ।

ज्येँ हिये पीर तीर सम सालत । कसक कसक कसकानी ॥२॥
 रात दिवस मोहिँ नौंद न आवै । भावत अन्न न पानी ॥३॥
 ऐसी पीर बिरह तन भीतर । जागत रैन बिहानी ॥४॥
 ऐसा बैद मिलै कोइ भेदी । देस बिदेस पिछानी ॥५॥
 ता से पीर कहैँ तन केरी । फिरिनिहिँ भरमौँ खानी ॥६॥
 खोजत फिरैँ भेद वा घर का । कोऊ न करत बखानी ॥७॥
 रैदास संत मिले मोहिँ सतगुरु । दीन्ही सुरति सहिदानी ॥८॥
 मैँ मिलि जाइ पाइ पिया अपना । तब मेरी पीर बुझानी ॥९॥
 मीरा खाक खलक सिर डारी । मैँ अपना घर जानी ॥१०॥

॥ शब्द सूरदास जी ॥

मुरली धुनि गाजा, सूर सुरति सर साजा ॥टेक॥
 निरखत कँवल नैन नभ ऊपर । सब्द अनाहद बाजा ॥१॥
 सुनि धुनि मैल मुकर मन माँजा । पाया अमीरस भाँभा ॥२॥
 सुरति संध सोध सत काजा । लखिलखिशब्द समाजा ॥३॥
 घट घट कुंज पुंज जहँ छाजा । पिंड ब्रह्मंड बिराजा ॥४॥
 फोड़ि अकास अललपछ भाजा । उलटि के आपु समाजा ॥५॥
 ऐसे सुरति निरखि निःअच्छर । कोटि कृष्ण तहँ लाजा ॥६॥
 सूरदास सार लखि पाया । लखिलखि अलख अकाया ॥७॥
 सतगुरु गगन गली घर पाया । सिंध मैँ बुंद समाया ॥८॥

॥ शब्द नाभा जी ॥

नाभा नभ खेला, सुरति केल सर सैला ॥टेक॥
 दरपन नैन सैन मन माँजा । लाजा अलख अकेला ॥१॥
 पल परदल दल ऊपर दामिनि । जोत मैँ होत उजेला ॥२॥
 अंडा पार सार लखि सुरति । सुन्नी सुन्न सुहेला ॥३॥
 चढ़ि गई धाय जाय गढ़ ऊपर । सब्द सुरति भया मेला ॥४॥
 ये सब खेल अपेल अमेला । सिंध नीर नद मेला ॥५॥

जल जल धार सार पद जैसे । नहीं गुरु नहीं चेला ॥६॥
 नाभा नैन ऐन अंदर के । खुलि गये निरखि निहाला ॥७॥
 संत उचिष्ट वार मन भेला । दुरलभ दीन दुहेला ॥८॥

॥ शब्द कबीर साहिव ॥

कबीर पुकारा, मैं तो जगत से न्यारा ॥टेक॥
 आदि पुरुष अविगत अबिनासी । दीप लोक पद पारा ॥१॥
 सूरति सहर हेर हिये द्वारा । सब्द न सिंध अकारा ॥२॥
 काल न जाल स्वाल नहीं बानी । सो घर अधर हमारा ॥३॥
 अंत न आदि साध कोइ जानै । सतगुरु पदम निहारा ॥४॥
 नहीं तहैं आदि निरंजन जाती । सत्त पुरुष दरबारा ॥५॥
 ब्रह्मा बिस्नु वेद बिधि नाहीं । नहीं आदि ओंकारा ॥६॥
 ये सच यार प्यार लख पूरा । रूप न रेख जहूरा ॥७॥
 कहै कबीर संत वोहि द्वारा । चक्रवा चौक हुकारा ॥८॥

॥ दोहा ॥

फूलदास तुलसी कहै, संत सब्द की रीत ।
 जो जो गये अगाध को, सोइ सोइ संत समीर ॥

॥ छंद ॥

तुलसी गति गाई सब्द सुनाई, पंथ अगमसुर्त सार भई ॥१॥
 नानक और दादू दरिया साधू, मीरा सूर कबीर कही ॥२॥
 नाभा नम जानी भाखि बखानी, सुरति समानी पार गई ॥३॥
 सब की बिधि न्यारी एक बिचारी, सब संतन इक राह लई ॥४॥
 सब चढ़े इक धारा पहुँचे पारा, लखी गगन गति गवन गई ॥५॥
 कोइ करिहै संका महा मतिरंका, तुलसी डंका दीन्ह सही ॥६॥
 ये सतमत भाखा देखा आँखा, साखि सब्द मैं गाइ कही ॥७॥
 ये करी बखाना भेष न जाना, सब्द निसाना सुरति लई ॥८॥
 कागद नहीं स्याही ग्रन्थन पाई, गाइ गाइ सब जनम गई ॥९॥

कोइ संत लखैहँ न्यारी कहिहँ, कथन बदन में नाहिँ नहीं ॥१०॥
 जो पोथी पढ़िहँ ज्ञान से अडिहँ, नरक परै पन भक्ति नहीं ॥११॥
 बिन भक्ति न पैहँ जनम गमैहँ, संत सरन बिन राह नहीं ॥१२॥
 जिन जिन यह मानी सत कर जानी, भक्ति संत सब भाखि कही ॥१३॥
 संतन को जाना सब्द पिछाना, सुरति समानी आदि लई ॥१४॥
 तुलसी तत सारा अगम निहारा, गुरु पिआ पद पार लई ॥१५॥
 महुँ पुनि गाई संत सुनाई, संत सब्द रस अगम कही ॥१६॥
 सब संत पुकारा महुँ पुनि लारा, सारा चारा पार गई ॥१७॥
 चौथा पद गाई संत सुनाई, सुरति सैल अज आदि लई ॥१८॥
 संतन कर भेदा जानै न वेदा, खेद कर्म की दूर भई ॥१९॥
 संतन की सरना दुख सुख हरना, बरना तुलसी तोल लई ॥२०॥
 संतन मुख भाखी अगम की आँखी, उन से ता की तरक कही ॥२१॥
 कोइ बूझै न संधा पड़ा जम फंदा, अंधा जग को बूझ नहीं ॥२२॥
 संतन बिधि लाई सब्द सुनाई, भई बानी सब गाइ कही ॥२३॥
 सब्द जो गावै आँखि न आवै, बिन सत संगति भर्म सही ॥२४॥
 छूटै सब टेका बूझै एका, ये संतन ने सार दई ॥२५॥
 तुलसी गोहराई बूझ न पाई, बिन बूझै सब खानि मई ॥२६॥
 दोन निहारा संत पुकारा, सब्द बिचारा पार भई ॥२७॥

॥ सारग ॥

तुलसी सब्द बिचार, फूलदास ये बिधि सुनौ ।
 सब्द करै निरधार, सार पार पद लखि परै ॥१॥
 सब्द सब्द बहु भेद, ये अभेद गति भाखिया ।
 तुलसी ता की धार, सब्द निरखि रस जिन पिआ ॥२॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी सब्द संत जो भाखा । निज निज संत जो गये अगाधा ॥
 अपने अपने सब्द बनाये । अपनी अपनी साखि सुनाये ॥

जो जो गये अगम के द्वारा । पंथ अगम के उतरे पारा ॥
 पार जाइ विधि सगरी भाखी । जो जो देखा अपनी आँखी ॥
 अपनी देखी कही बखानी । आदि अंत जो जिन ने जानी ॥
 कही संत और कही कबीरा । सब मिलि कही एक विधि हीरा ॥
 पहुँचे पहुँचे एक ठिकाना । बिन पहुँचे का और बखाना ॥
 जो जो संत जो भये सनाथा । पहुँचे पार सार रस माता ॥
 बरनिन जाइ संत गति न्यारी । मेरी मति कछु नाहिँ विचारी ॥
 संतन की गति कस कस गाऊँ । दादू की कहौ साखि बताऊँ ॥
 दादू सब्द संत गति गाई । सब्द संत उन भाखि सुनाई ॥
 उनकी निसा साखि दरसाऊँ । तुलसी उन की अगम सुनाऊँ ॥

॥ शब्द (३) दादू साहिब ॥

दादू जानै न कोई, संतन की गति गोई ॥टेक॥
 अविगत अंत अंत अंतर पट । अगम अगाध अगोई ॥१॥
 सुन्नी सुन्न सुन्न के पारा । अगुन सगुन नहिँ दोई ॥२॥
 अंड न पिंड खंड ब्रह्मंडा । सूरति सिंध समोई ॥३॥
 निराकार आकार न जाती । पूरन ब्रह्म न होई ॥४॥
 इनके पार सार सोइ पैहै । तन मन गति पति खोई ॥५॥
 दादू दीन लीन चरनन चित । मैं उनकी सरनोई ॥६॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी कहै बुझाई, फूलदास सुन संत गति ।
 दादू साखि बताइ, निसा बूझि कै यह कहौ ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास सुनियौ चित लाई । यह दादू की साखि बताई ॥
 जो संतन ने देखा माहीं । रूप रेख बिन रहै अकाई ॥
 तन भीतर जो लखा अलेखा । रूप रेख ना रहै अदेखा ॥
 जा के रूप रेख कछु नाहीं । सो वो देखा घट के माहीं ॥

पुनि दादू की साखि बताऊँ । सब्द एक जो गाइ सुनाऊँ ॥
जो जो संतन दिल मैं देखा । जिन जिन भाखा अगम अलेखा

॥ शब्द (४) दादू साहिब ॥

दादू दिल बिच देखा, रंग रूप नहिँ रेखा ॥ टेक ॥
हृद हृद बेद कितेव बखानै । मैं कहा बेहृद लेखा ॥ १ ॥
मुल्ला सेख सैयद और पंडित । ये मुए अपनी टेका ॥ २ ॥
राम रहीम करीम न केसो । हरि हजरत नहिँ एका ॥ ३ ॥
वो साहिब सबहिन से न्यारा । कोइ कोइ संतन पेखा ॥ ४ ॥
दादू दीन लीन हुइ पाया । क्या कहूँ अगम अलेखा ॥ ५ ॥
जिन जिन जानातिन पहिचाना । मिटि गया मन का धोखा ॥ ६ ॥

॥ शब्द (५) दादू साहिब ॥

दादू देखा मैं प्यारा, अगम जो पंथ निहारा ॥ टेक ॥
अष्ट कँवल दल सुरति सब्द मैं । रूप रेख से न्यारा ॥ १ ॥
पिंड ब्रह्मंड और बेद कितेवै । पाँच तत्त के पारा ॥ २ ॥
सत्त लोक जहँ पुरुष बिदेही । वह साहिब करतारा ॥ ३ ॥
आदि जोत और काल निरंजन । इन का वहँ न पसारा ॥ ४ ॥
राम रहीम रबब नहिँ आतम । मुहम्मद नहिँ औतारा ॥ ५ ॥
सब संतन के चरन सीस धर । चीन्हा सार असारा ॥ ६ ॥

॥ शब्द (६) दादू साहिब ॥

दादू दरस दिवाना, आरसी यार दिखाना ॥ टेक ॥
आधी रात गगन मध चंदा । तारा खिलक खिलाना ॥ १ ॥
चटकी सुरति चढ़ी ज्योँ चकरी । फूटि गया असमाना ॥ २ ॥
लै लगी जाइ महल मध ऊपर । सूरति निरत ठिकाना ॥ ३ ॥
मिल गया यार प्यार बहु कीन्हा । खुलि गया अरस निसाना ॥ ४ ॥
आदि अंत देखा मध म्याना । क्योंकर करूँ बखाना ॥ ५ ॥

गुप्त बात गुप्तै भई गाफिल । अंदर माहिँ छिपाना ॥ ६ ॥
 मैं कछु कीन लीन सोइ जानत । और कहूँ नहिँ चीन्हा ॥ ७ ॥
 दादू पीर मिटी परलै की । जनम मरन नहिँ माना ॥ ८ ॥

॥ सोरठा ॥

जो देखा घट माहिँ, जिन जिन संतन सब कही ।
 रूप रेख नहिँ ताहि, सो अदृष्ट अंदर लेखा ॥

॥ चौपाई ॥

सब संतन ने पाया लेखा । जोई अगम पंथ जिन देखा ॥
 जोइ जोइ संतन भाखि सुनाई । सो सब देखा अपने माई ॥
 बिन देखे नहिँ संत पुकारा । देखे बिन कहै झूठ लबारा ॥
 फूलदास बूझौ मन माई । संत कही जो कबीर गुसाई ॥
 संत कबीर से अंतर नाहीं । भिन्न कहै सो नरकै जाई ॥
 जो जो संत गये निज धामा । सो कबीर ने कहे मुकामा ॥
 चढ़े संत जो गगन ठिकाना । उन की गति काहू नहिँ जाना ॥
 संत मते को दुइ कर जानै । ता तैं परै नरक की खानै ॥
 संत की निंदा करै बनाई । आदि अंत भौ भटका खाई ॥
 संतन की गति भेष न जाना । संत बिना कहूँ नाहिँ ठिकाना ॥
 भेष भुलाना भौ के माहीं । रहै काल बस जम की छाहीं ॥
 मैं कछु कही न निंदा भाई । जस जस देखा तस तस गाई ॥
 मुख अपने निंदा नहिँ गाऊँ । और संत की साखि सुनाऊँ ॥
 औरै और और पुनि गाऊँ । तिन तिन की मैं साखि बताऊँ ॥
 तुलसी संत भेष कर चेरा । ये भौ सिंध अनीत अनेरा ॥
 तुलसी संत चरन की धूरी । दादू सब्द बताऊँ मूरी ॥
 उन की साखी सब्द बताऊँ । पुनि दादू की साखि सुनाऊँ ॥
 भेष भूलि सब जग के माई । ता कारन ये सब्द सुनाई ॥
 भेष भुलान खान सुख कारन । ता तैं दादू सब्द पुकारन ॥

॥ शब्द (७) दादू साहिब ॥

दादू भेष भुलाना, जम सँग कीन्ह पयाना ॥टेक॥
 षट दरसन पंडित और ज्ञानी । पढ़ि पढ़ि मुए पुराना ॥१॥
 परमहंस जोगी सन्यासी । बेद करत परमाना ॥२॥
 आतम ब्रह्म कहै अपने को । सब मैं हमीं समाना ॥३॥
 ता से भौजल पार न पावैं । अहँग ब्रह्म मन माना ॥४॥
 मन बिहंग की खबरि न जानै । तन निहंग है बाना ॥५॥
 जग जज्ञास मोह मद माते । ता से बहु लपटाना ॥६॥
 वे साहिब समरथ हैं दाता । तिनको नहिँ पहिचाना ॥७॥
 वा को भेद बेद नहिँ पायौ । अगम पंथ नहिँ जाना ॥८॥

॥ शब्द (८) दादू साहिब ॥

दादू दो दिन रहिहौ, जम दुख बंधन सहिहौ ॥टेक॥
 तू मत जान ज्ञान आतम कस । इन बस धोका खैहौ ॥१॥
 ये संसार भाव भय भावत । खोजत फिरि फिरि बैहौ ॥२॥
 भेष भुलान खान सुख कारन । सारन पुनि फिरि पैहौ ॥३॥
 ये जग खोट मोट कैँ पूजत । सूझत स्वारथ दैहौ ॥४॥
 ये भौ-सिंध अथाह अपारा । बूझि बूझि पग दैहौ ॥५॥
 जम की जाल बड़ी अति दारुन । आपै आपु बँधैहौ ॥६॥
 दादू कहत पुकारि जगत जग । भेष सबै सुनि लैहौ ॥७॥
 भौजल पार जबै होइ जैहौ । सूरति सबद समैहौ ॥८॥

॥ शब्द (९) दादू साहिब ॥

दादू दीन अवाजा, जग जिव भेष न लाजा ॥टेक॥
 सिव सनकादि सिंगी पारासर । इन कै सख्यौ न काजा ॥१॥
 ये तन तैर काल कर-खाजा । छिन छिन सिर पर गाजा ॥२॥
 सुकदेव व्यास जनक नारद मुनि । घट घट उन पर छाजा ॥३॥

तू केहि लेखे माहिँ न बचिहै । पचि पचि मरत अकाजा ॥१॥
 बाघ उपाव करै गउ कारन । जम दल यहि बिधि साजा ॥५॥
 पल मैं छुटि जैहै सुख सम्पति । ज्येँ माखी मधु राजा ॥६॥
 राति दिवस धावै धन कारन । मरन काल कित आ जा ॥७॥
 जिन कोइ सुरति सत्तलखि चीन्हा । जनम मरन भौ भाजा ॥८॥
 दादू भेष भेद जब छूटै । सूरति सब्द समा जा ॥९॥
 जब भया सिंध बुंद का मेला । वोहिसाहिब को लाजा ॥१०॥

॥ शब्द (१०) दादू साहिब ॥

दादू कहत पुकारी, कोइ मानै नाहिँ हमारी ॥टेक॥
 पंडित काजी बेद कितेबा । पढ़ि पढ़ि मुए लबारी ॥१॥
 ये तीरथ वे हज को जाते । बूढ़े भौजल धारी ॥२॥
 हिंदू तुरक दीन दोउ भूले । करम धरम पचि हारी ॥३॥
 नूर जहूर खुदा हम पाया । उतरे भौजल पारी ॥४॥

॥ शब्द (११) दादू साहिब ॥

दादू दीन अधीना, मैं मति काहू न चीन्हा ॥टेक॥
 देह भाव जानत जग सारा । मैं तिन से तस कीन्हा ॥१॥
 मैं अति नीच जाति कर बेहना । का कहूँ बूझि न सैना ॥२॥
 जो कछु कही सही नाहिँ लीन्हा । पुनि पुनि उत्तर दीन्हा ॥३॥
 मैं कहा सार पार परमारथ । स्वारथ जग मति हीना ॥४॥
 जो कोइ कहन गहन लखि लीन्हा । कही संतन मत भीना ॥५॥
 आठ अरब बानी पद पूरन । सूर न सार यकीना ॥६॥
 दादू दूरि गाँव बसि पारा । धुनि कपास रस पीना ॥७॥
 सतगुरु संध मारग अति कीना । ज्येँ जल तैरत मीना ॥८॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी भेष भुलान, जानि मानि भौ मैं लसा ।
 फँसारस सार न जान, जानि कानि बूझी नहीं ॥

॥ चरचरी ॥

तुलसी सब तोल देख, भेष भाव जाई ॥ टेक ॥
 तुलसी रस खान पान, जान मान माई ।
 ऐसा मन भूल भेष, भिन्न चिन्ह न पाई ॥ १ ॥
 संतन से बैर हेर, साथ चहत नाई ।
 तुलसी सब भेष भूल, अपने हँग^१ माई ॥ २ ॥
 देखा सब झार झार, पार कोउ न पाई ।
 लाई लै लार लार, जग असार साई ॥ ३ ॥
 भूले हक^२ सकु नाहिँ, तुलसी कुछ गाई ।
 पैहै सुख संत साथ, और कहूँ नाहीं ॥ ४ ॥
 संत साँच और काँच, पाँच भूत माई ।
 तुलसी सब हेर देख, भेष अनेक ठाई ॥ ५ ॥
 देखा सब जोड़ जोड़, चौज^३ कहूँ न पाई ।
 तुलसी मन टूट फूट, छूट छाँड़ ताही ॥ ६ ॥
 बिना संत सत्त तत्त, हाथ नहीं आई ।
 देखा सब जोड़ दोड़, द्वार खानि माई ॥ ७ ॥
 तुलसी निरखा निहार, पार सार नाहीं ।
 चित्त कहन बर्त बूझ, कर्म काल जाई ॥ ८ ॥
 मै तो कही पेखि नैन, देख भेद जाई ।
 बूझा नहीं सुपन सैन, ऐन आद नाहीं ॥ ९ ॥
 ता से मन चेत बूझ, देखि दृष्टि जाई ।
 तुलसी तन तोड़ फोड़, मोड़ पोढ़ पाई ॥ १० ॥

॥ चौपाई ॥

भेष भुलान सबै जग माई । आदि अंत की खबरि न पाई ॥
 जो कोइ भेद कहै समझाई । भेष कान पर एक न लाई ॥

(१) हँगता, अहंकार । (२) सत्त, सत्तपुरुष । (३) आनन्द, विलास ।

कपरा रंगे भेष भये साधू । बूझै न बस्तु जो आदि अनादू ॥
 दया जानि कोइ भेद बतावै । तौ वह नगर रहन नहिँ पावै ॥
 गृही भेष सब मारि निकारै । कहै हमरा रुजगार बिगारै ॥
 परमारथ नहिँ बूझि गँवारा । पढ़ि पढ़ि बूढ़े भव जल धारा ॥
 या ते संत मता नहिँ पावै । ता ते जिव भव मैं रहि जावै ॥
 कर्म बंध जिव भरमै खाना । बिना संत नहिँ लगै ठिकाना ॥
 फूलदास रेवती सुन दासा । संत मिलै तौ होइ सुबासा ॥
 और जो सुनौ जगत सब बोरा । भेष टेक मैं बूढ़ न थोड़ा ॥
 संत मता कहूँ देख न आवै । भेष मता सब जगत बुड़ावै ॥
 ऐसी सोल पोल कहा कीजै । उपजै बिनसै नित नित छीजै ॥
 ऐसी कहा कहा की कहिये । ता से गुप्त मौन होइ रहिये ॥
 कोजग अजगुत सिर पर लेही । परी भूल सर्व मत येही ॥

हाल मुसलमान साधू अली मियाँ का

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

एक समय इक अचरज भइया । इक फकीर मक्के से अइया ॥
 नाम अली तेहि जाति फकीरा । राति भई रहे हमरे तीरा ॥
 अल्ला कुह कुह करै निमाजा । हमरे माहिँ देखि मन लाजा ॥
 फारिग भये तब खाना खाया । ले आसन कुटिया मैं आया ॥
 हम से खुदा खुदा कर बोले । खुदा नबी बिन कछू न तोले ॥
 पूछा अल्ला नबी केहि ठावाँ । उन पुनि ले असमान बतावा ॥
 हम पुनि कहा तुम्हारे पासा । मुरसिद मिलै तो होय खुलासा ॥
 हमरी बानी कान न लावा । तब दादू का सब्द सुनावा ॥
 अली मियाँ सुन हक्क इमाना । मुरसिद दादू किया बखाना ॥
 अंदर अली भली कर मानौ । अल्ला अलिफ जुबान बखानौ ॥

॥ अली मियाँ ॥

॥ चौपाई ॥

भूल रसूल रमक दरसावौ । पैगम्बर परमान बतावौ ॥
पैगम्बर कहि भाखि सुनावौ । मसजिद हक मक्का को गावौ ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

कितनी कही इमान न लावा । गजल एक उन भाखि सुनावौ ॥
खुदा खुदाय सब खलक बखानै । खुदा बिना कही एक न मानै ॥

॥ गजल अली मियाँ ॥

बंदा बेहोश याद हर दम लावै ।
तेरे बिन खुदी खूब कैसे भावै ॥१॥
कीन्हे तैं आफताब खलक आफरीं ।
कलमा बिन पढ़न कहै कुफर काफरीं ॥२॥
तुलसी ये अली गजल गाइ सुनाई ।
दादू दुरवेश देश हमहूँ गाई ॥३॥

॥ गजल तुलसी साहिब ॥

दिल का दुरवेश एक दादू फकीरा ।
भाखि कही साखि शब्द मुरशिद पोरा ॥१॥
सुनिये म्याँ अली अलिफ बानी उनकी ।
रोजा निमाज कही अंदर धुन की ॥२॥
कलमा पढ़ खुदा खोज अपने माई ।
देखो तन बदन बीच भिश्त बनाई ॥३॥
तुलसी की कहन मियाँ दिल मैं लावो ।
बदन बीच खोज यार अंदर पावो ॥४॥

॥ सोरठा ॥

अली अजब दीदार, पार परख दादू कही ।
दिल दुरबीन निहार, सो बिचार कह्यो सबद मैं ॥

॥ दोहा ॥

फहम फकीरी अरस की, मुकर देखि दुरबीन ।
चीन्ह चलै उस राह को, रूह रहम लौलीन ॥

॥ सौरठा ॥

दादू दूर दराब,^१ आबताब^१ पट अबर नहिँ ।
अल्ला अलिफ मकान, अबर फाड़ि पट राह लख ॥ १ ॥
दिल बिच अलिफ दीदार, स्याम सहर पररूह लखौ ।
चखौ अरस रस सार, ये बिचार दादू कही ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

दरिया भी दादू बतलाई । अलों मियाँ सुन साखि सुनाई ॥
जो सराब दादू भरि पीना । सो सुनि कर कै करौ यकीना ॥
आब अलिफ जिन की चलि आई । सो फकीर दुरबेस कहाई ॥
उन कुरान का मन्त्र सुनावा । भिस्त खोज खुद खुदा लखावा ॥
अब दादू का सब्द सुनाऊँ । परस पिथा रस लखन लखाऊँ ॥

॥ शब्द (१२) दादू साहिब ॥

दादू दूरि दराबी, पिय रस पियत सराबी ॥ टेक ॥
पियत पियाला मन मतवाला । भोर भई उँजियारी ॥ १ ॥
खूबी खलक खुदी खोइ खाबी । अंदर खिलि गइ स्वाबी ॥ २ ॥
मक्का भिस्त हज्ज को देखा । अबरा आब और ताबी ॥ ३ ॥
अल्ला आदि नबी लख छूटा । रोजा निमाज अजाबी ॥ ४ ॥
मलकुत नासुत जबरुत जा के । लाहुत हाहुत पागी ॥ ५ ॥
लै लगी लामुकाम रबि ही से । जगत जहान खराबी ॥ ६ ॥
दादू दूग दीदार हिये के । चूँ बेचूँ बेज्वाबी ॥ ७ ॥
चौधा तबक रियाजत बाजा । आया अरस अराबी ॥ ८ ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में “दराब” की जगह “निशान” और “आबताब” की जगह “आफताब” है लेकिन आगे की चौपाई की पहिली और तीसरी कड़ी और दादू के शब्द (१२) की टेक और तीसरी कड़ी के देखने से हमारा पाठ शुद्ध समझ पड़ता है ।

॥ सोरठा ॥

अली मियाँ सुन साखि, दिलै फहम बेदिल हुआ ।
मुए रूह से बाद, साथ स्वाल काफर कहा ॥

॥ चौपाई ॥

अली मियाँ सुन हमरी बानी । गुन गुन मन मैं बहुत रिसानी ॥
कही कुरान अल्ला मुख बानी । हिंदू को काफर कर जानी ॥
और रसूल पर करौ यकीना । उन फकीर ताजीमी कीन्हा ॥
स्वाल भाखि पुनि आसन लीन्हा । उठकर चलन फिर मन कीन्हा ॥
हाथ पकरि हम गुसा उतारा । आसन जिमीं डारि बैठारा ॥
हम पर मेहर करौ तुम साँई । अपने दिल मैं बूझौ भाई ॥
तुम खुदाइ का खोज न पावा । मही महजित को सिर नावा ॥
जो महजित तुम आप बनाई । ता महजित मैं खोज लगाई ॥
कहौ खुदा तुम सब के माँई । ऐसे कुरान कितेब सुनाई ॥
अपने मुख से सब मैं भाखौ । मही महजित को फिर ताकौ ॥
समझौ अपने दिल के माहीं । खुदा खोज खोजौ दिल माहीं ॥
पाँच यार मुहम्मद जो भाखा । आग खाक जल पौन अकासा ॥
ता को खोजो अपने माहीं । बिन मुरसिद कोइ खोज न पाई ॥
सब मैं खुदा कुरान बतावै । करौ हलाल सो दरद न आवै ॥
अपना कुफर चीन्ह नहिं भाई । हिंदू को काफर बतलाई ॥
सुन कर अली मियाँ कछु बूझा । ये तो जवाब खूब कर सूझा ॥
खुसी भये और गुसा उतारा । है खुदाइ सब मैं इक प्यारा ॥
फिर हम से वो पूछन लागा । कहौ खुदाइ सब माँहिं बिराजा
अली कहै कछु देख न आवै । खोजै खुदा खोज नहिं पावै ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी कह म्याँ अली सुन, खुदा भिस्त के द्वार ।
दो अनार लटकत रहै, कुंजी मुरसिद हाथ ॥१॥

अली मियाँ अचरज भया, कही बात सब साँच ।
तुलसी भेद बताइये, दीन होय मैं जाच^१ ॥२॥

॥ चौपाई ॥

कहि तुलसी हम भेद बतावा । भिस्त के द्वार अनार लखावा ॥
येहि अनार पर सुरति लगावौ । खुलै द्वार भिस्त तब पावौ ॥
तब तुलसी के कदम उन लीन्हा । अली मियाँ आधीनी कीन्हा ॥
हुआ अधीन भेद बतलाई । तब उठि मियाँ राह को जाई ॥
फूलदास बूझौ तुम मूला । हिंदू तुरक भेद दोउ भूला ॥
भूला भेष काल भरमाथा । काल अपरबल सब को खाया ॥
संत मते की राह न जानै । काल चाल बिधि कालहि मानै
जम फाँसी मैं भेष भुलाना । केहि बिधि पावै जीव ठिकाना
ये जग माहिँ फाँस जम डारा । संत बिना नहिँ होइ उबारा ॥
बारा^२ मते काल ने कीन्हा । आदिअंत फाँसी जिव दीन्हा ॥
सतजुग द्वापर त्रेता माई । और कलजुग की कहा बताई ॥
अनेक जुगन जुग फाँस फँसानी । भेद न चीन्हा पड़े पुनि खानी ॥
जब निरगुन बैराट पसारा । सत्त नाम से माँगि लबारा ॥
बारा मते मोहिँ को दीजै । मेरा मता साध अस कीजै ॥
बारा मत की राह चलाऊँ । जा से जीव जगत उरभाऊँ ॥
ऐसे निरगुन माँगा भाई । काल जाल मति जिनहिँ चलाई ॥
बारा माहिँ भेष सब भूला । सो जग जाल सहै जम सूला ॥
निरगुन काल जग कीन्हे भेषा । चारो जुग जग बाँधो टेका ॥
भेष क्रिया जग काल कराला । संत बिना नहिँ छूटै जाला ॥
काल भेष जग भये अनेका । अपनी अपनी बाँधी टेका ॥
ता से तुलसी पंथ न कीन्हा । जगत भेष भया काल अधीना ॥
जो जो कहे जीव निरबारा । सो सो फाँसी सब ने डारा ॥

(१) माँगता हूँ, प्रार्थना करता हूँ । (२) बारह ।

बिन आँखी सूझा नहिँ भाई । बिना संत कहौ कौन लखाई ॥
 चीन्है संत तो होइ उवारा । नहिँ तो बूढ़ै भौजल धारा ॥
 जो कोइ बारा^१ मत को चीन्हा । काल रहै पुनि तासु अधीना ॥
 ता पर काल जाल नहिँ डारा । जम होइ दीन ताहि की लारा ॥
 संत मिलै पुनि मारग पावै । ऐसे जीव लोक^२ को आवै ॥
 ये जग भेष काल बस होई । इन की बात न मानौ कोई ॥
 जो कोइ काल भेष पहिचानै । गति मति भेद संत कर जानै ॥
 दस औतार निरंजन जाना । ब्रह्मा बिष्णु काल उत्पाना ॥
 बेद कितेब अस फंद पसारा । ये जग काल जाल मत डारा ॥
 या को जब चीन्है कोइ प्रानी । मत बारा की राह पिछानी ॥
 पुनि बारा से भये अनेका । कहँ लग कहौँ पार नहिँ जे का ॥

॥ फूलदास ॥

॥ दोहा ॥

फूलदास बिनती करै, स्वामी कहौ बुझाई ।
 ये बिधि मो को लखि परी, पुनि कबीर कहि गाई ॥

॥ सोरठा ॥

अनुराग सागर माहिँ, कही कबीर धर्मदास सौँ ।
 हम पुनि देखा ताहि, स्वामी यह बिधि सत्त है ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी पूछै बात, फूलदास कहिये बिधी ।
 कस कबीर बिख्यात, काल मते बारा कहे ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास यह भाखौ साखी । बारा मते काल कस भाखी ॥
 कस कबीर ग्रंथन में गावा । सो बारा की बिधी बतावा ॥

तुम ग्रन्थन मैं देख। आँखी । सो सब भाखि कहौ बिधि ता की॥
 पहिले तुम भिनि भिनि बतलाई। फिरि तुम को हम बरनि सुनाई॥
 बारा भेद नाम गुन कहिये । भिन्न भिन्न पुनि बरनि सुनैये ॥
 कस कबीर ने भाखि बताई । सो बिधि तुम हम को समझाई ॥

॥ उत्तर फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास अस भाखा लेखा । कही कबीर सो कहूँ बिबेका ॥
 तुम ने बचन जो भाखि सुनावा । सो कबीर मुख अपने गावा ॥
 तुम भाखा सत नाम से पावा । बारा मते काल लै आवा ॥
 या मैं वा मैं अंतर नाहीं । ता की बिधि मैं बरनि सुनाई ॥
 ये कबीर मुख अपने कीन्हा । काल निरंजन को मत दीन्हा ॥
 उन अपना खुद ज्ञानै भाखा । तुम ने भक्ति भाव कर राखा ॥
 दोनैँ बिधी एक सम जानी । या मैं कछू भेद नाहिँ मानी ॥
 बारा मते काल को दीन्हा । मन अपने परमान जो कीन्हा ॥
 ये तो स्वामी सत्त जनाई । कहि कबीर ग्रन्थन मैं गाई ॥
 भाखा सोई सुनाऊँ लेखा । जोइ कबीर ग्रन्थन मैं देखा ॥
 ये कबीर मुख अपने भाखी । बारा मते काल बिधि ताकी ॥
 धरमराइ नीरंजन होई । बारा मते दीन्ह हम सोई ॥
 अस कबीर ग्रन्थन मैं गाई । देखी जस बिधि ताहि सुनाई ॥
 प्रथम दूत मृतग्रंध कहावा । दास नरायन नाम धरावा ॥
 काल अंस ये नाम नरायन । जीव फाँस फंदा जिन लायन ॥
 तिरमिर दूजा नाम बखाना । जाति अहेरी कुफर कहाना ॥
 दूत तीसरा भाखि सुनाऊँ । ग्रंध अचेत ताहि कर नाऊँ ॥
 सुरति गुपाल नाम तेहि पावा । कह कबीर ऐसी बिधि गावा ॥
 चौथा दूत भंगमन होई । भंगा मूल पंथ कहै सोई ॥
 पँचवाँ दूत ज्ञानभंग नामा । परचा करन मंत्र को थामा ॥

मकरंद षष्ठम दूत कहावा । नाम कमाली तासु धरावा ॥
 सप्तम दूत आहि चितभंगा । नाना रूप करै मन रंगा ॥
 अष्टम दूत का नाम बताऊँ । अकलभंग तासु कर नाऊँ ॥
 नवाँ दूत कर नाम बताऊँ । दूत बिसंभर बरनि सुनाऊँ ॥
 अब मैं दसवाँ दूत बताई । नकटा दूत ताहि कर नाँई ॥
 एकादस दूत नाम बतलाऊँ । दुर्गदानी तेहि बरनि सुनाऊँ ॥
 द्वादस दूत नाम बतलाऊँ । हंस मुनी तेहि बरनि सुनाऊँ ॥
 ऐसे बारा दूत बखाना । अनुराग सागर करत बखाना ॥
 साहिबकबीर ऐसी बिधि गावा । सो मैं तुम को भाखि सुनावा ॥

॥ प्रश्न फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी स्वामी बिधी सुनाई । कस कस मता काल बिधि पाई ॥
 या की बिधि मोहि बरनि सुनैये । सब बिधि नाम दूत कर कहिये ॥
 ॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास सुनियौ चित लाई । अब या कै हम बरनि सुनाई ॥
 निरगुन काल निरंजन जानौ । सोई याहि मनै पहिचानौ ॥
 सत्त सब्द तन माहि रहार्ह । वा को छाँड़ि खानि को जाई ॥
 बारा मत नहि कहिया भाई । वाही राह की मती बुझाई ॥
 मन ये राह की मति जो राखा । या को बारा की मति भाखा ॥
 मन ये द्वैत भाव जग राखा । दूत नाम येही बिधि भाखा ॥
 एक नाम बिधि भूला भाई । ता से मन को दूत बताई ॥
 ये मन की बिधि कहूँ बखाना । फूलदास सुनियौ दै काना ॥
 बारा मत मनही के जाना । द्वैत न छाँड़ि एक नहि माना ॥
 यों बारा मत मन के भइया । बारा मत मन नाम कहइया ॥
 द्वैत राह मन छाँड़ न भाई । तहँ लगि यह मन काल कहाई ॥

द्वैत काल मन यह बिधि गाया । मन मत द्वैत जगत सब आया ॥
 मन मत द्वैत वो राह न पाया । ये कबीर ने यों बिधि गाया ॥
 या मन की बिधि बिधिसमझाई । बारा दूत मन काल कहाई ॥
 ये मत बिधिसब कही बखाना । बारा नाम मनहिँ के जाना ॥
 नरायनदास नर मन है भाई । येहि बिधि दास कबीर बताई ॥
 मन मृतअंध दूत बतलाई । मन नित मृत्त करै जग जाई ॥
 ये मनतिमर जगत को लावा । या ते तिमर नाम मन पावा ॥
 मन जगअंध अचेत करावा । अंधअचेत दूत ठहरावा ॥
 सुरति गुपाल नाम तेहि कहिया । सुरति मन गो पालन करिया ॥
 मन मत भंग करै जग केरी । मन मत भंग नाम अस फेरी ॥
 मन मत ज्ञान करै चित भंगा । मन मत दूत नाम रस रंगा ॥
 मन पतंग माया मन राखा । मन मकरंद दूत यों भाखा ॥
 मन अरु चित भंग करै अनेका । चित भंग दूत नाम यों लेखा ॥
 मन अकल को भंग लगावा । अकलभंग नाम अस गावा ॥
 बिषै अमर मन करिकै राखै । सुरति नाम को नेक न ताकै ॥
 ताकर नाम बिसंभर दूता । बिषरस जीव किया मजबूता ॥
 मन कहँ नकटा दूत कहाई । ज्ञान सुनै फिरि बिषरस खाई ॥
 या को लज्जा नेक न आवै । नकटा होइ पीछे पुनि धावै ॥
 नकटा नाम दूत येहि जानौ । या की साखि न कोऊ मानौ ॥
 मन दुर्ग^१ गुन के दान चुकावै । गुन तीनों से जग बौरावै ॥
 दुर्ग दानी येहि मन को जाना । अस दुर्ग दानी नाम कहाना ॥
 या की बात सत्त कर मानी । येहि बिधि मन को दूत बखानी ॥
 यह मन निरमल सुरतिकराई । मन होइ हंस सुरति घर जाई ॥
 हंस मुनी होइ दूत उड़ाई । सुरति सब्द घर अपने जाई ॥
 सत्य नाम पद पहुँचै भाई । चौथा पद रस पियै अघाई ॥

मुनि होइ हंस ताहि कर नामा। बारा मत मन के पहिचाना ॥
 यह कबीर ने भाखा पेखा। औरै संत यही बिधि लेखा ॥
 ये सब मन के मते बताये। मन से पंथ भेष जग आये ॥
 मन बाहर कोइ पंथ न होई। ये सब मते काल कर जोई ॥
 मन से भिन्न सुरति को पावै। सुरति जाइ पद नाम समावै ॥
 सो बारा से न्यारा होई। सो जिव अमर पंथ को जोई ॥
 मन से राह सुरति नहिं जाने। सो सब पंथ काल मत साने ॥
 यह महंत मन अंधा धुंधा। येहि माँ काल रखावा फंदा ॥
 दास कबीर येही पुनि भाखा। हमहूँ दीन्ह येही बिधि साखा ॥
 वह कबीर यह तुलसी लेखा। मन मानै तौ करौ बिबेका ॥
 तुलसी संत चरन की आसा। संत सरन मैं सुरति निवासा ॥

॥ दोहा ॥

फूलदास मत भाखिया, मते काल के नास।
 बारा मत मन के बसे, जगत भेष के पास ॥

॥ छंद ॥

बारा मत गाई मनहिं लखाई। बूझ बुझाई राह कही ॥१॥
 तुम अंतै गावौ भेद न पावौ। मनहिं काल घट घाट मई ॥२॥
 याको नहिं बूझा अंत न सूझा। ता से तुम को भूल रही ॥३॥
 जिन मन को जाना सुत पिछाना। निरत तोल असमान गही ॥४॥
 संतन निज जानी करी बखानी। महुँ पुनि उन सम गाइ कही ॥
 मन की बिधि जानी सुरति पिछानी। बिन सूरति यह राह नहीं ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी कहै बुझाई, फूलदास सूरति लखौ।
 ये चौका येहि पान, सुरति जानि पद रस चखौ ॥

॥ चौपाई ॥

सुरति चीन्ह रस जानौ भाई। तब वा घर का मारग पाई ॥
 कमठ ध्यान कछुवा मत ताकै। ऐसी सुरति नाम से राखै ॥

उयेँ चकोर चंदा को ताकै । येहि बिधिसुरतिनामरसचाखै
 सूरज-मुख पषान इक होई । रबिसनमुख तेहि पावक जोई ॥
 पथरी सूरज सन्मुख लावै । तत खन ता मैँ अगिनि समावै ॥
 चंद्र मुखी इक पथरी भाई । सन्मुख चंदा जाय दिखाई ॥
 तत खन नीर चुवै तेहि माई । देखे पथरी हाल मैँगाई ॥
 ऐसे दृढ़ करि सुरति लगावै । चूवै अमो नाम रस पावै ॥
 चौका पान झूठ है भाई । सुरति नाम पान से पाई ॥
 भाखा संत सरन को चीन्हा । सुरति पान लखि होइ यकीना ॥
 नील सिंघर खिरकी के पारा । वहाँ से ताकै अगम दुवारा ॥
 अलख पलक से न्यारा होई । खलक राह सब छूटै सोई ॥
 निस दिन सुरति गगन मैँ राखै । झँझरी सुरति नजर से ताकै ॥
 येहि बिधि निस दिन सुरति लगाई । मन मैँ इष्ट भरम नहिँ लाई
 ऐसे सुरति द्वार पर खेला । स्याम सपेदी न्यारी सैला ॥
 स्याम लोक पुनि सेतहि दीपा । संख चक्र मध पुनि एक सीपा ॥
 वा के परे बंकगढ़ न्यारा । सुखमनि सैल मानसर पारा ॥
 वा के परे त्रिवेनी घाटी । ता से निकरि अगमपुर बाटो ॥
 करि असनान अगम को धावै । तब साँचे सतगुरु को पावै ॥
 चारि कँवल द्वै भीतर माई । ता मैँ पैठि द्वादस मैँ जाई ॥
 ता के परे पुरुष इक देखा । रूप रेख बिन अगम अलेखा ॥
 अठमेवा पुरुष को जाना । अठवाँ लोक तेहि संत बखाना ॥
 कोउकोउ आठ अटारी भाखा । कोउकोउ आठ महल कहै जाको
 संत बिना कोउ भेद न पावै । ताते तुलसी येहि बिधि गावै ॥
 यह बिधि भेष पंथ मैँ नाहीं । संत मिलै तो पावै राही ॥
 सुरति चढ़ै गगन को धावै । तौ अठमेवा पुरुष को पावै ॥
 पाँच बासना मन से जावै । तब मन राह पुरुष को पावै ॥
 नरियर ऐनक मुकर लगाई । मन मोढ़ै पुनि बास उड़ाई ॥

तीनि गुनन का तिनुका तोड़ै । इंद्री गौ घृत रित को मोड़ै ॥
 कदली छेद बास चढ़ पारा । सेत के परे निरखि वहि द्वारा ॥
 सो पारी जाइ पवन सो पावै । सेत सुपारी पुनि दरसावै ॥
 यहि बिधि चौका जो कोइ जानै । सोई कबीर पंथ हम मानै ॥
 और अनेक बिधिकस कस कहिये । स्याना होइ समझि लखि लैये ॥
 थोड़े मै लखि लेइ स्याना । बहुत बहुत क्या करूँ बखाना ॥
 सूच्छम बूझ भेद हम भाखा । थोड़े माहिँ भेद कह्यो ता का ॥
 या से भेद संत कर न्यारा । कोइ बूझै संतन का प्यारा ॥
 जिन पर संत दयाली कीन्हा । अगम बूझ कोइ बिरले लीन्हा ॥
 कहा कहा कहूँ अगम की बाता । तुलसी बूझ संत संग साथी ॥
 ता से मौन मौन होइ रहिये । जस जग देखि ताहि बिधि कहिये

भेद राम रामायन के रचने का

॥ चौपाई ॥

भेष अबूझ जगत नहिँ जानै । कस कस कहूँ कोऊ नहिँ मानै ॥
 जग अपनी बिधि मै सब माना । ता से उन से करी बखाना ॥
 राम रामायन माहीं गाई । सात कांड कहि अस बिधि भाई ॥
 रावन राम किया सम्बादा । औरौ कही बनाइ जियादा ॥
 जग सब अंध फंद गति बूझा । राम राम गति जानि अगूझा ॥
 उन अंधरन मिलि कै हम गाथी । यहि बिधि राम चरित्र सुनाथी ॥
 सब जग कहै राम रस भाखी । राम बिना कछु इष्ट न राखी ॥
 तुलसी तौ भये राम उपासी । यहि बिधि सकल जगत करै हाँसी ॥
 सब अंधन मै महुँ पुनि चोटा^१ । कस कस कहूँ जगत सब खोटा ॥
 राम काल जग खाइ बढ़ाया । मै दयाल पद औरै गाया ॥
 राम काल जग कारन भाखा । सो सूझा नहिँ इनकी आँखा ॥

(१) चोटा = चोर ।

राम जगत हम येहि बिधि गावा । नहिँ देखा जग मोर निभावा ॥
 राम राम कछु इष्ट न मानी । जग अँधरे को कहा बखानी ॥
 राम चरित्र राम बिधि राखी । दसरत राम अजुध्या भाखी ॥
 ये नहिँ अगम राह कर पंथा । अगुन सगुन जहँ नहिँ तहँ संता
 निरगुन सरगुन इष्ट न जाना । चौथा पद सत नाम बखाना ॥
 अगुन सगुन दोउ काल की फाँसी । जग मैँ कहूँ जगत करै हाँसी ॥
 वो साहिब पद इन से न्यारा । तीनि लोक निरगुन के पारा ॥
 निरगुन सरगुन दोउ न जाई । तेहि घर संत करै पासाही^१ ॥
 तुलसी इष्ट संत को जाना । निरगुन सरगुन दोउ न माना ॥
 जो जो संत अगम गति गाई । निरगुन सरगुन नहिँ ठहराई ॥
 जो कोइ बूझै तुम कस गावा । राम राम कहि ग्रंथ बनावा ॥
 हम कछु और भेद दरसावा । जब अबूझ अँधरा समझावा ॥
 जो ग्रंथन मैँ गाइ सुनाई । जियत न मिलै मुए कस पाई ॥
 मैँ मति ठीक ठीक कर गावा । पंडित भेष जगत नहिँ पावा ॥
 राम राम कहि सब जग मरिया । आदि अंत मध कोउ न तरिया ॥
 राम जो कहै परै भौ खानी । राम मरम मन आप न जानी ॥
 जो कोइ करै राम की टेका । सो भौ भरमै खानि अनेका ॥
 तुलसी सत्त सत्त कहि भाखी । जस जस सूझ जौन जेहि आँखी
 फूलदास बिधि सुनहु बनाई । येहि बिधि तुलसी ग्रंथन गाई ॥
 और कबीर दादू रैदासा । दरिया नानक अगम तमासा ॥
 सूरदास नाभा अरु मीरा । औरौ संत अगम मति धीरा ॥
 अरु अस बिधि सब साखि बनाई । सो सो सभन अगम गति गाई
 जस जस मैँ पुनि भाखि सुनावा । संत कृपा रज महुँ पुनि गावा ॥

॥ सोरठा ॥

फूलदास सुनु बैन, आदि सैन अंतै कही ।
जो कबीर मत ऐन, संत सार लारै लई ॥१॥
ये संतन मत सार, जो अगार अंदर लखा ।
चखा सुरति पद सार, आदि अंत बिधिसत्र लखी ॥२॥

॥ दोहा ॥

तेल बोल जेहि लखि परै, तुलसी निरखि निहार ।
सार पार सूरति करै, तत्र लख लोक अगार ॥

॥ राग बिलावल ॥

तुलसी जग तरक तेल, बोल हेर हारा ॥ टंक ॥
देखौ दुर्ग काल जाल, माँगै स्वर्ग बास हाल ।
लिये मोह भरम जाल, ख्याल खोजि पारा ॥
बूझै नहिँ साध संत, खोजै नहिँ आदि अंत ।
पावै कस पिया पंथ, बूढ़ै भौ धारा ॥
ऐसा भौ भरम माहिँ, काम क्रोध लारा ॥१॥
राम प्रिये परन ठान, मन से सुत त्रिये मान ।
माया बस परत खानि, बूझ खोज पारा ॥
येहि बिधि अज्ञान बास, बूझै मृत अंत नास ।
प्रीति मुक्ति कह अकास, स्वाँस नास न्यारा ॥
ऐसी बुधि हीन चीन्हि, बूझि ले गँवारा ॥२॥
चाहत पद राम बास, रामहिँ पुनि होत नास ।
वोहू पुनि काल फाँस, आस मौत मारा ॥
वा से कोउ करौ न हेत, बूझै नर अंध अचेत ।
सूरति छबि नाम लेत, चौथे पद पारा ॥
याही ब्रत बान ठान, संत पंथ न्यारा ॥३॥
देखौ कृत कर्म काग, या से पुनि निकस भाग ।
साधौ सत सुरति लाग, लखि अकास पारा ॥

ऐसी लख मान सीख, नाहीं भौ खानि नीक ।
 ऐसी अज अमर लीक, तुलसी तन छारा ॥
 याही घट खोज रोज चौज मौज मारा ॥४॥
 भाखा सत मत पसार, ता का भौ भिन अपार ।
 चाखा पद मूर सार, जाहिर जग सारा ॥
 पावै सत मत्त सार, देखै अगमन बिचार ।
 उतरौ भौ सिंध पार, नौका भौ वारा ॥
 तुलसी घर घोर सोर, निरतौ चित चारा ॥५॥
 तुलसी तन माहिँ पैठि, छाँड़ौ नर सकल टेक ।
 आदि और अंत देखि, टेक एक सारा ॥
 कहनी मन मैं बिचार, तेरा कोउ ना निहार ।
 निरखो नैना पसार, वाहि को अधारा ॥
 तुलसी ये खूब अजूब, पावै मन मारा ॥६॥
 मो को सब जगत कहत, तुलसी के राम टेक ।
 जाना निज एक अलेख, संतन के लारा ॥
 जा के नहिँ रूप रेख, देखा जो जाइ अदेख ।
 ऐसा पद पार पेख, कोटि राम चेरा ॥
 तुलसी तत करि बिचार राम खानि घेरा ॥७॥
 तुलसी सतगुरु की दृष्ट, ता से निरखा अदृष्ट ।
 सत्त लोक पुरुष इष्ट, वे दयाल न्यारा ॥
 मोरी लौ चरन लार, छिन छिन निरखत निहार ।
 कीन्हा पद पूर पार, काल जाल मारा ॥
 तुलसी ये जगत भ्रष्ट, देख मैं दिदारा ॥८॥
 तुलसी ये अंड खंड, निरखा सगरा ब्रह्मंड ।
 मारा मन काल डंड, छाँड़ छूट न्यारा ॥

धरती और चंद सूर, निरखा सगरा जहूर ।
लीन्हा रन खेत सूर, संतन मत सारा ॥
तुलसी दीदा निहार, भागौ बटपारा ॥६॥

॥ सोरठा ॥

फूलदास सुन बात, जगत भूल बिधि यों कही ।
राम रहै भौ खानि, जा की आसा जग महीं ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास सब बिधी बताई । जगत राम हम यहि बिधि गाई ॥
हम संतन मत अगम बखाना । हम तो इष्ट संत को जाना ॥
संत इष्ट लखि बार अरु पारा । उन चरनन सूझा सत सारा ॥
उन सम और इष्ट नहिं भाई । राम करम सब भौ के माई ॥
संत अगम घर कीन्ह पयाना । सो घर राम न सुपने जाना ॥
राम करम बस भौ के माई । संत अगम घर नित प्रति जाई ॥
संत जाइ निरगुन के पारा । राम रहै निरगुन भौ वारा ॥
संत जाइ निरगुन जहँ नाहीं । सरगुन को कहौ कौन चलाई ॥
सरगुन निरगुन दोउ से न्यारा । वा घर संत करै दरबारा ॥
निरगुन राम भौ जग मै आई । संत अगम घर अपने जाई ॥
राम रहा तिहुँ लोक समाई । कर्म भोग भौ खानि रहाई ॥
तीनि लोक के चौथे पारा । वा से परे संत घर न्यारा ॥
राम काँच सम की मत जाना । संत गती हीरा परमाना ॥
वाँ पैसे मै जग ले आवै । राम काँच मन जग को भावै ॥
संत अगम हीरा गति न्यारी । केहि बिधि पावै जगत भिखारी ॥
ये मत बिरले खोज कोउ कीन्हा । संत कृपा से हीरा चीन्हा ॥
जो जेहि संत लखावै भाई । जब वह हीरा हाथै आई ॥
वो हीरा पत्थर मत जानौ । हीरा नाम अगम घर मानौ ॥

वो हीरा चौथे पद पारा । राम जगत जौहरी निहारा ॥
 राम जगत जौहरी पै नाहीं । हीरा अगम संत पै पाई ॥
 संत कृपा कोइ दास निहारा । संत चरन लागे सोइ लारा ॥
 राम काँच चूरी जग माहीं । तिरिया पहिरि हाथ में जाई ॥
 फूटै बिनसै बहुरि बनाई । धक्का लगे फूट जिमि जाई ॥
 टूक टूक चूरीगर लीन्हा । घरिया करम आँच पुनि दीन्हा ॥
 घरिया करम माहिँ पुनि डारा । चूरी मनिया बहुरि सँवारा ॥
 ले बजार गलियन के माई । करि खरीद ले तिरिया जाई ॥
 पुनि कमनीगर कहत पुकारे । नीच बुद्धि तिरिया के लारे ॥
 ऐसी नीच जगत मति जानी । राम काँच जेहि अगम बखानी ॥
 राम राम बिधि ऐसी जाना । चूरी फूट कमनीगर आना ॥
 तोड़ फोड़ भट्टी औँटाई । ये बिधि राम कर्म भौ माहीं ॥
 तन भट्टी कमनीगर काला । ये जग खान राम बेहाला ॥
 ता को जाय जगत मन लाई । ता की कहो कौन गति गाई ॥
 राम आप कर्मन बस परिया । कहौ ता से जग कस कस तरिया ॥
 राम राम मन बूझौ भाई । मन को राम संत गोहराई ॥
 देखौ सब संतन की साखी । बूझि ज्ञान जब खुलि है आँखी ॥
 मन जो राम को जपै बनाई । मनहिँ राम को गारी लाई ॥
 मन से कहत बहुत यह खाटा । राम जपे केहि बिधि द्वै मोटा ॥
 मुख से मन को खाट लगावै । वही राम मन इष्ट बतावै ॥
 राम इष्ट मन गारी दइया । तुम्हरा ज्ञान आहि कस भइया ॥
 राम राम जपिया दिन राती । मन को खाट कहौ केहि भाँती ॥
 मन को खाट देउ तुम गारी । इष्ट राम पर परिहै सारी ॥
 अपने मन में ज्ञान बिचारा । बूझ करौ सतसंगति लारा ॥
 जग सब भूल भूल के माहीं । बुद्धि कर्म बस बूझ न आई ॥
 भेष पंथ सब भारि बिचारा । बहु पुनि परे राम की लारा ॥

राम राम पुनि आपुहि गावै । जो कोइ बूझि ताहि बतलावै ॥
 उन से बूझ राम कहँ होई । कह सब माहीं रहा समोई ॥
 राम राम सब माहिँ बताई । चारि खानि चर अचर समाई ॥
 येहि विधि मुखसे बोलै बाता । नर पसु पंछी सब के साथी ॥
 पूछै नर मैं राम बतावै । कंठी बाँधि चेला ठहरावै ॥
 राम राम विधि सब मैं गावै । पुनि चेला कस कस ठहरावै ॥
 मुख से राम कहै सब माहीं । पुनि पूछै सेवक बतलाई ॥
 सेवक मन से ता को जानै । फिर कस राम को स्वामी मानै ॥
 स्वामी सब के माहिँ समावा । पुनि सेवक कस कस बतलावा ॥
 राम बसा सब जग के माहीं । ये तो जग स्वामी भया भाई ॥
 सब घट माहीं राम बिराजा । घट मैं रामहिँ करै अवाजा ॥
 चेला करि तुम नाम पुकारी । बोलै को लख दृष्टि पसारी ॥
 को अवाज चेला मैं दोन्हा । को बोलै केहि चेला कीन्हा ॥
 बोलनहार राम बतलावौ । सिष्य करौ सेवक ठहरावौ ॥
 कस कस बुद्धि तुम्हारी भाई । बुद्धि गई मति ज्ञान हिराई ॥
 राम राम करि मुक्ति तुम्हारो । बोलै चेला राम बिचारी ॥
 बोल राम तुम चेला कीन्हा । चेला मुक्ति कै न विधि दीन्हा ॥
 बोल राम रित चेला थापा । बुद्धि गई तुम बूढ़े आपा ॥
 बूझै खूब खूब कर देखौ । तुलसी बचन हृदैं मैं पेखौ ॥
 तुलसी बूझ अबूझ बिचारा । साँच झूठ परखौ निरधारा ॥
 मन गुन ज्ञान बुद्धि संग बूझो । तुलसी नहिँ कछु कही अबूझी ॥
 निंदा भाव कीन्ह कछु नाहीं । निंदा संत न करिहँ भाई ॥
 निंदा भाव नर्क की खानी । ता को संत न करै बखानी ॥
 ये अबूझ अपने से जानौ । ता से निंदा कहि कर मानौ ॥
 तुम निंदा कर बूझा भाई । संत मता सतसंग न पाई ॥
 संत मता सतसंगति जानौ । सार असार सबै पहिचानौ ॥

बिन सतसंग बूझ नहिँ आवै । ता से निंदा करि ठहरावै ॥
 संत सरन से उतरै पारा । सो तो तुम निंदा कर डारा ॥
 मुख से कहौ संत मत न्यारा । संत बिना नहिँ होइ उबारा ॥
 संत गती न्यारी तुम भाखौ । न्यारी कहि पुनि ताहि न ताकौ ॥
 संत का भेद बेद से न्यारा । अस अपने मुख कहौ बिचारा ॥
 संत साध कहौ सब से न्यारा । पुनि सुनि कै नहिँ मानौ लबारा ॥
 न्यारी कहै सत्त सत जाना । न्यारी सुनै देइ नहिँ काना ॥
 न्यारी को न्यारी कर बूझै । न्यारी गुनै सुनै नहिँ सूझै ॥
 कहै न्यारी मुख मीठा लागै । न्यारी सुनै तभी उठि भागै ॥
 अपने मुख से न्यारी भाखै । न्यारी सुनि उठि कै कस भागै ॥
 न्यारी सुनि बूझै नहिँ भाई । ता से कछू हाथ नहिँ आई ॥
 ये अदबुद सुनियौ अज्ञाना । न्यारी कहै सुनै नहिँ काना ॥
 भेष जगत की ऐसी रीती । ज्यों भेड़ी जग बहै अनीती ॥
 या बिधि से जग बेद भुलाना । संत मता ता से नहिँ जाना ॥
 फूलदास ये येहि बिधि लेखा । परघट नहीं संत गति पेखा ॥
 जो कोइ परघट कहत बुझाई । तो भगरा करने को धाई ॥
 गुप्त मता संतन ने भाखी । कागद मैं मिलिहै नहिँ साखी ॥
 साखी सब्द ग्रंथ जो गावै । बिन सतसंग समझ नहिँ आवै ॥
 ये झूठे कागद के माहीं । ढूँढ़ ढूँढ़ सब जनम सिराई ॥
 ज्यों बाजीगर डंका मारा । ठगन जगत इंद्रजाल पसारा ॥
 ऐसी सब ग्रंथन की बानी । ता मैं ढूँढ़ै भेष अजानी ॥
 या से इन के हाथ न आवै । गुप्त संत बिधि कैसे पावै ॥
 फूलदास मति बूझौ भाई । अस जग अंध कहा कहौ गाई ॥
 सब सब बिधि बिधि गाइ बताई । फूलदास बिधि भूल सुनाई ॥

सम्वाद साथ गुनुवाँ बेटा हिरदे अहीर के

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

इतने में हिरदे चलि आये । संगहिँ सुत दरसन को लाये ॥
 दोऊ दरस डंडवत कीन्हा । चरन धाड़ पुनि हमरे लीन्हा ॥
 हम पूछी हिरदे से बाता । आज को लाये अपने साथ ॥
 हिरदे पुत्र सामने कीन्हा । हम पूछी केहि नाम से चीन्हा ॥
 हिरदे कहै यह जगत बिधाना । गुनुवाँ नाम से पुत्र कहाना ॥
 पूछी तुलसी कौन ठिकाना । कहँ से आये कहौ बिधाना ॥
 हिरदे कहै सुनो हो स्वामी । मोसे जुदा रहै यह जानी ॥
 रह लखनऊ मोर यह बेटा । बहुत दिनन पर मो से भँटा ॥
 मोरे मिलन काज यह आवा । सो स्वामी के दरसन पावा ॥
 स्वामी चरचा सुनी बिख्याता । फूलदास साथ के साथ ॥
 इन सब वह चरचा सुनि पावा । या के मन में भर्म समावा ॥
 ये स्वामी जस ज्ञान बखाना । या की समझ बूझ नहिँ माना ॥
 राम राम तुम कछू न गाई । राम से और कोऊ बतलाई ॥
 राम से और कोऊ नहिँ दूजा । यह या के मन आई बूझा ॥
 कह तुलसी गुनुवाँ सुन बाता । रह दो चार रोज यह राता ॥

॥ प्रश्न गुनुवाँ ॥

॥ चौपाई ॥

माथ नवाइ जोरि जुग पानी । स्वामी से बूझैँ इक बानी ॥
 राम राम जग बिरत बिराजा । जिन ने किये अनेकन काजा ॥
 जक्त भेष सब साध बतावा । तुम ता को कछू नहिँ ठहरावा ॥
 सब मिलि कै ये बिधी बखानी । महुँ पुनि सुनी कहौँ यह बानी ॥
 राम ने सिंध पखान तरावा । जल पर सिंहा राखि उतरावा ॥

और पहलाद भक्त को तारा । ता कारन हरनाकुस मारा ।
 गुजरी एक बिन्द्रावन माहीं । तिन पुनि कथा सुनी इक ठाहीं ॥
 कथा माहिँ इक सुना प्रसंगा । राम राम नौका चित चंगा ॥
 उन सुनि साँच मान मन धारी । वो उतरी जमुना के पारी ॥
 अजामील अस पातकि होई । ता सुत नाम नरायन सोई ॥
 मरत बार सुत नाम पुकारा । सो पहुँचा मुक्ती के द्वारा ॥
 गनिका सुवा पढ़ावत तारी । राम राम कहि उतरी पारी ॥
 ध्रू ने अटल तपस्या कीन्हा । पदवी राम अटल तेहि दीन्हा ॥
 और गज अर्ध नाम गोहरावा । ता को तुरत स्वर्ग पहुँचावा ॥
 बालमीक जपि उलटा नामा । राम राम कहि मुक्ति समाना ॥
 महादेव दुइ अच्छर बासी । राम राम कहि भये अविनासी ॥
 अस परचे जो राम के गावै । तुलसी पत्र लिखा इक ठाँवै ॥
 राम राम इक पत्र लिखाया । या की बिधिसब साखि सुनाया ॥
 पत्र एक पर राम लिखाना । पलरा माहिँ धरा तेहि जाना ॥
 इक पलरा पर द्रव्य चढ़ावा । दूजा पलरा पत्र धरावा ॥
 पलरा पत्र उठा नहिँ भाई । राम राम की ऐसी बड़ाई ॥
 महिमा राम राम अस गाई । नामदेव पुनि गाइ जियाई ॥
 येहि बिधि साखी बेद पुकारै । सास्तर कहै राम ही तारै ॥
 ऐसी बिधि मिलि राम की साखा । सोई राम तुम ने नहिँ राखा ॥
 राम राम बिधि तुमहूँ गावा । तुमहूँ राम राम समझावा ॥
 या का भरम बहुत मोहिँ आई । या की बिधी बिधी समझाई ॥
 पहिले तुमहूँ राम कहि गावा । राम राम कहि भाखि सुनावा ॥
 अब तो मोड़ तोड़ तुम डारा । राम राम कहो झूठ पसारा ॥
 या की बिधी भेद समझावौ । राम छाँड़ि तुम केहि को ध्यावौ ॥
 सब जग साखि तुम्हारी गावै । तुलसी राम राम समझावै ॥

या की स्वामी साखि सुनैये । मेरे मन का भर्म मिटैये ॥
 सो स्वामी मो को समझावौ । मेरे मन का भर्म छुड़ावौ ॥

॥ दोहा ॥

स्वामी कहौ बुझाई, भर्म भाव मो को भयो ।
 मन मैं संक समाई, राम राम कह्यो ना कह्यो ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

सुन गुनुवाँ तो को समझाऊँ । आदि अंत या की बतलाऊँ ॥
 सत्तलोक इक पुरुष अपारा । चौथे पद के पार विचारा ॥
 तासु अंस जिव पुरुष नियारा । जा का पद चौथे के पारा ॥
 ता के पुत्र भये पुनि भाई । सोला निरगुन तिन कर नाई ॥
 सो निरगुन जो पुरुष से भैया । जा मैं लघू निरंजन कहिया ॥
 ता को संत काल गोहरावै । सोई राम रमतीत कहावै ॥
 सोई निरंजन कहिये काला । आदहि जोति बिछाई जाला ॥
 पुरुष निरंजन जोती नारी । ये दोऊ मिलि सृष्टि रचा री ॥
 तिन के पुत्र तीन जो जाना । ब्रह्मा विष्णु ताहि कर नामा ॥
 तीजे संभू छोटे भाई । तीन पुत्र या विधि उपजाई ॥
 निरंजन पिता जोति है माता । ये तीनों इन से उतपाता ॥
 रमतीता सोइ बूझै काला । जोती काल रचा जंजाला ॥
 ता के भये दसौ औतारा । काल अंस जग राम पसारा ॥
 रमता राम कर्म के माहीं । रमतीत राम काल की छाहीं ॥
 रमतीत काल ने जाल पसारा । रमता रहा राम भौ जारा ॥
 राम कहौ सोइ मन है भाई । मनहिं राम जिन जक्त बुड़ाई ॥
 राम काल सब संत पुकारा । जा को जपै यह जक्त लबारा ॥
 ब्रह्मा विष्णु महेसर जाना । बेद कहे सोइ भूठ पुराना ॥
 ये तीनों ने जाल पसारा । राम काल ने सब जग मारा ॥

राम काल को जपै बनाई । चर और अचर सभी चरखाई ॥
 राम काल को जपिहै भाई । जम बंधन भौ खान समाई ॥
 रमतीत काल जोति है ठगनी । तीन पुत्र उपजाये अपनी ॥
 सास्त्र बेद और दस औतारा । ये सब जानौ काल पसारा ॥
 या के मत में परिहै प्राणी । काल जाल ये जम की खानी ॥
 तीनि लोक जम जाल पसारा । वो दयाल पद इन से न्यारा ॥
 वो दयाल समरथ है दाता । सो पद को कोउ संत समाता ॥
 वा की राह संत से जानै । भेषजक्त^१ दोउ नहिं पहिचानै ॥
 संत मता कोइ भेद न जाना । सूरति संत चढ़ै असमाना ॥
 पहुँचै सूरति अगम ठिकाने । अपना आदि अंत घर जानै ॥
 सूरति मिलै पुरुष को जाई । तिन को नाम संत है भाई ॥
 संत राह सूरति को पावै । और सब भेष खानि में आवै ॥
 आदि पुरुष को देखै नैना । तब अदृष्ट की बूझै सैना ॥
 पतिबरता सो पुरुष पिछानै । वा को इष्ट संत सब मानै ॥
 और इष्ट नहिं जानै भाई । राम इष्ट ये काल कहाई ॥
 जो कोइ राम पतिव्रत कीन्हा । सो सब परे कर्म आधीना ॥
 जिन दयाल से सूरति लगाई । सो पहुँचे वा पद के माई ॥
 येहि बिधि संत कहैं गोहराई । अस अस संत सभी समझाई ॥
 राम काल जो जपै बनाई । संत बचन निंदा ठहराई ॥
 संत बचन निंदा कर माना । ता ते परे नर्क की खाना ॥
 या का कोई भर्म लै आवै । बार बार चौरासी पावै ॥
 आप अबूझ बूझि नहिं लावै । संतन को नास्तिक ठहरावै ॥
 यह सब भेष अंध भये भाई । संतन को निन्दक ठहराई ॥
 संतन की बूझै कोई बानी । तौ छूटै चौरासी खानी ॥
 राम काल को दूर बहावै । निस दिन संत चरन लौ लावै ॥

(१) मं० दे० प्र० के पाठ में "भक्त" अशुद्ध है ।

वो दयाल कहूँ राह बतावैँ । तब जिव अपने घर को जावैँ ॥
 संत चरन पावैँ निरबारा । राम काल जग फाँसी डारा ॥
 जो कोइ गहै राम की सरना । छूटै न जनम मरन का धरना ॥
 कहै राम के होइ गये बेटा । ता को परिहै जम को सौँटा ॥
 जो कोइ भये राम के प्यारे । खानि गये जम लातन मारे ॥
 तुलसी सत सत यहि मत भाखा । या मैं पच्छपात नहिँ राखा ॥
 संत बचन जेहि सत्त न भासी । जाकी होइ जनम की नासी ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी कहै बुझाई, गुनुवाँ बूझै बात यह ।
 राम भर्म भौ खानि, सब कहै संत पुकारि कै ।

॥ प्रश्न गुनुवाँ ॥

॥ चौपाई ॥

पुनि स्वामी इक पूछैँ बाता । केहि बिधि ये जिव होइ सनाथा ॥
 भ्रू प्रहलाद जो गनिका भइया । सेसनाग गज नामदेव कहिया ॥
 बालमीक अरु सबहि बखानी । अजामील सिव गुजरी जानी ॥
 तुलसी पत्र राम लिखवाई । और पखान जल माहिँ तराई ॥
 ये स्वामी कहौ कैसी भैया । कहै गुनुवाँ मो को समझैया ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

सुन गुनुवाँ मैं बूझ बताई । मन ठहराई सुनौ चित लाई ॥
 राम अनादि चारि जुग भैया । ग्यारह जीव ताहि मैं तरिया ॥
 ता मैं सात जीव की चरचा । और चारि बतलावौ परचा ॥
 गिरे परे दस पाँच अरु होई । ये सब साखि बतावौ सोई ॥
 पोढ़ पोढ़ तौ सातै भैया । चारि बिधी परचे की कहिया ॥
 चारौ जुग जिव भये अनेका । सतजुग द्वापर त्रेता देखा ॥
 कलजुग सुधाँ चार जुग पेखा । चार जुगन कै पूछैँ लेखा ॥

ता में सात जीव सब तरिया । और जीव गये कहाँ जो मरिया ॥
 राम राम चारो जुग आवा । चारो जुग सबहिन मिलि गावा ॥
 निरमल सतजुग जीव अनेका । राम राम जपि बाँधी टेका ॥
 सो तरे जीव अनेकन होई । तुम ने सात जीव कहे सोई ॥
 और जीव का भाखौ लेखा । तरि गये होइहैं जीव अनेका ॥
 और नहीं थोरे पुनि कहिये । सतजुग क्रोड़ जीव तो चाहिये ॥
 सतजुग उजली बुधि मन होई । राम जपा निश्चय से सोई ॥
 ता में क्रोड़ जीव तौ चाही । ये तो सात नाम भये भाई ॥
 और अनेक राम जपि जानी । सात तरे की हम नहीं मानी ॥
 क्रोड़ जीव का नाम बतावै । तब हमरे मन साँची आवै ॥
 उजला सतजुग सात बखाना । मैला कलि का कैन ठिकाना ॥
 सतजुग सात निष्ठ से गैया । कलजुग एक तरे नहीं भैया ॥
 सतजुग में तुम सात बतावा । कलजुग कर्म नष्ट लपटावा ॥
 जो कोइ कहै राम से तरिहै । झूठ समझि मन में नहीं धरिये ॥
 राम रमा जुग चारो खानी । तरिहै या से कस कस मानी ॥
 तुम को कहते सरम न आई । या को मन में बूझो भाई ॥
 येहि बिधि तुम मन अपने बूझा । करि बिचार तब परिहै सूझा ॥
 क्रोड़ों ऋषि मुनि जपि पुनि होई । क्रोड़ों तपसी जानौ सोई ॥
 क्रोड़ों इष्ट नेम पुनि करिया । कइ इक राम पतिव्रत धरिया ॥
 राम राम कहि सब जग तरते । भौसागर में कोइ न परते ॥
 जो तुम कहौ करै परतीता । सतजुग में थी सत की रीता ॥
 साँचा जुग परतीत न आई । झूठे कलि की कैन चलाई ॥
 काल राम मन उतपति माहीं । राम न तारा होइहै भाई ॥
 सत जुग राम कहे नहीं तरिया । भौसागर में सब जिव परिया ॥
 तुम तो कहौ राम सब माहीं । चार खान में रहा समाई ॥
 राम खान में रहा बिराजा । कस कस भयो तुम्हारो काजा ॥

राम खान बस रहिया भाई । तुम को कस मुक्ती पठवाई ॥
ये सब जानौ झूठी बाता । या में खैहौ जम की लाता ॥
सत सत लोक राह चढ़ि जाई । तब यह जीव मुक्ति को पाई ॥
राम राम की झूठी आसा । गये राम कहे जम की फाँसा ॥

॥ प्रश्न गुनुवाँ ॥

॥ चौपाई ॥

तुम पुनि राम राम कस कहिया । सब ग्रंथन में साखि सुनैया ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

जग अबूझ कारन हम गाई । जो करै इष्ट राम से भाई ॥
जो हम न्यारा भेद सुनावै । तो जग माहिँ रहन नहिँ पावै ॥
ता से न्यारा भेद न भाखा । संत भेद हम गुप्तै राखा ॥
भेद ग्रंथ में गुप्त लखावा । पुनि काहू की दृष्टि न आवा ॥
हम ने भाखा अगम अलेखा । जा कै मरम न जानै भेषा ॥
हम सतपुरुष अलखलखवावा । बेद न भेद भेष नहिँ पावा ॥

॥ प्रश्न गुनुवाँ ॥

॥ चौपाई ॥

स्वामी एक मोहिँ समझाई । गुजरी सिला की कहौ बुझाई ॥
सब भाखै जल में जो तरिया । या बिधि कहौ मोर मन भरिया ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

या की मैं परतच्छ बताई । देखौ जाइ नजर से भाई ॥
या की बिधि मैं तुरत बताऊँ । ज्यौँ बजार सौदा समझाऊँ ॥
जस बजार में सौदा लीन्हा । परखा तोल दाम तेहिँ दीन्हा ॥
अपने मन में साँची आई । पैसा दीन्ह गाँठि बँधवाई ॥
ऐसा परचा ततवर पेखौ । अपने नैन नजर से देखौ ॥

वोहि पानी वोहि पत्थर होई । वोहि पुनिराम लिखावै सोई ॥
 राम लिखौ पत्थर के माई । पानी डारि देखि ले भाई ॥
 जो पत्थर पानी नहि बूझा । तौ तुम जानौ राम अगूढा ॥
 पत्थर डूबै राम लिखे से । तौ तुम बुझिहौ राम कहे से ॥
 ततवर करौ नजर से पेखौ । ये तौ आज आँख से देखौ ॥
 संसय सोग सब भारि निकाँरौ । ले पत्थर पानी में डारौ ॥
 जो जल पत्थर रहि उतरानी । सिल गुजरी की साँची मानी ॥
 बूझै पत्थर राम लिखाना । अपने बूझन की अस जाना ॥
 एक बिधी में और बताई । ता से देखौ सत्त बनाई ॥
 राम राम जेहि तुमहिं दृढ़ाओ । ले पत्थर वोहि हाथ लिखाओ ॥
 सोइ पत्थर वोहि हाथ डरावै । जो बूझै झूठे कर गावै ॥
 नहिं तौ और बिधी इक भाखौ । जैसी बिधी जुगत करिता कै ॥
 राम राम जग कहै अनेका । राम इष्ट जेहि जेहि करि देखा ॥
 सोइ सोइ हाथ सभन लिखवावै । पत्थर लिखि पानी सोइ नावौ ॥
 एक एक बिधि बिधि से डारी । ये परचा सब देखौ भारी ॥
 या में कोइ परतीती होई । सब का परचा भिनि भिनि जोई ॥
 या में रहै भरम इक साथ । ये लिखि देखौ अपने हाथा ॥
 तुलसी पत्र की बिधी बताई । सोई वृच्छ बहुत जग माई ॥
 पत्र तोड़िके परचा पेखौ । लिखि वोहिराम पत्र धरि देखौ ॥
 पत्र तोल में हलुक उठाना । तौ यहि बिधि झूठी करि जाना ॥

॥ गुनुवाँ उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी स्वामी सुनु बिख्याता । ये सब वाहि समय की बाता ॥
 वाहि समय में यह बिधि होती । आज कलू नहिं होइ यह भोती १
 राम राम जपि सिव अबिनासी । ये भी वाहि समय की बाती ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

रामराम कैने बिधि कहिया । जा से सिव अबिनासी भैया ॥
मुख से जप कीन्हा कछु औरी । ये गुनुवाँ बिधि कहौ बहोरी ॥

॥ गुनुवाँ उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

गुनुवाँ कहै सुनो हो स्वामी । मुख से जपि जपि राम बखानी ॥
महादेव ने मुख जप कीन्हा । ये भया वाहि समय का चीन्हा ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ।

॥ चौपाई ॥

या मैं राम बड़ा नहिँ होई । ये तो समय बड़ा भया सोई ॥
राम कहे सिव नहिँ अबिनासी । वे भये समय भाव बिधि बासी ॥
ये तो समय बड़ा बिधि भाखी । राम बड़ा कहौ केहि बिधि राखी ॥
राम बड़ा जब जानै भाई । जल में पत्थर आज तराई ॥
उन को बड़ा जबै हम जानै । आज लिखे पत्थर उतराने ॥
समय भाव पत्थर उतराई । कहौ राम की कौन बड़ाई ॥
कहौ राम से मुक्ति बताई । पुनि फिरि ले समया ठहराई ॥
कभी राम को बड़ा बतावौ । कभी लेइ समया ठहरावौ ॥
एकहि बात सत्त ठहरावै । तब सत हमरे मन में आवै ॥

॥ दोहा ॥

एक कहै दूजी कहै, दो दो कहै बनाय ।

ये दो मुख का बोलना, घने तमाचे खाइ ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी सुन गुनुवाँ भाई । समय बड़ा कै राम बड़ाई ॥
या में एक सत्त करि भाखौ । एक बात झूठी करि राखौ ॥
जो तुम कहौ राम सब तारा । परचा देखि न कहै लबारा ॥
ऐसी बड़ी राम गति जेही । समया झूठ ताहि कर देई ॥

राम से समय बढ़ा है भाई । कहौ राम की कौन बढ़ाई ॥
 समया झूठ राम करि डारै । ऐसी कहौ तो साँच बिचारै ॥
 समय राम की कला उड़ाई । तुम जपि मुक्ति कौन बिधि पाई
 अपनी मुक्ति खोज नहिँ पावौ । राम राम कहि जगत दृढ़ावौ ॥
 जो सच्चा तुम राम सुनावौ । तौ पत्थर पानी में नावौ ॥
 जब जानै वोहि सच्चा रामा । पानी पत्थर आज तिराना ॥
 अपनी देखी कहौ न भाई । मुए गये की बिधी बताई ॥
 साँचा सोई मिलै जो आजी । मूए मुक्ति बतावै पाजी ॥
 जीवत मिलै सोई मत पूरा । मूए कहै समझ सोई धूरा ॥
 अब सुन आगे बिधी बताऊँ । महादेव की बिधि समझाऊँ ॥
 महादेव राम नहिँ जपिया । ये साखी झूठी तुम कहिया ॥
 महादेव तो जोग कमाया । राम राम जोगी नहिँ गाया ॥
 उन अपनी इंद्रो मन जीता । मुद्रा साधी पाँच पुनीता ॥
 स्वाँसा साधि गगन मन धावा । उनमुनि साधि कै गगन लगावा
 चाचरि भूचरि भावक जानी । खेचरि मिलि यों पाँच बखानी
 आगे अगोचरि साखि सुनाऊँ । ऐसे जोगी जोग जनाऊँ ॥
 जोग किया जब भये अविनासी । राम राम कहे काल की फाँसी
 करि के जोग उन जोति समाने । जोति दृष्टि मुक्ती पद जाने ॥
 मुक्ती भोग भोग भया भाई । पुनि फिरि फिरि चौरासी पाई
 संत मते की राह न जानी । या से भरमे चारो खानी ॥

॥ प्रश्न गुनुवाँ ॥

॥ चौपाई ॥

हे स्वामी तुम सत्त बताई । ये सब मेरे मन में आई ॥
 एक बिधी मोहिँ वरनि सुनावौ । बालमीक बिधि साखि बतावौ
 अजामील गति कैसी भैया । सो बिधि मो को वरनि सुनैया

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी सुन गुनुवाँ बाता । बालमीक की सुन बिख्याता ॥
 बालमीक जप उलटा कहिया । उलटा जपत मुक्ति नहिँ भैया ॥
 सूधा जपि जपि जन्म सिराना । मुक्ती को सुपने नहिँ जाना ॥
 उलटा जपत मुक्ति जो होती । सुलटे मिलन जपा जप थोथी ॥
 जीवत मुए मुक्ति नहिँ पाई । ये जग झूठी जाल बिछाई ॥
 अजामील का भाखौँ लेखा । सुन गुनुवाँ अपने मन पेखा ॥
 नारायन जेहि सुत का नामा । ता कै मोह बंध बस जामा ॥
 अपने सुत से मोह जो कीन्हा । मरते नाम नरायन लीन्हा ॥
 मुक्ति भई अस कहैँ बुझाई । या की बिधी कहूँ समझाई ॥
 जग में पुत्र सभन के होई । राम कृष्ण नारायन सोई ॥
 गोविंद नाम गोपाल मुरारी । येहि बिधि पुत्र नाम जुग चारी ॥
 मोह बंध बस नाम पुकारी । नाम पुत्र जग होत उबारी ॥
 येहि बिधि मुक्ति होत जो भाई । तौ भौ मैं जिव एक न जाई ॥
 ये सब जानौ झूठी बाता । राम काल जिव कीन्ही घाता ॥
 और तुम ने ध्रू मुक्ति बतावा । सो तौ गगन दृष्टि में आवा ॥
 ध्रू तारे की मुक्ति बतावौ । सब तारे की बिधि समझावौ ॥
 तारा गगन मुक्ति जो होती । तारा टूट गिरै भुँड जाती ॥
 जो तुम ध्रू को अटल बताया । गगन फूटि ध्रू कहाँ समाया ॥
 पाँच तत्त का होइहै नासा । कहौ ध्रू ने कहँ कीन्हा बासा ॥

॥ दोहा ॥

चंद मरै सूरज मरै, मरिहँ जिमीँ अकास ।
 ध्रू पहलाद भभीषना, परे काल की फाँस ॥

॥ चौपाई ॥

सुन गुनुवाँ सब बिधी बताई । ये सब की तोहि भाखि लखाई ॥
 अब पहलाद का भाखौँ लेखा । सो तुम सुन कर करौ बिबेका ॥
 दस औतार काल के भाई । ता मैं नरसिंघ है दस माहीं ॥
 हरनाकुस का उदर बिदारा । ये जानौ सब काल पसारा ॥
 वे दयाल एक सब माहीं । वो कहौ केहि का मारन जाई ॥
 हरनाकुस कौ मारि बिदारा । पुनि पहलाद राज बैठारा ॥
 राज भोग जिन कीन्हा भाई । सो तेहि पुत्र बिलोचन राई ॥
 बे लोचन केवलि भयौ सोई । जा को बावन बाँधे जोई ॥
 जो मुक्ती वा की होइ जाते । बली छुड़ावन केहि बिधि आते ॥
 आवागवन मुक्ति नहिँ भाई । बली छुड़ावन कस कस आई ॥
 भागवत मैं देखौ यह साखी । बली काज आये अस भाखी ॥
 जो पहलाद मुक्ति को जाता । आवागवन केहि कारन आता ॥
 सहाय करी नरसिंघ बतावा । पिता मारि राज जिन पावा ॥
 राज करै सो नरकै जाई । कस कस ता की मुक्ति बताई ॥
 जो नरसिंघ जिवत ले जाता । तौ ता की हम मानै बाता ॥
 राज थापि तेहि भोग करावा । भोग भोग भौ खानै आवा ॥
 ता की मुक्तिसाखि बतलावौ । कहि झूठी झूठी समझावौ ॥
 सुवा पढ़ावत गनिका तारी । यह बिधि भाखूँ कहूँ बिचारी ॥
 सुवा पढ़त जो गनिका तरती । सहजै होत जक्त सब मुक्ती ॥
 सुवा सुवा घर घर मैं होते । तौ मुक्ती का सोच न करते ॥
 धू तप की तुम साखि बताई । गोपीचंद भरथरी भाई ॥
 पढ़ पढ़ सुवा मुक्ति जो होते । तौ पुनि राज काहे को तजते ॥
 धू को तप की बिधी बताया । राज छाँड़ि तन खाक मिलाया ॥
 गनिका मुक्ति सहज बतलावौ । धू जी राज गये किमि गावौ ॥

कभि सुवा पढ़ते सहज बतावा । कभि कभिकष्ट तपस्या गावा
ये तौ बिधी मिली नहिँ भाई । ये सब झूठ झूठ सी गाई ॥

॥ सोरठा ॥

सुन गुनुवाँ ये बात, राम काल जग में फँसा ।
बसा करम के माहिँ, लसा खानि चारौ भरी ॥

॥ गुनुवाँ उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

हे स्वामी सत सत तुम भाखी । समझि परा बूझी सब साखी ॥
ये सब काल जाल कर लेखा । अपने मन में किया बिबेका ॥
पुनि गुनुवाँ बोला अस बानी । महुँ आप चरनन लपटानी ॥
चरन दास जानौ मोहिँ चेरा । किरपा दृष्टि मोहिँ तन हेरा ॥
मैं पुनि रहैँ चरन के लारा । जीव काज मम करौ सुधारा ॥
अब मैं सरन आपुकी लीन्हा । राम काल धोखा यह चीन्हा ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

अब तुलसी अस करी बखानो । हिरदे की संगत पहिचानो ॥
निस दिन हिरदे संग निहारौ । हिरदे से होइ है निरबारौ ॥
मन को थिर कर बूझौ बाता । मन थिर बिना न आवै हाथा ॥
इंद्री मन थिर सूरति हेरो । तब भौजल से होइ निबेरो ॥
ये हिरदे रहै हमरे पासा । तन मन बिधी रहा येहि दासा ॥
ये सत संगत सगरी जानी । या से प्रीति करौ पहिचानी ॥
हिरदे का तुम भेद न पाई । सूरति पाइ चरन चित लाई ॥
या से पिता भाव नहिँ मानौ । सूरति सैल चरन में आनौ ॥

॥ हिरदे उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

तब हिरदे बोला अस बानी । अब चालन घर कहूँ बखानी ॥
ये गुनुवाँ परसाद कराऊँ । पुनि सिरनाइ चरन मैं धाऊँ ॥
अस कहि दीन डंडवत कीन्हा । चरन पाइ मारग को लीन्हा ॥

॥ प्रश्न गुनुवाँ ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी स्वामी अरज हमारी । किरपा करौ कहौ निरवारी ॥
हिरदे की मोहिँ बिधी बताई । हिरदे पार समझ मोहिँ आई ॥
अस बिस्वास मोर मन आवा । या की गती कहौ परभावा ॥
मैं स्वामी निज दास तुम्हारा । ये कहिये बूझौँ निज सारा ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

तब तुलसी बोले यहि भाँता । हिरदे भेद सुनाऊँ बाता ॥
इन सतसंगति बहु बिधि कीन्हा । संत चरन मैं रहे अधीना ॥
दीन बिधी और गुरुमत लीन्हा । संत चरन घट अंतर चीन्हा ॥
सूरति लीन अधर रस माती । का पूछौ हिरदे की बाती ॥
सतसंगति बिधि सगरी जाना । सूरति सैल फोड़ि असमाना ॥
दस दिस पार सार सब जाना । नौलख कँवल पार पहिचाना ॥
मानसरोवर बेनी तीरा । जल प्रयाग बहै निरमल नीरा ॥
ता मैं न्हाइ चढ़े असमाना । सतगुरु चौथे पार ठिकाना ॥
निसि दिनि सैल सुरति से खेला । सुरति नाम करै निस दिन मेला ॥
अष्ट कँवल दल गगन समाई । सहस कँवल पर तेहि की राही ॥
ता के परे चार दल लीन्हा । द्वे दल जाइ दोइ मैं कीन्हा ॥
यहि बिधिरहै दिवस अरुराती । जानै कोइ न इन की बाती ॥
कोउ न भेद जान घर माई । यह रहै सूरति अधर लगाई ॥

ऐसे कई दिवस गये बीती । ता पीछे भइ ऐसी रीती ॥
चलि हिरदे पुनि घर को जाई । घर में तिरिया पुत्र रहाई ॥
रात बास घर अपने कीन्हा । भोजन कर पुनि कीन्हा सैना ॥
पुनि पुनि निसा गई अधराती । चढ़ि गई सुरति सैल रस माती ॥
ता समय तिरिया कीन्हा उपावा । रोग सोग अपना दुख गावा ॥
जब हिरदे मन कीन्हा बिचारा । ये गृह साल जाल है न्यारा ॥
अस मन में कछु भई उदासी । पुनि तब से रहे हमरे पासि ॥

॥ गुनुवाँ उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी स्वामी बिधी बताई । हिरदे की कछु अगम सुनाई ॥
हिरदे पार सार गति पाई । तुलसी स्वामी अगम लखाई ॥

हाल अभ्यास तीनों पंडितों का

॥ नैनू उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

इतने में पंडित चलि आई । करो डंडवत परसे पाँई ॥
स्यामा नैनू माना नामा । तीनों मिलि बैठे बोहि ठामा ॥
पुनि नैनू ने अरज बिचारी । स्वामी तुम चरनन बलिहारी ॥
बाम्हन जाति मान मद भारी । स्वामी तुम ने लीन्हा उबारी ॥
अब मैं अपनी बिधी बताऊँ । स्वामी सुनिये चित कर भाऊ ॥
चमकै बीज अरु गगन दिखाई । अंदर स्वाबी फैलत जाई ॥
पाँच तत्त रँग भिन भिन देखा । कारा पीरा सुरख सपेदा ॥
और जंगाल रंग तेहि माई । येहि बिधि पाँचौ तत दरसाई ॥
ता से सुरति भिन्न होइ खेली । तेहि के आगे चली अकेली ॥
सहस कँवल से न्यारी जाई । सेत दीप द्वारे के माई ॥
ता से चली निकर होइ न्यारी । देखा सब ब्रह्मंड पसारी ॥
नैनू यह बिधि बिधी बताई । तुलसी सन्मुख जाइ सुनाई ॥

तुम्हरी कृपा और कछु पैहैं । पुनि चरनन में आनि सुनैहैं ॥
 हम जड़ जीव बिद्या के माते । बाम्हन जाति बुद्धि में राते ॥
 पढ़ि पढ़ि कै हम जनम गँवावा । संतन सन्मुख राखि दुरावा ॥
 मैली बुद्धि ज्ञान मति छोटा । संतन से मन राखा मोटा ॥
 ता से बिधी भेद नहिं पाई । अब स्वामी तुम सब दरसाई ॥
 तुम्हरी कृपानजरि बिधिसारी । बिधि बिधि देख परो गति न्यारी

॥ स्यामा उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

तब स्यामा बोला अति दीना । मन बुधि चित चरनन में लीना
 तुलसी स्वामी मैं बलिहारी । तुम्हरे चरनन में सुख भारी ॥
 जिन जिन तुम्हरे चरन निहारा । सो सो उतरे भौ जल पारा ॥
 जो जो चरन और कोउ धरिहै । भौ के माहिं कधी नहिं परिहै ॥
 ये मेरे मन सत कर भासा । तुम्हरे चरन छूटि जम फाँसा ॥
 हे दयाल तुम किरपा कीन्हा । मेरी सुरति करी लौलीना ॥
 हात उजास जोति हिये माई । छिन छिन सुरति ताहि में लाई
 जोति फाड़ सुरति गइ आगे । मानौ सुरति द्वार पर लागे ॥
 द्वार बैठि देखा हिये माई । चंद और सुरज गगन सब ठाई
 घट में देखा अगम बिलासा । सो सब भाखूँ तुम्हरे पासा ॥
 अब आगे जो परचा पाऊँ । पुनि चरनन में आनि सुनाऊँ
 स्वामी हमें दया नित कीजै । निस दिन चरन सरन राखि लीजै
 स्वामी हम ने अपति बिचारी । तुम दयाल कछु मन नहिं धारी
 हम ने टहल कछू नहिं कीन्ही । तुम ने वस्तु अमोलक दीन्ही ॥
 सास्तर नाहिं न बेदन माहीं । और पुरान येहि जानत नाहीं
 ब्रह्मा या को अंक न चीन्हा । येहि बिधि औतारन से भिन्ना
 आतम ब्रह्म से यह गति न्यारी । चीन्है कोइ कोइ संत सँवारी ॥
 संत चरन जोई जिव जाना । ता का आवागवन नसाना ॥

संत चरन जो चीन्है नाई । पुनि पुनि चौरासी भरमाई ॥
अस अस समझि परायह स्वामी । सो दयाल किरपा से जानी ॥
संतन की गति अगम अपारा । हम पंडित लघु पावै न पारा ॥

॥ माना उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

माना कहै जोर दोउ हाथा । चरनन माहिँ डारि कै माथा ॥
स्वामी हम कीन्ही अजगूती । मारन काज कीन्ह मजबूती ॥
तुम दयाल कछु स्वाल न भाखा । मन से द्रोह कछू नहिँ राखा ॥
हम औगुन कहि कर कर भाखा । तुम स्वामी चित कछू न राखा ॥
लड़का कपूत बाप देइ गारी । पितु औगुन तेहि नाहिँ बिचारी
तेहि समझाई मिठाई दीन्हा । पुनि पुनि ताहि बोध कर लीन्हा
येहि बिधि भाँति भई गति मेरी । स्वामी से कीन्ही बरजोरी ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी माना मनहिँ बिचारी । ये बिधि होति आइ जुग चारी
संत जगत दोऊ के माई । येहि बिधि आदि अंत चलि आई
अब या का बरतंत सुनाऊँ । बिधि दृष्टांत बहुरि दरसाऊँ ॥
संत जगत-तारन बतलावै । जग पुनि उन को मारन धावै ॥
परमार्थ की राह बतावै । सब जग उनकी निंदा लावै ॥
साधू जीव करै उपकारा । जिव मत-हीन उन्हीं को मारा ॥
जस बालक फुड़िया दुख माई । माता चहै नीक होइ जाई ॥
पकि फुड़िया बालक दुख पावै । माता फोड़न ता को चावै ॥
बालक माता मारन धाई । वो जानै मो को दुखदाई ॥
माता कहै नीक होइ जावै । तब मोर हिरदा माहिँ जुड़ावै ॥
माता सुख उपकार बतावै । बालक के मन मैं नहिँ आवै ॥

बालक बुधि जग रीती जाना । माता अस मत संत बखाना ॥
 ये दुख का उपकार बतावै । वे पुनि उन को मारन धावै ॥
 ऐसी संत जगत की रीती । या में तुम का करी अनीती ॥
 ता का इक दृष्टांत बताऊँ । हाथी ऊपर नकल दिखाऊँ ॥
 हाथी की बिधि बरनि सुनाई । माना सुनियो मन चित लाई ॥
 हाथी का इक बन रहै भाई । तहँवाँ हथिनी अनेक रहाई ॥
 ता में गज मकरंद रहाई । ता की बिधी सुनौ तुम भाई ॥
 गज मकरंद की बिधी बताई । सब हथिनी सँग रहै बनाई ॥
 दूजा हाथी रहै न लारै । दूजा देखि प्रान से मारै ॥
 सब हथिनी सँग आप रहाई । दूजा बन में रहन न पाई ॥
 हथिनी ब्याई तेहि को देखै । नर बच्चा होइ मारै जे कै ॥
 बच्चा नारी जो कोइ होई । ता को नहिँ मारै पुनि सोई ॥
 नर को देखि प्रान हरि लेई । मादी देखि बोल नहिँ तेही ॥
 नर बच्चा जहँ रहन न पाई । यह बिधि आपु रहै बन माई ॥
 सब हथिनी में आप रहाई । दूजा हाथी रहन न पाई ॥
 सब हथिनी मिल कीन्ह बिचारा । ये तौ बूढ़ भया तन सारा ॥
 हाथी बच्चा रहन न पावै । जो उपजै तेहि मारि गिरावै ॥
 बूढ़ भया येहि छूटै प्राना । पुनि फिर अपना कै न ठिकाना ॥
 सब हथिनी मिल कीन्ह बिचारा । ये बिधि बच्चा होइ उबारा ॥
 वा बन में इक साथ रहाई । बच्चा ले राखौ तहँ जाई ॥
 साधू दयाहीन नहिँ होई । वो पालै पुनि वा कौ सोई ॥
 यह कहि हथिनी कीन्ही आसा । बच्चा डारि कुटी के पास ॥
 साधू देखि दया अति आई । बच्चा लीन्ह कुटी के माई ॥
 दया जानि तेहि पालन कीन्हा । मोटा भया जाति को चीन्हा ॥
 चलयौ जहाँ सब हथिनी ठाहीं । गज मकरंद देखि तेहि भाई ॥
 सन्मुख जुढ़ भया तेहि जाई । ये जवान वो बूढ़ा भाई ॥

गज मकरंद को मारि गिराई । पुनि हथिनी में आप रहाई ॥
 पुनि बच्चा ये कीन्ह बिचारा । वोहि साधू ने मोहि उबारा ॥
 साधू मारि मिटाऊँ ख्यालै । मो सरिखा दूजा नहिँ पालै ॥
 सो पुनि मेरा बैरी होई । ता से साधू मारैँ सोई ॥
 यह बिचारि साधू को मारा । ये बिधि माना यह संसारा ॥
 वो साधू बच्चा को पाला । सो पुनि भया ताहि का काला ॥
 दया जानि उन किया उबारा । वे बच्चा साधू को मारा ॥
 साधू जग को ये बिधि जाना । येहि बिधि चारौ जुग परमाना ॥
 काल बुद्धि सब जग के माहीं । संत दया बिधि मानै नाहीं ॥
 वे दयाल बिधि दया बिचारा । कोइ कोइ जीव होइ उपकारा ॥
 सब जग जीव काल मुख माई । कोइ कोइ जीव निकस पुनि जाई ॥
 सुनु माना जग का ब्यौहारा । आदि अंत अस रचा पसारा ॥
 या में तुम को दोस न भाई । आदि अंत ऐसै चलि आई ॥

॥ माना उबाच ॥

॥ चौपाई ॥

तुम दयाल पूरे है स्वामी । जीव काल बस तुम्हें न जानी
 तुम परमार्थ राह बताई । जग कर्मिं स्वारथ को धाई ॥
 अब स्वामी इक अरज बिचारी । मैं तुम चरनन की बलिहारी
 जो कछु बस्तु आप ने दीन्हा । ता बिधि भाखि सुनाऊँ कीन्हा
 नील सिखर होइ सूरति जाई । स्याम सिखर के पार समाई
 सातौ दीप सेत के पारा । जहँ होइ पहुँचे गगन अधारा
 तहँ पुनि सैल सुरति से कीन्हा । आतम निरखि भिन्न लख लीन्हा
 घट घट देखा सब्द पसारा । सूरति चढ़ी सब्द की लारा
 सुरति सब्द मैं जाइ समानी । जस जस भई सो भाखि बखानी
 जब स्वामी तुम दाया कीन्हा । बस्तु अगम की हाथै दोन्हा
 अनेक जन्म ये देह सिराती । पुनि मरते कहूँ हायन आती

मैं पुनि सतगुरु तुम को जाना । तुलसी सत सतगुरु कर माना
जस जस सतगुरु की जस रीती । तस तस मेरे भइ परतीती

॥ श्लोक ॥

मूकं करोति बाचालं, पंगुं लंघयते गिरिम् ।
यत् कृपालमहं बंदे, परमानंद माधवः ॥१॥
द्वै द्वै लोचन सर्वानां, विद्या त्रय लोचनं ।
सप्त लोचन ज्ञानीनां, भगवान् अनंत लोचनं ॥२॥

॥ सारठा ॥

तुलसी परम दयाल, काल कैवल्य सुति भिनि भये ।
माना मरम निहाल, को कृपाल तुलसी बिना ॥

॥ चौपाई ॥

माना के मन होस निकाारी । तुलसी चरन सरन गति सारी ॥
स्वामी तुलसी सतगुरु दाता । अगम निगम का किया बिख्याता
सतगुरु सत्त सत्त हम जाना । सतगुरु बिना न मिलै ठिकाना ॥
बिन सतगुरु पावै नहिँ कोई । बिन सतगुरु सब गये डुबोई ॥
तुम सतगुरु मोहिँ राह लखाई । आदि रु अंत नजर में आई ॥

॥ सारठा ॥

तुलसी परम दयाल, तुम स्वामी दाया करी ।
छूटा भ्रम दुख जाल, कहि दयाल बिधिसत्र लखी ॥

॥ चौपाई ॥

अस कहि माना सीख जो मंगी । नैनू स्यामा तीनों संगी ॥
सीस टेक डंडवत कीन्हा । चरन छुए पुनि मारग लीन्हा
तीनों पंडित मारग जाही । कीन्हा गवन भवन की राही
पुनि गुनुवाँ आया तेहि बारा । किया प्रनाम डंडवत सारा ॥

॥ गुनुवाँ उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

गुनुवाँ पूछै तुलसी स्वामी । एक बिधी मैं कहूँ बखानी ॥
जीव राह की जुगत बताही । ता से छूटै जम की राही ॥

तुम दयाल सतगुरु है स्वामी ! जा से होइ जीव कल्याणी ॥
ये भौजाल जगत ब्यौहारा । ता मैं जीव कर्म बस डारा ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

सुनु गुनुवाँ यह जम की बाजी । जग संसार यही मैं राजी ॥
पंडित और समझै नहीं काजी । ये सब झूठ काल से राजी ॥
इन की बात न चित पर दीजे । ये सब पाप पुन्य मैं भीजे ॥
संत चरन की आसा कीजे । संत सरन मुक्ती करि लीजे ॥
ये जग में कछु नाहिन भाई । सुप्र जगत जिव भौ भरमाई ॥
राम कृष्ण दोऊ बटमारा । सिव ब्रह्मा मिलि फाँसी डारा ॥
या से संत राह धरि लीजै । उन कि कहनि चित से नहिं दीजै ॥

॥ गुनुवाँ उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

चरन बंद तुम्हरी सरनाई । ये सब झूठ समझ मैं आई ॥
मेरे चित का भर्म उठावा । जब से चरन सरन में आवा ॥
हिरदे मोहिं बिधी समझावा । भर्म भाव बिधि सबहि बतावा ॥
अब प्रभु कृपा दृष्टि मोहिं कीजै । जीव सरन अपना करि लीजै ॥
मैं तौ स्वामी तुम को पाये । तुम्हरे चरन सरन चित लाये ॥
अब को उवात बिधी नहिं भावै । सूरति तुलसी चरन समावै ॥
अब कछु राह मोहिं को दीजै । यह गुनुवाँ अपना करि लीजै ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

जब वहि को कछु राह बताई । गुनुवाँ सीस चरन तर नाई ॥
सुनु गुनुवाँ यह बिधी बताई । मन धिर करौ गुनौ मत भाई ॥

(१) मन में गुनावत न

UNIVERSITY LIBRARY.

RECEIVED ON

15 MAY 1924

सूरति सोध कँवल में राखौ । नित प्रति सुरति दृष्टि होइ ताकौ
येहि बिधि रहौ दिवस और राती । गुनुवाँ गुनन करौ मत भाँती

॥ सोरठा ॥

सुनु गुनुवाँ यह बात, बिधि बिचार गुप्तै रहौ ।
कहौ न काहू साथ, येहि बिधि मन में बसि रहौ ॥

॥ चौपाई ॥

चरन लाग मारग कौ लीन्हा । घर को सुरति गवन जिन कीन्हा ॥

॥ फूलदास उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

स्वामी हम को नाहिँ बिसारी । नेक सुरति हमहूँ पर डारी ॥
हम को अपना दास बिचारौ । अस जानि मेरी ओर निहारौ

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास बिधि करौ बिचारा । बिन चौके नाहीं निरबारा ॥
चौके की बिधि करौ बनाई । जब सूरति अपना घर पाई ॥
सूरति से नरियर को मोड़ौ । हाथै से नरियर नहिँ फोड़ौ ॥
सूरति पान पर बीरा खावौ । बरई बीरा दूरि बहावौ ॥
तीनि गुनन का तिनुकानोड़ौ । बासन पाँच इंद्रि को मोड़ौ ॥
और कहाँ लगि बिधी बताऊँ । ये चौका बिधि औरै गाऊँ ॥
जग चौके को दूरि बहावौ । सत चौका हिरदे में लावौ ॥
जग चौके की झूठी बाता । सत चौका संतन रस माता ॥
जो चौका संतन ने जाना । सोइ कबीरदास पहिचाना ॥
सो चौका तुम को बतलैहौ । ता से राह अगम की पैहौ ॥
जो कबीर ने राह बताई । सो चौके की कहाँ बुझाई ॥
जो कबीर राह बिधि गाई । सोई राह संत बतलाई ॥
संत कबीर ये अंतर नाई । या बिधि से कोइ भर्म न लाई ॥

सूरति चढ़ै संध जो पावै । सो कबीर सम चित मैं लावै ॥
 वा मैं भिन्न भाव कोइ लैहै । कर्म भाव बिधि नरकै जैहै ॥
 कहै कबीर ने अगम सुनाया । और संत नहिं वहाँ से आया ॥
 कहै कबीर अविगति से आये । और संत वो घर नहिं पाये ॥
 ऐसी बिधि कोइ मन में आनै । तौ पुनि परै नर्क की खानै ॥
 भेषी पंथ संत ये नाई । आदि अंत सो संत कहाई ॥
 आदि संत सब वहाँ से आये । भेष पंथ मैं वे नहिं पाये ॥
 भेष पंथ में ढूँढ़ौ भाई । या से तुम को नजर न आई ॥
 अंदर की आँखी से देखौ । तब पुनि संत नजर से पेखौ ॥
 तुम को नजर कहाँ से आई । चौका पंथ माहिँ उर भाई ॥
 चौका पंथ को दूरि बहावै । तब वो राह नजर मैं आवै ॥
 चौका पहा हाट बजारा । या से परै कर्म की लारा ॥
 संतन का चौका बिधि न्यारा । ये सब जानौ हाट बजारा ॥
 संतन का चौका बिधि गाऊँ । संत कृपा से समझ बताऊँ ॥
 सूरति मोड़ नरियर को फोड़ौ । अगम पान चढ़ि धनुवाँ तोड़ौ ॥
 राह बिधी कोइ संत बतावै । जीवत अगम बस्तु को पावै ॥
 तुलसी कहि इक सध्द लखाऊँ । ता मैं सब चौका बिधि गाऊँ ॥
 फूलदास तुम सुनियौ काना । बिधि चौका का सध्द बखाना ॥

॥ जैजैवन्ती ॥

एरी लै आज तौ अधर घर आई, तुलसी चढ़ि देखिया ॥८॥
 सूरत दृग दौड़ अटारी, हिये हेर लखा पिउ प्यारी ।
 सारी तौ लै हेरि निहारी, प्यारा लै संग पेखिया ॥९॥
 नरियर को मोड़ा जाई, प्रिये बास सुगंध उड़ाई ।
 बीरा पान पाये आई, सुगंधी महकाइया ॥१०॥
 मेवा आठ पुरुष लखि जानी, स्तुति हेर हिये उड़ानी ।
 सध्दारस भई रंग रानी, हरखानी पिउ पाइ कै ॥११॥

पलँग पर जाइ पौढ़ी, धन धन सुख की चढ़ी ।
 अटारी महलन चढ़ी, प्यारा पिउ लेखिया ॥४॥
 फूलदास दुग पर चौका, परवाना छाँड़ौ धोखा ।
 नरियर सुरति से मोड़ौ, तोड़ौ असमान को ॥५॥
 तुलसी लसि सुरति जाई, चौका परवाना याही ।
 बसि तिल हिरदे बिच आई, चढ़ी द्वारा पाइ के ॥६॥
 रेवतीदास को समझावा, फूलदास दोऊ लख पावा ।
 कँवला में सुरति लखाई, तुलसी बिधि पाइ कै ॥७॥
 इंद्रो पाँच बासन मोड़ा, गुन तीनि तिनुका तोड़ा ।
 पोढ़े तिनुका बासन छूटै, झूठे जग लूटिया ॥८॥
 तुलसी कबीर बखाना, सो चौका बिधि हम जाना ।
 पूछै कोइ चित ब्रत आई, ता को दरसाइया ॥९॥
 पत्र कदली छेदा जाई, जहँ सेत चदरवा तनाई ।
 तुलसी बिधि कहि समझाई, संत जनाइया ॥१०॥

॥ दोहा ॥

फूलदास चौका बिधी, सुरति नारियर मोड़ ।
 पान अमर बीरा लखौ, चखौ अधर रस और ॥
 रेवतीदास तुमहूँ लखौ, नरियर निरत निहार ।
 निजअकासपरपानहै, बीरा है निज सार ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास अस सुरति लगाई । नरियर माहिँ पंथ सोइ राही ॥
 येही पंथ की राह जो पावै । पंथ कबीर ताहि कर नावै ॥
 येही पंथ सुरति से लावै । अगम अगोचर घर को पावै ॥
 सुरति सैल करै असमाना । निज घर पहुँचै जाइ ठिकाना ॥
 या बिधि पंथ संत दरसावै । तब सत सुरति समझ घर आवै ॥
 आद रु अंत पंथ पद जाना । भाखै सतगुरु संत बखाना ॥

सतसंग करै बूझ जब आवै । सूझै मत सतसंगत पावै ॥
 जिन जिन चरन बिधी बिधि जाना । सो गुरुमत जानौ परमाना ॥
 पंथी राह रीत सब छूटै । मन की मान मनी सब टूटै ॥
 दीन होइ कर सेवै संता । जब लखि परै अगम पद पंथा ॥
 जस कबीर ने भाखा चौका । सो बिधि करौ मिटै जम धोका ॥
 उन कहि बिधि जो बूझ बिचारै । सो घर पुनि पद पार निहारै ॥
 संत गूढ़ मत गुप्त पुकारै । बूझै सतगुरु सब्द सुधारै ॥
 जो कछु कही उलट बिधि बानी । सो बिन समझ बूझ ना जानी ॥
 सब्द साखि सो भाखि सुनावै । बिन सतगुरु कछु हाथ न आवै ॥
 सतगुरु मिलै बतावै भेदा । जब जम जाल मिटै मन खेदा ॥
 संत बाग बन अंड पुकारा । सोइ ब्रह्मंड बाग बन सारा ॥
 तन मन बृच्छ देखि दुग अंडा । चढ़ कर सुरति निरखि नौखंडा ॥
 जो अंडे बिच बाग बखाना । देखा सुरति समझि असमाना ॥
 बाग बृच्छ बेली पर अंडा । सतगुरु सुरति बतावै डंडा ॥
 ये मन खलक खान बिच डारा । पाँच पचीस तीनि तेहि लारा ॥
 अब या का सुन सब्द लखाऊँ । बृच्छ बेलि अंडा अरथाऊँ ॥
 उलटावसी जो कही कबीरा । रमज रेखता मैं मत धोरा ॥

॥ रेखता ॥

अली इक बाग बन खंडा । लगे बृच्छ बेलि पर अंडा ॥१॥
 अजब इक फूल पचरंगा । भँवर बसै बास के संगी ॥२॥
 अगर सब लोग फल खावै । स्वाद बस रैन रहि जावै ॥३॥
 फले फल दाख के पेड़ा । रहत जेहि भूमि पर भेड़ा ॥४॥
 भेड़ा रहै बाग में अली जा । काढ़ि नित खात कालेजा ॥५॥
 वोही मन बीच में राजै । गरज सब सूरमा भाजै ॥६॥
 कहूँ कोइ रहन नहिँ पावै । सकल बन जीव चरि जावै ॥७॥
 कहूँ उनमान बल केरा । बनी बिच जीव सब घेरा ॥८॥

सुनौ अब तोल तन केरा । नहीं त्रय लोक में हेरा ॥९॥
 अली एक बात अनतोली । सुनी सब संत की बोली ॥१०॥
 कहै दस सीस बोहि केरा । पाँउ पचबीस तन हेरा ॥११॥
 अली मुख तीनि से खावै । अजब येहि बात में आवै ॥१२॥
 तरंग तन बीच में भावै । समझ दस सीस पर लावै ॥१३॥
 अरी धिर थोव नहिँ जाना । रहे भ्रम भाव रस खाना ॥१४॥
 अली जिन अंड को फोड़ा । सुरति निज नैन से जोड़ा ॥१५॥
 मुवा मन भाव का भेड़ा । चले सत नाम चढ़ि बेड़ा ॥१६॥
 तुलसी तब बूझ मैं आई । अगम सब समझ दरसाई ॥१७॥
 लिये सत संत के चरना । बिधी बरतंत सब बरना ॥१८॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास दिल समझ बिचारो । अस अस भेद कबीर पुकारो ॥
 मन पचबीस पाँच संग भूला । गुन तन बूच्छ बसै सहि सूला ॥
 बेली सुरति अंड पर लागी । दिल दुरबीन चीन्ह सोइ भागी
 मन कर भ्रम भूल धिर थावै । धिर कर सुरति निरति तत तावै
 नित नित ऐनक आँखि दिखावै । लिखिकागद पर अच्छर पावै ॥
 निःअच्छर निरनै गतिन्यारा । निरखि संत सो करै बिचारा ॥
 रेवतीदास रमज रस बूझा । जिन जिन को संतन मत सूझा ॥
 ये मन काल बड़ा बल भूता । पाँच पचीस संग मजबूता ॥
 तीनि गुनन तन मन बिचराजै । चल कर स्तुति मन बिषरस साजै
 ता से धिर करि सुरति लगावै । कंज कँवल बिधि बिच ठहरावै ॥
 पल पल सूरति सिखर निहारै । लील गिरी पर समझि सिधारै ॥
 रबि रज किरनि गगन के पारा । सूरति सतगुरु ऐन निहारा ॥
 सिखर निकर नभ द्वारे माई । सेता सहर अटारी जाई ॥
 स्याम कंज स्तुति दूर बहाई । द्वैदल कँवल केल हिये आई ॥
 सरवर गिरजा गुरुपद माई । कंज कँवल तज पदम सुहाई ॥

लघु दीरघ दल चारि विराजै । सतगुरु सुरति मीन जहँ राजै ॥
 फूलदास ये लखिलखि बैना । सूरति द्वार पार की सैना ॥
 या से परे आदि घर न्यारा । या से अंत संत दरबारा ॥
 जिन सतगुरु की सैन बिचारी । सो गति बूझै अगम अपारी ॥
 ये मत संत पंथ नहिँ भेषा । खोज खोज पचि मुए अनेका ॥
 सुरतवंत गुरु सैन लखावै । सो चेला सतगुरु से पावै ॥
 पदम मध्य सत सतगुरु धामी । सूरति सिमटि सद् अलगानी ॥
 जिमि सागर बागर भया सिंधा । सरिता समुँद मिलै जिमि बंदा ॥
 अस सूरति सिष सतगुरु पासा । सद् गुरु मिलि किया निवासा ॥
 गुरु सिष सार धार डक जानी । ज्यौँ जल मिलि जल धार समानी ॥
 अस अस खोज करै कोइ भाई । नित हित संत चरन लौ लाई ॥
 तन मन धन संतन पर वारै । नित नित सतसंगति की लारै ॥
 दास भाव सतसंगति लीना । दीन हीन मन होइ अधीना ॥
 चित्त भाव दिल मारग चावै । सब साधन की टहल सुहावै ॥
 ये विधि भाँति रहै रस लाई । तब सतगुरु सत दया लखाई ॥
 द्वारा दुग दुरवीन लखावै । कंज स्याम ता समझ सुनावै ॥
 ता मैं समुँदर सोत अपारा । ता मैं लील पील सम द्वारा ॥
 सूरति समझि बूझि जहँ आवै । गज गिरजा तहँ आसन लावै ॥
 निस दिन रहै सुरति लौ लाई । पल पल राखै तिल ठहराई ॥
 या मैं सुरति नेक नहिँ बिसरै । छिन छिन मन से न्यारी पसरै ॥
 येहि विधि जतन करै कोइ लाई । सूरति रहै द्वार पर छाई ॥

॥ फूलदास उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास कहै अंतरजामी । अगम वस्तु दीन्हो सहदानी ॥
 सुनी न भेष पंथ के माई । अजर पंथ मो को दरसाई ॥
 मो को कीन्ह सनाथी स्वामी । आदि अलख की दीन्ह निसानी ॥

अब तौ रहैँ चरन लौ लाई । जो कबीर सो तुलसि गुसाँई ॥
जो कबीर बिधि भाखि बताई । सो सो सब तुलसी पै पाई ॥
तुलसि कबीर एक कर जाना । दूजा भाव न मन में आना ॥

॥ दोहा ॥

तुलसि कबीर ये एक गति, दूजा कहे अचेत ।
दोनैँ स्वामी एक रस, मोर चरन से हेत ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी बिधि पहिचानि कै, दीन्हा पंथ लखाइ ।
सुरति बाँधि असमान पर, निज घर पहुँचे जाइ ॥

॥ छंद ॥

तुलसी बिधि गाई अगम लखाई । फूलदास बिधि राह लई ॥१॥
रेवती अति दासा सुरति निवासा । तिल में बासा जुगति सही ॥२॥
राती और दिवसा छिन छिन बासा । सुरति अकासा निरति रही ॥३॥
मन सुरति लागी नेक न भागी । निस दिन जागी ठहर तहीं ॥४॥
रेवती और फूला स्वामी श्रुक्ला । सूल बंध सब काटि दई ॥५॥
मनहीं बुधि पाई भूल नसाई । स्वामि सहाई बाँह गही ॥६॥
मन के भ्रम भागे धिर होइ लागे । कछु अभिलाषा नाहिँ रही ॥७॥
मन की बृत चेती छाँड़ि अचेती । सेत द्वार पर लागि रही ॥८॥
तुलसी कहि कहिया अगम लखैया । चरन पाइ सुति पागि रही ॥९॥

॥ सारठा ॥

फूलदास सुनु बात, संत चरन अति अगम गति ।
सत मत गति पद सार, ये अगार गति को लखै ॥१॥
कोइ जानै सुति सार, सब्द लार लै पार रहि ।
सिंधु बृंद सुति धार, मिलि अगार अदबुद भई ॥२॥

सम्बाद साथ गुसाँई प्रियेलाल के

॥ चौपाई ॥

नाम जाति इक अगगरवाला । कहै नाम तेहि सुरति गुपाला ॥
जिन के गुरु गुसाँई आये । प्रियेलाल अस नाम रहाये ॥
उन उनके घर किया निवासा । सुन सोइ बात दरस अभिलासा
जिन पुनि सुनी हमारी बाता । दोऊ चले दरस को साथ ॥
प्रियेलाल और सुरतिगुपाला । आये लिये हाथ में माला ॥
आये कीन्ह डंडवत बैठे । प्रीति उठी तुम दरसन भैंटे ॥
कहै तुलसी किरपा तुम कीन्हा । दास जानि प्रभु दरसन दीन्हा
अपन जानि प्रभु भयउ दयाला । स्वामी बिन किरपा को पाला

॥ प्रियेलाल उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

प्रियेलाल कहै भये प्रसन्ना । भीतर प्रेम मगन प्रिये मन्ना ॥
स्वामी दुरलभ दरस तुम्हारे । संत दरस बड़ भाग हमारे ॥
नगर नारि सब यों बिधि भाखा । सो बिधि तौ हम एक न ताका ॥
सब मिलि कहै नगर के माई । उन दरसन नहीं जावौ भाई ॥
बेद पुरान एक नहीं जानै । राधा कृष्ण राम नहीं मानै ॥
गंगा जमुना कछु न राखै । कछु नहीं आदि अंत को भाखै ॥
सब जग मिलि ये कहत बनाई । सो बिधि सुनि हमहूँ चलि आई ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

कहि तुलसी उन संत सत कहिया । मैं मति-हीन बुद्धि नहीं रहिया ॥
मैं तौ सब चरनन कौ दासा । मैली बुद्धि नीच मोरी आसा ॥
तुम्हरे चरन मोर निरबारा । पकरि हाथ करिहौ निस्तारा ॥

मैं औगुन की खानि अपारा । सूरति संत चरन की लारा ॥
मोर निबाह तुम्हारे हाथा । अब तौ लगौ चरन के साथ ॥

॥ प्रश्न प्रियेलाल ॥

॥ चौपाई ॥

हे स्वामी अस अस कस भाखौ । हम जग जीव चरन मैं राखौ ॥
काम अरु क्रोध लोभ के माते । बिष रस भोग फिरै संग साथे ॥
ये जग जाल काल दिन राती । कर्म भाव भरमै संग साथी ॥
हम चहले के जीव अनीती । छूटे तुम चरन की प्रीती ॥
श्रीभगवान जी कहत पुकारा । मैं तौ सदा संत की लारा ॥
गीता मैं अरजुन से भाखा । मो से बड़ा संत को राखा ॥
श्रीमुख ऐसे आप बखान्यो । मो से अधिक संत को जानो ॥
मो को संत भाव रस नीका । जगत भाव रस लागै फीका ॥
श्रीमत मैं अस कहत बखानी । भागवत मैं ऊधो से बानी ॥
स्वामी तुम सा संत सुजानी । हम निस्तार चरन मैं मानी ॥
संतन की गति वेद पुकारा । नेतहि नेत न पावै पारा ॥
महातम सब सब मिलि भाखा । सब से बड़ा संत को राखा ॥
मैं स्वामी इक पूछौ बानी । किरपा करि भाखौ सहदानी ॥
दास भाव पूछौ मैं स्वामी । या मैं भेद भाव नहि जानी ॥
पहिले जग कै वेद बनावा । यह रचना कैने बिधि आवा ॥
जीव कहाँ से आया कहिये । केहि बिधि कर्म माहिँ भै रहिये ॥
जीव मुक्ति कैसे करि पावै । अपने घर को केहि बिधि जावै ॥
माया मोह जगत अंधियारा । और अज्ञान काम की लारा ॥
ऐसे जीव छुटन नहि पावै । अपने घर को केहि बिधि जावै ॥
अपना ज्ञान न सतसंग मानै । गुरु बिन राह कैने बिधि जानै ॥
सतगुरु मिलै तो बाट बतावै । जब कोइ जीव मुक्ति को पावै ॥
गुरु सम बड़ा और नहि कोई । ये भगवान कही मुख सोई ॥

गुरु द्रोही पातक का मारा । कधी न उतरै भौ के पारा ॥
गुरु बिन कर्मनास को करई । भर्म माहिँ भौजल में परई ॥
गुरु से बड़ा और नहिँ रहिया । वेद पुरान संत अस कहिया ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी कहै ये सत्त बखाना । अस अस वेद पुरान न जाना ॥
ये तुम भाखा सत्त प्रभावा । वेद पुरान येही बिधि गावा ॥
पुनिसंतन कछु और बखाना । सतगुरु मता भिन्न करि जाना ॥
जगत गुरु कंठो गहि बाँधा । ता को गुरु कहौ पुनि साधा ॥
ये ब्यौहार गुरु जग सोई । मुक्ति गुरु कोइ औरै होई ॥
ये तौ गुरु जगत ब्यौहारी । इन से मुक्ति न होइ बिचारी ॥
कर्म जाति दैही गुरु करई । कर्म भोग इन से नहिँ टरई ॥
गुरु है आप करम के माई । चेला को कैसे मुक्ताई ॥
गुरु की करनी गुरु सोइ पावै । चेला आप कर्म भुगतावै ॥
जगत गुरु जिव पारन पावै । वो गुरु संत और गोहरावै ॥
कनफूका गुरु नहीं कहाई । गुरु दयाल की औरै राही ॥
वे दयाल गुरु समरथ दाता । जग भौजाल पार के करता ॥
गुरु है सद्ध सुरति है चेला । चीन्है गुरु चेला सोइ मेला ॥
वे गुरु स्वामी अगम अपारा । पिंड ब्रह्मंड दोऊ से न्यारा ॥
ता के रूप रेख नहिँ काया । वे गुरु मिलै तो मुक्ति लखाया ॥
ये तौ गुरु कर्म की लारी । आप न तरे और कहा तारी ॥
ये जानौ ब्यौहारी नाता । लेन देन पैसे के साथी ॥
खान पान चेला से माँगै । गर्भ बास कर देने लागै ॥
चेला जानि जाहि सौँ लेई । पुनि पुनि ताहि भोग करि देई ॥
पुत्र बैल घोड़ा होइ ऊँटा । सो बिन दिये कोऊ नहिँ बूझा ॥
ये गुरु लेन देन ब्यौहारा । गुरु चेला भौ कर्म पसारा ॥

कंठी बाँध गुरु सोइ भइया । जग ब्यौहार नात यहि कहिया ॥
 जग में कन्या क्वारी ब्याही । करे ब्याह तेहि कहै जमाई ॥
 ब्याह किये का नाता लागा । येहि बिधि गुरु चेला मत जागा ॥
 सतगुरु मत पद अगम अपारा । ता को चीन्ह जीव होइ पाया ॥
 वो गुरु पंथ संतही जानै । जग गुरुवा नाहीं पहिचानै ॥
 चेला बने जीव नाहीं हाना । गुरु सोइ बनै कर्म की खाना ॥
 ता से संतन भक्ति दूढ़ाई । बिना भक्ति उबरै नहिं भाई ॥
 भक्ति बिना जिव जम करै हाना । बिना भक्ति चौरासी खाना ॥
 बिना भक्ति कोइ पार न जाई । ता से भक्ति संत ठहराई ॥
 गुरु सेवा स्वामी को चीन्हो । ता से सदा काल आधीनो ॥
 स्वामी कठिन खोज करि पैहै । सतगुरु भेद संत समझैहै ॥
 स्वामी संत बिना नहिं पावै । बिना संत गुरु को दरसावै ॥
 जग के गुरु न जानौ भाई । वे सतगुरु कठिन से पाई ॥
 दास बनै सतगुरु को पावै । दास बिना गुरु नहिं दरसावै ॥

॥ प्रश्न प्रिये लाल ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी स्वामी कहौ बुझाई । कै न बिधी सतगुरु को पाई ॥
 कौन बिधी स्वामी दरसावा । कौन भक्ति से सतगुरु पावा ॥
 वे गुरु कहाँ कहाँ है बासा । स्वामी का कहौ कौन निवासा ॥
 कौन बिधी जो नजर मैं आवै । चेला कौन बिधी से पावै ॥
 सो बिधि भिन्न भिन्न दरसाई । जा से चित की संसय जाई ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

तुम ने गुरु अपने को जाना । आदि गुरु मत मर्म भुलाना ॥
 कंठी बाँधि ज्ञान बतलावा । भक्त भये सतगुरु नहिं पावा ॥
 उन सतगुरु की राह नियारी । पावै संत चरन की लारी ॥

सतगुरु आप पुरुष हैं स्वामी । गगन कंज महु अस्थानी ॥
 पिरथम अष्ट कँवल को बूझै । सहसदल कँवल पार होइ सूझै ॥
 ता के परे चार दल भाई । ता से भिन्न दोइ दरसाई ॥
 ता के आगे सतगुरु धामा । चौका मिलै गुरु परमाना ॥
 पारब्रह्म जो कहिये ऐसा । ता के आगे सतगुरु देसा ॥
 पारब्रह्म जेहि कहि गोहराई । ता ने सतगुरु भेड़ न पाई ॥
 निरगुन सरगुन दोउ से न्यारा । भिन इन से सतगुरु दरबारा ॥
 यह चेला वो सतगुरु पावै । वो सतगुरु सोइ कर्म नसावै ॥
 जहँ लगि वो सतगुरु नहिँ पावै । तहँ लगि चेला निगुर कहावै ॥
 वो सतगुरु चौथे पद स्वामी । ता की भक्ति संत सब ठानी ॥
 सतगुरु फोड़ै गगन अकासा । तब पहुँचै सतगुरु के पासा ॥
 सो घर मिलि पहुँचै उन पासा । सो चेला सतगुरु का दासा ॥
 सोई घर से सब जिव आये । निरगुन सरगुन उनहिँ बनाये ॥
 वा के पास जीव चलि जावै । सो जिव जाइ परम पद पावै ॥
 जहँ लगि वो गुरु नाहीं पावै । जगत गुरु सोइ निगुर कहावै ॥
 जगत गुरु सब निगुरा भाई । जब लगि गुरु नहिँ गगन समाई ॥
 गुरु ने अपना गुरु नहिँ पाया । चेला हाथ कहाँ से आया ॥
 खाना द्रव्य टका के माई । सो गुरु चेला घर घर जाई ॥
 ज्यौँ ब्योपारी हाट लगावा । ऐसे ये गुरु जग रस भावा ॥
 पेट काज दूकान लगाई । आप तरन की खबरि न पाई ॥
 कहै चेला को गुरु तरावै । अपनी तरन बिधी नहिँ पावै ॥
 ये ब्योहार तुम्हारा भाई । सतगुरु की तुम सुधि बिसराई ॥
 जिन ने तन का ठाट सँवारा । जीव अंस का किया पसारा ॥
 किया पिंड तन रचा बनाई । सात दीप नौखंड रचाई ॥
 सो स्वामी है घट के माई । ता से जीव सकल चलि आई ॥
 सो स्वामी घट माहिँ समाना । सबहि संत ये कहत बखाना ॥

पिंड ब्रह्मंड दोऊ से दूरा । बसै पास रहै सदा हजूरा ॥
 वा का भेद संत से पावै । चढ़ै सुरति छिन छिन मैं जावै ॥
 दास होइ ढूँढ़ै सतसंगा । चरन संत के बाँधै चंगा ॥
 जाति पाँति मोटा मन त्यागै । संत चरन में सत करि लागै ॥
 गोसाँई स्वामी पद डारै । बाम्हन जाति पाँति मन मारै ॥
 नीचा होइ दीन पद धारै । मान और मनी करै सब छारै ॥
 अस अस समझ संत को चीन्हा । संत चरन में होइ अधीना ॥
 तब उन से मारग कछु पावै । सतगुरु संत सोई दरसावै ॥
 वे कृपाल कहूँ राह बतावै । पलक माहिँ अगमन घर पावै ॥
 जीवत पावै घर में स्वामी । मुए गये की बात न मानी ॥
 जीवत मिलै सोई है लेखा । मूए भाखै अंध अचेता ॥
 वा को बेद नेत गोहराई । ब्रह्मा विष्णु राह नहिँ पाई ॥
 ऋषी मुनी पुनि कहै पुराना । सिव जोगी कोइ मरम न जाना ॥
 दस औतार जगत जिव माया । निरंकार जोती से आया ॥
 निरंकार हैं सोलहा भाई । पुरुष निरंजन जोति लुगाई ॥
 निरगुन निराकार निरबानी । चारो नाम काल अभिमानी ॥
 चारो जुगन काल जिव चारा । सोइ जग जाल निरंजन डारा ॥
 जोति निरंजन किया विचारा । ता से उतपन दस औतारा ॥
 दस औतार काल के जाना । जा मैं सगरा जगत भुलाना ॥
 निरंकार काल है भाई । जा ने तीनि पुत्र उपजाई ॥
 ता ने कीन्हा बेद विधाना । सास्तर कीन्हे बेद पुराना ॥
 या मैं ऋषी मुनी सब बूढ़ा । जग अज्ञान जीव भया मूढ़ा ॥
 देवल देव पषान पुजावै । तीर्थ बर्त संग जनम गँवावै ॥
 ऊँचे मन की राह बतावै । चारो जुग जिव खानि समावै ॥
 निरंकार काल अरु जोती । डारै मारि जीव बिन मौती ॥
 दस औतार काल ठग केरे । ब्रह्मा विष्णु पुत्र जम चेरे ॥

ठग ठग मिलि सब जाल पसारा । अस नहिँ होइ जीव निरबारा
निरंकार काल अन्याई । जोती ठगनी सब जग खाई ॥
इन से न्यारा पुरुष दयाला । जहँ नहिँ पहुँचै जोत अरु काला ॥
वो स्वामी संतन का प्यारा । वा घर संत करै दरबारा ॥
निरंकार से पुरुष न्यारा । सो साहिब संतन का प्यारा ॥
लोक तीन नहिँ चौथे माहीं । जा घर संत करै पाछाई^१ ॥
निरगुन सरगुन उहाँ न जावै । जोति न ब्रह्मा विष्णु समावै ॥
दस औतारकी कौन चलाई । वा घर संतन सुरति लगाई ॥

॥ सोरठा ॥

प्रियेलाल सुनु बात, संत गती न्यारी अगम ।

गुन निरगुन नहिँ जोति, तिरदेवा औतार नहिँ ॥

॥ चौपाई ॥

जहाँ संत तहँ निरगुन नाई । निरंकार जहँ जोति न भाई ॥
दस औतार जान नहिँ पावै । ब्रह्मा विष्णु महेस न जावै ॥
जहँ नहिँ बेद जहाँ नहिँ बानी । इन से पारै पुरुष अनामी ॥
जहँ संतन की सुरति समानी । वो घर अगम संत सो जानी ॥
दीन होइ संतन सरनाई । तब कछु राह संत से पाई ॥
फोड़ै गगन अगम को जाई । स्वामी सतगुरु भँटै भाई ॥
प्रियेलाल अस बूझि बिचारा । सब बिधि भाखि सोई निरवारा

॥ प्रश्न प्रियेलाल ॥

॥ चौपाई ॥

तुम तो कहा बेद से न्यारा । अरु पुनि भाखा अगम अपारा ॥
तुम्हरी कहन कोऊ नहिँ ठहरा । भाखा तुम ये अगमपुर डेरा ॥
राधा कृष्ण प्रिय इष्ट हमारा । तुम भाखा प्रभु और पसारा ॥
सुन कर भर्म बहुत मोहिँ आवा । तुम ने कछु कछु और सुनावा ॥
येहि बिधि बेद कहत है नाई । सो प्रभु मुख से भाखि सुनाई ॥

(१) बादशाहत ।

हम करै संध्या नेम अचारा। पूजा सेवा ठाकुरद्वारा ॥
 और सनातन धर्म हमारा। ठाकुर भोग अछूता सारा ॥
 मंदिर में कोइ जान न पावै। बरतन कपड़ा छुवा न जावै ॥
 भोजन ठाकुर करै अछूता। करते बल हाथन के बूता ॥
 और अनेक अनेक बिचारा। कहँ लगि कहौं सुचा निरवारा ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

ये सब बात अनीती भाखी। सुनी कान देखी नहिँ आँखी ॥
 ये तौ बहुत निष्ट^१ कहि भाई। कहे सुने से मन रिसियाई ॥
 ब्रह्मबिभाव कर्म तुम कीन्हा। ये तौ निष्ट^१ अनीती लीन्हा ॥
 जनम अनेकन परिहौ खाना। ब्रह्म बिभाव संत नहिँ माना ॥
 सब में आतम ब्रह्म बतावौ। चेतन ब्रह्म बिभाव लगावौ ॥
 तुम्हरै बेद पुरान बतावै। गीता भागवत सब मिलि गावै ॥
 सो तुम अपने मुख से गाई। आतम ब्रह्म एक बतलाई ॥
 चर अरु अचर सब माहिँ समाना। तुम्हरा सास्तर करै बखाना ॥
 कोउ कोउ संतन कही बुझाई। एकै ब्रह्म सबन के माई ॥
 कहि कै एक बिभाव बिचारौ। कौन बिधी ये ज्ञान तुम्हारौ ॥
 पाँच तत्त नर आतम देही। एक तत्त पाहन को सेई ॥
 जड़वत देख दोऊ के संगी। चेतन देख दोऊ में रंगी ॥
 या में लघु दीरघ को देखा। मन अपने में करौ बिबेका ॥
 इक चेतन की पूजा थापौ। चेतन एक निष्ट करि राखौ ॥
 आतम चेतन निष्ट जो भइया। पाहन जड़ सुध केहि बिधि रहिया ॥
 पाहन को तुम सुद्ध बतावौ। चेतन को धरि दोष लगावौ ॥
 बिन चेतन सुध कैसे भइया। चेतन को तुम दोष लगइया ॥
 चेतन देही तुम्हरी कीन्हा। कै पाहन तुम को रचि लीन्हा ॥

नादहि बिंद देह को साजा । पूजौ पाहन को केहि काजा ॥
 पाहन मूरति येही बनाई । गढ़ी सिलावट छाती पाँई ॥
 ता कै मंदिर ठाकुर थापी । चेतन ठाकुर मंदिर आपी ॥
 चेतन मंदिर बोलै माहीं । तुम्हरी आँखिन सूझै नाहीं ॥
 पाहन प्रेम जाइ सिर फोड़ौ । मंदिर बोलै आतम तोड़ौ ॥
 ऊपर न्हाइ अचार जो कीन्हा । अंदर मन मैला नहिँ चीन्हा ॥
 न्हाइ जो धोइ रसाई कीन्हा । सुचि भोजन ठाकुर को दीन्हा ॥
 सुचि ठाकुर को भोग लगाई । माखी ता पर बैठी आई ॥
 माखी का कछु कीन्ह बिचारा । उठि बैठै भिष्टा की लारा ॥
 यही अचार करौ तुम भाई । माखी की चौकस नहिँ लाई ॥
 दस औतार भये सब भाई । ता में तीन प्रतच्छ दिखाई ॥
 मच्छ कच्छ कहि और बराहो । ये प्रतच्छ पूजौ नहिँ भाई ॥
 मुख से दस को भाखि सुनावौ । छाँड़ि प्रतच्छ तुम जड़ को ध्यावौ ॥
 यह अपने मन बूझौ ज्ञाना । सत अरु असत करौ पहिचाना ॥
 या में भाव अभाव न जानी । सत असत्त लखि पद पहिचानी ॥
 या में निंदा भाव न भाखी । सब संतन की देखौ साखी ॥
 निंदा आहि नरक की खाना । मिथ्या संत न करै बखाना ॥
 प्रियेलाल कछु बूझि बिचारी । ये तुम ने कछु समझ सिहारी ॥
 पाँच तत्त बैराट बनाई । ता में सब ब्रह्मंड समाई ॥
 पाँचो तत्त सरीर बिधाना । सोइ बैराट कहौ भगवाना ॥
 पिंड ब्रह्मंड एक करि राखौ । पुनि निंदा करि कस कस भाखौ ॥
 जो ब्रह्मंड में बिधी बताई । सो सब भाखौ पिंड के माई ॥
 रज गुन तम गुन सत गुन भाई । ये सब ब्रह्मा बिष्णु कहाई ॥
 गो इंद्री गोपिन कर नामा । मन को मोहन सभी बखाना ॥
 राधे रकार नाम समझाऊँ । पिंड पाँच पंडौ बतलाऊँ ॥
 मन द्वै दृष्टि लीन यहि माई । सोइ दो दृष्टी भाखि सुनाई ॥

अरजुन बिधी बात समझाई । इंद्री अड़ी जो बन मन माई ॥
 भौ में सैन मन करै बुझाऊँ । ता को भीमसेन बतलाऊँ ॥
 भौ में असल नकल होइ गइया । ता कर नाम नकुल हम कहिया ॥
 सादेह दीसै सनमुख भाई । नाद बिंद बिधि देह बनाई ॥
 बिंद से बना बिंद्रावन होई । जग के माहीं रहा समोई ॥
 बसै देव इंद्री के माई । मन बस देवन में रहा जाई ॥
 बिषय भोग रस देव किये सारी । मन देवकी ये भौ रस डारी ॥
 जो सोधै मन घर को जाई । मनहिं जसोधा नाम कहाई ॥
 मन डूबा भय बल के माई । सो बलभद्र नाम है भाई ॥
 उदै कर्म मन दुख सुख माई । कर्म उदै मन मित्र कहाई ॥
 जमुना सुरति करै असनाना । सूरति चढ़ै फोड़ि असमाना ॥
 जहँ जमुना जम ना अस्थाना । इंद्री गोरस कालहि जाना ॥
 गोरस गोकुल जानौ भाई । येहि बिधि पिंड ब्रह्मंड समाई ॥
 ये नर देह मानुष के माई । देव ऋषी मुनि ताहि समाई ॥
 अरसठ तीरथ सकल पसारा । नद्दी गंडा झारि अठारा ॥
 सातौ दीप पृथी नौखंडा । तुम कहौ मनुष देह येहि पिंडा ॥
 कहँ लगि कहौ अनेक पसारा । यह ब्रह्मंड पिंड माहिँ सँवारा ॥
 संत सुरति फोड़ै असमाना । पिंड में देखा सकल बिधाना ॥
 निरखा अनुभौ मुख से भाखा । पिंड में राम कृष्ण की साखा ॥
 पिंड में राम कृष्ण लखवाया । वा अहीर पर नकल दिखाया ॥
 नकल की नकल सिलावट कोन्हा । ऐसी भूल भटक तुम लीन्हा ॥
 पाहन को थापौ भगवाना । येहि बिधि बुधि मति ज्ञान हिराना ॥
 येहि बिधि पिंड ब्रह्मंड समाना । ता को तुम छुतिया करि जाना ॥
 संतन भाखा दृष्टि हिये आँखी । ता की बिधि भिनि भिनि करि भाखी ॥
 संतन की तुम साखि मिटाओ । अँधरी आँखि भाखि समझावौ ॥
 अपना पिंड नखोजौ भाई । तुम पत्थर में दूढ़ौ जाई ॥

खोज राह तुम दूर बहाई । सूरति पाहन माहिँ लगाई ॥
 सूरति पाहन कीन्ही आसा । आसा अंत ताहि में बासा ॥
 सब मिलि टेरि टेरि गोहरावै । दूढ़ मिलै पिंड में पावै ॥
 बेद पुरान माहिँ बतलावै । बेद कहै तुहि तुहि समझावै ॥
 भागवत कहि तुहि तुहि बतलावै । सास्तर कहै तुही तुहि गावै ॥
 संत कहै तुहि तुही सुनावै । सब कहि तुही तुही करि गावै ॥
 ते बुधिहीन सूझ नहिँ पावै । ता से पाहन में मन लावै ॥
 है परतच्छ ब्रह्म तुहि आगे । जा को छुतिया करि करि भागै ॥
 भागवत सबद ब्रह्म तुहि बोलै । बिना संत को पही खेलै ॥

॥ दोहा ॥

बिन सतसंग पावै नहीं, पढ़ि पढ़ि भर्म भुलान ।
 बेद भागवत पढ़न में, नहिँ पावै सत सार ॥

॥ सौरठा ॥

संस्कृत बेदन माइँ, खेद खेद खानै चलै ।
 संत भेद नहिँ पाइ, इन सब से न्यारी कहै ॥

॥ छंद ॥

तुलसी बिधि भाखी संतन साखी । देखौ आँखी आप तुही ॥
 तुहि बेद बतावै तुहि तुहि गावै । तुहि पुरान तुहि तुही कही ॥
 तुहि तुहि सब गाई तुही सुनाई । तुहि तुहि भौ में भर्मि रही ॥
 तुहि आपा कीन्हा संत न चीन्हा । मान मनी सब दूर नहीं ॥
 सूरति नित जानी फोड़ि निसानी । ले ले निसानी अगम लई ॥
 ये अगम ठिकानै सतगुरु जानै । चौथे पद गति गवन गई ॥
 छूटै जम काला भौ जंजाला । लखि दयाल घर गवन भई ॥
 पाहन अरु पानी झूठ बखानी । जानी जिन जिन मान लई ॥
 चेतन घट माहीं घट घट वाही । बूझ सुनाई समझ सही ॥
 सब झूठ अचारा घट घट प्यारा । देखा न्यारा नेक नहीं ॥
 जिन बूझा लेखा अगम अलेखा । सत व्रत देखा द्वार महीं ॥

कोइ बूझै ज्ञाना संत बखाना । अगम ठिकाना ठौर कही ॥

॥ सोरठा ॥

प्रियेलाल सुन बात, संत सुमति गति ना लखी ।

रहे वेद के माहिँ, बहे खोज आचार में ॥

॥ चौपाई ॥

सतसंगति तुम करौ बनाई । तब तुम्हरी बुधि में लखि आई ॥

वेद बिधी बुधि रही समाई । नित पुरान पढ़ि पार न पाई ॥

अब तुम को सत बिधि समझावा । अभी तुम्हरी सो दृष्टि न आवा ॥

सतसंग करौ दीन मन लाई । इष्ट जो पाहन दूर बहाई ॥

कृष्ण राम दोउ जम की जारा । करि करि इष्ट जगत सब मारा ॥

जा को कहौ नंद कौ लाला । सो तो है सबहिन कर काला ॥

छल बल करि कौरौ संचारे । पंडौ भगत हिवारे गारे ॥

ता से कहौ कहा तुम पैहौ । खोजत खोजत जनम गँवैहौ ॥

॥ दोहा ॥

कृष्ण समीपी पंडवा, गरे हिवारे जाइ ।

लोहे को पारस मिलै, तौ काहे काई खाइ ॥ १ ॥

जो कृष्ण पारस हुते, लोहा पंडौ मान ।

कृष्ण दरस मुक्ती मिलत, गरे हिवार केहि काज ॥ २ ॥

पंडौ चारौ नर्क को, गये युधिष्ठिर धाम ।

मित्र प्रीति भगवान की, आई कौने काम ॥ ३ ॥

कृष्ण मित्र ऊधो हुते, कही एकादस माहिँ ।

कृष्ण दरस मुक्ती हुती, तप कीन्ह क्यों ताहि ॥ ४ ॥

॥ गज़ल ॥

बिंद्रावन बिंद कीन्ह सोई साँचा ।

गुसाँई गोपी के साथ बन बन नाचा ॥ १ ॥

गो में मन बिंधा सोई गोबिंद भाई ।

मनुवाँ गोपाल मूढ़ इंद्रो माहीं ॥ २ ॥

इंद्रो बसुदेव भेव सेवै मन को ।
नाद सोई नंद फंद जानै तन को ॥३॥
जिन ने तन सोधि लिया सोई जसोधा ।
पंडौ तत पाँच और झूठा सौदा ॥४॥

॥ चौपाई ॥

ऊधो कृष्ण मुक्ति जो देता । कीन्हौ तप केहि कारन हेता ॥
कृष्ण मुक्ति नहिं दीन्हौ भाई । तब ऊधो तप कीन्हा जाई ॥
अपने मित्र जो कष्ट बतावा । तप करि कै मुक्ती धौं पावा ॥
ऊधो मुक्ति मिली धौं नाहीं । तप की बिधी पुरान बताई ॥
तन छूटे पुनि कहाँ समाने । ये पुरान नहिं साखि बखाने ॥
तन छूटे की खबर न पावै । नर्क स्वर्ग धौं कहाँ समावै ॥
तन छूटे की खबर बतावै । तौ मन को परतीती आवै ॥
मुए गये की खबर न पावा । तप और कष्ट करा सोई गावा ॥
सत्त सत्त पावा की नाहीं । ऐसी बूझ सूझ नहिं पाई ॥
जीवत करतब सभी बतावै । मुए मिलन को उ ना दरसावै ॥
मुए मिलन बिधि भाखै भाई । जीवत मिलन कोऊ न बताई ॥
जीवत मिलन बिधि भाखि सुनावै । तब तुलसी के मन में आवै ॥
जीवत इत से जाइ न भाई । मूए उत से आवत नाहीं ॥
ये पुरान कस कस ठहरावा । मुए गये की खबर न पावा ॥
नेक भेद उत का नहिं गावै । इत की करनी बिधि बतलावै ॥
बिन देखे जग अँधरा मानै । पूछै पंडित पढ़ै पुरानै ॥
ये सब पोल पाल कर लेखा । मिथ्या पढ़ै कहै बिन देखा ॥
देखे की हम साखी मानै । बिन देखी कहै झूठ समानै ॥
नर्क बिधी पंडौ जो गइया । नर्क भोग पुनि कस कस भइया ॥
आगे खबर न उनकी पाई । नर्क भोग पुनि कहाँ सिधाई ॥
नर्क भोग कहौ मुक्ति सिधावा । ये पुनि खबर कौन बतलावा ॥

ऊधो तप पैस्रम^१ बतलावा । तन छूटे की खबर न पावा ॥
 तन छूटे जोड़ होड़ सो होड़ । या को भेद न पावा कोई ॥
 बिना कष्ट^२ मुक्ति नहिं भाई । यहि बिधि कृष्ण ऊधो समझाई ॥
 कर तप कष्ट इष्ट मैं नाहीं । बिन तप मित्र मुक्ति नहिं पाई ॥
 तुम मुक्ती उन से कस पाई । मित्र मुक्ति दीन्ही नहिं भाई ॥
 उन को साफ कही गोहराई । ये पुरान में देखौ जाई ॥
 ततवर मित्र कृष्ण तेहि आगे । ऊधो रोड़ जप तप को लागे ॥
 पूजा इष्ट तुम्हारा लेखा । कृष्ण मिले नहिं सन्मुख देखा ॥
 तुम मुक्ती कस कस करि लयऊ । ऊधो सन्मुख तप को गयऊ ॥
 सन्मुख कृष्ण मुक्ति नहिं पाई । तब ऊधो तप को मन लाई ॥
 पाहन नकल इष्ट को मानौ । या से मुक्ति कौन बिधि जानौ ॥
 या की बिधि इक साखि सुनाई । प्रियेलाल चित से सुनु भाई ॥
 जेहि बिधि करज साह से लावै । साह मिलै तबही कछु पावै ॥
 ता की बिधी बताऊँ गाई । सुनियो नकल इष्ट की भाई ॥
 दिवस एक साह चले गाँई^२ । अरज असामी कीन्ह बनाई ॥
 तुम तौ चले गाँव को भाई । गरज हमारी कैान चलाई ॥
 सेठ नकल अपनी लिख दीन्हा । कागद मूरत अपनी चीन्हा ॥
 मूरत नकल से कारज कीजौ । चाहौ सोई नकल से लीजौ ॥
 या से माँगिकाज सब कीजौ । दाम माँगि या से पुनि लीजौ ॥
 यहि कहि साह गाँव को गइया । तब भइ गरज नकल से कहिया ॥
 नकल साह कछु कारज कीजै । दीजै दाम काम मेरा छीजै ॥
 पुनि वो नकल नहीं कछु दीन्हा । बहु बहु भाँति बिनय उन कीन्हा ॥
 सेठ नकल मूरत नहिं बोलै । पुनि पुनि माँगै गाँठि न खोलै ॥
 बहुत बहुत बिनती उन कीन्हा । मूरत गाँठि से कछू न दीन्हा ॥

(१) परिश्रम । मुं० दे० प्र० के पाठ मे पैस्रम की जगह “आश्रम” और दो कड़ी आगे “कष्ट” की जगह कृष्ण अशुद्ध है । (२) गाँव को ।

नकल सेठ से हाथ न अइया । माँग माँग उन जनम गँवैया ॥
 असल सेठ बिन दाम न पाया । नकल सेठ से हाथ न आया ॥
 येहि बिधि असल कृष्ण नहिँ भाई । तुम ने ता की नकल बनाई ॥
 नकल कृष्ण से कछु नहिँ पाई । काहे बिरथा जनम गँवाई ॥
 येहि बिधि बूझि बूझि मन लीजै । समझ बिचार से कारज कीजै ॥
 नकल भाव तेहिँ हाथ न आवा । ये बिधि बूझी नकल प्रभावा ॥
 सादृष्ट कृष्ण ऊधो संग रहिया । मुक्ति न पाई तप को गइया ॥
 असल कृष्ण की ये बिधि कहिये । मुक्ति नकल से कस कस पइये ॥
 एकादस में कही बखाना । देखौ अपना जाइ पुराना ॥
 असल कृष्ण की बिधी बताई । नकल कृष्ण की कौन चलाई ॥
 जिन्ह गैसपेन संग कीन्ह बिलासा । समझ भाव मन बूझी आसा ॥
 विषय उपाव हाथ से कीन्हा । दौड़ दौड़ पाँवन से लीन्हा ॥
 छूटि देहि जगन्नाथ कहाये । कर्म भोग पाँव हाथ कटाये ॥
 अपना भोग आपने पाया । तुम ने ब्रह्म कौन बिधि गाया ॥
 असल कृष्ण बिधि ऐसी जोई । नकल कृष्ण की कैसी होई ॥
 असल कृष्ण जो मुक्ति न पाई । कर्म भोगि कै पैर कटाई ॥
 कहै पुरान कृष्ण गये धामा । जगन्नाथ भये कहौ प्रमाना ॥
 कभि कभि गये धाम बतलावौ । भागवत कृष्ण धाम समझावौ ॥
 बोही कृष्ण जगन्नाथ बतावौ । बोहि जगन्नाथ कृष्ण करि गावौ ॥
 धाम गये की संध न पाई । यहाँ रहे की झूठ जनाई ॥
 कौन प्रमान दोऊ में कीजै । सत्त असत्त कौन कै लीजै ॥
 या में सत्त कौन को बूझा । कहि समझावौ तुलसि अबूझा ॥
 नानक संत साखि बतलाई । कृष्ण काल तिन भाखि सुनाई ॥

॥ सवइया ॥

कालै खाइ गयौ भगवान, सो जाग्रत या जुग जा की कला है १
 कालै खाइ गयौ ब्रह्मा सिव, सो कालै खाइ गयौ जुगिया है २
 इंद्र मुनिन्द्र सुरासुर गंधर्व, जच्छ भुजंग दिसा बेदिसा है ३
 ये तौ भये सबही बस काल के, नानक संत अकाल सदा है ४

॥ चौपाई ॥

अब कबीर की साखि बताऊँ। कहि कबीर बिधि भाखि सुनाऊँ॥
 दस औतार कबीरा गावा। ताकी सबद बिधी समझावा ॥
 वोहू कही काल बस गइया। दस औतार काल के कहिया ॥

॥ शब्द ॥

आवै जाइ सो माया साधो, आवै जाइ सो माया ।
 है प्रतिपाल काल नहिँ वा को, ना कहूँ गया न आया ॥१॥
 क्या मकसूद मच्छ कछ होता, संखासुर न सँवारा ।
 है दयाल द्रोह नहिँ वा के, कहौ कैान को मारा ॥२॥
 वे करता न बराह कहाये, धरती धरा न भारा ।
 ये सब काम साहिब के नाहीं, झूठ कहै संसारा ॥३॥
 वे करता नहिँ भये कलंकी, नहीं कलिजै मारा ।
 है दयाल सबहिन को साहिब, कहौ कैान को मारा ॥४॥
 खंभ फाड़ि कै बाहर होई, तेहि पतीजै सब कोई ।
 हरनाकुस नख उदर बिदारा, सो करता नहिँ होई ॥५॥
 परसराम छत्री नहिँ मारे, ये छल माया कीन्हा ।
 सतगुरु भक्ति भेद नहिँ पाये, जीव अमिथ्या दीन्हा ॥६॥
 सिरजनहार न ब्याही सीता, जल पषान नहिँ बंधा ।
 वै रघुनाथ एक करि सुमरै, सो नर कहिये अंधा ॥७॥
 गोपी ग्वाल न गोकुल आया, मामा कंस न मारा ।
 वो दयाल सबहिन को साहिब, ना जीता ना हारा ॥८॥

वै करता नहिँ बोध कहाये, नहिँ असुरन को मारा ।
ज्ञान हीन करता नहिँ होई, माया जग भरमाया ॥६॥
दस औतार ईसुरी माया, करता करि जिन्ह पूजा ।
कहै कबीर सुनो हो साधो, उपजै खपै सो दूजा ॥१०॥

॥ चौपाई ॥

सूर सब्द या बिधि कहि भाखी । उनहुँ कही कर्मन में साखी ॥

॥ शब्द ॥

कर्म गति टारैउ नाहिँ टरै ।

कहँ वै राहु कहाँ वै रवि ससि आनि सँजोग परै ॥देक॥
गुरु बसिष्ठ पंडित मुनि ज्ञानी, रुचि रुचि लगन धरे ।
तात मरन सिधा हरन राम बन, बिपति में बिपति परे ॥१॥
पंडो के प्रभु बड़े सारथी, सोऊ बन निकरे ।
दुरबासा से स्नाप दिवायौ, जदु कुल नास करे ॥२॥
रावन अस तैंतीस कोटि सब, एकछत राज करे ।
मिरतक बाँधि कूप में डारे, भाभी सोच मरे ॥३॥
हरीचंद ऐसे भये राजा, डोम घर पानि भरे ।
भारथ में भरुही के झंडा, घंटा टूटि परे ॥४॥
तीनि लोक करमन के बस में, जो जो जनम धरे ।
दस औतार भाभी के बस में, सूर सुरति उबरे ॥५॥

॥ सोरठा ॥

प्रियेलाल बिख्यात, औतारी कर्मन कहे ।

बहे भोग भौ माहिँ, सब सब संत पुकारिया ॥

॥ चौपाई ॥

राम कृष्ण औतारी आहीं । भोगे कर्म जाइ तन माहीं ॥
दस औतार निरंजन धरिया । सोऊ काल बस भौ मैं परिया ॥
सोई निरंजन सोई निरंकारा । सोई काल धरे औतारा ॥
कर्म भाव तिन देही पाई । करै भोग भौ में भरमाई ॥

सारा जग बेदन भरमैया । औतारी साँचे गोहरैया ॥
 दीनदयाल पुरुष है न्यारा । निरंकार काल के पारा ॥
 निरंकार तक काल न जावै । वहाँ की गम जोती नहिँ पावै ॥
 वो स्वामी है अगम अगाही । जहँ संतन ने सुरति समाई ॥
 सुरति समाइ पुरुष को देखा । मिला पुरुष गम अगम अलेखा ॥
 उनका लेखा बेद न पावै । नेति नेति चारो गोहरावै ॥
 पंचम बेद सुषम नहिँ जाना । षष्ठम प्रसंग बेद कहै नाना ॥
 चारि बेद पुनि गुप्त रहाई । ता मैँ कागद लगै न स्याही ॥
 तुम पुनि पुरुष भेद नहिँ जाना । दसो बेद कहै नहिँ पहिचाना ॥
 दसो बेद से भेद न्यारा । पुरुष भेद नहिँ पावै पारा ॥
 निरंकार जोती नहिँ जाना । जहँ पहुँचे कोइ संत सुजाना ॥
 तुलसी सैल सुरति से कीन्हा । पाया अगम गम्म का चीन्हा ॥
 पत्थर पानी दूर बहावा । तब घर अगम राह को पावा ॥
 बेद कितेब पुरान उठाये । तब लखि सुरति अगम को धाये
 नेम अचार चार नहिँ माना । बोलै सब घट माहिँ दिखाना ॥
 बोल अबोल दोऊ के पारा । तहँवाँ तुलसी सुरति सँवारा ॥
 छर अच्छर निःअच्छर पारा । देखा तुलसी निरखि निहारा ॥
 अगम अगाध पुरुष दरबारा । तुलसी मिलै सुरति की लारा ॥
 तन मैँ देखि ब्रह्मंड पसारा । सो हिये हेर सुरति की लारा ॥
 हिये मैँ हेर फोड़ ब्रह्मंडा । हिये की लार सार नौखंडा ॥
 अंतर हेर हिये के माई । अंड फोड़ ब्रह्मंड दिखाई ॥
 अंतर खोज कीन्ह हिये माई । अंतर हिये माहिँ दरसाई ॥
 तन मैँ तोड़ फोड़ हिये कीन्हा । अंतर सार हिये मैँ चीन्हा ॥
 अब या का बरतंत बताऊँ । बारहमासा बरनि सुनाऊँ ॥
 द्वादस सन संबत का चीन्हा । मास मास सुनि गहौ यकीना ॥
 हिये बिच सुरति समझि घर आई । बारहमासा बरनि सुनाई ॥

॥ दोहा ॥

हिये हेरा सुत सैल से, बारह मास बयान ।
जानि सूर कोइ संत जन, सुनै सो सज्जन कान ॥१॥
गुइयाँ गोह गुमान गुन, गिरि बानी बिच बास ।
फाँस कटी कटि सुरतिकी, कीन्हा अगम निवास ॥२॥

॥ सोरठा ॥

बारह मास मिलाप, सुरति आप अपनी कही ।
लही जो तुलसीदास, बारह मास समझाय कै ॥

॥ बारहमासा ॥

(सवैया)

गुइयाँ री गुन गोह गिरा बिच मैं न रहौंगी ॥ टेक ॥
आली असाढ़ के मास बिलास, सो बास पिया बिन मोहिँ न भावै ॥
गरजि अकास की भास रही, छवि बादर की कही बात न जावै ॥
बिजली चमकै घन घोर घटा, घर घाट पिया कोउ नेक न पावै
गोह गुना गिरि बीच बसी, सो फँसी तुलसी चित चेत न आवै ॥

(कड़ी)

अगमन आयौ असाढ़हि मास। गरजत गगन रही तजि भास ॥
भान घटा नभ नैन निहार । सुरति समझि चली नभ पार ॥
पिया पद साज गहौंगी ॥१॥

(सवैया)

सावन सोर करै बन मोर, सो दादुर प्यास पपीहा पुकारी ॥
ताल मही हरी भूमि भई, सो नहीं कोइ पंछिन खोँच चुकारी ॥
मैं मन में सुनि कै बिगसी, जस ताल रही बिच कंज सुखारी ॥
जो तुलसी गुन माहिँ रही, सो भई जम साथ के संग दुखारी ॥

(कड़ी)

सावन सरवर नीर अपार । बरसत गगन अखंडित धार ॥
गैल गली सब हरियल भूमि । नील सिखर चढ़ि सुरति घूमि ॥
चमक बिजली की सहौंगी ॥२॥

(सवैया)

भादौँ का भेद कहौँ जो निखेद, सो खेद करम्म को काढ़ि निकारी ॥
 सूरति सूर भई मति पूर, सो नागिनि नारि डसी जस कारी ॥
 चेत चली जो अकास अली, सो गली गुन गोह से होत नियारी ॥
 जो तुलसी सुख नारि भई, सो गई ले लार लगन के पारी ॥

(कड़ी)

भादौँ भर्म भेद सब छूटि । काया कर्म कलस गये फूटि ॥
 नागिनि बिरह मूल डसिखाई । येहि बिधि सूरति गगन समाई ॥
 लगन संग लार लरौंगी ॥३॥

(सवैया)

कूर कुवार कुमति को जार, सो बारि बनी सब खाक मिलाई ॥
 कूकर काम भये जो निकाम, सो ठामहिँ ठाम जो भूमि भुलाई ॥
 सुन सूरति भाल सो ताल मई, गइ मान सरोवर पैठि अन्हाई ॥
 तुलसी सोइ संत के संग अड़ी, सो खड़ी सुन सब्द मै जाइ समाई ॥

(कड़ी)

कुमति कुवार जारि जस फूस । कूकर काम रहे सब भूसि ॥
 मानसरोवर सरस अन्हाई । सूरति समझ चली रस पाई ॥
 सब्द सुनि सार भरौंगी ॥४॥

(सवैया)

कातिक किरनि भई ससि सूर, सो दूर भये दल बादल सारे ॥
 भूमि मै थीर भये जल नीर, सो नार नदी सुत सिंधु संहारे ॥
 सिंधहिँ बूंद मिले चढ़ चाल, सो काल कला जम दूर निकारे ॥
 तुलसी जिन चाँप धनू पै धरी, सो करी सम सूरति संत पुकारे ॥

(कड़ी)

कातिक किरनि भास भये सूर । सलितहिँ समुंद मिलै जस मूर ॥
 बूंद सिंधु बिन फिरत बेहाल । मिलिगया सब्द कटे जम जाल ॥
 सुरति घर चाप चहौंगी ॥५॥

(सवैया)

अगहन मास अनंद अली, सो चली पिया पास पलंग बिछाई ॥
पायौ पलक के पारपती, सो सती संत सूरति सार लखाई ॥
सेज मिलाप भये पति आप, सो जीवत जनम सुफलं कहाई ॥
तुलसी मनमें सुख चैन भई, सो गई बर आदि सो साध समाई ॥

(कड़ी)

अगहन अली पिया पलंग बिछाव । जीवत जनम मिलौ अस दाँव ॥
पिया की सेज सुख सज सुति सार । नित प्रति केल करौँ पति लार ॥
अली बर आदि बरौँगी ॥६॥

(सवैया)

पूस पुरुष की होस भई, सो गई सतलोक में सौक सिहारी ॥
प्यारी सखी गुरु गैल गई, सो कही पद प्यारे की चौज चिन्हारी ॥
छाड़ रही सुनमंदिर मैं, घर घाट पिया लखि बाट बिचारी ॥
पियरसरीत की जीत भई, सो कही तुलसी जिन नैन निहारी ॥

(कड़ी)

पूस परम पद पुरुष निवास । सुति सत लोक करै नित बास ॥
सिष गुरु गवन मिले मत पाइ । प्यारी पुरुष रही घर छाड़ ॥
सखी सुख जानि कहौँगी ॥७॥

(सवैया)

माह^१ मनोहर महल चढ़ी, सो खड़ी खिरकी तक तोल बखानी ॥
जानि कही सोइ साध सुजान, सो मानी जिन्ही सोइ पास समानी ॥
पानी दूध की छान करी, सो भरी लखि सूरति सज्द ठिकानी ॥
जीवतही मरि जात सही, सो कही तुलसी जिन जानि निसानी ॥

(कड़ी)

माह महल भँभरी चढ़ि ताक । पिया की सेज सुख सत सत भाख ॥
कोइ कोइ संजजन साध बिलास । पहुँचे अगम पिया घर बास ॥
कही जिन जिवत मरौँगी ॥८॥

(सवैया)

फागुन फहम करौरी सखी, लख जात बह्यौ संसार असारा ॥
 सूरति सार के पार लखै, सो थकै मन मारग मौज अपारा ॥
 संत सिरामनि सैल कही, सो गई गुरु मारग साँभ सबारा ॥
 प्यारे पिया की पकड़ गही, सो जकड़ हिये जंजीर सी डारा ॥

(कड़ी)

फागुन फरक भयौ संसार । जिन जिन सुरति करी तन जार ॥
 सतगुरुमूल मता मुख बैन । जब लखि लखी संत की सैन ॥
 समझ सोइ पकड़ धरौंगी ॥६॥

(सवैया)

चैत चली सो सुनौरी अली, गई गैल गली सुन रीति निहारी ॥
 सेत सरासर भेद लखी, सो पकी बिधि बेनी के घाट बिचारी ॥
 सारी सरोवरि ताल तकी, पकि प्यारी अन्हाइ के काज सँवारी ॥
 जो तुलसी चढ़ि के जो चली, सो अली खिरकी बिधि आनि पुकारी ॥

(कड़ी)

चैत चली जिन चरन निहार । सो उतरी भौसागर पार ॥
 आइ अरु अंत पंथ घर बाट । सो पद परसि त्रिबेनी घाट ॥
 चीन्ह खिरकी को चहौंगी ॥७॥

(सवैया)

बैन बिधी बैसाख बिलास, सो पास पिया नित सैल सँवारे ॥
 पार के सार बिहार करै, सो बिचार बिधी सुत तार निहारे ॥
 प्रीतम मेल भया रस केल, सो केल किवार के पार पुकारे ॥
 तुलसी तन मैं जिन जान लखे, सो भखे पिया पास के भास निकारे ॥

(कड़ी)

करि बस बास बैसाख बिलास । छूटि गई तन मन की आस ॥
 प्रीतम प्यारी मिले मन खोल । रंग रस रीति सुने सब बोल ॥
 पिया सँग केल करौंगी ॥८॥

(सवैया)

जेठ की रीत करी मन जीत, सो प्रीत की बात की सैन सुनाई ॥
चेत चली तजि काल बली, सोइ जाल जली दुख दूरि नसाई ॥
जिमि धाड़ जो धीर गँभीर नदी, सुत सार सँवारि जो सब्द समाई ॥
ये मुख बैन कहै तुलसी, सो लसी सत द्वार जो सब्द को पाई ॥

(कड़ी)

जेठ जबर तन मन सुत रीत । सुरख सबज चली अगमन जीत ॥
सेत जरद रँग स्याम भुलान । पाँचोइ तत्त करी नहिँ कानि ॥

सखी सुनि पार फिरौंगी ॥१२॥

केवल ज्ञान निरवान निवास । ता से परे कहै तुलसीदास ॥
संतु चरन धरि धारौ धूरि । अगम बरन बरनौ पद मूर ॥

निडर घर सुरति भरौंगी ॥१३॥

॥ सोरठा ॥

बारह मास बयान, हिये हेरि कोइ पद लखै ।

चखै चरन रस रीति, प्रीति पार पुर्षहिँ मिलै ॥

॥ चौपाई ॥

जिन जिन हेर हिये बिच पावा । बारह मास समझि चित लावा ॥
समझि समझि कोइ बूझै साधू । सुरति सहर घर बरन अगाधू ॥
चित दे गुनै लखै सुनि काना । सत सतसंग करै परमाना ॥
धिन सतसंग साँच नहिँ आवै । धर धर धोखे जन्म गँवावै ॥
जिन सतसंग रंग रस पाई । हिरदे तिमर कपाट खुलाई ॥
मन तन सुरति फोड़ असमाना । महु हिये तन तिमर नसाना ॥
मोड़ी सुरति पोढ़ पद लारी । तेज भास लखि सुरति निहारी ॥
हिये दृगनैन निरखि जस देखा । संत सैन कोइ करै बिबेका ॥

जिन जिन सुख दुख दूरि बहाये । कर्म काल कृत धोय नसाये ॥
तन् बिच तोड़ा सुरति निसाना । सुन्न सबद सुति गगन समाना ॥

॥ दोहा ॥

सुन्न सबद तन तोड़ि कै, मोड़ि गगन की गैल ।
मूल बिलावल में कहूँ, बूझै सज्जन सैल ॥

॥ बिलावल ॥

तुलसी तन तोड़ फोड़ मोड़ पोढ़ पाई ॥ टेक ॥
देखौ नृत नैन सैन बूझै सतगुरु के बैन ।
छाँड़ौ दुख सुख सैन संतन मत चाही ॥
अंदर में आदि खोज उतरै भौजाल बोझ ।
मारौ जम काल फौज चौज चार माहीं ॥
देखौ हिये हेर खोज अंत कहूँ नाहीं ॥
सूरति नृत सैल खेल तोड़ौ असमान पेल ।
सब्दा रस सुरति मेल मार दे चढ़ाई ॥
येहि बिधि चित चेत हेत मारौ मन सूर खेत ।
छाँड़ौ सगरी अचेत हेत सेत माई ॥
ता से मन चेत बूझि देखि दृष्टि जाई ॥ २ ॥
बाहर सब झूठ छूट ऐसा मन टूट फूट ।
तन में मन आतम मोट भूला भल साई ॥
ये तौ सब काल जाल राम कृष्ण निरख हाल ।
या के सँग चलौ न चाल छाँड़ि भेद भाई ॥
यासे सतसंग सार खोजु मौज माहीं ॥ ३ ॥
साँची कहै पूर अदूर बूझै कोइ संत सूर ।
जानै अगमन अपूर मन तन रत राही ॥
का से कहौँ बात चौज सूरति मन मार मौज ।
छूटै दिल दरज दीज खोज आप माहीं ॥
रोज पार सार देख अंतर बिच पाही ॥ ४ ॥

बूझै मन सीख लीक चाखौ रस अगम चीख ।
 छूटै भौ भर्म भीख पी के पार साई ॥
 देखौ अज अमर हेर कीजे ब्रह्मंड सैर ।
 लीजै पिउ पार हेर फेरि मेहर पाई ॥
 जा की गम घोर सोर कँवलन के माई ॥ ५ ॥
 सुन्न धुन्न सुन्न माहिँ सूरति से निरख जाइ ।
 हिये माहिँ हरष पाइ लै से लै पाई ॥
 बूझै कोइ सब्द बुंद पहुँचै पार अगम सिंध ।
 सूरति से लखौ संघ फंद फाड़ जाई ॥
 सब्दा रस सुरति चीन्ह लीन पार पाई ॥ ६ ॥
 पाया सतगुरु दयाल मारामन डंड काल ।
 पाया पद पदम हाल साल जाल नाहीं ॥
 कीन्हा बहु प्यार यार लेखा अगमन अपार ।
 हर दम हिये लौ की लार कर्म को छुड़ाही ।
 ये तौ तत मत्त सार तेरे तिल राही ॥ ७ ॥
 तुलसीदास पास आस सूरति नित बढ़ि अकास ।
 सोहत अगमन बिलास बुंद सिंध आई ॥
 ऐसी दिन दिवस रैन पौँढ़ी पलंगा पै सैन ।
 चीन्हा घर आदि ऐन प्यारा गुरु पाई ॥
 न्यारा नित नित निहार प्यारे के माई ॥ ८ ॥
 याहो बिधिकहत सूर सतगुरु की चरन धूर ।
 जाना संगरा जहूर जल जल ज्योँ जाई ॥
 मो को प्रिये प्रिये लाग छिन छिन उठि निरख भाग ।
 मन से जग सुरति त्याग खग ज्योँ उड़ जाई ॥
 छिन छिन नित करै सैल घृत ज्योँ दधि माई ॥ ९ ॥

तुलसी तन निरख सार सूरति पेखा बिहार ।
 देखा पद चटक चार दीदा दरसाई ॥
 सुखमनि मन मन्न लार आगे सूरति सँवारि ।
 पाये पिया प्राग पार पूरा मद माई ॥
 तुलसी तुलसी निहार बोलै घट माई ॥१०॥

॥ सोरठा ॥

प्रियेलाल लखि बात, ये अनंत न्यारी कही ।
 सूझि बूझि हिये सोय, जब अरूप गति को लखै ॥

॥ चौपाई ॥

ये घर अगम भेद है भाई । सतसंग करै लखै तब जाई ॥
 ये अगाध की बात अनूपा । बूझै संत मिलै कोइ भूपा ॥
 अगम पंथ सतगुरु से पावै । सतगुरु मिलै तो राह बतावै ॥

॥ प्रश्न प्रियेलाल ॥

॥ चौपाई ॥

स्वामी से बूझौं इक बाता । ता की बिधि कहौ बिख्याता ॥
 जग निस्तार बेद से होई । कै कोइ और राह मति सोई ॥
 सब मिलि कहै बेद निस्तारा । बेद बिना नहिं उतरै पारा ॥
 आदि बेद चारौ जुग माहीं । जिव भौ पार उतरि के जाई ॥
 ऐसे सबी सबी मिलि गाव । सतगुरु मिलै भेद बतलावै ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

सतगुरु मिलै कहै दरसाई । बिना संत नहिं बूझ बुझाई ॥
 बेद भेद बिधि नाहीं जानै । बाम्हन पंडित एक न मानै ॥

॥ प्रश्न प्रियेलाल ॥

॥ चौपाई ॥

स्वामी दया भाव करि दीजै । दास जानि प्रभु किरपा कीजै ॥
 हे दयाल या, की बिधि भाखै । मो पर दया दृष्टि सोइ राखै ॥

मोहिं प्रभु दास भाव करि जानौ । किरपा करि सोइ करौ बखानौ ॥
मैं चैरा तुम चरन बिचारा । भाखौ आदि अंत निरवारा ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

अब भाखूँ सुन आदि अपारी । बेद अंत भाखूँ सब भारी ॥
सत्त पुरुष इक रहै अकाया । अंस तासु सोइ निरगुन आया ॥
गुन तीनों से सरगुन भइया । सोइ भगवान बैराटी कहिया ॥
सोइ बैराट से ब्रह्मा भइया । तुम कहौ ता ने बेद बनइया ॥
पुनि उन निरगुन बेद बुझाई । सोइ निरगुन ने नेति सुनाई ॥
सत्त पुरुष निरगुन से न्यारा । निरगुन काल न पावै पारा ॥
पुरुष अंस से सब जिव आये । निरगुन ने सरगुन में नाये ॥
पाँच तत्त गुन तीनि समाई । भये बैराट कर्म बिधि जाई ॥
जा को जगत कहै भगवाना । कर्म भाव चर अचर समाना ॥
रजोगुन ब्रह्मा ता से भइया । पहिले नाद बेद पुनि कहिया ॥
पाँच तत्त बिन नाद न सोई । सो बिन नाद बेद कस होई ॥
पुरुष नाम निरगुन से न्यारा । सोई अंस जिव जुग जुग सारा ॥
आदि पुरुष को जीव भुलाना । निरगुन काल माहिँ उरझाना ॥
निरगुन नेति सरगुन बतलावै । यह बैराट बेद बिधि गावै ॥
सत्त पुरुष का मरम न पावै । निरगुन सरगुन को गोहरावै ॥
आदि पुरुष को संत बखाना । वो घर पहुँचै सुरति निसाना ॥
अब या का दृष्टांत बताऊँ । प्रियेलाल सुनियौ सत भाऊ ॥
प्रथमहिँ जीव पुरुष से आया । निरमल ज्ञान संग सम लाया ॥
परथम जुग जिव निरमल होई । तारन उजला होत न सोई ॥
जिव उजला जुग उजला भाई । जबहिँ बेद तारन कस गाई ॥
कहै बेद तारन की बाता । तरन कहा कर कीन्ह बिधाता ॥
उजला जुग उजला जिव आवा । ताजा पुरुष पास अस गावा ॥

तब तारन कस बेद बतावा । मैला जिव होइ तरन लखावा ॥
 मैला तौ जब हता न भाई । जब यह कस निस्तार बताई ॥
 उजला कपड़ा धोवन कहिया । सौ धोबी के कस कस दैया ॥
 मैले को धोबी समझावै । उजले को कस धोइ बतावै ॥
 या की बिधी बतावौ भाई । कस उजला धोवन बिधि गाई ॥
 उजला जीव बेद सँग साथा । मैला होत न पकरै हाथा ॥
 मैला करन बेद समझावा । जब जोइ उजला ज्ञान हिरावा ॥
 उजला कर निस्तारै बेदा । जीव जो आदि खानि बस खेदा ॥
 कर्म काल सँग कीन्ह समाधा । अस अस बेदन करी उपाधा ॥
 बेद तो लिखा आदि से भाई । निरमल कोमल कर्म लखाई ॥
 जैसे बनिया करै दुकानै । बेचि खरीदि न टोटा जानै ॥
 लेन न देन दुकान न जागा । टोटा करज ताहि कस लागा ॥
 बेद नाद दोउ संगहि आवा । तुम्हरे सास्तर अस अस गावा ॥
 बेदहि निरमल मैला कीन्हा । निरमल जब कछु लेन न देना ॥
 पुरुष पास जिव निरमल आवा । जुग निरमल जिव निरमल गावा
 धोवन बेद भाख कस भाई । जब उजला उजले की राही ॥
 झूठा सौदा बेद लखावा । उजला मैला करन को चावा ॥
 मैला रहै जगत भौ भावै । उजला रहै तो घर को जावै ॥
 मैला रहै खानि में आवै । येहि कारन क्रिया बेद उपावै ॥
 तीरथ व्रत और चारो धामा । जप तप इष्ट नेम बहु कामा ॥
 ये सब पाप पुन्य बतलावा । येहि बिधि मैला बेद करावा ॥
 कर्म धर्म सब जीव फँदाई । उजले घर की राह भुलाई ॥
 घर की राह का धोका दीना । करे कर्म फिरि भयो मलीना ॥
 आदि अंत घर सुधि नहिँ पावै । कर्म कर्म बिधि बेद बतावै ॥
 या की साखि बतावौ भाई । जग जिव भारि खानि में जाई ॥
 बेद निस्तार करन को आवा । उजला था तब नहिँ समझावा ॥

उजले में नहिँ समझा भाई । मैले को कस पार लगाई ॥
जस सहुकार चार घर लीन्हा । घेरा ताहि कैद में कीन्हा ॥
चार ज्ञान संग छूटै नाहीं । साह ज्ञान संग घर को जाई ॥
साह संग सुध जब ही पाता । तौ अपने घर को चलि जाता ॥
येँ अपना घर भूल न चीन्हा । ता से बेदन फाँसी दीन्हा ॥
साह संत से उतरै पारा । चारइ बेद कैद में डारा ॥
चार संग ने फाँसी डारा । फाँसि डारि कर कहै उबारा ॥
जुगन जुगन संगहि चलि आवा । देखौ सब जग खानि समावा ॥
कोइ उबरन की खबर न लावा । मरि मरि गये खबर नहिँ पावा ॥
मूए मुक्ति सभी मिलि गावा । जीवत मुक्ति न कोउ बतलावा ॥
येहि बिधि बेद रीति है भाई । मुए मुक्ति की बेद बताई ॥
जीवत मुक्ति देखिये आँखी । ता का मता कहनि सब भाखी ॥
जीवत जीव मुक्ति को पावै । तहु नहिँ आदि अंत घर जावै ॥
घर की राह मुक्ति से न्यारी । सो कोइ जानै संत बिचारी ॥

॥ प्रियेलाल उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

प्रियेलाल कहै बूझा स्वामी । बेद बिधी सब झूठी जानी ॥
संध्या तरपन नेम अचारा । ये भी जाना झूठ पसारा ॥
इनसे मुक्ति बिधी है न्यारी । ऐसी मन में समझ सिहारी ॥
मुक्ति बिधी से पुरुष नियारा । सो पावै संतन की लारा ॥
ऐसी खूब खूब मन आई । तब पुनि गिरे चरन पर धाई ॥
स्वामी करौ मोर निरबारा । मैं अब लागेउ चरन तुम्हारा ॥
जो कछु कही सत्त मन भाई । जेहि बिधि तारा कूँची लाई ॥
ऐसी पोढ़ पोढ़ मन मानी । जो जो भाखा मनहिँ समानी ॥
अब अस दया करौ हो स्वामी । मन रहै चरन माहिँ लपटानी ॥
मेरे मन बिधि ऐसी आई । तुम बिन राह कहूँ नहिँ पाई ॥

अस कहि माल डारि जिन दीन्हा । रात रहन मन में अस कीन्हा ॥
 सुरतगुपाल सुनौ तुम भाई । तुम अपने घर जाउ बनाई ॥
 हम तौ रहै चरन के तीरा । जब मन आवै मौज सरीरा ॥
 सुरतगुपाल गये घर अपने । ये तौ चरचा सुनी न सुपने ॥
 येहि बिधिकहि अपने घर आये । प्रियेलाल रहन मन भाये ॥
 ज्ञान उठा बैराग समाना । देखा जग झूठा संधाना ॥
 तिरिया पुत्र और धन धामा । तन छूटे कोइ आवै न कामा ॥
 तन पानी जस ओस समाना । फूटै बिनसै नित नित जाना ॥
 येहि बिधि समझि परामन लेखा । ये जग ज्यो सुपने सम देखा ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

प्रियेलाल मन बिरह समानी । भरि भरि परै नैन से पानी ॥
 उठा ज्ञान जस सिंध समाना । उठी तरंग पुनि लहर प्रमाना ॥
 मुख से स्वाल बात नहि आवै । बिरह लहर जस भुवंग सतावै ॥
 भुवंग डसे जस मन लहराई । मन में जहर लहर सी आई ॥
 जग देखा तन कछु न भावै । जला जंत जग बूढ़ समावै ॥

॥ प्रियेलाल उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

अब स्वामी मोहिँ सरनै लीजै । दया भाव मोहिँ पर कीजै ॥
 कपड़ा नीके फैंकि निकारा । तोड़ जनेऊ कंठी डारा ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

पुनि तेहि ज्ञान भेद समझावा । ता के मन कछु धीर न आवा ॥
 पुनि तेहि बोध ज्ञान गति गई । डारि जनेऊ गले मेलाई ॥
 कपरा कंठी गहि पहिरावा । बूझा ज्ञान बोध मन आवा ॥
 कपरा में बिधि सिद्ध न होई । संत की राह और बिधि सोई ॥

प्रियेलाल सुन चित दे काना । संत रीति रस करौँ बखाना ॥
 त्यागन संग्रह संत न जाना । ये मन कर्म भर्म भरमाना ॥
 त्यागन करै सोई पुनि पावै । फिरि फिरि भोग भाव जग आवै ॥
 संग्रह बंधन जगत बंधाना । ये दोउ भर्म भेद जग माना ॥
 संत मता दोऊ से न्यारा । संग्रह त्यागन झूठ पसरा ॥
 संतन सुरति निरति ठहराई । मन थिर करि करि गगन चढ़ाई ॥
 सूरति सूर बीर भइ द्वारे । नभ भीतर चढ़ि गगन निहारे ॥
 सुरति सुहागिन सूर सिधारी । नित नित गगन गिरा से न्यारी ॥
 ता का मै अब सब सुनाऊँ । संत मते की राह लखाऊँ ॥

॥ होली १ ॥

सुरति सुहागिन सूर भई री । गगन गिरा नभ गवन गई री ॥ टेक ॥
 अधर हिये चढ़ि चसम चली री । पिय को परस घर आई अली री ।
 अरध उरध बिच सुरति समानी । निरखा सब निरत अलगानी १
 महलन जय जय पिय को निहारी । प्रीत पुरातम प्रेम पियारी ।
 अगम अधर घर निरखि निसानी । पिय को परसि पद रही लपटाजी ॥ २ ॥
 सुख सागर मिलि सिंध समावा । बूँदा समुँद साध घर आवा ।
 ज्येँ पपिहा पिउ प्यास पुकारी । स्वर्ति बूँद पिउ पास मिलारो ३
 तुलसी तन मन सुरतिलगाई । लैकी लगन पिय पलंग बिछाई ।
 सेज समहारत हिये हुलसानी । ज्येँ जल मिलि जल धार समानी

॥ होली २ ॥

अजय अली एक गगन गली री । सुरति चमक चढ़ि चटक चली री ॥ टेक ॥
 बिधि बिधि पुहुप बाग बन देखा । कहा कहौँ अली अगम अलेखा ।
 ता बिच कंज कँवल मधुराजै । बिटप बरत तरु बिहँग बिराजै १
 सोभा भूमि अधिक ब्रवि छाई । सुन री सखीलख सुरति समाई ।
 तहँ सत सरवर ताल अनूपा । हंस भवन तन आतम भूपा ॥ २ ॥
 हिये केनैन दुरबीन लगाई । सिंध बूँद परमात्म पाई ।

खिरकी अजर अली चढ़ि देखा । जहँ इक साहिब रूप न रेखा ॥३॥
तुलसी सतगुरु अगम लखाई । लै की लगन लखि लोक सिधाई ।
दुख सुख दोष सोक सब छूटा । कलसा कुंभ करम का फूटा ॥४॥

॥ दोहा ॥

प्रियेलाल मत मूर, सूर सुरति अस बिधि भई ।
गई गगन के पार, सार समझि संतन कही ॥

॥ चौपाई ॥

अस अस सुरति लोक लखि देखा । संत रीति रस अगम अलेखा ॥
बिधि वैराग त्याग तन के री । ये सब खानि जगत भी बेरी ॥
जोगी जोग करत भरमाने । स्वाँसा पवन चढ़ावन जाने ॥
इड़ा पिंगला सुखमनि माई । पवन भवन मैं जाइ समाई ॥
गगन बिनसि सुनि स्वाँस नसाई । मनमत जोगी जुगति न पाई ॥
ज्ञानी गुनिमन आतम जानी । वा मन को पुनि ब्रह्म बखानी ॥
आदि अंत का भेद न जानै । संत मता कैसे पहिचानै ॥
संत मता कछु रीति नियारी । बूझै साधू समझ बिचारी ॥
अस सुनि इष्ट भाव औतारा । ये सब जानौ काल पसारा ॥
गढ़ि मूरति मंदिर मैं धारा । ये सब जानौ झूठ पसारा ॥
पानी पाहन मैं मन लावै । अगिनि तत्त जल तत्त समावै ॥
नकल कृष्ण कहौ किन को तारा । अस असुरन जिव आतम मारा ॥
नकल कृष्ण पाहन की आसा । पाहन मुक्ति काल की फाँसा ॥
या से जिव उबरै नहिँ खाना । जुग जुग बंधन माहिँ बंधाना ॥
कृष्ण राम जो संत बताया । ये औतारी कोउ नहिँ गाया ॥
गो इंद्री गोबिंद कहाई । मनहिँ कृष्ण गोपिन के माई ॥
गुन ही तीनों ग्वाल कहावै । बिंद बीच बिंद्रावन आवै ॥
गो गोपी बिच कान्ह कहाई । ये मन बस रस इंद्री माई ॥
अव या की सुन साखि बताऊँ । संध सब्द बिच भाखि सुनाऊँ ॥

॥ धमार ॥

अहो बस कान्हा गो माहीं हो ॥ टेक ॥

गो की गोप करम कहि ऊधौ, गुन सँग गैल गुवाल ।
नित नित चालि चलै मधुवन की, इंद्रि रस खानि बसाई ॥१॥
अच्छर रमत राह भइ राधे, नंद नाद सुत कान्ह ।
खेलन खेल मेल फरफंदी, बूंदी तन रुचिर सुहाई ॥२॥
सब बृज बनिता बिंद्रावन कीन्हा, जसुमति सोमति जान ।
जो जस बुन्द सिंध से आये, ता को कर खोज लगाई ॥३॥
अरी अरजुन भौ खानि भीम बस, नकुल भये जग आई ।
साधै देह देख आपन को, दो दृष्ट दो दृष्ट लखाई ॥४॥
सुरत सुधार पार तुहि कान्हा, सुनि विधि बात विचार ।
छूटै मान खान चौरासी, सूरति सत द्वार लगाई ॥५॥
तुलसी ताल बोल मन भूला, मूल मरम नहिं जान ।
मन गुन ग्वाल गोप गोपी सम, नित नित विधि भवन समाई ॥

॥ होली ॥

अहो आली होरी लख बैरी हो ॥ टेक ॥
सूरति रंग रँगौ मन केशरि, ले पच पाँच निकांरि ।
सखियाँ पचीस पकरि पिचुकारी, मारौ मन को मुख मोरी ॥१॥
भरम अबीर गुलाल गुनन को, करि सतसंग उड़ाई ।
ज्ञान को छान छरी भरि सूरति, सनमुख नैना नित जोरी ॥२॥
चोया चित्त अरगजा आसा, कुमकुम कुमति बिसार ।
धर धर धूर कूर सब काढ़ी, करमन कर कीचर धोरी ॥३॥
नर तन नगर बिंद बिंद्रावन, तन मन चीन्ह बिहार ।
होरी अंग भंग कर जानौ, तुलसी सज साज मिलौ रो ॥४॥

॥ सोरठा ॥

ये मन तनहिं विचारि, गो गोपिन में रमि रहा ।
गही न सतगुरु बाँहि, थाह मिलत लखि ब्रह्म सम ॥

॥ चौपाई ॥

ये मन ज्ञान ध्यान बिधि ठानी । ता से अपनी आदि न जानी ॥
 सतगुरु से कछु बूझन पाई । बिष रस राह फिरै भौ माई ॥
 मन धिर होइ सुरति घर पावै । तन बिच गगन गैल चढ़ि आवै ॥
 गुन गफलत को दूर बहावै । आँख खोल अपना घर पावै ॥
 सब मैं व्यापक ब्रह्म समाना । दरसै गगन फोड़ि असमाना ॥
 संत कृपा सुत सैल लखावै । मन चढ़ि गगन ब्रह्म को पावै ॥
 सुन्न सहर बिच ब्रह्म समाना । चढ़ि चढ़ि देखै संत सुजाना ॥
 ज्ञानी ब्रह्म ज्ञान से भाखै । ये सब भूठे ब्राह्मन ताकै ॥
 ब्रह्म ज्ञान मन देखि न पावै । मन सँग गुन गिरि गाँठि बँधावै ॥
 सतसँग करै ब्रह्म जब जानै । दिन सतगुरु सुनि नहि पहिचानै ॥
 हिये दृग दरपन को नित माँजै । सुरमा सुरति नैन प्रति आँजै ॥
 निरख परै दरसन की रेखा । नित निज नैन ब्रह्म को देखा ॥
 गुन गफलत जिन दूर निकारा । आँख खोल कर ब्रह्म निहारा ॥
 बिधि बसंत बिच गाइ सुनाऊँ । प्रियेलाल लख लखन लखाऊँ ॥

॥ बसंत ॥

मत भरमै रे घर मैं दीदार । टुक आँख खोल गफलत बिसार ॥ टेक
 व्यापक सब मैं अखंड ब्रह्म । छाँड़ भटक दुनिया को भर्म ।
 जुग जुग भरमत करि बिचार । सुरति नैन नित सत सुधार ॥ १ ॥
 बन भुलान घर बिसरी बाट । ठग सँग कीन्हौ घर न घाट ।
 दिना चारि तन की चिन्हार । छूटत तन भुगतत होनहार ॥ २ ॥
 बूझ समझ घर खोज रोज । अंदर मैं मन मार मौज ।
 सँग सतगुरु करि ले निरधार । भटक भूल सब दे निकार ॥ ३ ॥
 जिन जिन सरन सतगुरु लीन्ह । तिन तिन पायौ अगम चीन्ह ॥
 अगम गली इक बिधि बिचार । तुहि तुहि तुलसी वार पार ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

वार पार तुलसी लखौ, पकौ चरन के ठाहिँ ।
चखौ अगम रस ब्रह्म को, थकौ धीर मन माहिँ ॥

॥ चौपाई ॥

ये तन पाइ बीत नहिँ चीन्हा । कल्प कल्प रहे काल अधीना ॥
जब से सुरति आइ जग माई । बंधन काल भई भौ आई ॥
आई सुलछ लेन अस जानी । लाभ न भयौ बिच बिषम बिकानी ॥
इंद्री बस गुन गैरत माई । फँसो फाँस कछु कही न जाई ॥
सब मिलि घेर घार बस कीन्हा । घर चीन्हे बिन भई अधीना ॥
अब सुनु गाइ बसंत सुनाऊँ । ता मैं सुत साखी समझाऊँ ।

॥ बसंत ॥

आई आई सखी सुति सुलछ लेन । भौ सागर भई अति बेचैन ॥ टेक
पाँच पचीस मिलि ठाटो है ठाट । रोक रही सब घाट घाट ।
पाँच तत्त गुन तीन सैन । तन भीतर रहे दिवस रैन ॥ १ ॥
आदि अंत गइ बिसरि बाद । सतसंग बिसरी संत साध ।
ज्ञान गली बिधि भूली बैन । दुख सुख लागे करम देन ॥ २ ॥
है कोइ सतगुरु बूझै सार । भौ सागर कोइ करत पार ।
पिय की पीर तन तलफै नैन । लखि पाऊँ पद सुख से चैन ॥ ३ ॥
आये बहुत भये दिवस काल । फँसि गइ रही माया मोह जाल
रबि दुख पावत परत गहन । तुलसी रहनि बिन झूठी कहनि ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

बहुत काल भये पिउ तजे, माया मोह भुलान ।
नर तन पाइ न पिउ लखा, कस घर परै पिछान ॥

॥ चौपाई ॥

ता से अब ये नर तन पाई । अब तुम समझि चलौ घर माई ॥
काया बन ब्रह्मंड समाना । बन बन फूल भास उरभाना ॥
ये औसर सूरतिसमझावा । मन मलीन तजि सुरति समावा ॥
ये दुरलभ तन देइ पुकारा । सो तन पाइ करौ निरबारा ॥

॥ दोहा ॥

ये दुरलभ तन पाइ कै, किया न पिउ परसंग ।
मगन मिलन मन भीख भौ, ज्येँ मुठि मरकट रंग ॥

॥ सौरठा ॥

सुनि बसंत में सीख, सब सब संतन भाखिया ।
लखौ आदि बिख्यात, मन सूरति सम थिर करौ ॥

॥ बसंत ॥

आई आई कंथ बसंत लाग । काया बन फले भँवर बाग ॥ टेक
तन भीतर नैना निहार । सुरति निरति ले कर गुँजार ।
नौ पल्लव बेली भँवर जाग । ले सुगंध तन बिषय त्याग ॥ १ ॥
अमर लोक इक अजर दूब । हृद अनहद के पार खूब ।
बढ़ि कर देखौ सुरति साग । जो कोइ निरखै बड़े भाग ॥ २ ॥
कोइ खेलै संत बसंत बूझ । जिन आदि अंत की राह सूझ ।
ये अदेख अंदर में फाग । जहँ बिबिधि तरंग रंग उठत राग ३
सत्त पुरुष पद पुहुप पास । जहँ भूमि भँवर मन कर निवास
तुलसीदास भौ भरम आग । कोइ जरत न जागै बड़ अभाग ॥ ४ ॥

॥ चौपाई ॥

सत्त पुरुष पद पार सुनाऊँ । पदम पार घर आदि लखाऊँ ॥
मन जेहि बूझ समझ सुत संग । ये तन बिनस जात छिन भंगा ॥
निरति सुरति संग कहत बुझाई । भौ सागर बिच रही फँवाई ॥
मनमत मोट खोट संग लागी । बन रस फूल भयौ अनुरागी ॥
देखि देखि तन अजर तमासा । सूरति मन मिल करै बिलासा ॥
आदि अंत घर सुरति बिसारी । मन संग फिरि फिरि फहम बिचारी

॥ दोहा ॥

सुरति आदि घर छाँड़ि कै, फिरै मन गुन की लार ।
जगत जाल बिच फँसि रही, क्योंकर उतरै पार ॥

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ में “कोइ नर तन जोग बड़े भाग” है जो ठीक नहीं मालूम होता ।

॥ बसंत ॥

देखौ देखौ सखी इक अजर खेल । चहुँ दिस फूली अमर बेल ॥ टेक ॥
 बन बन फूले बिबिधि भाँति । कहँ लग बरनौँ पुहुप जाति ।
 भिनि भिनि भौरा करत केल । बिधि अपने घर छाँड़ि मेल ॥ १ ॥
 आदि अंत सूरति बिसार । चार लाख चौरासी धार ।
 कहँ लगि बरनौँ ब्रह्मंड सैल । पिंड ब्रह्मंड रच्यौ भूमि भेल ॥ २ ॥
 वेद पुकारत नेति नेति । वेदांत बरनि ताहि ब्रह्म कहेत ।
 संत ताहि कहै काल गैल । वेदयालगति भिनि अपेल ॥ ३ ॥
 पिंड ब्रह्मंड रचना के पार । वे साहिब दोऊ से न्यार ।
 रूम रूम ब्रह्मंड खेल । इन सब से वे भिनि अकेल ॥ ४ ॥
 संत सदा वहँ आवैं जाइँ । वे जानैं सब भेद पाइ ।
 तन तिल्ली तुलसी जो तेल । मथि काढ़े तब भया फुलेल ॥ ५ ॥

॥ सारठा ॥

जस तिल्ली तन तेल, भा फुलेल फूलै मिलै ।
 तन भोतर अस खेल, खिलै कँवड मिलि पुरुष मै ॥

॥ चौपाई ॥

ज्योँ तिल्ली बिच तेल निकारा । मिलि गया फूल फुलेल पुकारा ॥
 ऐसे संग पुरुष तन माई । सतगुरु जानि भेद बतलाई ॥
 प्रियेलाल अस बूझ बिचारा । संग्रह त्यागन झूठ पसारा ॥
 सतगुरु सूरति संध लखावै । तजि सब बंध जीव घर आवै ॥
 अस सुनि ज्ञान समझ बिच बैठा । दिल बिच प्रियेलाल के पैठा ॥

॥ सारठा ॥

तुलसी कहै बुझाई, प्रियेलाल लखि बूझि बिधि ।
 सूरति सिंध समाई, जब लखि पावै भेद यह ॥

॥ चौपाई ॥

प्रियेलाल यह बूझ बिचारी । राति रहे तुलसी के लारी ॥
 प्रात हात अस्थानै जाऊँ । अब तौ तुलसी शरण समाऊँ ॥

रहे राति पुनि सतसँग कीन्हा । भाव भेद ता को हम दीन्हा ॥
 कालिंदी मग सुरति लखाई । जमुना धार को धमक चढ़ाई ॥
 नौलख कँवल द्वार में लाई । गोकुल फाड़ि गगन को जाई ॥
 स्याम सेत खिरकी बतलाई । छिन छिन सुरति सिखर लगाई
 तिल के आगे पहाड़ छिपाना । मुकर बीच खिरकी में जाना ॥
 भोरै होत डंडवत कीन्हा । चरनन सीस प्रीति से दीन्हा ॥
 पुनि अस्थान जान हम कहिया । सीस टेकि मारग को गहिया ॥
 पहुँचे कासी नगर मँझारा । सुरत गुपाल चले तेहि द्वारा ॥

बरनन अभ्यास फूलदास रेवतीदास

और गुनुवाँ

॥ चौपाई ॥

फूलदास रेवती पुनि आये । अरज भाव बिनती सोइ लाये ॥
 हिरदे गुनुवाँ चरन को लीन्हा । दास भाव बिनती जो कीन्हा ॥

॥ फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास अस अरज बिचारी । स्वामी दृष्टि दास पर डारी ॥
 दयासिंध इक अरज बखाना । सो साहिब सुनियौ दै काना ॥
 सुरति से नरियर को मोड़ा । कदली पत्र भाव लख फोड़ा ॥
 चौका पार चँदरवा ताना । सुरति से फोड़ा असमाना ॥
 अष्ट कँवल बिच पवन सुपारी । पहुँचे जाइ सुरति की लारी ॥
 उदित मुदित दीउ दीप मँझारा । चढ़े जाइ खिरकी के पारा ॥
 चौधा हाथ पान पर जाई । पान परवाना अगम चढ़ाई ॥
 अठमेवा पूरुष को देखा । भाखौँ कस कस अगम अलेखा
 ता के रूप रेख नहिँ काया । अगम अगाध अनाम अमाया ॥
 देखा कँवल नैन नभ न्यारा । धरती गगन और सकल पसारा ॥

चर और अचर दीप नौखंडा । बिधि बिधि से देखा ब्रह्मंडा ॥
सुरति सैल नित करै अकासा । फूलदास बिधि अगम तमासा ॥
फूलदास पार को जाई । पुरुष सुरति से भैंटि समाई ॥
फूलदास गति सब बिधि गाई । सो तुलसी को आनि सुनाई ॥
तुलसिग्रंथ बिधि सकल बखाना । संत सुजन जन सुनिहँ काना ॥

॥ रेवतीदास ॥

॥ चौपाई ॥

पुनि रेवतीदास चलि आये । सीस टेक चरनन पर धाये ॥
तिन पुनि भेद सकल दरसावा । बिधि बिधि भाखन दरस प्रभावा
स्वामी तुलसी अरज हमारी । कहूँ बिधी चित दीजै सारी ॥
स्वामी चौका दीन्ह बताई । सो बिधि चौका कीन्ह बनाई ॥
पुरइनि पात नभ समुंदर माई । सुरति सैल ठहरी तेहि ठाई ॥
बैठी जाइ कँवल के माई । ज्यों दुरबीन मुकर नभ राही ॥
कदली पत्र फोड़ि चलि आई । सेत चंदरवा फोड़ेउ जाई ॥
नरियर तोड़ चली असमाना । सेत दीप पुरइनि नियराना ॥
पँखड़ी अष्ट कँवल के माई । चार कँवल अंदर दरसाई ॥
ता में देखा सकल पसारा । बिधि ब्रह्मंड जो जगत सँवारा ॥
ता से परे सुरति भइ न्यारी । द्वै दल कँवल पैठि भई सारी ॥
जहँवाँ पुरुष रहै इक न्यारा । तहँवाँ सुरति सजी अपारा ॥
सुरति निरति निस दिन वहाँ खेला । नित नित करै अगम की सैला ॥
मन और सुरति निरति नित धावै । मन थिर होइ सुरति पर आवै ॥
येहि बिधि देखा सकल पसारा । स्वामी सो बिधि आन सँवारा ॥
फूलदास और रेवती दासा । भाखा दोउ मिलि अगम तमासा ॥
निरख निरख दोउ लख लख जोई । तुलसी जस जस रस तस होई ॥
येहि बिधि दोऊ करै बिलासा । और सकल छूटी जग आसा ॥
चेला गुरु जगत बिधि नाता । छूटा बिधि रस एकै साथ ॥

चेला गुरु बिधी नहिँ मानै । दोनौँ मिलि रस एकै जानै ॥
छूटा पान सुपारी चौका । छूटा गगन सुन्न भया सूखा ॥
छूटा पिंड छूट ब्रह्मंडा । तीनि लोक छूटा सब अंदा ॥
सात दीप पृथ्वी नौखंडा । चौथा पद जहँ पुरुष अखंडा ॥
ता के परे सैल हम कीन्हा । ता को जानै संत यकीना ॥
यह चौका बिधिसंतन केरी । तुलसी दृष्टि सुरति से फेरी ॥
और चौका सब झूठ पसारा । तुलसी चौका सत्त सँवारा ॥
नित तुलसी तुलसी गोहरावा । दीन बिधी बिधि सुरतिलगावा ॥
फूलदास रेवती रत दासा । बस्तु पाइ नित अगम निवासा ॥

॥ गुनुवाँ ॥

॥ चौपाई ॥

गुनुवाँ सुत हिरदे का आवा । सीस टेक चरनन लौ लावा ॥
अंतर भाव अरु चाव बखानी । सब बिधि अपनी कही कहानी ॥
जस जस स्वामी बिधी बताई । तस तस सुरति गगन लगाई ॥
चक्र फोड़ि सुरति भई पारा । चाँद सुरज तजि गई अगारा ॥
सुखमनि छेकी सरवर आई । मानसरोवर पैठि अन्हआई ॥
अगम द्वार खिरकी पहिचानी । गंगा जमुना सरसुती जानी ॥
सुरति चली अगम रस माती । जहाँ प्रयाग कंज रस राती ॥
जहँ सतगुरु बैठे सत बासा । अगम पुरुष घर कीन्ह निवासा ॥
सुरति ठहरि द्वार के माई । रस रस धीर धीर चढ़ि जाई ॥
चढ़ै उतरै पुनि पुनि चढ़ि जावै । मकरी धागा तार लगावै ॥
येहि बिधि रहै दिवस और राती । सुरति लगन और नहिँ भाती ॥
येहि बिधि लोक नाम किया बासा । चौथा पद सतनाम निवासा ॥
जहँ से आई तहाँ समानी । यहि बिधि आदि अंत हम जानी ॥
जनम मरन दुख सुख सब छूटा । कर्म बंध बिधि सगरी टूटा ॥
स्वामी तुम चरनन बलिहारी । अगम बस्तु तुम दया बिचारी ॥

हिरदे प्रीति दृष्टि दरसाई । नैन चरन बिधि भाव बताई ॥
 मैं कहा जानूँ जीव अबूझा । हिरदे तत मत से सब सूझा ॥
 लखनऊ मन अब नेकन भावै । अब तौ तुलसी तुलसी चावै ॥
 हिरदे की जाऊँ बलिहारी । इन बिधि सगरी मोर सँवारी ॥
 पिता दरस बिधि ऐसी कहिया । चरन लाइ बिधि अगमलखइया ॥
 हिरदे प्रीति हम तुम को पावा । हिरदे रीति अगम दरसावा ॥
 तब स्वामी के चरन सँवारे । स्वामी कृपा से उतरे पारे ॥
 सीस टेकि पुनि अज्ञा लोन्हा । सीस डारि चरनन पर दीन्हा ॥
 स्वामी मो को अज्ञा दीजै । अस कहि नीर नैन से छीजै ॥
 अज्ञा स्वामी दीन्ह बनाई । तब गुनुवाँ मारग को जाई ॥
 हिरदे हरष हिये मैं लावा । गुनुवाँ काज भयो बिधि भावा ॥

॥ वचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

(बैरागी)

तुलसी हिरदे कहै बखानी । ये सत रीति संत कोउ जानी ॥
 भेष भेष बिधि देखि निहारी । ये गति मति बिधि सब से न्यारी ॥
 बैरागी बिधि इष्ट भुलाने । काल जाल में जाइ समाने ॥

(जोगी)

जोगी जोग ध्यान रस भूला । स्वाँसा संध कीन्ह अनुकूला ॥
 मुद्रा पाँच तुरी मत झूला । ये पुनि ज्ञान जोग मत फूला ॥
 इंद्रो बस रस कोन्है धूला । वोऊ न पायौ सार रस मूला ॥

(परमहंस)

परमहंस पुनि ब्रह्म बखानै । ब्रह्म बिधी बिधि वोहू जानै ॥
 जड़ तन मन में गाँठि बँधाना । ता को ब्रह्म कहै हैवाना ॥
 कहै सब में सब हमीं समाना । आदि अंत नहिँ चीन्ह ठिकाना ॥

बेद बिधो बेदांत बतावै । वा के आगे भेद न पावै ॥
 मुख से कहै नाद को गावै । भूला बेद ताहि ठहरावै ॥
 बेदउ नेत नेत कर गावै । पुनि ता की वह साखि बतावै ॥
 संत मता उनहूँ नहिँ पाया । ब्रह्म ब्रह्म बन जनम नसाया ॥

(सन्यासी)

सन्यासी कहै हम भगवाना । आदि अंत उनहूँ नहिँ जाना ॥
 कहै भगवान आप को जानै । आतम कहि कहि सुद्ध बखानै ॥
 चेतन जड़सँग गाँठिन जानी । सास्तर राह बिधी रस ठानी ॥
 बेदउ सास्तर नेत पुकारा । इतनी बूझ न पाय गँवारा ॥
 सास्तर बेद नाद से भइया । नाद अगम घर कहँ से अइया ॥
 नाद की आदि सुन्न से न्यारी । सुन्नी सुन्न सुन्न के पारी ॥
 वोही घर से नाद पुनि आया । ता पीछे ब्रह्मंड बनाया ॥
 पाँच तत्त मन माया भाई । ता से रचि बैराट बनाई ॥
 जड़ चेतन की गाँठि बँधानी । ता कौ नाम आतमा जानी ॥
 गाँठि बँधे पर भूल समानी । आतम बुधमन बेद बखानी ॥
 आतम बँधा गाँठि के माई । पुनि ता ने यह बेद बनाई ॥
 सोई बेद आतम बिधि गाई । बेद की आदि सुनौ तुम भाई ॥
 आतम कर्म भाव गठियाना । बंधन आतम बेद बखाना ॥
 ता की साखि बतावौ भाई । बेदउ नेति नेति करि गाई ॥
 जब नहिँ बेद बेद का करता । जब नहिँ रूप रेख कछु धरता ॥
 तत्त पाँच नहिँ थे बैराटा । नहिँ जो जब ब्रह्मंड न ठाटा ॥
 निरंकार जोती नहिँ भाई । परमातम आतम जब नाहीं ॥
 सोहँग नहिँ जब ओअंकारा । तबकी कहूँ बिधी बिधि सारा ॥
 नहिँ काया नहिँ बोलनहारा । तबकी कहूँ बिधि भाखि सँवारा ॥
 बेद नाद दोउ पीछे भइया । को पहिले जो बरनि सुनइया ॥
 पहिले नाद कहाँ से आया । सुन्न न गगन हती नहिँ माया ॥

वा घर की कोउ आदि बतावै । जब जोड़ संत मते को पावै ॥
हिरदे की बिधि कोइ नहिँ जाना । संत मिलै तौ करै बखाना ॥
सन्यासी भूले अस भाई । पंडित बाम्हन कहा बताई ॥

(पंडित)

पंडित कहै हमीं पुनि स्याना । सास्तर पढ़ि पढ़ि बेद पुराना ॥
पढ़ि पढ़ि पढ़ने माहिँ भुलाने । जा को पढ़े सोई नहिँ जाने ॥
जा की ये सब साखि बतावै । बोझ नेत नेत गोहरावै ॥
निरंकार को नेत बखाना । निरंकार के परे न जाना ॥
तीरथ बरत नेम के माई । करम धरम पुनि जज्ञ बताई ॥
धरि धरि देहीं भोग करावा । भूले आप अरु जगहिँ भुलावा ॥
बाम्हन को बिद्या मन माना । ऐसे संत मता नहिँ जाना ॥

(ब्रह्मचारी)

ब्रह्मचारी ब्रह्मचार बखानै । ब्रह्म पार का भेद न जानै ॥
वार पार का भेद बिधाना । यह बिधि वोहू राह भुलाना ॥

(डंडी)

डंडी डंड कमंडल लीन्हा । लकरी बाँधि जनेऊ कीन्हा ॥
बाम्हन हाथ प्रसादी पावै । और जातिका छुवा नखावै ॥
द्वैत बुद्धि बसी हिये माहीं । मुख से आत्म एक बताई ॥
ऐसी बुद्धि द्वैत मन राती । पूजै बाम्हन की पुनि जाती ॥
अंध अंध दोउ संग मिलाना । संत मते की राह न जाना ॥

(वैष्णव)

वैष्णव बिष्णु धर्म को पालै । पूजा इष्ट भाव बिधि चालै ॥
बिष्णू तीन गुनन के माई । रजगुन तमगुन सतगुन भाई ॥
रज ब्रह्मा तम संकर भाई । सतगुन बिष्णू तिन के माई ॥
तन वैराट से उपजे भाई । सो पुनि ब्रह्मा बिष्णु कहाई ॥

सतोगुन बिष्णू तिन के माई । तेहि को छाँड़ि पाहन मन लाई ॥
 चार धाम तीरथ को धावै । बिष्णू पास खोज नहिँ पावै ॥
 पूजै जग खैराती खावै । करम भोगि फिर भव में आवै ॥
 संत मते की राह न जानै । बिष्णू पूजि जगत सब मानै ॥

(मुसलमान)

मुसलमान खुद खुदा बतावै । सब में खुदा खुदा करि गावै ॥
 खुदा एक कहै सब में भाई । बकरी मुरगी मारै खाई ॥
 येहि बिधि भूल है उनके माई । खुद खुदाइ की राह न पाई ॥
 मुसलमान है हक्क इमाना । जिन कोइ भिस्त राह पहिचाना ॥

(स्त्रावग)

स्त्रावग आदि धर्म बतलावा । आदि राह का मरम न पावा ॥
 ऋषय देव चौबीसौ भइया । ता को कहै मुक्ति को गइया ॥
 मुक्ति मुक्ति सब भाखि सुनावै । वोहू मुए मुक्ति गोहरावै ॥
 जीवत देखी कहै न बाता । चौथा काल कहै बिख्याता ॥

(कबीर पंथी)

पंथ कबीर का भाखि सुनाई । पंथ राह उनहूँ नहिँ पाई ॥
 सत कबीर मुख भाखेउ बैना । उन सब कही अगम की सैना ॥
 पंथी सैन लखी नहिँ भाई । पंथ राह की जाति चलाई ॥

(नानक पंथी)

नानक संत जो भये अगाधू । चौथा पद पाये उन आठू ॥
 उन भाखा कढ़िया परसादी । इन कढ़ाव हलुवे की बाँधी ॥
 पंथ कहा सो मरम न जाना । पंथ राह उन अगम बखाना ॥
 ता की बूझ समझ नहिँ आई । पंथी जाति जाति भइ भाई ॥

(दादू पंथी)

दादू संत जो भये अनामी । वे कहि गये अगम की बानी ॥
 उन भाखा कोइ पंथ निथारा । अगम निगम का कुंजी तारा ॥

ऐसे संत जो भये अनामी । उनकी बिधि पंथी नहिँ जानी ॥
 पंथ चलाइ बढाई साखा । सास्तर बेद मते मैं राखा ॥
 पंथी मत उनका नहिँ जानी । राम रमा सब कहत बखानी ॥
 ऐसी कहाँ कहाँ की कहिया । सब बिधि पंथ धरम मैं रहिया ॥
 कोइ पंथी कोइ धर्म चलावा । संत मते को कोइ नहिँ पावा ॥
 सुन हिरदे यह ऐसी रीती । धर्म पंथ ने करी अनीती ॥
 संतन पंथ सुरति का गाया । पंथ सुरति की राह बताया ॥
 सूरति मिलै सब्द में जाई । ये सब संतन पंथ बताई ॥
 सुरति पंथ नहिँ खोजा भाई । जाति पंथ का बोझ उठाई ॥
 जो कोइ सुरति पंथ बतलावै । उन के मन में एक न आवै ॥
 जो कोइ कहै सत्त की बाता । ता से करै बहुत उतपाता ॥
 निंदक ता को करि ठहरावै । नास्तिक मता ताहि बतलावै ॥
 संत मते की रीति न जानै । कहै जा की पुनि एक न मानै ॥
 कैसे होय जीव निरवारा । या में बढि गया जाल पसारा ॥
 पंथा पंथी टेक बँधानी । अपने अपने मति की ठानी ॥
 संत पंथ जो राह बखानी । सो पंथी कोइ खबर न जानी ॥
 सुन हिरदे यह ऐसी रीती । सत भाखै तेहि कहै अनीती ॥
 तब संतन ने बस्तु छिपाई । कहौ जिव राह कहाँ से पाई ॥
 साखी सब्दी ग्रंथ बनाई । गुप्तै बस्तु नकल में गाई ॥
 नकल बस्तु ग्रंथन में जानौ । साखी सब्द नकल करि मानौ ॥
 या में खोजि खोज नहिँ पावै । सतगुरु मिलै तो भेद बतावै ॥
 नकल माहिँ से असल दिखावै । सो चेला सतगुरु से पावै ॥
 जा की खुली अगम की आँखी । साँचे सतगुरु ता को भाखी ॥
 सुन हिरदे संतगुरु सहदानी । सतगुरु सत्त पुरुष को जानी ॥
 चौथे पद में करै निवासा । मिलै जाइ सतगुरु का दासा ॥

सतगुरु भेद अगम दरसावैं । तब चढ़ि जाइ अगमपुर पावैं ॥
 हिरदे या को कोइ न जानै । जा से कहूँ सोई नहिँ मानै ॥
 ॥ हाल प्रियेलाल के अभ्यास का ॥

॥ चौपाई ॥

इतने में प्रियेलाल जो आये । करि परनाम छुए तिन पाँये ॥
 प्रियेलाल अस बचन उचारा । स्वामी से कहिहौँ कछु सारा ॥
 जो कछु कृपा सिंध अनुकूल । सो बिधि निरखि बताऊँ मूल ॥
 प्रियेलाल भाखे रस माते । कालिंदी नित सुरति समाते ॥
 कालिंदी पर नित नित जाई । पुनि तेहि पार पार होइ राही ॥
 नौलख कँवल निरखि पुनि भागे । सहस कँवल के चलि गये आगे ॥
 सागर खिरकी समुंदर माई । द्वार पैठि के सुरति चलाई ॥
 देखा जाइ वहँ अजब तमासा । सुरति लीन कोइ पहुँचै दासा ॥
 अरध उरध मधमाहीं बाटा । अंड फोड़ तहँ चढ़ि गये घाटा ॥
 सूरति नित नित बढ़ै बढ़ाई । ठहरै नहीं बहुत ठहराई ॥
 छिनछिन पदमें पदम निहारी । कंज बास छूटै नहिँ तारी ॥
 येहि बिधि दिवस रात लौ लाग । निरखा सुरति उठै अनुरागा ॥
 स्याम सेत भिनि न्यारी सैला । निकसा दूर अजर अस खेला ॥
 हमको स्वामी कीन्ह सनाथा । काल जाल से छूटेउ हाथा ॥
 मुख से कसकस बरनि सुनावा । तुम्हरी कृपा अगम दरसावा ॥
 मैं मति मंद बस्तु कहूँ पाऊँ । मन मोटा जग गुरु कहाऊँ ॥
 मान मई बाम्हन की जाती । ऊँचा चारि बरन में पाँती ॥
 अंध घोर जग का जंजाला । नित नित मोच करै जर्म काला ॥
 तुम दयाल बिधि ऐसी कीन्हा । काल जाल तजि सारहि लीन्हा ॥
 तुम नहिँ कृपा करत येहि भाँता । तौ करमन भौ माहिँ समाता ॥
 यह बंधन बिधि भाव छुटावा । जहँ का जीव तहाँ पहुँचावा ॥
 यह जग भूल अंध जिव खाना । मन अपने का ज्ञान बखाना ॥

दीन होइ संतन की लारा । तब पावै सत मत का द्वारा ॥
 भेद बेद मैं नाहीं स्वामी । समझि परी यह अकथ कहानी ॥
 ये नहिं बूझ दृष्टि में आवै । पूरा सतगुरु मिलै लखावै ॥
 बिन सतगुरु जिव भरमै खाना । मूए पढ़ि पढ़ि ग्रंथ पुराना ॥
 पढ़े सुने कोइ भेद न पावै । सतगुरु मिलै तो भेद बतावै ॥
 बेद पुरान की झूठी राही । या मैं जीव काल उरझाही ॥
 प्रीयेलाल हाथ दै मारा । झूठी विधी अचार बिचारा ॥
 स्वामी समझ माहिं अब आई । नित नित घोर कँवल के माई ॥
 - देखा तब मोर मन पतियाई । बिन देखे परतीत न लाई ॥
 निसा पूर मन साँची भाई । सुन्नी सुरति माहिं रही छाई ॥
 बिजुली कड़क कड़क उँजियारा । बरसै पानी नैन निहारा ॥
 सुरति निरति के मंझ मैं झारा । धसि भीतर लखि अगम पसारा ॥
 धरती गगन चंद और सूर । देखा सब में सब बसि पूरा ॥
 सूरति रहै अगम रस पागी । नित नित रहै रंग अनुरागी ॥
 अस स्वामी कोइ दृष्टि न आवै । अब कछु और और बिधि भावै ॥
 जग पुरान बंधन के माहीं । सास्तर जाल काल सब राही ॥
 संत राह कोइ चीन्हि न पावै । भरमै भर्म जीव भरसावै ॥
 अस स्वामी ये कहूँ बिचारा । देखि न परै जीव निरवारा ॥
 तुम चरनन बिन कछू न कोई । तुम्हरी कृपा होइ सो होई ॥
 तुम ने प्रभू दया अस कीन्हा । औघट बहे घाट लखि दीन्हा ॥
 अब स्वामी किरपा अस कीजै । अज्ञा भाव दरस मोहिं दीजै ॥
 चरन छुए पुनि अरज बिचारी । अब चलने की विधी निहारी ॥
 उठे चरन गहि अज्ञा लीन्हा । कासी राह गवन तब कीन्हा ॥
 सुरतगुपाल द्वार तब आये । भीतर आसन बैठे पाये ॥

॥ सोरठा ॥

कहै तुलसी सुन बात, हिंदे हरष सत मत कहूँ ।
 प्रियेलाल मुसक्यात, राह अगम गति पाइ कै ॥
 ॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

कासी नगरभरा सब झारी । तेरह उतरे भौजल पारी ॥
 तेरह गये अगमपुर धामा । तिन की काल न करिहै हाना ॥
 काल जाल जम पास न आवै । जनम मरन बिधि एकन पावै ॥
 अमर अजर घर जाइ समाना । जहाँ रहै सतनाम अनामा ॥
 ये तेरह पर काल न आई । नित नित रहै अजर घर छाई ॥
 तेरह नाम बिधी बतलाऊँ । भाखि बिधी भिनि भिनि दरसाऊँ ॥
 करिया नाम रहै इक नारी । सैनी दूजी नाम बिचारी ॥
 कर्मा धर्मा स्यावग जैनी । ये उतरे भौजल की सैनी ॥
 अगम द्वार चलि गये अगाधा । सूरति गई अगमपुर साधा ॥
 सैख तकी तकि भये नियारे । खुद खुदाइ रब लाह के द्वारे ॥
 बूँ बेचूँ बेजवाबी साईँ । ता घर रह राह तिन पाई ॥
 पंडित तीनों नाम बखानौँ । दो तौ नैनू स्यामा जानौँ ॥
 तीजा माना पंडित होई । अगम राह घर पावै सोई ॥
 मुनुबाँ हिरदे दोउ निज जाना । ये तौ गये अगमपुर धामा ॥
 फूलदास और रेवतीदासा । इनका भया अगमपुर बासा ॥
 प्रियेलाल इक जाति गुसाईँ । सूरति सैल अगम घर जाई ॥
 ये तेरह उतरे भौ पारा । काल जाल से होइ नियारा ॥
 काल रहै उन से सिर नाई । मिलि गई सूरति अगमपुर धाई ॥

॥ सोरठा ॥

तेरह तोल अपार, लखा सार सतगुरु मिले ।
 तुलसी कहै निहार, उतरि पार पद को मिले ॥

॥ छंद ॥

तेरह भये पारा अगम निहारा । सत मत सारालार लये ॥१॥
 पहुँचे वोहि धामा अगम अनामा । पार सार रस जाइ पिये ॥२॥
 सतगुरु मत भावा अगम लखावा । पावा पदम निवास किये ॥३॥
 चौथे पद माई सतगुरु पाई । कंज माहिँ रत भास भये ॥४॥
 बेनी परियागा घट अनुरागा । पाइ न्हाइ अज अमर भये ॥५॥
 सूरति सत सानी अगम समानी । जाइ निरानी राह लये ॥६॥
 छूटा जंजाला जम और काला । साला हाला दूर बहे ॥७॥
 अपना घर पाई सत्त समाई । सत्त लोक गइ सब्द मई ॥८॥
 नहिँ आना जाना कर्म नसाना । तुलसी सतगुरु राह दई ॥९॥
 यह बिधि अस पाई सो सब गाई । अगम सुनाई गाइ कही ॥१०॥
 सतगुरु रस माते नित नित जाते । सो वे सतगुरु सुरति लई ॥११॥
 सत सत मत भाखी देखा आँखी । राखन भाखी सत्त गही ॥१२॥
 तुलसी तस गाई जस जस पाई । सुरति समाई राह लई ॥१३॥

॥ राग बिलावल ॥

तुलसी अंदर अलेख, देख लेख जाई ॥टेक॥
 तुलसी सतसंग जाइ, कासी प्रति होइ हाइ ।
 बासी रस वार पाइ, बूझै सत साई ॥
 पारी पद अगम बास, हिरदे हित चरन खास ।
 निरखा सगरा अकास, चेता तन माई ॥
 फूलदास आस पास, देखा हित लाई ॥१॥
 पंडित बाम्हन तरन, नैनू स्यामा अमन ।
 क्रीन्हा सतसंग आनि, दीन्हा व्रत वाही ॥
 कर्मा और धर्मा आइ, सैनी और करिया जाइ ।
 पाया रस अगम खाइ, हरख हिये माहीं ॥
 देखा रस अगम पाइ, दीदा रस राही ॥२॥

गुनुवाँ और रेवतीदास, सतगुरु रस पूर प्यास ।
 सूरति अगमन निवास, फोड़ पार जाई ॥
 मियाँ एक तकी सेख, मन का बड़ पोढ़ देख ।
 सूरति सत सूर लेख, पेखा अपनाई ॥
 पाया पद मूर सार, खुदा की खुदाई ॥३॥
 आया इक प्रियेलाल, देखा मत बर्त चाल ।
 कीन्हा सतसंग हाल, जाति के गुसाई ॥
 देखा सब बेद असार, संतन मत बूझ सार ।
 सूझा मन हिये हार, तरके तक चाही ॥
 दरदी दरदीन ताहि, सूरति लखवाई ॥४॥
 तुलसी तेरह की लार, सबदा रस पिया सार ।
 सूरति निरखा निहार, चौथा पद पाई ॥
 सतगुरु पूरा दयाल, छूटा जम डंड काल ।
 तुलसी कीन्हा निहाल, आपदा मिटाई ॥
 सिंध बुंद मिला मेल, जल में जल जाई ॥५॥
 कासी में भया सार, तेरह को लिया चार ।
 तुलसी अस ज्ञान जोर, घोर नगर माहीं ॥
 तुलसी इक साध रहत, तेरह कीन्हा अचेत ।
 वा से कोउ करो न हेत, देत जादू जाई ॥
 कासी नर नारि हेत, पासी नहीं आई ॥६॥
 संतन पर धरै दोस, पाप पुन्र खाइ खोस ।
 याही बिधिकुटुमपोस, कर्म रेख माहीं ॥
 संतन को नीच जानि, अपनी बिधि ऊँच ठानि ।
 भूला अभिमान माहि, चारि खानि जाई ॥
 देखौ नर अंध अचेत, संत भाव नाहीं ॥७॥

॥ राग जैजैवंती ॥

एरी सुधि आदि तौ निरत दरसाई, तुलसी सभभाइ कै ॥ टेक ॥
 फूलदास सुनियौ बानी । बिधि ग्रंथन भाखि बखानी ।
 कहि हिरदे नाम अहीरा । ता की बिधि गाइ कै ॥१॥
 तीन पंडित नाम बताये । ताकी बिधि भिनि भिनि गये ।
 नैनू स्यामा माना नामा । कहिये सत भाव के ॥२॥
 कर्मा धर्मा करिया नारी । सेखतकी और सैनी बिचारी ।
 गुनुवाँ फूलदास बतलाऊँ । पाये सँग लाइ कै ॥३॥
 रेवतीदास कबीरा पंथी । तिन बूझा सत मत संती ।
 तुलसी तत सत लखवाई । सूरति नित पाइ कै ॥४॥
 ये भये बारह रस माते । ये अगम पंथ नित जाते ।
 इनकी सुधि बुधि पिउ पारा । रचे बारह धाइ कै ॥५॥
 तुलसी बसी कासी सारी । निकरे बारह नर नारी ।
 तिन की गति सत मत पाई । भये न्यारे जाइ कै ॥६॥
 कहँ कासी जग में धामा । तेहि मद हम नहिँ पहिचाना ।
 स्याना सुख सम्पत माहीं । तुलसी आबूझ कै ॥७॥
 प्रियेलाल जाति गुसाई । यह बिधि तेरह भये भाई ।
 बिंद्रावन के रहे बासी । कासी सँग पाइ कै ॥८॥
 तुलसी बिधि भाखि सुनाई । संतन रस राह बताई ।
 पाई सतसँग से राही । सूरति सत पाइ कै ॥९॥
 तुलसी पद राह लखाई । करिहै नर नारी जाई ।
 सूरति सँग राह बखाना । तुलसी गोहराइ कै ॥१०॥

॥ सौरठा ॥

तुलसी कहै पुकार, नर नारी सबही सुनौ ।
 सूरति सँग सँवार, यह बिचार तुलसी कहा ॥१॥
 सतसँग अगम अपार, जेहि दृग से सब लखि परै ।
 सरै जीव कै काज, साजि सूरति सब लखि रही ॥२॥

बूझै सतसँग सार, बिना सार पारै नहीं ।
कृपानिधि संत अपार, लखि अगार आगे कही ॥३॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी सतसंगति बलिहारी । बरनौँ सत सत बारम्बारी ॥
सतसँग सरन चरन गति पावै । अगम निगम गम निरखि लखावै ॥
बिनसतसंग चीन्हि नहिँ पावै । सतसँग सत्त सुरति दरसावै ॥
सतसँग सतसँग अंतर भाई । कही सतसंग अनेकन राही ॥
सतसँग सतसँग सब गोहराया । सतसँग का कोइ अंत न पाया ॥
सतसँग कहि कहि सभी बताया । सतसँग आदि खोज नहिँ पाया ॥
सतसँग महिमा अस अस गावा । करै घड़ी इक मुक्ति को पावा ॥
घड़ि इक मैं मुक्ती होइ जावै । सतसँग महिमा अस अस गावै ॥
बेद पुरान भागवत गीता । साखी सब्द जनम गयो बीता ॥
रात दिवस तेहि पढ़ि पढ़ि हारे । सुनत सुनत नहिँ मुक्ति निहारे ॥
कथा पुरान अनेकन कीन्हा । सुपने मैं मुक्ती नहिँ चीन्हा ॥
किरत्रिम मंदिर नित नित जावै । सतसँग महिमा तान सुनावै ॥
नृत करि करि कै तान अलापै । करम धरम मन चितवै पापै ॥
कोइ पुरान मान मद माते । कोइकोइ ज्ञान स्यान रसरते ॥
कोइकोइ पढ़ि बिद्या मदमाहीं । कोइ कोइ सुनै गुनै रित रही ॥
कोइ कोइ ब्रह्म ज्ञान बतलावै । कोइ कोइ तुच्छ जीव कहि गावै ॥
कोइ कोइ ब्रह्म आप को मानै । कोइ कोइ कर्म जीव बखानै ॥
अंधा धुंध जगत ब्यौहारा । कोऊन मुक्ति की राह बिचारा ॥
महिमा पलक माहिँ गति गावै । खोजत मुक्ती जनम गँवावै ॥
पलक माहिँ मुक्ती को पावै । सतसँग मुख महिमा अस गावै ॥
करते करते जनम सिराना । सतसँग सुपने मुक्ति न जाना ॥
तीरथ बरत नेम जग लागा । काहू मन धोखा नहिँ भागा ॥
नीमखार बढी परधाना । तीरथ सब प्रयाग असनाना ॥

चारौ धाम काम करि आवा । भरमि भरमि कहूँ मुक्ति न पावा ॥
 जुग जुग रहै चहै सोइ कासी । बिन चीन्है भये जमपुर बासी ॥
 ये सब कर्म भाव भौखानी । ये सब काल राह रित मानी ॥
 सतसँग काल जाल का कीन्हा । भौ बस भाव बहै जस मीना ॥
 सतसँग महिमा सत्त बतावै । पानी पाहन में मन लावै ॥
 पूजा पाती करै अचारा । मैली बुधि सुध नाहिँ बिचारा ॥
 पूजा मन मल नाहिँ छुड़ावा । फूल तोड़ जल पाहन नावा ॥
 मैला मन पाहन की आसा । तीजे कर्म भाव कृत बासा ॥
 किरत्रिम नास बास को पूजै । अबिनासी कैने बिधि सूजै ॥
 नास भाव में सुरति लगाई । ये सतसँग जग महिमा गाई ॥
 ये धोखा सबहिन हित लावा । ता से सतसँग खोज न पावा ॥

॥ दोहा ॥

धोखे सब जग पचि मुआ, पूजा नेम अचार ।
 तीरथ ब्रत बिधि भर्म से, भुगतत खानि मँझार ॥१॥
 बीत जनम सतसँग करत, और सरौ न एकौ काज ।
 पलक माहिँ सतसँग मिलै, सरै जीव कै काज ॥२॥
 पल महिमा सुनि कहत हैं, मुख से बारम्बार ।
 पल सतसंगति मुक्ति जो, खोजत नाहिँ गँवार ॥३॥
 सात स्वर्ग अपवर्ग की, महिमा तुलै न ताहि ।
 अस सतसंग बखानिया, पल में मुक्ति सहाइ ॥४॥
 करत करत जनमै गयो, नित नित सतसँग साथ ।
 वो सतसंगति कैन है, मुक्ति जो आवै हाथ ॥५॥
 वो सतसंगति और है, तुलसी अगम निहार ।
 संत सुरति सतलोक में, मुक्ति तहाँ पनिहार ॥६॥
 वो सतसंगति संत पै, जगत भेष नाहिँ भेद ।
 ये अभेद सतसंग को, मुक्ति चरन पद लेत ॥७॥

मुक्ति मुक्ति हूँढ़त फिरै, भेष जगत सब भार ।
 संभासन चित संत कर, संत चरन की लार ॥८॥
 संत मुक्ति नहिँ आदरै, और फिरै संत की लार ।
 संत अगम रस लेत हैं, जहँ पहुँचै न मुक्ति बिचार ॥९॥
 ज्येँ जौहरि हीरा गहै, पाहन गहै गँवार ।
 हरि हीरा संतन लखा, पाहन मुक्ति असार ॥१०॥
 ज्येँ दधि भीतर घिर्त को, मथि काढ़ै कोइ संत ।
 छाछ मठा जग को दयो, पावै न घत मत अंत ॥११॥
 मुक्ति मुक्ति माँगत फिरै, जगत भिखारी भेष ।
 जिन माखन मथि काढ़िया, मठा रंक को देत ॥१२॥
 संत मुक्ति मानै नहीं, माँगै जगत अजान ।
 संत दरस मुक्ती तरै, फिरै संत की लार ॥१३॥
 गहै सतसंगति संत कर, मुक्ति लखावै हाल ।
 नजर दृष्ट जीवत लखै, छूटै भौ भ्रम जाल ॥१४॥
 वेद मता भौ जाल है, सास्तर सिम्मित पुरान ।
 ये अंध फंद है काल कौ, संत चरन चित आन ॥१५॥

॥ सोरठा ॥

सतसंग जाने संत, आदि अंत सुति से लखै ।
 महल सातवाँ पंथ, वोहि मारग सतसंग कह्यौ ॥१॥
 महल सात सुति राह, चढ़ि अकास सतसंग लखै ।
 सत मत पंथ निहार, सो अगार अद्बुद चखै ॥२॥

॥ दोहा ॥

तुलसी सतसंग जग नहीं, नहिँ व्रत नेम अचार ।
 नहिँ पुरान नहिँ वेद में, संत चरन की लार ॥१॥
 जग अँधरा पंडित मिले, अँधरा भेष भुलान ।
 ये तीनों अँधरा मिले, कौन बतावै राह ॥२॥

पंडित लोभी भेष सब, ठग ठग जगत लबार ।
 पाप पुन्य बतलाइ कै, मुए मिलन गोहरान ॥३॥
 मुए मिलन आवै नहीं, चिट्ठी पत्री नाहिँ ।
 बिन बिधि देखीजो कहै, परै नर्क के माहिँ ॥४॥
 कहै देखी निज आपनी, जीवत मिलन बिचार ।
 ये गति मति सत संतको, निरखि परै सुत सार ॥५॥
 सतसंगति सत द्वार मैं, जानत संत सुजान ।
 मुकर मनौ दुरबीन मैं, निरखि चढे असमान ॥६॥
 मुकर सत्त द्वारे बिना, सतसंग करौ हजार ।
 बेद हाल भ्रम जाल से, कधी न उतरौ पार ॥७॥
 और सतसंगति झूठ सब, पचि पचि मरे लबार ।
 संत मुकर सुति राह बिन, भरमत फिरै गँवार ॥८॥

॥ चौपाई ॥

सतसंग भेद और है भाई । सतसंग बिधी संत से पाई ॥
 सतसंग बिधी जगत में नाहीं । वो सतसंगति संतन माहीं ॥
 बेद पुरान न जानै बाटा । पंथी भेष न पावै घाटा ॥
 पंडित बुद्धिहीन नहिँ जानै । भूला जगत भूल पहिचानै ॥
 वो सतसंग सतगुरु से पावै । भूल तोड़ सत द्वार लखावै ॥
 जो कोइ द्वार कृपा से पावै । ता को सतसंग संत बतावै ॥
 वो सतसंग जीव निज पावै । सत सत ता को नाम कहावै ॥
 वो सतसंग मिलै पल माहीं । पल मैं मिलै जीव को राही ॥
 या की साखि ग्रंथ गोहरावै । सूरति संग सतसंगति पावै ॥
 भौजल नौका सतसंग भाई । सूरति चढ़ भौ पारै जाई ॥
 मन मल्लाह नाव नहिँ बूढ़ै । सूरति बल्ली मन बल तोड़ै ॥
 मन को पकरि नाव पर डारै । सूरति बल्ली पार उतारै ॥
 उतरै पार परम घर चीन्हा । पहुँचै जाइ अगम लखि लीन्हा ॥

सतगुरु पद परसै उर नैना । लख लख परै संत की सैना ॥
 सतसैंग या कै नाम कहाई । पल में चढ़ै अगम घर जाई ॥
 तुलसी जे जे संत कहाई । अगमै पंथ राह जिन पाई ॥
 ऐसी अगम रीत गति राही । जगत अंध जड़ राह न पाई ॥
 माया मद मन मस्त सरीरा । खान पान सुख तरुनी तीरा ॥
 भाई बंद कुटुम बिधि नाना । सुख सम्पति सुपने बिधि माना ॥
 तेल फुलेल चमक चटकाई । टेढ़ी पाग छोर उरमाई ॥
 मन में मस्त कछू नहिँ सूझै । काल कराल नेक नहिँ बूझै ॥
 ऐसा गाफिल फिरै अथाना । छूटै तन पल माहिँ पयाना ॥
 ये तन पानी ओरा^१ सुपना । तन घुलि जाइ छूटि नहिँ अपना ॥
 तन सराइ दिन दोइ बसेरा । तन छूटा पुनि बाहर डेरा ॥
 ये सराइ दिन चारि मुकामा । रहना नहिँ मंजल को जाना ॥
 सुत प्रिये तन धन सुपन सनेही । तन छूटे सुपने की दैही ॥
 मिथ्या तन से प्रीति लगावै । जीव भूलि धोखे में आवै ॥
 अता रामचंद्र भये राजा । भूले वोहू दैह सुख काजा ॥
 तिरिया काज कीन्ह संग्रामा । बन बन फिरै लछन अरु रामा ॥
 कुल आतम रावन को मारा । आतम हति लीन्हा सिर भारा ॥
 आतम पाप अनीती कीन्ही । बालिहिँ मारि काल गति लीन्ही ॥
 ये अधर्म कीन्हा अन्याई । आतम मारि दया नहिँ आई ॥
 दयाहीन जोइ दुष्ट कहावै । आतम हतै दया नहिँ आवै ॥
 जग में कोइ जिव मारै भाई । ता को सब जग दोष लगाई ॥
 तुलसी अनीति कीन्ह अधमाई । ता को जग भगवान बतलाई ॥
 ता को करता कहै भगवाना । रावन नारि लीन्हा नहिँ जाना ॥
 करता राम भया मतिहीना । कपट मिरग उनहूँ नहिँ चीन्हा ॥
 तिरिया काज कीन्ह सब कामा । लीन्हा भोग कीन्ह सोइ रामा ॥

(१) ओरा = ओला । मुं० दे० प्र० के पाठ में 'औरै' अशुद्ध है ।

कर्म भाव भौ मैँ भरमाये । कीन्हा कर्म भोग सोइ पाये ॥
 जिनजिन की पुनि नास कराई । तिन तिन हाथ नास पुनि पाई ॥
 नास बैर भोगै पुनि खाना । बैर दिये पुनि गर्भ समाना ॥
 दैह भाव दुख भरमै खाना । तुलसी भाखी सत्त प्रमाना ॥
 बिन हंकार हतै नहिँ भाई । अहंकार सस्तर बंधवाई ॥
 अहंकार आतम किया नासा । पुनि अहंकार खानि मैँ बासा ॥
 जो कछु किया राम हंकारा । रावन कुल आतम सब मारा ॥
 जस जस किया राम कृत काला । बाँधै जम डारै भौ जाला ॥
 जग अंधा तेहि साखि बतावै । वो पुनि कर्म आपने पावै ॥
 राम कर्म बस भरमै खाना । ता से मुक्ति कौन बिधि जाना ॥
 तुलसी राम मुक्ति नहिँ पाई । अंधा जग तेहि जपै बनाई ॥
 येहि बिधि कृष्ण दसौ औतारा । बाँधे काल कर्म की लारा ॥
 ये जग अंध मंद मति माई । कीन्हे कर्म कृष्ण भुगताई ॥
 जगन्नाथ सब जगत पुकारा । हाथ और पाँव कटे केहि कारा ॥
 गोपी कर्म कीन्हे संग माई । ता से कटे हाथ और पाँई ॥
 ये देखौ सादृष्ट बिचारा । वो हू परे कर्म की धारा ॥
 अस अज्ञान बूझ नहिँ लावै । लीन्हा सरन सोई दुख पावै ॥
 सरनि लीन्हे सोई बेहाला । उन को गहि बाँधेउ जमकाला ॥
 अपने मन में करौ बिचारा । बड़े बड़े बूढ़े भौ धारा ॥
 बड़े बड़े हाथी बहि जाई । कहौ मसा केहि लेखे माई ॥
 राम कृष्ण जग हाथी जाना । सोऊ बहे कर्म लपटाना ॥
 तुम पसु जीव मसा जम जाला । तुम तुम्हरा कहौ कौन हवाला ॥
 ये जग झूठ छूट तन नासा । तिरिया पुत्र भर्म भौ फाँसा ॥
 जन्मै बार बार भव माइ । तिरिया पुत्र अनेकन ठाँई ॥
 तन छूटा झूठा भया नाता । जहँ से मुए टूट तेहि साथी ॥
 अनेक दाव तन छूटि सिराना । सुख सम्पति सुपने सम जाना ॥

जिन ने तन का घाट सँवारा । ताहि न बूझि अबूझगँवारा ॥
 स्वाद करै इंद्री सुख नाना । सुपने का सुख देखि भुलाना ॥
 जिमि सुख बाम गरल सोह माना । जग का सुख है ताहि समाना ॥
 जग रस भोग बिषय रस माया । भोगै भोग छूट तन काया ॥
 नर तन भौ बारिद कर बेरा । सत सत संगति कीन्ह निबेरा ॥
 नर तन दुरलभ सब गोहरावै । बार बार यह तन नहिँ पावै ॥
 या मैं भूला अंध अचेता । कीन्हा तन ता से नहिँ हेता ॥
 नखसिख साज कीन्ह सब काया । ता का मन मैं सोच न आया ॥
 ये घर बार छूटि है धामा । तन बिनसै वाही से कामा ॥
 बूझै लेखा लेत हिसाबा । मुसकिल परै न होत जवाबा ॥
 वा साहिब की राह बिसारी । छूटै सुत बित गृह नर नारी ॥
 दस दरवाजे पवन समाई । छिन छिन स्वाँस जाइ रे भाई ॥
 कीन्हा ठाट अनेकन साजा । छिन छिन बजै कूच कर बाजा ॥
 ज्यों सेमर सूवा साखि भुलाना । टौँट देत पुनि घुवा उड़ाना ॥
 अस जग बंधन लेखा जानौ । टौँट मारि सुवना पछतानौ ॥
 सेमर सेवत जनम गँवावा । जनम बीतिरस एक न पावा ॥
 ज्यों बिल्ली सूवा संग धाई । येहि बिधिकाल रह्यो मँडराई ॥
 तू अचेत निद्रा नित सोवा । चाटी काल धरी जब रोवा ॥
 गाढ़े बंधन भया समाना । बाँधा काल कष्ट जब जाना ॥
 जम राजा बिधि बड़ा कसाई । देत मार पुनि कौन छुड़ाई ॥
 ता ते बूझौ अंध अचेता । ये तन जात भजन बिन बीता ॥
 आज काज है काल अकाजा । छिन छिन लेखाले जम राजा ॥
 तुलसी जिन सतसंगत कीन्हा । सत मत राह संत को चीन्हा ॥
 ता को जम पूछै नहिँ काला । कीन्ही किरपा संत दयाला ॥
 सतगुरु मारग तुरत लखावा । सतगुरु कृपा अगम घर पावा ॥
 सतगुरु सोई सत्त दरसावै । भूला आदि अंत घर पावै ॥

जो सतसँग सतगुरु ने दीन्हा । संत कृपा से मारग चीन्हा ॥
 सतगुरु पदम माहिँ पद माई । सतसँग सुरति गगन पर धाई ॥
 सतगुरु सत्त सत्त सतनामा । सूरति मिली भया निज कामा
 ये सतगुरु सत सत्त बतावा । सतगुरु पदम ग्रंथ मैं गावा ॥
 तीनि लोक में भिन्न निवासा । चौथा पद कहै तुलसीदासा ॥
 चौथे पद में सतगुरु बासा । तीनि लोक में काल निवासा
 पंथी गुरु भेद नहिँ जानै । कान फूँकि फिर भौ मैं आनै ॥
 जगत गुरु सतगुरु नहिँ चीन्हा । तन छूटे पुनि काल अधीना ॥
 वे सतगुरु गति गाइ सुनाऊँ । पदम पार पर अगम लखाऊँ ॥
 सतगुरु सुरति सैल दरसावै । सो सतगुरु सत दया लखावै ॥
 सूरति संध सिंध की पावै । ज्यौँ सलिता जल धार समावै ॥
 सूरति सार सब्द भई चेली । येहि बिधि आदि अगम खुलि खेली ॥

॥ धमार १ ॥

अहो सत सुरति सहेली, खुलि खेली हो ॥ टेक ॥
 गरजि घुमरि घन घोर सौरसखि, घट पट चटक चढ़ाई ।
 पल पल पलक पार दल अन्दर, चितवत नैना पट पेली ॥१॥
 घर घर से सब गवन सुहागिन, भँट भवन सब आई ।
 जिन मोहिँ गैल सैल समुंदर की, कीन्ही दृढ़ भान समेली ॥२॥
 गगन गिरा गुरु गाँठि छुड़ाई, भिनि भिनि बाट बताई ।
 सूरति सब्द समझ सुन माहीं, भई गुरु मारग चेली ॥३॥
 मैं मति मंद फंद फँसि खाना, जाना न भेद भुलाई ।
 बिष रस बिषम बिषय मन माहीं, धोई तुलसी बुधि मैली ॥४॥

॥ धमार २ ॥

अहो रँग राती रँगौली, रस माती हो ॥ टेक ॥
 सजत सिंगार सार सुख सागर, दुख सुख दूर बहाई ।
 चढ़ि कर महल टहल सतगुरु की, निरखा भिनि भिनि पिय भाँती ॥१॥

पिय पद परसि पलँग पिउ प्यारी, सब बिधि सेज सँवारि ।
 रसकस समझ सुरति पिय पद को, मो से कछु कहत न जाती ॥२॥
 रैन चैन रस रीत जीत कर, नित नित सैल सुनाई ।
 जोड़ जोड़ सखियाँ समझ घर आई, कीन्हा पिय के सुख साथी ॥३॥
 तुलसी पोढ़ जोड़ सम सूरति, सोइ सोइ भेद लखाई ।
 जे वे सुखी दुखी दुनियाँ में, जुग जुग जम मारत लाती ॥४॥

॥ धमार ३ ॥

अहो नभ निरखि निहारी, पिउ प्यारी हो ॥ टेक ॥
 सेत बरन सम सुरति समानी, कारे कँवल निकार ।
 पारे पवन भवन सुत लागी, भागी भिनिसब्द बिचारी ॥१॥
 दल पर नल निज नैन नगर में, चली चढ़ि सुन्न मँझार ।
 लौ की लगन जाइ जिन साजी, भाजी लखि लोक नियारी ॥२॥
 नल की नाल चाल चीँटी सम, भँवर गुफा सम धाम ।
 ता के पार पदम पद देखा, लेखानिज जनम सुखारी ॥३॥
 मिलन मिलाप साफ सुत घर में, सर सम सब्द सुधार ।
 सार समझ सुन मारग आई, तुलसी चढ़ सुरति हमारी ॥४॥

॥ धमार ४ ॥

अहो अज आदि अतूला, पद भूला हो ॥ टेक ॥
 भवन चतुरदस से पद न्यारा, निरगुन जोति न जाइ ।
 सुन्न न गगन धरन नहीं तारा, न्यारा कँवला कहूँ फूला ॥१॥
 रबि नहीं चंद फटिक उँजियारी, खुलि गया अजर किवारा ।
 महल महा सुन धुनि धधकारी, या से न्यारी चढ़ि झूला ॥२॥
 सब्द न सार लार नहीं सूरति, मूरति मन नहीं जाई ।
 जहँ रहँ संत अंत कछु नाहीं, औघट घट खिरकी खोला ॥३॥
 अगम अपार पार कहा गाऊँ, जाऊँ नित नित धाड़ ।
 कंथ की पंथ बेअंत बिचारौ, जिमि फाटक पर गज हूला ॥४॥

तुलसी तोल बोल नहिँ आवै, जावै जोड़ देत जनाई ।
गूढ़ गुप्त परघट नहिँ खोली, गावत सद्दन संग भूला ॥५॥

॥ धमार ५ ॥

अहो सतसंग अमोला, जिन तोला हो ॥ टेक ॥
करि करि संगरंग नहिँ जाना, कित बदरी कित काला ।
हाल के हेत हरष सब भूले, या से परिहै भ्रुकभोला ॥१॥
कह कह अंत संत सब हारे, बूझै न सद्द सुधार ।
पार की खबरि सुनत उठि भागे, लागे जिमि माँगत मोला ॥२॥
नहिँ कछु दाम धाम धन माँगै, करि परहेत सुनावै ।
लेत न देत हेत साँई के, परमारथ की गँठ खोला ॥३॥
सुनत सुनाइ गाइ बहु भाँती, साधी न समझ बिचार ।
कस कस जार लार भव छूटै, लूटै जम जानत पोला ॥४॥
तुलसी समझ कूर कूकर सम, छाड़ै न सूकर चाल ।
ता से बेहाल काल नित मारै, पारै पद चीन्ह न चोला ॥५॥

॥ धमार ६ ॥

अहो सतसंग समाना, जिन जाना हो ॥ टेक ॥
सतगुरु मर्म भर्म गढ़ तोड़ै, मोड़ भये मन दीन ।
लीन्है चरन सरन सतगुरु के, भीने रस रीति सिराना ॥१॥
जिन के इस्क इष्ट संतन कौ, प्रति प्रति दरसन लार ।
पार का सार धार दरसावै, दुख छूटत भौ भ्रम खाना ॥२॥
दरस परस मन मंजन पाना, सूरति रुचिर निकार ।
देत निहार ताल कर कूँची, जगै निरखत घट भाना ॥३॥
उमगी लहर सहर सूरति की, लखिलखि अंड अकार ।
चढ़ि चढ़ि चटक फटिक उँजियारी, तुलसी निज निरखि ठिकाना ॥४॥

॥ धमार ७ ॥

अहो मन भर्म भुलाना, बिष खाना हो ॥ टेक ॥
 पाँच पचीस तीस तैतीसा, तीन की तरँग तुलाई ।
 जाइ जो जवन भवन चौरासी, बासी बस बास निदाना ॥१॥
 ज्ञान न ध्यान जान नहिँ मानै, मन मत की दिस जाई ।
 ता से कर्म ईस सिर ऊपर, बाँधत जम जग फिरताना ॥२॥
 तपत सिला जिव तपन जरावै, तड़प तड़प दुख पाई ।
 वा बिधि वक्त सखत कर गाऊँ, जानै जोइ भोग समाना ॥३॥
 तुलसी आज काज नर दैही, फिरि नहिँ नर तन हाथ ।
 सोवत खात सैन सुख माहीं, बिनसै घट बीति सिराना ॥४॥

॥ सोरठा ॥

ये मन बिषम बिकार, सार सबद चीन्है नहीं ।
 कर्म भर्म भौ लार, हाथ हरख आवै नहीं ॥

॥ चौपाई ॥

जब सत संगत को मन चावै । तब कहूँ पकरि हाथ मैं आवै ॥
 संत समीप चरन चित वारो । तब कछु सूझै पद के पारो ॥
 सूरति निरति निकर कर बूझै । लख सत नाद सुरति जब जूझै ॥
 अगम निगम नित निरखि निहारा । भाखा आदि अंत पद सारा ॥
 अब दृष्टान्त कहूँ इक गाई । रहे सेठ सुन पच्छिम माहीं ॥
 ता का बिधि बरतंत बताऊँ । सब्द साखि बिच भाखि सुनाऊँ ॥
 जो बिधि भई बिधी बरतंता । सब्दन मैं गाई सब संता ॥

॥ रेखता ॥

अली इक बात सुन आई । कहूँ बरतंत समझाई ।
 अजब इक बात ताजुब की । सखी सुन कान दे अबकी ॥१॥
 समझ लख भेद की बाती । कहत मैं फटत है छाती ।
 चले सजि सेठ पच्छिम सौं । किया दिल देस दक्खिन को ॥२॥

संग सामान बतलाई । चढ़न घोड़ी और नाहीं ।
 सिपाही तीन तुरकानी । करन परदेस दूकानी ॥३॥
 बाट बिच सहर एक आया । लखा रुजगार चित चाया ।
 सखी सुन सहर का नामा । सहतपुर नग्र नौ ठामा ॥४॥
 पैठ सुन स्याम नित लावै । मठी बिच माल सब आवै ।
 लोभ मन माल से लागा । समझकर कीन्ह बहु जागा ॥५॥
 खरीदी माल की लीन्हा । बहुत भरती भरत कीन्हा ।
 लैंग काली मिरच राई । भरत भरि माल लदवाई ॥६॥
 चली रस राह को गाड़ी । रही नौ कोस पर ठाढ़ी ।
 जहाँ भट भील मवासी । रहत बन बीच का बासी ॥७॥
 सुना लद माल मग ठाढ़ा । परा सखि रात को धाढ़ा ।
 बंद बिच सेठ गये आली । पकरि जंजीर में डाली ॥८॥
 सखी संग तीन उन के री । भये सख ताहि के बैरी ।
 करे बस पाँच ने जेरा । रहै पचवीस का पहरा ॥९॥
 बिपति कहूँ क्या सुनौ उस की । भये दुख रोग और खुसकी ।
 निकरि कहूँ गैल ना पावै । कहौ घर कैान बिधि जावै ॥१०॥
 बिसरि घर आदि और अन्ता । खबर कहै को बिना संता ।
 करम बस राह रस खाना । बिना सतसंग भरमाना ॥११॥
 मिलै सतसंग मन टूटै । अरी तब बंद से छूटै ।
 अली भौ भील ने पकरा । जबर जंजीर में जकरा ॥१२॥
 अली बिधि बेद से बाँधा । करम की साधना साधा ।
 तिरथ और बर्त आचारा । करत नित नेम बिधि सारा ॥१३॥
 लिये फल भोग करमन के । फिरे भौ भाव भरमन के ।
 भया भौ काल का चारा । निकर नहिँ होत निरवारा ॥१४॥
 याद गइ भूलि सब घर की । मिली नर देह सुन अवकी ।
 करो मन दीनता लावो । संत से राह तब पावो ॥१५॥

मितै कर्म काल चौरासी । होइ तब लोक का बासी ।
 अली यहि बात से आवै । और बिधि राह नहिँ पावै ॥१६॥
 तुलसी जब बूझ में आवै । अधर घर आदि अपनावै ।
 फटै जब करम कागद के । लखै दुरबीन मन मँज के ॥१७॥

॥ सोरठा ॥

सुनौ सेठ संवाद, साध समझ कोइ बूझिहै ।
 सूझै समझ बिचार, ये अपार मन अगम है ॥

॥ चौपाई ॥

मन की अगम चौज गति गाऊँ । गुन गोविन्द बरनि येहि नाऊँ ॥
 बिन सतगुरु येहि धीर न आवै । बिना संत को पीर बुझावै ॥
 गुन की गैल गवन नित भागै । सोवत नित सतगुरु संग जागै ॥
 सतगुरु पदम पार बलिहारी । सुरति लखाइ दीन दिल न्यारी ॥
 नित नित सैल सुरति चढ़ि चीन्हा । तब मन सूरति भया यकीना ॥
 लखलख परा पदम पद न्यारा । तब भाखी भिनि सूरति पारा ॥
 जग बैराट बना बिधि सारा । अंस सिंध से आनि सँवारा ॥
 उठे बैराट बैराट बिधाना । मन तन साथ बँधा सोइ जाना ॥
 पच्छिम दिसा धाम मन के री । सो नहिँ सुपनेहू मन हेरी ॥
 जगत देख दूषन में आया । मन बनियाँ सुन सेठ कहाया ॥
 कर्म बंध बिच कीन्ह दुकाना । भर सुभ असुभ माल सोइ जाना ॥
 बंधन बेद जाल जग माहीं । भौ भ्रम भील जँजीर चढ़ाई ॥
 नित नित परै काल का डाका । जग जग घेरि कर्म के नाका ॥
 चौकी पाँच पचीस बसाई । तीन गुनन बिच नाम गुसाई ॥
 जो कछु माल कर्म का लादा । डाका परा सेठ पर जादा ॥
 भये कैद बस सेठ बिचारे । बिना संत कहौ कौन उबारे ॥
 भूले सेठ सार घर अपने । बिन सतगुरु छूटै नहिँ सुपने ॥
 संत कृपा कोउ राह बतावै । बूझै बाट समझि घर आवै ॥

बिन बूझे नहिँ लगै ठिकाना । जुग जुग भरम खानि भरमाना ॥
जब सतगुरु ने सद्द सुनाया । पच्छिम से दक्खिन को आया ॥
कर दुकान दुनियाँ ने लूटा । माल लुटे पर फिर नहिँ छूटा ॥
चर और अचर खानि जुग चारा । मन सोइ सेठ बंद बिच डारा ॥
सज्जन साध करै निरवारा । उतरै भौसागर के पारा ॥
सूरति चढ़ै सद्द निरवारा । नहिँ तो रहै काल की जारा ॥
कर्म काल ने माल डरावा । जग जम जाल खरीदन आवा ॥
जा की रमज रेखता गाई । बूझै साध समझ जिन पाई ॥
बेहोसी जग फाँस फँसाना । निज घर अपना आदि न जाना ॥
संत दयाल सद्द दरसावै । ये मन बिच सुपने नहिँ पावै ॥
निस दिन फिरै अचेत अयाना । जुग जुग भरमै चारो खाना ॥
अब चित बिच कछु चेत कराई । दुरलभ तन नर देही पाई ॥
दृग से देख चेत चित माहीं । ये जग जाल बहा भौ माहीं ॥
मन घरबार बाट बिच रोका । व्यापैनित नित संसय सोका ॥
अब या काइक सद्द सुनाऊँ । संत साध की साखि बताऊँ ॥

॥ शब्द १ ॥

दृग देखौ रे चित चेतौ रे, ये जग जात बह्यौ ॥ टेक ॥
ये घटवार घाट घट रोकै, धोखे धार बहावै ।
नौका नाव धाड़ धसि पैठै, बैठै मन धिर लावै ॥

बाट बटाऊ लेतो रे ॥१॥

सुर नर मुनि गंधर्व अरु देवा, ब्रह्मा विष्णु करत मन सेवा ।
बिन घट भेद न जानै भेवा, नारद व्यास न पावै छेवा ॥

बेद पुकारत नेतो रे ॥२॥

ये तन तोर तलैया सूखै, काँच महल कूकर कृत भूसै ।
आसा आस पास पद चूकै, बार बार बिष धर धर टूकै ॥

भटक भटक भ्रम लेखो रे ॥३॥

तुलसी मगर मीन मुख माई, चर और अचर चराचर खाई ।
साईं सब्द सुरति के माई, ये बिधि लार लार लौ लाई ॥
मन ब्रत तत सत सेतो रे ॥४॥

॥ शब्द २ ॥

अरी पिया परखौ री हिया हरखौ री, एरी आली आदि अटा ॥टेक
अलख अकेली चली अलबेली, पेली परख निहारी ।
सैली सुरति निरखि नभ न्यारी, सो धन पिया को लानै प्यारी ॥

चलौ सखि पिय संग घर को री ॥१॥

चतुर सहेली सुन पर खेली, मेली मूर बहाई ।
घाड़ धार पार भट भेली, घट चढ़ चटक चढ़ाई ॥

घुमरि घुमरि घन करको री ॥२॥

बदरी स्याम सुंदर सुत न्यारी, ये मत मूरन जानै अनारी ।
संत अधर रस अंत बिचारी, जग बिषरस भौ खानि मिखारी ॥

संध सुरति सत सरकौ री ॥३॥

ये लै लार पार पट माहीं, ताई तत्त नियारी ।

तुलसी मरम सरम सतगुरु को, पूर परम गुरु आई ॥

कोइ सतगुरु सिष तरको री ॥४॥

॥ दोहा ॥

जिन सतगुरु सरना तका, पका सुरति के माहिं ।

जाइ पदमपुर कँवल मैं, हरख जो हिये समाइ ॥

॥ चौपाई ॥

सुनि सखि प्यार पुरुष का गाऊँ । ता मैं आदि अंत दरसाऊँ ॥

जो जस भया भाव बिधि लेखा । तस तस भाखौँ अगम अलेखा ॥

बहु बिधि भाव बिपति से पाये । दुख सुख बिरह भाव दरसाये ॥

खोजत खोजत खोज लगावा । गुरु ने समझ बूझ समझावा ॥

भेष पंथ सब झारि निहारी । कोई न भाखा भेद बिचारी ॥

ढूँढ़त ढूँढ़त भई बेहाला । सब जग जीव परे जम काला ॥

कोऊ न कहै बात सत के री । सब जग पचे भेष पर हेरी ॥
 ब्याकुल तन मन बिरह समानी । कोई न कहै पिया पद जानी ॥
 सत मत पत की पीर समानी । बिकल बिपत चित कहा बखानी ॥
 ये जग भीतर काल कराला । बाँधा सब जग जम बिच जाला ॥
 तन हबूब बुल्ला जस फूटा । स्वाँस स्वाँस छिन छिन दम छूटा ॥
 पवन भवन बिच स्वाँस समानी । जीव निकरि जस हवा उड़ानी ॥
 ज्येँ सुपना जग जग जस माना । सोवत जुग जुग पिया न जाना ॥
 दुर्लभ देह दाव अब आया । धृग जीवन जिन पिया न पाया ॥
 सुन या की बिधि सब्द लखाऊँ । बिधि बिहाग बिच बरन सुनाऊँ ॥

॥ बिहाग १ ॥

बिपति कासे गाऊँ री माई । जगत जाल दुख दाई ॥ टेक ॥
 रात दिवस मोहिँ नींद न आवै । जम दारुन जग खाई ॥ १ ॥
 पिय के ऐन बिन चैन न आवै । हर दम बिरह सताई ॥ २ ॥
 जा दिन से पिय सुधि बिसराई । भटक भटक दुख पाई ॥ ३ ॥
 तुलसीदास स्वाँस सुख नाहीं । पिय बिन पीर सताई ॥ ४ ॥

॥ बिहाग २ ॥

आली री, हिये हरष न आवै । कारे की लहर ज्येँ सतावै ॥ टेक ॥
 तन मन सुधि बुधि सब बिसराई । अन्न पानी नहिँ भावै ॥ १ ॥
 कहा करौँ कित जावँ सखी री । पिय बिन नींद न आवै ॥ २ ॥
 है कोइ सतगुरु पिय को लखावै । पत पिय पीर बुझावै ॥ ३ ॥
 तुलसी तलफ तलफ तन सूखै । मन बिच थिर नहिँ लावै ॥ ४ ॥

॥ बिहाग ३ ॥

अरी कहँ खोजौँ री माई । गुरु बिन भेद न पाई ॥ टेक ॥
 खोजत खोजत जनम सिराना । काहूँ न खोज लखाई ॥ १ ॥
 भेष पंथ सब खोजि निहारी । जोग बैराग गुसाई ॥ २ ॥
 अब मन मोर गुहार पुकारा । त्राह त्राह तन माई ॥ ३ ॥
 तुलसी तलब सुलभ जब पाई । सतगुरु अलख लखाई ॥ ४ ॥

॥ बिहाग ४ ॥

आली री गुरु गैल लखाई । अलख पलक पर पाई ॥ टेक ॥
 दृग दुरधीन चीन्ह जब पावा । हरदम सुरति लगाई ॥ १ ॥
 लीला सिषर निकर नभ न्यारी । छिन छिन सुरति समाई ॥ २ ॥
 पच्छिम द्वार पार पट खेले । अगम निगम गम पाई ॥ ३ ॥
 तुलसी तत्त तरक तन माहीं । अस आतम दरसाई ॥ ४ ॥

॥ बिहाग ५ ॥

आली री आगे खोज लगाई । चढ़ि सुति गगन समाई ॥ टेक ॥
 मकरतार मारग लखि पावा । ता बिच धधक चढ़ाई ॥ १ ॥
 मानसरोवर निरखि निहारी । बेनी मै पैठि अन्हाई ॥ २ ॥
 भीतर भिन्न चिन्ह भइ न्यारी । कोटि भान छवि छाई ॥ ३ ॥
 ता मध बीच द्वार इक दरसा । साहिव सिंध कहाई ॥ ४ ॥
 तुलसी सुरति सब्द सुन माहीं । गुरु पद सुरति मिलाई ॥ ५ ॥

॥ बिहाग ६ ॥

आली री इक अचरज बानी । गुरुमुख आपबखानी ॥ टेक ॥
 चौथे चार पार इक स्वामी । लखि भिनि नाम अनामी ॥ १ ॥
 सूरति सैल महल पिय पाया । रूप न रेख निसानी ॥ २ ॥
 मै मिलि जाइ पाइ पिय अपना । जल जल धार समानी ॥ ३ ॥
 प्यारी प्रीति जीति पिय पाये । तुलसी तलब बुझानी ॥ ४ ॥

॥ बिहाग ७ ॥

आली री आज अनंद बधाई । पिय पद परसि पठाई ॥ टेक ॥
 ये सुख चैन सैन कहा गाऊँ । कहि कहि संत सुनाई ॥ १ ॥
 आदि अनादि अमर पद पावा । दुख सुख बिपति नसाई ॥ २ ॥
 अब सब मरन जिवन भ्रम भागा । पिय प्यारी पद पाई ॥ ३ ॥
 तुलसी दास बास घर अपने । अली सुख कहत न जाई ॥ ४ ॥

॥ चौपाई ॥

ये सुख का का कहौँ बिचारा । जानै जोई कीन्ह निरवारा ॥
 सतगुरु से लेखा जिन पावा । बिन गुरु हाथ न काहू आवा ॥

गुरु गुरु अंतर जानौ भाई । गुरु चिकटा गुरु चोख जनाई ॥
 अस अस गुरुमत बूझि बिचारा । सत सतगुरुमत इन से न्यारा ॥
 सतगुरु सत मत अगम लखावै । जा से जीव परम पद पावै ॥
 जग के गुरु भेद नहिँ जानै । ज्यों बनियाँ कर हाट दुकानै ॥
 आप आदि अपनी नहिँ जानी । सिष कहौ कस पावै सहदानी ॥
 जो संतन सुत राह पुकारी । सो सब खोजि खोजि पचि हारो ॥
 जगत जीव संसार बिचारा । ये कहा जाने सार असारा ॥
 जस जस कीन दीन समझाई । तस तस बाँधी गाँठि लगाई ॥
 इन सब आस बास फँस मारा । केहि बिधि उतरै भौजल पारा ॥
 जगत गुरु बिस्वास न माना । उनहूँ सतगुरु राह न जाना ॥
 तुलसी सतगुरु सत्त लखावा । पुनि चढ़ि गये आदि घर पावा ॥
 मैं संतन कर दास निकामा । किरपा कीन्ह दीन्ह बोहि धामा ॥
 मैं पुनि कल्प कल्प कर भूला । नीच जानि मेटेउ दुख सूला ॥
 बुधि मतिहीन जानि कियो ढोहा । संत कृपाल काटि मद मोहा ॥
 सतसँग सतगुरु पंथ लखावा । सतगुरु संत पंथ सत पावा ॥
 चौथे पद सतगुरु जिन जाना । ता का आवागवन नसाना ॥
 जग गुरुवा से काज न होई । सत्त कही राखी नहिँ गोई ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी सतसँग सार, जग असार जानै नहीं ।
 सूरति सत मत द्वार, लखि अगार संतन कही ॥१॥
 जग अबूझ अज्ञान, सना करम बस कस लखै ।
 पूजै जल पाषान, यों भुलान भौ मैं परा ॥२॥

॥ छंद ॥

सतसंगति गाई जिन जिन पाई । करम नसाई पार भई ॥१॥
 जिन कही बखानी देखि निसानी । जिन जिन घर की राह लई ॥२॥
 बूझै मत दूरा कोइ कोइ सूर । अगम अपूरा सार सही ॥३॥

उनकी गति न्यारी संत बिचारी । भेद अपारी पार भई ॥४॥
 उन उन गोहराई ग्रंथन गाई । भेद सुनाई बूझि दई ॥५॥
 मन में मद माते बिष रस खाते । सहै जम लातै मार सही ॥६॥
 कोइ कहै बुझाई मन नहिं लाई । महा मद माहीं ज्ञान गई ॥७॥
 मति अपनी ऊँची और की नीची । बुधि बिष सीँची मान मई ॥८॥
 संतन गति पावै भूल छुड़ावै । संत लखावै भेद कही ॥९॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी तत्त बिचार, जो अगार आगे कही ।
 सही संत बिधि बात, संत साथ पावै सही ॥

॥ बिलावल ॥

तुलसी जग हाल साल, काल जाल माहीं ॥टेक॥
 पंडित और भर्म भेष, देखा सब अंध अचेत ।
 भुला ब्रत इष्ट टेक, पाहन लौ लाई ॥
 तीरथ असनान ध्यान, खोजत नर चारि धाम ।
 ढूँढ़त पोथी पुरान, मूरत मन माहीं ॥
 देखा सब जगत भेष, नेक खोज नाहीं ॥१॥
 कोइ कोइ जपै इष्ट जाप, आपा चीन्है न आप ।
 बाँधे सिर मोट पाप, साफ नरक जाई ॥
 बूझै सतसंग सार, पावै संतन की लार ।
 मन का मद मूर मार, सार पार पाई ॥
 जाना मन भूल तोड़, पोढ़ सुरति साई ॥२॥
 छिन छिन तन छीन जात, बूझै नहिं एक बात ।
 तेरे कोउ कोउ न साथ, जाति पाँति नाहीं ॥
 सम्पत सुख लार छार, निरखौ सुत नाहिं नार ।
 कुटुम बंध लोक चार, भूला भल भाई ॥
 ये कोउ तेरे न लार, जग असार जाई ॥३॥

तुलसी तन होत छार, या से अगमन बिचार ।
 कीजै भव उतर पार, नौका नसि जाई ॥
 बूझै कोइ संत साध, सूझै कटु अंत आदि ।
 जूझै छिड़ि सुरति नाद, लखि अनादि पाई ॥
 पावै पद पुरुष दाद, साध सुरति माई ॥४॥
 मानौ सज्ञान सीख, मँगिहौ भौखानि भीख ।
 भाखौ अज अमर लोक, देख द्वार माई ॥
 जनमन और मरन छूट, करमन की फाँसि टूट ।
 सूझा मत साँच झूठ, लूटा जग जाई ॥
 तुलसी मुख कहै बैन, नैन नजर आई ॥५॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी जगत भुलान, ज्ञान स्थान मद आप मैं ।
 बूझै सत मत नाहिँ, आप अपनपौ ना लखै ॥

॥ चौपाई ॥

भूला सब जग आपा माहीं । आप अपनपौ खोजत नाहीं ॥
 मनमत मान बूझ नहिँ आवै । अपना ज्ञान ऊँच ठहरावै ॥
 अपनी बुध सुध मनमत माहीं । ता से ज्ञान स्थान गति गाई ॥
 अपनी मनमत रत गत सानी । मान बड़ाई ज्ञान अज्ञानी ॥
 तुलसी जग अपने मन माई । ज्ञान स्थान और मान बड़ाई ॥
 जा से कहूँ ज्ञान बिधि गाई । सो पुनि आन मोहिँ समझाई ॥
 मैं कहूँ एक ज्ञान बिधि भाई । वो पुनि चार मोहिँ समझाई ॥

॥ संवाद साथ पलकराम नानक पंथी के ॥

॥ चौपाई ॥

पलकराम इक नानक पंथी । रहै कासी में बड़ी महंती ॥
 कहते वाह गुरु मुख आयै । मन अतिलीन दीन गति गाये ॥
 पैर परन हमहूँ पुनि कीन्हा । उठ कर पकर चरन की लीन्हा ॥

चाल बिधी जस साधन राही । जस जस देखी उनके माहीं ॥
 अंतर दया भाव दिल दीन्हा । महिमा संत अंतर नहिं चीन्हा ॥
 संत प्रीत मन पूरा भावै । सुनै कोइ संत आप उठि धावै ॥
 तन मन रहत संत सरनाई । मन उमगै मुख संत बड़ाई ॥
 सील सुभाव नीच मन माहीं । मिलै संत चरनन लपटाई ॥
 निरमल बुद्धि ज्ञान रस राता । मन सब चरन प्रीत हित बाता ॥
 हमैं देखि हिये हरष समानी । चरन परे दुरै नैनन पानी ॥
 जस कछु रीत साध मत माहीं । तस तस तुलसी उन में पाई ॥
 करता पुरुष नाम सत मानै । निरंकार जोती सोइ जानै ॥
 पौड़ी सोदर पढ़ै अनेका । जपजी का परमार्थ देखा ॥
 आदि पुरान पचग्रंथी जानै । सुषमनि आसावार बखानै ॥
 गुरु गोविंद मुख भाखै बानी । बादसाह दस में सहदानी ॥
 ग्रंथ बिहंगम कछु कछु जाना । पढ़ै और कुल जकारि बिधाना ॥
 संत चरन मन में रत जानै । हम से पूछ दीन मत आनै ॥
 बावे निरंकार कहि गावा । और निरंजन जोति बतावा ॥
 इनके परे और नहिं कोई । अस बावे मुख भाखा सोई ॥
 वाह गुरु वाह गुरु बतावा । बावे मुख ग्रंथन में गावा ॥
 लछमीचंद पुत्र बतलावा । दूसर सिरीचंद कर गावा ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

साहिब नानक संत निदाना । जो कछु कहनि कही परमाना ॥
 खुद साहिब नानक मुख बानी । कही अगम कोइ बिरला जानी ॥
 वै पहुँचे चढ़ि सुरति निसाने । सब्द फोड़ गये अगम ठिकाने ॥
 वै स्वामी गति अगम अपारा । तुलसी बन्दै बारम्बारा ॥
 बार बार बन्दौ सरनाई । तुलसी चरन धूर में पाई ॥
 साहिब नानक बड़े दयाला । गये अधर मारे जम काला ॥

और कबीर संत रस पाये । काल जीति सत सब्द समाये ॥
 औरन की गति कहँ लग गाई । जो जो गये अगमपुर ठाई ॥
 तुलसी निज निज दास तुम्हारा । सरनि जानि मोहिँ कृपा निहारा ॥
 नानक नैन नजर भर हेरा । तुलसी नीच चरन का चेरा ॥
 सतसंगति गति अगम अपारा । तुलसी बन्दै बारम्बारा ॥
 तुलसी हरष न हिये समाई । जब से परसे तुम्हरे पाँई ॥
 संत रीति गति सब बिधि देखा । जस जस कही रीति रस लेखा ॥
 जस नानक मत कहा अपारा । तस तस मुख भाखा सब सारा ॥
 एक समय बावे गति लेखा । गोरख गुप्ठी भई अनेका ॥
 नवौ नाथ चौरासी सिद्धी । बावे कीन्ह गुप्ति की ऋद्धी ॥
 ऐसे ग्रन्थ साखि बतलावा । बावे ग्रन्थ आप मुख गावा ॥
 जपजी के परमारथ माहीं । बावे गुप्ति भिन्न करि गाई ॥
 सब सिद्धन से चरचा कीन्ही । पुनि बावे गति काहु न चीन्ही ॥
 या की बिधी ग्रन्थ के माहीं । मैं सुच्छम बिधि भाखि सुनाई ॥
 जस जस भई गुप्ति बिधि भाई । भाखी जप परमारथ माहीं ॥
 चौरासी सिध औरनौ नाथा । दीन होइ जोड़े सब हाथा ॥
 हारि चरन बावे के लीन्हा । बावे साथ जो भये अधीना ॥
 तुलसी दीन भाव कर बोले । पलकराम से पूछन खोले ॥
 स्वामी अरज एक चित आई । कृपा दृष्टि कर भाखि सुनाई ॥
 बावे बरस बिधी कस भइया । सम्बत बरस की बिधी सुनइया ॥
 बावे को कितने दिन भयऊ । गोरख कौन समय मैं रहेऊ ॥
 गोरख सम्बत एकसै ग्यारा । हुए गोरख सोइ सम्बत सारा ॥
 एकसै ग्यारा सम्बत माहीं । गोरख कुँडली मैं बिधि गाई ॥
 नवौ नाथ चौरासी सिद्धा । उपजे सुकदेव तब की बिद्धा ॥
 माया खँचि पलक भर राते । उपजे सुकदेव तब की बातें ॥

पाँच हजार बरस तेहि भइया। सिध चौरासी समय तेहि रहिया ॥
बावे कितने बरस प्रमाने । सम्भवत कौन कौन से जाने ॥

॥ पलकराम ॥

तुलसी स्वामी कहूँ बुझाई । पंद्रहसै अस्सी के माहीं ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

अब सोलह सै सोलह जाना। बावे बिधी कहूँ परमाना ॥
जेते दिन बावे को बीता । सो बिधि बरनिकहूँ सत रीता ॥
पंद्रहसै अस्सी के माहीं । अब सोलह सै सोलह भाई ॥
छत्तिस बरस बावे बिधि जाना । पंद्रहसै पाँच गोरख परमाना ॥
पंद्रहसै बरस गोरख भये आगे । बावे बिधी गुष्टि नहिँ लागे ॥
छत्तिस बरस बावे बिधि साँचा । गोरख भये पंद्रह सै पाँचा ॥
ये तो बिधी मिली नहिँ स्वामी । ग्रन्थ माहिँ कस गुष्टि बखानी ॥
गोरख पंद्रह सै भये आगे । छत्तिस बरस बावे को लागे ॥
इनकी गुष्टि कौन बिधि भइया । तुलसी के मन संसय रहिया ॥
भर्म एक मोहिँ और समाना । पलकराम कहूँ भाखि बखाना ॥
चौरासी सिध और नौ नाथा । ये तो भये सुकदेव के साथी ॥
पाँच हजार बरस तेहि भइया । बावे कुल छत्तीस कहइया ॥
इन उन गुष्टि कौन बिधि कीन्हा । ये बिधि मिलि नहिँ आवै यकीना ॥
कस कस पलकराम पहिचानै । ये साँची कहौ कैसे मानै ॥
पलकराम साधू सकुचाना । भर्म बहुत मन अपने आना ॥
पूछा जवाब भेद नहिँ पाई । पलकराम मन बूझ समाई ॥
पलकराम साधू बड़े भोले । कहौ तुलसी अस कहि कर बोले ॥
कहै तुलसी मैँ दास तुम्हारा । तुम्हरे चरन माहिँ निरवारा ॥

॥ पलकराम ॥

तुलसी स्वामी करौ बखाना । या का मन मैँ भर्म समाना ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

पलकराम सुनियौ बिधि बानी। बावे की बिधि कहाँ बखानी ॥
 वे गोरख बिधि नहीं बताई। ये गोरख है तन के माहीं ॥
 पिंड माहिं ब्रह्मंड समाना। गोरख तन में संत बखाना ॥
 मन बस गोइंद्री के माहीं। गोरख गोरख नाम कहाई ॥
 मन गोरख को गुष्ट सुनाई। ये बावे अपने मुख गाई ॥
 नौ में नाथ द्वार मन जाई। नौनाथ मन नौनाथ कहाई ॥
 चौरासी चौरासी खाना। करि करि गुष्ट फेरि मन आना ॥
 गोरख मन गोइंद्री साथ। नथ नौद्वार सोई नौ नाथा ॥
 नित नित परै चौरासी खाना। मन चौरासी सिद्ध बखाना ॥
 कही बावे नानक मुख बानी। तन भीतर अंदर पहिचानी ॥
 जो संतन मुख भाखि सुनाई। सो सब तन अंदर में गाई ॥
 दसवाँ महल गगन के माहीं। सूरति चढ़ी द्वार दस जाई ॥
 ता को दसवाँ महल बताई। सूरति चढ़ि कीन्ही पतसाही ॥
 सूरति इत उत चढ़ि दस द्वारा। तेहि दसवाँ पतसाह बिचारा ॥
 गुरु गोबिंद जी बावे कहिया। पातसाह दसवाँ बतलइया ॥
 नौ को तजि दसवें घर गइया। दसवाँ पातसाह येहि कहिया ॥
 नानक सूरति चढ़ी अकासा। नौ को तजि दसवें में बासा ॥
 दसवाँ महल दस द्वार कहाई। सूरति साथ नाम पतसाही ॥
 पातसाह दस महल बताई। नानक येहि बिधि मुख से गाई ॥
 पलकराम मन में हुलसाना। तुलसी सब घट माहिं बखाना ॥

॥ प्रश्न पलकराम ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी स्वामी पूछौ बानी। बूझ मता की करौ बखानी ॥
 मन खुति कहौ कहाँ से आई। कस कस दसवें महल समाई ॥

(१) बादशाही ।

आदि अंत बिधि बिधि समझावौ । तब को हता सोई बतलावौ ॥
 मूल भेद मोहि कहिये स्वामी । तब को हता सही पहिचानी ॥
 मूल को भेद भिन्न कहौ गाई । है बाहर कै तन के माहीं ॥
 ॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

पलकराम मैं तुम्हरौ दासा । सुन बिधिकहाँ बचन परकासा ॥
 पलकराम भाखूँ बिधि बानी । जब नहिँ आदि अंत नीसानी ॥
 नहिँ तब वेद बिधी का चीन्हा । नहिँ तब हता वेद जिन कीन्हा ॥
 नहिँ तब आदि निरंजन देवा । ब्रह्मा बिष्णु महेस न सेवा ॥
 नहिँ तब आदिसक्तिनिरमाया । नाम बिदेह धरी नहिँ काया ॥
 नहिँ तब पाँच तत्त ब्रह्मंडा । नहिँ चरअचरखानि भया अंडा ॥
 नहिँ बिस्तार सरीर बनाया । सूर चंद आकास न माया ॥
 नहिँ तब नादि आदि कछु अंता । जगत न रहै भेष और पंथा ॥
 नहिँ तब रूप रेख नहिँ काया । मनबुधिसुरति एक नहिँ आया ॥
 जब निरगुन हुआ हता न भाई । सरगुन की कहौ कौन चलाई ॥
 जाति निरंजन नहिँ निरकारा । साख पुरान न वेद बिचारा ॥

॥ प्रश्न पलकराम ॥

॥ चौपाई ॥

पलक राम पूछै अस बाता । कस कस हता कहौ बिख्याता ॥
 कहौ बिधि भाखि अगम की बानी । तब को हता कहौ सहदानी ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

पलकराम सुनियौ दै कानी । आदि अंत भाखौँ सहदानी ॥
 चौथे पद सत मत सत नामा । पातसाह दस याहि बखाना ॥
 मानक सुरति महल पर कीन्हा । पक्रे पातसाह सोइ चीन्हा ॥
 नानक सूरति चढ़ी अटारी । बाह गुरु पद निरखि निहारी ॥

वाह गुरु चौथे पद बासा । गये नानक सतनाम निवासा ॥
नानक बिधि सब अपनी भाखी । जो जो लखा अगम की आँखी ॥
वा की नकल ग्रंथ मैं गाई । जगत अबूझ बूझ समझाई ॥
निःअच्छर अच्छर मैं नाई । तेहि की नकल ग्रंथ बिधि गाई ॥

॥ प्रश्न पलकराम ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी स्वामी करौ बखाना । निःअच्छर का कौन ठिकाना ॥
निःअच्छर बासा केहि ठाई । ता की बिधि मोहि बरनि सुनाई
को है सब का सिरजनहारा । कस कस किया आदि बिस्तारा ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

सत्त नाम सुत निरगुन राई । तास अंस जोती उपजाई ॥
जोती निरगुन हते न तेही । रह सतनाम पुरुष बैदेही ॥
जब ओंकार आदि नहिं भाई । पूरन ब्रह्म हते नहिं जाई ॥
रंकार अच्छर नहिं काला । तब नहिं मनमन कीन्ही जाला
ओअंग सोहंग हते न भाई । आदि अंत महु कछु नाहीं ॥
सतकर आदिसुरति घटमाहीं । निःअच्छर मैं आनि समाई ॥
सूरति निःअच्छर से आई । सूरति सोहंग को उपजाई ॥
ता को बास अगमपुर ठामा । सोहंग कीन्हा सकल बिधाना ॥
आगे भेद कोऊ नहिं पावै । स्वाँसा सोहंग कहि गोहरावै ॥
सोहंग का कोइ भेद न पाई । सोहंग स्वाँसा है नहिं भाई ॥
तत्त पाँच गुन तीनिकी स्वाँसा । सोहंग सुरति कीन्ह परकासा ॥
सोहंग है ब्रह्मंड के पारा । सोहंग सब मैं कीन्ह पसारा ॥
नाम भेद वाहू से न्यारा । नानक सत्त नाम पद सारा ॥
चौथा पद सतनाम अकाया । ता के परे अनाम अमाया ॥
नाम सुरति बिधि सब के माहीं । अगम भेद कोऊ नहिं पाई ॥

चहूँ लोक मैं व्यापक नामा । न्यारा चहूँ लोक मैं जाना ॥
 वा की संध सुरति नहिं पाई । सूरति संध राह नहिं जाई ॥
 मूल नाम जानै नहिं कोई । ता तैं सूरति रही बिगोई ॥
 निरगुन सरगुन सब ठहरावै । ता के आगे भेद न पावै ॥
 पलकराम सुनियौ दै काना । निरगुन अच्छर ब्रह्म बखाना ॥
 निरगुन ररंकार है सोई । निरंकाल काल है जोई ॥
 निरगुन नाम निरंजन होई । संत काल भाखै तेहि सोई ॥
 सत्त नाम इनहूँ से न्यारा । ये बावे मुख कही बिचारा ॥
 निरगुन कहियत है ओंकारा । सत्त नाम बिधि अंगम अपारा ॥
 घट म सुरति आदि से आई । नाम निअच्छर अच्छर नाहीं ॥
 निःअच्छर अच्छर बिस्तारा । नाम भेद वाहू से न्यारा ॥
 नाम डोरि है सब के माहीं । नाम भेद कोउ चीन्है नाहीं ॥
 निरगुन सरगुन नाम बलावै । सत्त नाम का मरम न पावै ॥
 बिन सतसंग समझ नहिं आवै । सतगुरु बिना राह नहिं पावै ॥
 चौथा पद सत नाम बसेरा । वाह गुरु का वाँही डेरा ॥
 वाह गुरु सतनाम कहाये । ये बावे मुख अपने गाये ॥
 सूरति चढ़ै गगन को धावै । वाह गुरु पद जाइ समावै ॥
 वाह गुरु पद पदम मँझारा । ये बावे मुख भाखा सारा ॥
 वाह गुरु मुख भाखि बखानै । वाह गुरु का मरम न जानै ॥
 वाह गुरु चौथे पद पारा । सूरति चढ़ि देखै सत सारा ॥
 ये बावे मुख भाखि बखानी । वाह गुरु चौथे पद जानी ॥
 बावे वाह गुरु बतलावा । तुम ने याहि गुरु मन लावा ॥
 याही गुरु जगत के कीन्हा । वाह गुरु का मरम न चीन्हा ॥
 याहि गुरु जग सभी भुलावा । चेला पंथ दुकान लगावा ॥
 वाह गुरु पद इन से न्यारा । निरगुन सरगुन दोउ केपारा ॥
 ये नानक बिधि भाखि बखाना । पलकराम सुनियौ दै काना ॥

परे साध कढ़ियाव बतावा । तुम दुकान बनिये बिधि लावा ॥
 कढ़ियावै सुति परे को साधा । यौं बावे भाखी बिख्यादा^१ ॥
 सुरति काढ़ि पर साधै कोई । तुम कढ़ाव हलुवे बिधि जोई ॥
 हलुवा कढ़ाव न बावे गाई । सुरति काढ़ जिव घर को जाई ॥
 पंथी पंथ दुकान लगाई । लालच हलुवे लाभ बड़ाई ॥
 बावे कहा और बिधि लेखा । घर दुकान नहिं क्रिया बिबेका ॥
 बावे अगम निगम बिधि गाई । सुरति काढ़ जिव घर को जाई ॥
 भौजल छूटि जीव मुक्तावै । सूरति मिलै सब्द जत्र पावै ॥
 सूरति सब्द पंथ बतलावा । तुम हलुवे का पंथ चलावा ॥
 सूरति चढ़ै पंथ को जाई । तुम पंथी इक जाति बनाई ॥
 पंथी राह भेद नहिं पावा । येहि बिधि बावे पंथ न गावा ॥
 ये कढ़ाव मत परघट जाना । गुप्त संत मत और बखाना ॥
 संत मता सब दूर बतावै । बावे संत दूरि गति गावै ॥
 ये तौ कढ़ाव दरब सँग होई । गुप्त संत औरै गति जोई ॥
 दरब कढ़ाव हलुवे मै होता । जगत खरीद मुक्ति करि लेता ॥
 जा से समझि परा सब लेखा । संत गुप्त कछु औरै देखा ॥

॥ पलकराम उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी स्वामी सत्त सँवारा । संत मता सब गुप्त पुकारा ॥
 स्वामी तुलसी जो तुम भाखी । बावे कही मिली सब साखी ॥
 सूरति सब्द पंथ बिधि गाई । येहि बिधि बावे ग्रंथ सुनाई ॥
 बावे बचन और तुलसी बानी । गुप्त कही सो भई निसानी ॥
 निरंकार बेद बतलावै । आदि जाति बिधि भेद लखावै ॥
 इन का भेद जगत सब कहिया । संत का मता बेद नहिं पड़या ॥
 संत का मता बेद नहिं जानै । निरंकार और जाति बखानै ॥

(१) बिख्यात ।

निरंकार बेद ने भाखी । जानै न संत मते की साखी ॥
 संत मते को दूर पुकारा । निरंकार से होइ है न्यारा ॥
 निरंकार तौ बेद बतावा । संत मते का अंत न पावा ॥
 गुप्त संत मत न्यारा होई । जहँ निरंकार जोति नहिँ दोई ॥
 निरंकार को बेद बखाना । संत गुप्त मत और ठिकाना ॥
 सत्त पुरुष सतनाम कहाई । निरंकार जहँ जोति न जाई ॥
 तीनि लोक निरंकार समाना । बेद नेति बिधि करत बखाना ॥
 सत्त नाम चौथे के माहीं । निरंकार नहिँ बेदन पाई ॥
 इन के परे संत मत जाना । यौं मत बावे गुप्त बखाना ॥
 तुलसी स्वामी ये मत सूझा । तुम्हरी कृपा गुप्त अस बूझा ॥
 संत मता कछु इन में नाहीं । संत मता बिधि औरै राही ॥
 ये कढ़ाव बिधि कर्म पसारा । वाह गुरु इन बिधि से न्यारा ॥
 ये तौ याह गुरु जग नाता । वाह गुरु बिधि औरहि बाता ॥
 याहि गुरु ने कढ़ाव बखाना । वाह गुरु मत संतन जाना ॥
 याहि गुरु चेला बिधि राही । पौड़ी चेला दीन्ह सुनाई ॥
 पौड़ी पढ़ पढ़ जन्म गँवाया । पौड़ी का कछु भेद न पाया ॥
 पौड़ी का कछु अरथ बिचारै । पौड़ी चढ़ि तब अगम निहारै ॥
 पौड़ी नाम सीढ़ी सहदानी । सूरत चढ़ी अगम घर जानी ॥
 पौड़ी चढ़ै तब गुरुवा पावै । वा गुरु सुरति कंज में लावै ॥
 पौड़ी पढ़ि पढ़ि जनम गँवावा । बावे पौड़ी सुरति चढ़ावा ॥
 येहि बिधि स्वामी बूझ में आई । तुम ने कही सो सत्त समाई ॥
 बावे गूढ़ गुप्त मत भाखी । तुम ने कही सूझि तब आँखी ॥
 हम पौड़ी पढ़ने बिधि जाना । तुम ने पौड़ी चढ़न बखाना ॥
 तुम्हारा बचन सत्त कर माना । पलकराम के हृदे समाना ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

पलकराम पुनि है तुम साधा। बूझी बावे बचन समाधा ॥
 अस कोइ साध बिबेकी होई। संत मते को बूझै सोई ॥
 संतन की जो बानी बिबेका। सोई साध को मिटि है धोका ॥
 संत मते की राह नियारी। पलकराम तुम खूब बिचारी ॥
 जो कोइ संत सरन में आवै। दोन होइ संतन सिर नावै ॥
 आपा पंथ भेष नहीं राखै। दृढ़ कर सत्त सत्त मत भाखै ॥
 संत बिना और टेक न मानै। पंथ टेक सब झूठी जानै ॥
 पंथा पंथी भेष भुलाना। ता से संत मता नहीं जाना ॥
 संत सरन पापी तरि जाई। जो निंदक आवै सरनाई ॥
 बिना संत नहीं लगै ठिकाना। यह बिधि बावे कही बखाना ॥
 निंदक संत पातकी भारा। बावे कही न उतरै पारा ॥
 जो कोइ सत्त संत को जाना। ता की सूरति मिलै ठिकाना ॥
 बिना संत सूरति कहैं जाई। बिना संत संध कौन लखाई ॥

॥ पलकराम उवाच ॥

॥ दोहा ॥

पलकराम तुलसी कही, समझिलखी बिधि खूब।
 रोम रोम मैं रमि रहा, नानक साह महबूब ॥१॥
 सब मैं नानक रमि रहा, कही बावे मुख आप।
 चर और अचर बताइया, दूजा लखै सो पाप ॥२॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ सोरठा ॥

नानक कही पुकार, पलकराम बिधि ग्रंथ में।
 मैं बसूँ सब के माहि, नानक यह मुख से कही ॥

॥ चौपाई ॥

पलकराम सुनियौ बिधि रीती। पंथ भेष सब करैं अनीतो ॥
 कहि नानक मैं सब के माहीं। ये चेला करै कौने राही ॥

नानक बिना कोई जिव नाहीं । ये चेला कस करै बनाई ॥
 जहँ नानक खुद आप बिराजा । सेवक कहै कौन बिधि साजा ॥
 सब मैं नानक आप समाना । तौ पुनि सभी गुरु सम जाना ॥
 ये बिधि या को बूझि बिचारा । जब होइ है जग से निरवारा ॥
 नानक सब मैं आप बखाना । तुम ने जेहि सेवक करि ठाना ॥
 ये तौ बड़ी अनीती जानौ । नानक को सेवक कर मानौ ॥
 पंथ भेष याही मैं भूला । ये तौ कर्म भेद बिधि मूला ॥
 सब मैं स्वामी संत बतावा । तुम स्वामी के स्वामि कहावा ॥
 तुम निस्तार राह नहिँ पाई । स्वामी को सेवक ठहराई ॥
 सेवक होइ नन्हाँ रहै^१ भाई । स्वामी पद को दूर बहाई ॥
 मोटे भये बहे जग माहीं । नन्है^२ नौका पार लगाई ॥
 चीनी^३ बारू माहिँ गिराई । हाथी मोटे हाथ न आई ॥
 नन्हौं चींटी चुनि चुनि खाई । नन्हौं रहै हाथ कछु आई ॥
 अब बावे मुख साखि बताऊँ । एक साखि मुख भाखि सुनाऊँ ॥

॥ साखी ॥

नानक नन्हौं होइ रहै, जैसे नन्हौं दूब ।
 बड़ी घास जरि जायगी, दूब खूब की खूब ॥

॥ चौपाई ॥

गुरु बने नहिँ होइ गुजारा । चेला बनै मिलै कछु सारा ॥
 अब दादू की साखि बताऊँ । दादू कही सोई बिधि गाऊँ ॥

॥ साखी ॥

दादू मैं सब गुरु किया, पसु पंछी बनराय ।
 सुछम थूल^१ खाली नहीं, सबही माहिँ खुदाय ॥१॥
 तुलसी तू मैं जो तजै, भजै दीन गति जोइ ।
 गुरु नवै जो सिष्य को, साध कहावै सोइ ॥२॥

(१) मु० दे० प्र० के पाठ में “नन्हौं रहै” की जगह “निहारै” और “चीनी” की जगह “चींटो” अशुद्ध जान पड़ता है । (२) सूक्ष्म और स्थूल ।

॥ चौपाई ॥

तुलसी तत मत सब के माहीं । गुरु बने कछु हाथ न आई ॥
 येहि बिधि सब सब संत पुकारा । चेला बनै होइ निरवारा ॥
 तुलसी मैं अति नीच निकामा । मैं गुरु बिन कछु नाहि बखाना
 मैं किंकर संतन कर दासा । सतसंगति मैं सुना बिलासा ॥
 अस अस संत सबन मिलि गाई । दास बने जिन जिन कछु पाई
 तुलसी ता से पंथ न कीन्हा । भेष जगत भया पंथ अधीना ॥
 जो कछु संत पंथ बिधि गावा । सो बिधि पंथ कोऊ नहि पावा ॥
 तुलसी मैं कछु जानौं नाहीं । पलकराम तुम्हरी सरनाई ॥
 मैं हौं संत चरन की लारा । बन्दौं चरनन बारम्बारा ॥
 संत बिना कोउ देखि न आना । सत सत सुरति संत को माना ॥
 मोरे इष्ट भाव नहि दूजा । संत समान और नहि पूजा ॥
 तुलसी और इष्ट नहि सूझै । सुरति संत चरन पर जूझै ॥
 जो कोइ कहै कह्यौ कस गाई । मैं तो संत चरन सरनाई ॥
 नानक कही येही बिधि बानी । संत चरन बिन और न मानी ॥
 सुखमनि संत चरन बिधि गाई । देखौ नानक ग्रंथ मैं भाई ॥
 और और जो संत अनेका । जिन सब राखि संत पद टेका ॥
 जे महातमा भये अगारा । संत सरन सब सबी पुकारा ॥
 संत से अधिक कोऊ नहि राखा । देखौ सब संतन की साखा ॥

॥ दोहा ॥

संत सरन सब सब तरे, बिना संत नहि अंत ।
 जा को संत लखाइया, पुनि तिन पायौ पंथ ॥१॥
 देखौ आदि अनादि से, बेद न पावै पार ।
 तिरदेवा जागी जती, सब कहै संत अगार ॥२॥
 संत लखी कोउ ना लखै, अगम रीति रस सार ।
 संत कृपा जेहि जेहि करै, सो जन उतरै पार ॥३॥

॥ छंद ॥

संतन गति गाई अगम सुनाई । जिनजिन पाई पार भई ॥१॥
 सब सब मिलि गावा महुँ सुनावा । अगम अथाहा आदि कही ॥२॥
 देखी निज बानी संत बखानी । जिनजिन जानी जानि लई ॥३॥
 सतसंगति गाई भर्म छुटाई । संत सहाई राह दई ॥४॥
 जगजीवन जानी अकथ कहानी । कोइ न मानी मार सही ॥५॥
 कर्मन के मैले बहु रस पेले । कर कर चेले भार लई ॥६॥
 मद मान पुजावै राह न पावै । चहुँ दिस धावै भर्म बही ॥७॥
 सत रीत न जानी संत बखानी । सुन सुन ज्ञानी कर्म रही ॥८॥
 को भाखै लेखा सुनै न एका । बाँधे टेका भेख बहे ॥९॥
 जड़ पाहन पूजै और न सूझै । बूझ न चेतन चित्त गहे ॥१०॥
 सतसंग न जाना सुनै पुराना । मन बुधि बानी बाद बहे ॥११॥
 तुलसी कहि गाई सत मत राही । जिनजिन पाई गाइ कहे ॥१२॥

॥ सोरठा ॥

ये गति अगम अपार, संत सार गति कस लखै ।
 सकै संत के साथ, पकै चरन चित मँ चखै ॥१॥
 सतगुरु दीन दयाल, करि निहाल अगमन दये ।
 रहै चरन बिधि चाल, गहि अकाल तुलसी किये ॥२॥

॥ चौपाई ॥

पलकराम अस कही बिचारी । दुरसन किये भये सुख भारी ॥
 संत गती सुनि ग्रंथ बखानी । तसतस तुलसी महिमा जानी ॥
 अस कही पलक नैन भरि आये । हिरदे उमँगि दीन गति गाये ॥

॥ सोरठा ॥

पलकराम कहै बात, नैन उमँगि दुरि दुरि बहै ।
 लहै स्वाँस पर स्वाँस, बहै नीर धारा सही ॥

॥ चौपाई ॥

पलकराम बिधि ऐसी देखी । जैसे साधू बिरह बिबेकी ॥
 सतसंग कीन्ह लीन मत माहीं । जस जस साधरीति सत चाही

॥ दोहा ॥

पलकराम मत दीन गति, तुलसी कही बिचार ।
साथ लच्छ बिधि जस कहै, तस तस इन के लार ॥

॥ प्रश्न पलकराम ॥

॥ चौपाई ॥

जो कढ़ाव बिधि भेद बतावा । सो तौ सब सादृष्ट दिखावा ॥
वाह गुरु बिधि कही बनाई । सो भी बूझ समझ मैं आई ॥
गोरख की तुम कही बखाना । सो भी सत्त सत्त बिधि जाना ॥
चौरासी सिध नौ नाथ बतावा । बावे साथ और बिधि गावा ॥
पौड़ी सीढ़ी बावे कहिया । या बिधि खूब खूब समझइया ॥
गुरुगोबिंद बिधिकही बखाना । सोभी साँच साँच कर माना ॥
दसवाँ महल कहा समझाई । सो भी बिधी सत्त दरसाई ॥
तुलसी स्वामी बूझौं बाता । ग्रंथ बिधी भाखौ बिख्याता ॥
बावे आदि ग्रन्थ कस भाखा । पौड़ी की बिधि कस कस राखा ॥
पचग्रन्थी सुखमनी बनाई । आसावार जपजी को गाई ॥
या कौ भेद कछु कहौ बुझाई । ग्रन्थ बिधी बावे कस गाई ॥
तुलसी स्वामी कहौ बिचारी । कहौ बखानि बावे बिधिसारी ॥
या कौ मो को भेद बतावौ । ग्रन्थ भाव बिधि बिधि दरसावौ ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी कहै सुनौ हो स्वामी । निज मोहिं जानौ दास समानी ॥
जो कछु बूझा बिधी बिधाना । सो ग्रन्थन बिधि कहूँ बखाना ॥
पिरथम आदि ग्रन्थ गति गाऊँ । ता का मता भेद दरसाऊँ ॥
आदि ग्रंथ बावे अस भाखी । ता मैं कही कहूँ सब साखी ॥
आदि ग्रन्थ कह्यौ या कौ नामा । आदि से बँधी ग्रन्थ जिव जाना ॥
जड़ चेतन जिव ग्रन्थ बँधानी । जब रचना बैराट बखानी ॥
आदि से जीव ग्रन्थ जड़ संगी । सो कहै आदि ग्रन्थ रस रंगा ॥

आदि ग्रन्थ जड़ चेतन माहीं । ता की आदि ग्रंथ बतलाई ॥
 अस बावे मुख भाखी बानी । जड़ चेतन की गाँठि बँधानी ॥
 अब पुनि पाँच ग्रंथ बिधि भाखा । सब बिस्तार कहूँ बिधि ता का ॥
 यह बैराट पाँच तत्त माहीं । पाँच तत्त तन बिधी बमाई ॥
 धरती पवन गगन और नीरा । अगिनि पाँच मिलि रख्यो सरीरा ॥
 पाँच तत्त मिलि ग्रन्थि बँधानी । पचग्रन्थी जेहि नाम बखानी ॥
 पाँच तत्त जड़ चेतन संगी । पचग्रन्थी मैं ये रस रंगा ॥
 ये बिधि बावे करी बखाना । बूझैगे कोई संत सुजाना ॥
 पिंड ब्रह्मंड दोऊ से न्यारा । संत मता पुनि ता के पारा ॥
 पिंड ब्रह्मंड हता नहिं भाई । जब की भाखौं साखि सुनाई ॥
 जीवत निरखि नैन से देखा । मता संत का अगम अलेखा ॥
 अब आसा के वार बताऊँ । ता की बिधी भेद समझाऊँ ॥
 पाँच ग्रंथि जड़ चेतन आवा । ता को आसा वार बतावा ॥
 आसा वार बँधा जग माहीं । आसा पार की सुधि बिसराई ॥
 आसा पार की राह भुलाना । आसा वार कर्म लिपटाना ॥
 ता से आसा वार बतावा । आसा पार का मरम न पावा ॥
 तब से जीव भयौ संसारी । आसा पार सुधि नाहिं सम्हारी ॥
 यह बिधि तत्त ग्रंथ जेहि माहीं । आसा वार बिधी योँ गाई ॥
 यह बिधि सतसंगति से पावै । मिलै संत बिधि सब दरसावै ॥
 बिना संत किरपा नहिं पावै । मिलै संत बिधि सबै लखावै ॥
 यह सुखमनी बिधी बिधि गाया । जो जो बावे ग्रन्थ बुझाया ॥
 इडा पिंगला सुखमन माहीं । स्वाँसा पवन चढ़ै तेहि राही ॥
 पाँचौ मुद्रा साधै जोगी । इंद्रो जीत छाँड़ै रस भोगी ॥
 मुद्रा पाँच बिधी बिधि साधै । सुखमनि मुद्रा धरै समाधै ॥
 न्यारा न्यारा नाम बताऊँ । पाँचौ मुद्रा पुनि दरसाऊँ ॥
 खेचरि भूचरि साधै सोई । और अगोचरि उनमुनि जोई ॥

उनमुनि बसै अकास के माहीं । जोगी बास करै तेहि ठाहीं ॥
 ये जोगी मति कहा पसारा । संत मता पुनि इन से न्यारा ॥
 जोगी पाँचौ मुद्रा साधै । इड़ा पिंगला सुखमनि बाँधै ॥
 सुखमनि घाट सुख मनी बताई । मानसरोवर आगे पाई ॥
 जोगी मानसरोवर राखा । बावे अम्मरसर तेहि भाखा ॥
 जो पंजाब अमरसर गाया । सो बावे ने नहीं बताया ॥
 अम्मरसर है अगम के माहीं । न्हात अमर होइ संत बताई ॥
 करि असनान अमरसर माहीं । अमर होइ बावे अस गाई ॥
 तुम तलाव मैं निस दिन न्हावा । अमर भया कोउ नजर न आवा ॥
 नित नित जीव अनेकन न्हावै । गृस्थ फकीर जगत सब जावै ॥
 देखौ अमर एक नहिँ भइया । न्हाइ न्हाइ सब जनम गँवइया ॥
 अम्मरसर असनान को पावै । चढ़ि असमान अमर होइ जावै ॥
 बावे गगन अमरसर गावै । करि असनान अमर पद पावै ॥
 जो जो गये अमरसर माहीं । ता का आवागवन नसाई ॥
 ये अम्मरसर पिरथी माहीं । पानी पैठि पैठि सब न्हाई ॥
 जीव साध कोइ अमरन पाई । न्हाइ न्हाइ सब बैस बिताई ॥
 जीवत अमर न मूए जावै । नित नित पैठि अमरसर न्हावै ॥
 ये तो अमरसर पानी भाई । वो अम्मरसर गगन समाई ॥
 सूरति चढ़ै गगन मैं न्हाई । वो अम्मरसर बावे गाई ॥
 और संत बरनन जो कीन्हा । कहि तेहि मानसरोवर चीन्हा ॥
 अम्मरसर करि कहेउ बखानी । मानसरोवर तेहि को जानी ॥
 करि असनान हंस होइ जाई । हंस होइ पुनि घर को पाई ॥
 चौथा पद हंसा सोइ पावै । जीवत वाह गुरू मिलि जावै ॥
 वाह गुरू चौथे पद पारा । सो चेला वाह गुरू निहारा ॥
 जब लगि वाह गुरू नहिँ पावै । तब लगि निगुरा जीव कहावै ॥
 मानसरोवर संत बखाना । बावे अम्मरसर कहि माना ॥

सुखमनि घाट अमरसर पाई । ये बावे बिधि ग्रन्थन गाई ॥
 ये जिव जप परमारथ पावै । अम्मरसर को सुरति चढ़ावै ॥
 जप परमारथ बावे गावा । जब जिव चढ़ै गगन पर धावा ॥
 जपजी को परमारथ याही । सूरति सुखमनि घाट अन्हार्ई ॥
 सूरति जपै परे रित माहीं । जपजी को परमारथ याही ॥
 सुखमनि बावे सुरति चढ़ाई । सो जपजी परमारथ गाई ॥
 पढ़े गुने कछु हाथ न आवा । पढ़ पढ़ बादै जनम गँवावा ॥
 सुखमनि मारग संत के पासा । सुरति संत लख चढ़ै अकासा ॥
 या कौ भेद संत से पावै । जो वे मिलै घाट बतलावै ॥
 सुखमनि राह संत नित जावै । परमारथ जप राह लखावै ॥
 ये बिधि भेष पंथ में नाहीं । भाखै जाति पंथ बिधि राही ॥
 जैसे जगत जाति को माना । तैसे पंथी जाति बखाना ॥
 पलकराम सुनियौ चित लाई । ये बिधि बावे सत्त लखाई ॥
 तुम तौ पढ़े पंथ के माहीं । जाति पाँति लेखे की राही ॥
 पंथ राह कछु अगम कहाई । पंथ अगम बिधि बावे गाई ॥
 सूरति बावे पंथ लखावा । सूरति चढ़ी गगन पर धावा ॥
 गगन पंथ मारग को पावै । ता कौ संत पंथ मत गावै ॥
 जाति पंथ में ये बिधि नाहीं । संत अजाति जाति नहिं जाही ॥
 संत अजाति जाति नहिं मानै । पंथ जाति बिधि एक न जानै ॥
 भेष जाति पंथी के माहीं । संत अजाति अगम घर जाई ॥
 अगम पंथ चढ़ि अगम बतावा । अनुभौ भई संत गति गावा ॥
 पलकराम बिधि समझ बिचारा । भेष पंथ से भेद नियारा ॥
 पंथी जात जगत ब्यौहारा । या से कधी न उत्तरै पारा ॥
 कर कढ़ाव हलुवा बनवावा । ता में से छै भाग कढ़ावा ॥
 एक भाग गुरु पानी राखा । गुरु दरियाव ताहि को भाखा ॥
 ऐसे अंध अचेत अबूझा । गुरु दरिया पानी में सूझा ॥

गुरु दरियाव राह नहिं जाना । हलुवा पानी डार बखाना ॥
 ये बावे नहिं कही बिधाना । गुरु दरिया पानी मैं जाना ॥
 गुरु का दर दरवाजा भाई । ता को गुरु दरियाव बताई ॥
 गुरु दर दरवाजा जो पावै । सुखमनि घाट अमरसर न्हावै ॥
 गुरु के दर दरवाजे माहीं । चढ़ै सो गगन अगम घर जाई ॥
 जग गुरु दर दरियाव न चीन्हा । हलुवा पानी डार जो दीन्हा ॥
 वाह गुरु पानी मैं जाना । जा को हलुवा चढ़न बखाना ॥
 ऐसे बुद्धि हुई जम काला । हलुवा ले पानी मैं डाला ॥
 वाह गुरु दरियाव न पावै । बिना संत कहौ को दरसावै ॥
 बावे पानी गुरु न भाखी । देखौ दृष्टि ग्रन्थ मैं साखी ॥
 बावे कही राह सोइ छूटी । पोल पोल सगरा जग लूटी ॥
 इक बट डंड बाँस को पूजा । देखौ जड़ सँग लगे अबूझा ॥
 चेतन ब्रह्म कहै सब माहीं । भंडा जड़ हलुवा कहु खाई ॥
 अस अस भूल भर्म बस बूढ़ा । संत मता कस मिलै अगूढ़ा ॥
 नानक की जो बानी बूझै । तौ तुलसी सगरा मत सूझै ॥
 आप डूब और जगत डुबावा । आदि अंत का मरम न पावा ॥
 अस अस अंध धुंध कालेखा । बावे बचन नहीं कोइ पेखा ॥
 तुलसी कहै नीच गति मोरी । सरनै पलकराम मैं तोरी ॥
 मोरी कहनि अबूझ न मानौ । मैं तुम्हरे चरनन लपटानौ ॥
 मैं किंकर संतन कर दासा । संत चरन बिन मोरन आसा ॥

॥ सोरठा ॥

पलकराम सुन ज्ञान, कहूँ ब्यान समझाई कै ।
 संतन करी बखान, सो बिधि बिधि तुम से कहूँ ॥

॥ चौपाई ॥

सब्द ग्रंथ सुन भाखि सुनाऊँ । संतन मुख बानी समझाऊँ ॥
 मन की लहर कहर को बूझै । जा को संत मता मत सूझै ॥

सब्द साखि मैं कीन्ह बखाना । बूझै सज्जन समझ समाना ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी संत सुजान, जानि समझि सुलटी कही ।

ये जग जान अयान, बिन समझे उलटी लगै ॥

॥ चौपाई ॥

पलकराम इक सब्द सुनाऊँ । ता मैं सत्र बरतंत बुझाऊँ ॥

रमक रेखते मैं बिधि गाई । पलकराम सुनियौ चित लाई ॥

॥ रेखता ॥

अली इक बात सुन सुलटी । बिना समझे लगै उलटी ॥१॥

कही सब संत ने बोली । गूढ़ मत गुप्त नहिं खोली ॥२॥

सुरत मन बुद्धि नहिं जावै । लखन मैं कैान बिधि आवै ॥३॥

अरी नहिं बेद ने जाना । कहत कर नेत गोहराना ॥४॥

जुगत जोगी नहीं जानी । ज्ञान नहिं ध्यान बिज्ञानी ॥५॥

जगत और भेष नहिं जानै । पढ़े पंडित भरमाने ॥६॥

सकल तिरलोक लैं गावै । निरंजन जोति ठहरावै ॥७॥

अगम रस राह नहिं सूझै । संत मत कैान बिधि बूझै ॥८॥

अस्त रवि होत अंधियारा । हिये तम रूप मैं सारा ॥९॥

मिलै गुरु गैल बतलावै । तिमर तन बीच से जावै ॥१०॥

लखै तब संत के बैना । सुरति सुरमा खुलै नैना ॥११॥

तरक ताली खुलै ताला । निरखित हैं होत उँजियाला ॥१२॥

अधर घर सुरति चढ़ धावै । अगम गति गूढ़ तब पावै ॥१३॥

सुरति जब उलट कर बूझा । उलट सब सुलट कर सूझा ॥१४॥

तुलसी तन बीच मैं हेरा । सुरति मन बुद्धि को फेरा ॥१५॥

कहनि कलु और बिधि गावै । उलट की सुलट कर भावै ॥१६॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी समझ बूझ मन लावै । तब उलटी सुलटी कर भावै ॥

बिन सतसंग बिबेक न होई । संत बिना सूझै नहिं सोई ॥

भंडा तन बिच बीच बिचारा । गुरु दरियाव गगन के पारा ॥
 अम्मरसर मैं पैठि अन्हार्ई । सो जिव सहज अमर होइ जाई ॥
 सो संतन ने नभ पर जोवा । तुम तलाव पानी तन धोवा ॥
 वा का सतगुरु से लछ पावै । दीन दया सोइ भेद बतावै ॥
 बेद मता संतन सम जानै । ऐसी मूरख बुद्धि बखानै ॥
 संत अंत बेदन नहिँ जाना । देखौ सुखमनि बावे बखाना ॥
 बेद मता जो मूढ़ ठहरावै । संत का मता गूढ़ नहिँ पावै ॥
 या का सब्द साखि बतलाऊँ । पलकराम तोहि भाखि सुनाऊँ ॥

॥ सारठा ॥

संत मता भौ पार, बेद बिधी जानै नहीं ।
 सतगुरु सब्द अपार, भेष भेद जग भर्म मैं ॥

॥ रेखता ॥

बेद मत मूढ़ ठहरावै । संत मत गूढ़ नहिँ पावै ॥१॥
 पड़े भ्रम जाल के मूला । बेद बस कर्म के सूला ॥२॥
 करै अली इष्ट मन रचि कै । मुए भ्रम भाव सब पचि कै ॥३॥
 जिवत कोइ दरस ना पावै । मुए पर मुक्ति गोहरावै ॥४॥
 अली ये जगत सब अंधा । पड़ा बस काल के फंदा ॥५॥
 कहनि नहिँ संत की भावै । बाट कहौ कैान बिधि पावै ॥६॥
 भूल जुग चारि से आई । खानि बस मैल मन माहीं ॥७॥
 भटक नर देह अब आया । ज्ञान चित चीन्ह घर पाया ॥८॥
 गहे सत संत के चरना । निकरि भौसिंध से तरना ॥९॥
 समझिलखिजीवकौकाजा । मरे सब जगत की लाजा ॥१०॥
 तुलसी तन छूटि जब जावै । बहुरि नर देह नहिँ पावै ॥११॥
 पाहन और इष्ट पानी का । झूठ भ्रम खानि जाने का ॥१२॥
 निकरि निरवार नहिँ पावै । समझ सतसंग से आवै ॥१३॥
 जगत दिन चारिका संग है । भीख भौखानि मैं मँगिहै ॥१४॥

॥ सोरठा ॥

ये तन रतन समान, बार बार पावै नहीं ।

सतगुरु करत बखान, सुपन जानि जग पेखना ॥

॥ चौपाई ॥

जग दिन चार लार के संगी । फिर भौ खानि भीख भौ मंगी ॥
 ऐसा या जग का ब्यौहारा । जनम जात जूवा जस हारा ॥
 संत सब्द उलटा करि गाई । समझ बूझ मन काहू न पाई ॥
 पलकराम सुन सुलटी बानी । कोऊ सुलटि समझ नहिँ जानी
 कह संवाद सेठ परसंगा । ये बूझौ सब अपने अंगा ॥
 जेहि बिधिराह रेखता कीन्हा । या को आनौ समझ यकीना ॥
 उलटी चाल संत की बोली । बिन परचे को परदा खोली ॥
 अस उलटी उन कही अगूढ़ा । पंडित भेष न जानै मूढ़ा ॥
 पलकराम नहिँ ग्रन्थन माहीं । पचि पचि मरे खोज नहिँ पाई ॥
 सुनौ सेठ की कथा सुनाऊँ । ता की बिधि बरतंत लखाऊँ ॥
 सेठ रीति से बीती न्यारी । जगत भाव बरतंत बिचारी ॥
 पलकराम सुन सेठ संवादा । वा पर भई जगत से ज्यादा ॥
 अब रस रीति रेखता गाऊँ । पलकराम तोहि बरन सुनाऊँ ॥

॥ रेखता ॥

सखी सुन सेठ संवादा । भई जग रीति से ज्यादा ॥१॥
 गुइयाँ सुन बात परसंगा । भये जग मान से भंगा ॥२॥
 अली सुन साह पर बीती । कहूँ क्या बात अनरीती ॥३॥
 कँवलपुर नगर के बासी । पुत्र गये तीर्थ को कासी ॥४॥
 सेठ घर नारि और पुत्री । रहै मन चित्त से उतरी ॥५॥
 चले दोउ जहाज समुंदर मैं । बहुत धन माल सुन घर मैं ॥६॥
 सुनौ एक दिवस की बाता । कहूँ बरतंत बिख्याता ॥७॥
 नारि ने यार इक कीन्हा । पुत्री नर इस्क मैं लीना ॥८॥
 कहूँ क्या बात इक दिन की । कर्म भौ भाग मैं जिन की ॥९॥

दिवस इक सेठ ने चीन्हा । पकर बोहियार को लीन्हा ॥१०॥
 भया इन तीन मैं भगड़ा । लड़की लगवार को पकड़ा ॥११॥
 सखी भये सेठ ऊदासी । कही दोउ जाउ तीर्थ कासी ॥१२॥
 सेठ कहै बात सेठानी । मरम मारग मनै जानी ॥१३॥
 बेटी बिधि और तुम संगी । करौ जग जाइ रस रंगा ॥१४॥
 नहीं घर मैं रहन पावौ । निकरि कासी नगर जावौ ॥१५॥
 गुसा सुन नारि उठि बैठी । चली सँग माय और बेटी ॥१६॥
 गुसा बिच निकरि कर घर से । मिले कहै नारि नहिँ बरसे ॥१७॥
 बीच इक नगर मुलताना । रही बस राति को जाना ॥१८॥
 फजर उठि रैन की जागी । चलन दर मैं जल को लागी ॥१९॥
 बाट बिच सहर आनूपा । राइ बलवान सुन भूपा ॥२०॥
 सुवर सीकार को निकरे । कुँवर मद मान मैं जकरे ॥२१॥
 दोऊ सँग डगर के माहीं । नारि दोउ नजर मैं आई ॥२२॥
 रहै बरसात का महिना । लखे पग पाँव के चीन्हा ॥२३॥
 सुनौ उस भूप की बाता । बिधी बिधि बात बिख्याता ॥२४॥
 कहे नृप राइ ने बैना । पुत्र सुन बात की सैना ॥२५॥
 पाँव के चिन्ह चितलावो । ताहि पर दृष्टि ठहरावौ ॥२६॥
 बड़े बिधि पाँव की नारी । मिलै सोइ नारि हम्मारी ॥२७॥
 चलै सोइ चाल पग छोटी । हिये मन पुत्र के चोटी ॥२८॥
 सुनौ इक बात अचरज की । कहूँ बरततं सुन इस की ॥२९॥
 बड़ी रही डील मैं बेटी । माय तन डील मैं हेठी ॥३०॥
 भूप ने लीन्ह बेटी को । कुँवर लई माय हेठी को ॥३१॥
 गये घर सहर महलों मैं । करै रस केल फेलों मैं ॥३२॥
 भूप घर पुत्र नारी का । कहूँ बिधि भेद सारी का ॥३३॥
 नानी खुस खेल बालक को । खुसी होइ कहत मालिक को ॥३४॥
 मौज मैं बात इक आई । कहूँ बरततं मन भाई ॥३५॥

बेटी सुत पुत्र है नाती । लगे दिल देवर इक भाँती ॥३६॥
 कुँवर भइया भाव भाखा । नारी कहै नात नाती का ॥३७॥
 दोऊ में भटक भटकारा । करै कोइ संत निरवारा ॥३८॥
 तुलसी ये भेद को जानी ॥ सोई है साध परमानी ॥३९॥
 बात बिधि अगम को बूझै । हिये की दृष्टि से सूझै ॥४०॥

॥ देहा ॥

पलकराम यह सेठ की, बूझै बिधि बरतंत ।

सेठ सेठानी पुत्र को, समझैगे कोइ संत ॥

॥ चौगई ॥

अस अस मता संत सब गाया । भेष गुरु कोइ भेद न पाया ॥
 वाह गुरु बावे समझाऊँ । सोई सतगुरु संध दरसाऊँ ॥
 जस जस संत अगम गति गाई । लखिलखि पियारूप दरसाई ॥
 निरखा घाट बाट मध माहीं । सो बसंत में समझि सुनाई ॥
 हृद अनहृद के पार ठिकाना । लखि अरूप पुनिरूप बखाना ॥

॥ बसंत ॥

लखिलखिलखिया पिय को रूप । जहाँ अनहृद बाजा बजै अनूप ॥टेका॥
 बिजली चमकै अति अपार । गगन घोर नहीं वार पार ।
 मन मतंग जहाँ सुनत भूप । इंद्रो संग तजि रहै चूप ॥१॥
 मानसरोवर हंस घाट । ले चढ़ि लागी अगम बाट ।
 अरध उरध मुख औँध कूप । चाँद सुरज नहीं छाँह धूप ॥२॥
 सूरति सुनि सतगुरु के नैन । निरखत हरखै हिये के नैन ।
 अरध पंथ इक गली है गूप । जहाँ इक साहिब अति अनूप ॥३॥
 कोट भान छबि रोम तेज । तीन लोक कोइ पढ़ै न पैज ।
 तुलसी निरखि नित अज^१ अरूप । चढ़ि सूरति गइ पछिम पुहुप ॥४॥

॥ सोरठा ॥

रूप रेख नहीं भेष, सो अरूप अंदर लखा ।

संत चरन पद पेख, देखा हिये दुग नैन से ॥

(१) अज = अजन्मा । मुं० दे० प्र० की पुस्तक में 'अजब' अशुद्ध है ।

॥ चौपाई ॥

लख लख लख पिया जानि बखाना । हृद अनहृद के पार ठिकाना ॥
 अलख खलक दोऊ से न्यारा । पलकराम अस अगम अपारा ॥
 जिन सतसंग कीन्ह तिन जाना । बिना संग नहीं समझ समाना ॥
 पलकराम मैं पल पल वारी । तुलसी तुम्हरा दास बिचारी ॥
 बार बार चरनन सिर नाऊँ । सरन जानि कीजै निरबाहू ॥
 मैं अजान कछु जानौं न भेवा । तन मन चरन संत की सेवा ॥
 भाखा ज्ञान अबूझ न मानौ । मैं तुम्हरे चरनन कै जानौं ॥
 जो जो बावे करी बखाना । ता की बिधि मत कहेउँ बिधाना ॥
 जो बिधि बावे कही बनाई । सो बिधि मैं तुम कान सुनाई ॥
 पलकराम यह भूल बताओँ । मन मैं निंदा समझ न लाओ ॥
 निंदा संत करै कोइ नाहीं । निंदा चौरासी ले जाई ॥
 तत नानक कही भाखि बखाना । सो तुलसी ने कही बिधाना ॥
 बावे पाहन नाहिं पुजावा । तुम सिष को पाहन बतलावा ॥
 पाहन पूजा साध न गावैं । और जीव को नाहिं बतावैं ॥
 साधू चेतन आत्म भाखा । चेतन की पूजा बिधि राखा ॥
 तुम सिष जड़ पूजा बतलावा । पाहन आसा बास लखावा ॥
 छूटै तन पाहन मन जावै । आसा जहँ जेहि तहाँ समावै ॥
 पुनि पाहन मैं होइ है बासा । अस अस सिष्य बँधाई आसा ॥
 गुरु गोबिंद ग्रंथ गति गावा । ता मैं बिधी सब्द बतलावा ॥
 सुनौ सब्द मैं भाखि सुनाऊँ । गुरु गोबिंद बानी मुख गाऊँ ॥
 पूजा पाहन नहीं बताई । देखी गोबिंद ग्रन्थ मैं भाई ॥
 देखी ग्रन्थ मैं या की साखी । एक सब्द तुलसी कहि भाखी ॥

॥ सवैया ॥

काहू ने पूजि धरौ सिर पाहन, काहू ने लिंग गरे लटकायौ ॥१॥
 काहू बुतान^१ को पूजत है पसु, काहू मृतान^२ को पूजन धायौ ॥२॥

(१) बुत = मूर्ति । (२) मुर्दे ।

कूर क्रिया उरभौ सबही जग, वाहगुरू को भेद न पायौ ॥३॥
आदि गिरंथ को भूल गये सब, नानक बानी चित्त न लायौ ॥४॥

॥ चौपाई ॥

येहि बिधि गोबिंद ग्रन्थ लखाई । देखौ सब्द ग्रन्थ के माहीं ॥
औरौ सुनौ भूल इक गाजँ । गुरु गोबिंद की साखि बताजँ ॥
गुरु गोबिंद मुख अपने गावा । ग्रन्थ बिधी मैं देखि बुझावा ॥
कृष्ण राम भगवान जो भाखा । नहीं काल ने उन को राखा ॥
गुरु गोबिंद ग्रन्थ मैं गावा । भये भगवान काल ने खावा ॥

॥ सवैया ॥

कालै खाइ गयौ भगवान, सो जाग्रत या जुग जा की कला है ॥१॥
कालै खाइ गयौ ब्रह्मासिव, कालै खाइ गयौ जोगिया है ॥२॥
कालै खाइ सुरासुर गंधर्व, जच्छ भुजंग दिसा बेदिसा है ॥३॥
इंद्र मुनिंद्र सबै बस काल, इक नानक संत अकाल सदा है ॥४॥

॥ चौपाई ॥

सब्द साखि इक ग्रन्थ बतावा । नानक राम रहीम न गावा ॥
राम रहीम बेद नहीं माना । गुरु गोबिंद मत और बखाना ॥
ता की सब्द साखि सुनि लीजै । गुरु गोबिंद कही सो कीजै ॥

॥ सवैया ॥

पाँव गहे जब तँ तुम्हरे, तब तँ कोउ आँखि तरे नहीं आन्यौ ॥१॥
राम रहीम कुरान पुरान, अनेक कहे मत एक न मान्यौ ॥२॥
सिद्धित सास्तर बेद कह्यौ, बहु भेद कह्यौ हम एक न जान्यौ ॥३॥
कहै नानक किरपा तुम्हरी कर, मैं न कह्यौ सब तोहि बखान्यौ ॥४॥

॥ चौपाई ॥

नानक ग्रन्थ मता अस गावा । तुम्हरा ग्रन्थ साखि बतलावा ॥
तुम्हरे भेष पंथ के माहीं । ग्रन्थ बिधी कोउ बूझै नाहीं ॥
बावे कही सो नहीं तुम मानी । तुम ने अपना मन मत ठानी ॥
कही भगवान काल ने खाया । बावे ग्रन्थ मैं येहि बिधि गाया ॥

तुम भगवान सत्त बतलावा । बाबे सब्द असत्त लखावा ॥
 राम राम सब सिष्य सिखावा । बाबे सब्द काल सब गावा ॥
 राम रहीम सब्द सब तोड़े । बाबे पानी मैं सब मोड़े ॥
 अपने घर बाबे की बानी । सब्द कही तुम एक न मानी ॥
 बाबे राम रहीम उठाये । तुम कहौ इष्ट कौन बिधि लाये ॥
 नानक सब्द मैं दिये उठाई । और कहै निंदक बतलाई ॥
 पिरथम नानक सब्द बिचारौ । निंदक भाव और पर डारौ ॥
 नानक राम रहीम उठावा । ता को निंदक नहिं ठहरावा ॥
 और जो कहै सत्त की बानी । ता को निंदक कर कर मानी ॥
 ये तौ नानक सब्द पुकारे । राम रहीम काल बस डारे ॥
 नानक पंथी जाकर नामा । नानक कही चले परमाना ॥
 नानक कही बिधी नहिं मानै । सब्द ग्रन्थ की साखि न जानै ॥
 राम साखि बाबे नहिं माना । राम रहीम बेद नहिं जाना ॥
 ये तुम्हरे मति बाबे गाई । ता को छाड़ि और मति धाई ॥
 अपने गुरु मति राह बिचारौ । बाबे कही सोई मति धारौ ॥
 अब कहूँ एक बिधी बिधि गाई । पलकराम सुनियौ चित लाई ॥
 साध दया आतम बिधि जानै । आतम कष्ट बहुत दुख मानै ॥
 साध दयाल दया अस गावै । आतम दया बहुत बिधि लावै ॥
 ऐसे ग्रन्थ संत सब गावै । बाबे को दयाहोन न भावै ॥
 दयाहीन बहुतै अधमाई । आतम हतै सो काल कसाई ॥
 देखौ संत मते मैं रीती । आतम हत सब कही अनीती ॥
 पलकराम ये कैसी रीती । साहिबजादे करै अनीती ॥
 लड़की^१ मारि करै अजगूता । यह हत्या आतम होइ भूना ॥

(१) पंजाब में ग्राम तौर पर और खास कर जाटों में (जिस क़ौम के लोग सिक्खों में कसरत से हैं) ब्रून हत्या यानी दुखतर-कुशी का रिवाज बड़ी कसरत से था । मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "लड़की" के बदले हर जगह "बकरा" का शब्द रख दिया गया है ।

यह तो आप आतमा नासा । छूटै नहीं भोग बिन बासा ॥
 जो चेतन बसै लड़की माहीं । सो चेतन है अपने ठाहीं ॥
 लड़की दँह दृष्टि करि देखी । ता में अदृष्टि ताहि नहिँ पेखी ॥
 साधू दँह दृष्टि नहिँ मानै । बोलै अदृष्टि ताहि पहिचानै ॥
 दँही दृष्टि जगत की रीती । साधू देखै चेतन सेती ॥
 ता को नास करौ तुम भाई । बावे यह बिधि कही अधमाई ॥
 यह तुम पाप कीन्ह केहिकाजा । साध दया मति आवै न लाजा ॥
 ग्रन्थ माहिँ देखी तुम जाई । आतम हत्या साध न गाई ॥
 या बिधि भूल करौ अजगूता । जम राजा बँधि है मजबूता ॥
 साखी बावे मति की जाना । पर-आतम हत नरक निदाना ॥
 आज गृहस्थ लड़की जो मारै । ता को जगत अधम करि डारै ॥
 साध बने यह कर्म बिचारौ । हिरदे दया नेक नहिँ धारौ ॥
 साधू चलै अनीती लारा । गृहस्थी डरै पाप के भारा ॥
 औरौ सुनौ एक अधमाई । बिन बकरा मरे मास न आई ॥
 बकरा मरै जीव दुख पावै । तब पुनि मास कसाई लावै ॥
 आतम मरै कष्ट के माहीं । कसकै साधू दँह धुजाई ॥
 ऐसे निष्ट साध जो खावै । तिन को साधू कहि कहि गावै ॥
 दयाहीन इंद्री सुख भावै । जिभ्या रस मही बतलावै ॥
 जो कोइ पूछै कस कस खाई । तुम ता को मही बतलाई ॥
 जिवहत्या कहुनाहिँ बिचारा । ऐसे साध अनीति अधारा ॥
 करै स्वाद मही बतलावै । इंद्री स्वाद बिधी नहिँ गावै ॥
 मही तौ तब जानै भाई । ढेला खेत उठावै खाई ॥
 जब जिभ्या सुख चीन्ह न आवै । तब मही कहि सच करि गावै ॥
 नोन मिरिच पुनि छाँकै जाई । पुनि तेहि करै स्वाद से खाई ॥
 कोइ कोइ गृस्थ बिष्णु तेहि थूकै । धूजै दँह प्राण तेहि सूखै ॥
 गृस्थ अनीती मानै नीके । मास खाइ तेहि संगति छेके ॥

ये साधन के कर्म निकामा । नरक परै छूटै जब जामा ॥
 ऐसी कहाँ कहाँ की कहिया । गृस्थ डरै तेहि साधन लइया ॥
 दरस साध के कहैं पुनीता । करै साध ये कर्म अनीता ॥
 बड़े साध येहि बिधि से गाये । यह अनीति सब संत बताये ॥
 पलकराम बिधि समझौ भाई । कहिये साध कि कहिये कसाई ॥
 ये बावे मुख नहीं बखाना । मन अपने सुख इंद्रि खाना ॥
 तुलसी मैं तौ सब कौ दासा । देखि देखि जिव भयौ उदासा ॥
 ऐसी कहि कहि कहैं लग गाई । मता साध का कहूँ न पाई ॥

॥ प्रश्न पलकराम ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी स्वामी भाखौ भेवा । साहिबजादे कर्म के लेवा ॥
 यह बिधि संत मते मैं नाहीं । सत सत ये तौ कही गुसाई ॥
 कहौ तुलसी इन का निरवारा । ये भी कबहूँ लगिहैं पारा ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

पलकराम तुम सुनियौ स्वामी । ये तौ परिहूँ नरक की खानी ॥
 आतम नास मास जिन खाया । बकरा मारि करम मैं आया ॥
 आतम नास कीन्ह तेहि खाया । अपनी इंद्रि सुख मैं लाया ॥
 इंद्रि सुख भयौ आतम बैरा । जिन के भये नरक मैं डेरा ॥
 ये तौ कधी न छूटै भाई । ये बैराट लौटि जो जाई ॥
 साध फकीर गृस्थ पुनि कोई । जिन जिन कीन्ह नरक गये सोई ॥
 बैर भाव छूटे नहिं भाई । गला काटि सोइ बंधन पाई ॥
 या का सुन बरतंत सुनाऊँ । जा की चाल हाल दरसाऊँ ॥
 रामायन मैं देखौ जाई । साखिसमझ बिधि देऊँ दिखाई ॥
 और पुरान जान जिन बूझा । हत्या पाप सबन कहैं सूझा ॥

॥ दोहा ॥

राम बान बाली हता, मारे सब जग जानि ।
पुनि पूरबले बैर से, भील भाल तन हानि ॥

॥ चौपाई ॥

राम कृष्ण औतारी भाई । बाल भील होइ मारौ ताही ॥
पाँव पदम बिच मारेउ बाना । कृष्ण बैर पुनि मरे निदाना ॥
ऐसे बैर न जैहै भाई । गला कटे बिन छूटि न पाई ॥
अब बावे मुख सब्द सुनाऊँ । नानक कही सोई समझाऊँ ॥

॥ शब्द ॥

दरदमंद दरवेस है, बेदरद कसाई ।
गल बिच दुरी चलाइया, तुझे दरद न आई ॥ टेक ॥
क्या बकरी क्या भेड़िया, क्या अपना जाया ।
सब का लोहू एक है, तुझै किन फुरमाया ॥ १ ॥
नानक लखि परचै भई, सब घट बिच प्यारा ।
सब जहान जिव एक है, घट माहिँ निहारा ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

यह नानक बिधि भाखि सुनाई । अपने घर की समझ न आई ॥
नानक साहिब बड़े दयाला । जीव हतन ग्रन्थन नहिँ डाला ॥
ये सब रीत स्वाद की लारी । स्वारथ जिभ्या पेट सँवारी ॥
कहिये दया संत की रीती । यह कस करी मुक्ति परतीती ॥
नित प्रति जीव कसाई मारै । हत्या कहि कहि संत पुकारै ॥
संत कसाई एकहि लेखा । या मैं ठहरा कौन बिबेका ॥
यह अन्धे अन्धे कर लेखा । आत्म मारि न करै बिबेका ॥
अंध धुंध सब भेष भुलावा । सबदन बिच नानक नहिँ गावा ॥
कोइ बावे मुख साखि सुनावै । तौ तुलसी के मन मैं आवै ॥
हत्या भई मुक्ति की दाता । नानक पंथ भेष सब खाता ॥
सबही भेष भेड़ की रीती । अंधे अंध कर्म मन चीती ॥

अब या का परसंग सुनाऊँ । घूघर^१ जुत्थ बैठ इक ठाऊँ ॥
जग अंधरा जस घूघर लेखा । जो बिरले कोइ ज्ञान बिबेका ॥
ज्ञानवंत कोइ बूझि बिचारै । लख अनीति आतम नहिँ मारै
घूघर अंध काग भये भेषा । नीची बुद्धि कुबुद्धि कर लेखा ॥
घूघर दर दृष्टान्त बताऊँ । मंगल माहिँ भेद दरसाऊँ ॥

॥ मंगल ॥

घूघर अंधे भेष टेक अभिमान मैं ।
सूझै न सब मैं ब्रह्म धुंध अज्ञान मैं ॥१॥
घूघर नेतर खुलै सुनौ सोइ साध है ।
देखा तन बिच भान सो ब्रह्म अगाध है ॥२॥
जाने भाखा भेद अंध वा को कहै ।
सब घूघर जिमि भेष टेक अपनी लहै ॥३॥
हंस सिरोमनि साध गगनगंगा बसै ।
काग कुबुद्धी भेष भर्म भौ मैं फँसै ॥४॥
वे का जानै मर्म हंस केहि का कही ।
जस घूघर रबि अंध दिवस दीसै नहीं ॥५॥
सो सब अंधे भेष ब्रह्म बूझै नहीं ।
तन बिच आतम जीव परख सूझै नहीं ॥६॥
मारत निकरै स्वाँस माँस सोइ खात हैं ।
सोइ साधू निज भेष नर्क मैं जात हैं ॥७॥
गृस्थ रहैं जग माहिँ मास मछरी भखैं ।
जुग जुग नरक निवास तासु पुरखा चखैं ॥८॥
ये कोइ भेदी भेद संत बतलावहीं ।
गगन गंग कर बास सो हंस सुनावहीं ॥९॥

काग कुबुद्धी जीव न मन उनके बसै ।
छूटै नर्क निदान जान जम ना फँसै ॥१०॥
तुलसीबूझि बिचार चारि जुग से कहो ।
जो कोइ मानै अंत संत सरना सोई ॥११॥

॥ चौपाई ॥

संत सार सरना सोई पावै । नीति अनीति नजर में आवै ॥
संत सरन बिन पंथ न सूझै । जीव हतन तन दया न बूझै ॥
जस घूघर दिन दिखै न भाई । अस जग भेष नैन अँधराई ॥
दृग्ग दिवस तेहि सूझिन आवै । राति परे चरने को जावै ॥
घूघर का परसंग सुनाऊँ । नीत अनीत भेद दरसाऊँ ॥
गूलर बृच्छ रहै कहूँ एका । ता पर घूघर बसै अनेका ॥
आपस में चरचा भई भाई । अपनी अपनी सबन सुनाई ॥
बोले एक सूरज कहँ रहिया । ता कै कछु बिरहान सुनइया ॥
ता में एक घूघर उठि बोला । दिन को सूरज उगै अतोला ॥
सब सुनि बात अचंभा कीन्हा । सुन कर कोउ न हुँकारी दीन्हा ॥
ये तो आज सुनो हम भाई । हम सब के यह मन नहिँ आई ॥
वा को झूठा करि ठहराया । पूछा कहाँ कहाँ सुनि आया ॥
उन से कहा सुनौ परसंगा । समुँदर बीच मिली जहँ गंगा ॥
ता बिच धाम मोर अस्थाना । कई दिवस जहँ बीति सिराना ॥
एकै दिवस भया अस लेखा । हंसा सरवर आवत देखा ॥
समुँदर वार काग कहूँ आये । उन हंसन पर चौँच चलाये ॥
हंसा कही सुनौ रे कागा । मैला मन बुधि ज्ञान न जागा ॥
जग बिच सूरज उगै जहाना । आँखि न सूझ अबूझ बखाना ॥
जस घूघर दर दिवस न सूझा । अस अँधरा हम तोहि को बूझा ॥
अस अस बातें भई बनाई । सो मैं सुनो कान के माहीं ॥
डर कागा के रहूँ छिपाई । अस बिधि सुनी सुनौ रे भाई ॥

यह सब के मन भया अचंभा । दिवस अंध मानौ जस खंभा ॥
 दिवस दृगन से सूझै न सोई । बूझै कहा दिग बिन जोई ॥
 ऐसे अंध भया सब भेषा । सूझै न संत मते का लेखा ॥
 गूढ़ बचन बानी उन केरी । वे का जानै अंध निवेरी ॥
 ग्रंथ सब्द बिन बूझ न आवै । मन जस चलै तेही दिस धावै ॥
 खान पान बस भेष दुकाने । मन जग लूटत नाहिं डराने ॥
 अस अस ज्ञान भया सब माहीं । यों अस बूढ़े भेष भुलाई ॥
 जीव हतन ऐसी बिधि कीन्हा । कर कर पाप आप सिर लीन्हा ॥
 जीव हतन को दया न आई । ये साधू कोउ कहै न भाई ॥
 ये सब नीच बुद्धि जग रीती । कोइ कोइ जाति न करै अनीती ॥
 जीव को मारि मास जो खाई । पुरखा तासु नरक में जाई ॥
 अस अस जग में डरै बनाई । सो अस मास साध होइ खाई ॥
 नानक ग्रंथ में नहीं बखाना । सब्द मास नहिं कीन्ह बिधाना ॥
 सब साखी में देखौ लेखा । ये कस खाइ पंथ बिच भेषा ॥
 आप खाइ और सबै सिखावै । कायथ या से सिष्य कहावै ॥
 और खत्री सुन सिष्य सुनाई । मास खानि कीन्ही गुरुवाई ॥
 ये गुरु सिष्य भाव अस लेखा । परै नरक दोउ घोर अलेखा ॥
 सुनि साहिबजादे की रीती । लड़की मारि जो करै अनीती ॥
 कन्या पाप जगत में भारी । सो वे साधू करै बिचारी ॥
 अस अस पाप करम की जुगती । सो साधू नहिं पावै मुक्ती ॥
 अस अस अधम काम जिन कीन्हा । जम ने बाँधा भये अधीना ॥
 अस अस करम काम जो करिहै । धरि धरि काल जाल में डरिहै ॥
 परे पारधी पंछिन माहीं । पकरि पकरि भोलिन में नाई ॥
 पंछी पकरि पारधी लेखा । अस जम करै पकरि सब भेषा ॥
 जे जे मास मीन जिन खाई । सोइ सोइ बाँधै काल कसाई ॥
 या मैं नेक एक नहिं जानौ । बूझौ संत साखि सुन मानौ ॥

नानक और कबीर सुनाई । दादू दरिया सब ने गाई ॥
 सब्द साखि बिचलेउ बिचारी । हत्या पाप नरक होइ भारी ॥
 अस अस साधू सबहि पुकारै । ये मत नीच कीच की लारै ॥
 ये पुरान में देखौ जाई । सास्तर सबै अनीति बताई ॥
 जग में रीति अनीती जानै । सो साधन बिच साखि बखानै ॥
 यहि बिधि संत मुक्ति गोहराई । मास खाइ भौ पारन जाई ॥
 ये सब भेष टेक मन जानी । साखि सब्द बिच नाहिँ बखानी
 सुन कर बूझै ज्ञान बिबेका । ये सब खान मान मद लेखा ॥
 अपनी देखी करौ न भाई । नाहिँ कोई आगे साखि लखाई ॥
 ये सब अंध धुंध कर लेखा । बूझै न ज्ञान पंथ कोई भेषा ॥
 संत दयाल दया निधि गावै । दयाहीन नाहिँ साध कहावै ॥
 जीव मारि जो करै बेहाला । वा को वोहि भया जम काला ॥
 ये जिव हानि करै जो कोई । जिन ये कीन्ह नरक गये सोई ॥
 या मैं कोई लाख बुझवावै । नरक बास आसा तन पावै ॥
 देखौ मता संत कर बावे । ये तौ नरक करम मैं जावे ॥
 संत मते की राह नियारी । ये तौ भरम भाव जग सारी ॥
 ये कहूँ संत मते में नाहीं । संतन का मति औरै भाई ॥
 पलकराम बूझौ मन माहीं । संत मते की औरै राही ॥
 संत मते का औरै लेखा । कोई भेष न किया बिबेका ॥
 संतन सतसत कही बखाना । बिना बूझ निंदा कर जाना ॥
 या से भाव भेद नाहिँ पावै । बिना भेद निंदक ठहरावै ॥
 जो बावे मुख कही लखाई । जैजैवंती में बिधि गाई ॥
 जो कछु सुरति पंथ मति रीती । बावे बचन भाखि परतीती ॥
 जैजैवंती में सब गाई । पलकराम सुनियौ चित लाई ॥

॥ जैजैवंती ॥

एरी दृग माहिँ तौ निरखि हिये माहीं, सूक्ता नहिँ नैन से ॥टेक॥
 तुलसी कहि निरखि बिचारी, नानक ग्रंथन मति भारी ।
 सारी बानी सद्द बताई, जाइ देखौ ग्रंथ में ॥१॥
 पलकराम सतसंग पावा, बानी सतगुरु सद्द लखावा ।
 पाया संत चरन सरनाई, तिन से बिधि जाइ कै ॥२॥
 पंथी भेद बिधी नहिँ जानै, मति पंथी जाति बखानै ।
 बावे पंथ सुरति गति गाई, पाये चढ़ि धाड़ कै ॥३॥
 सूरति कढ़ियाव बताई, परे साधन संध चढ़ाई ।
 वाह गुरु चौथे पद पाया, सब गाया संत ने ॥४॥
 गोरख जो गुष्ट बताई, मन गोरख इंद्रो माहीं ।
 चौरासी सिध नौ नाथा, नाथे नौ द्वार में ॥५॥
 नाथे नौ द्वारे माहीं, चौरासी नित नित जाई ।
 दृग से साँई नहिँ देखा, लेखा येहि गुष्टि में ॥६॥
 पौड़ी बिधि बावे गाई, सिद्धी पौड़ी चढ़न बताई ।
 तुम तौ बिधि पढ़ हारे, पारे नहिँ देखिया ॥७॥
 पचग्रन्थी तत्त लखाये, पृथ्वी पवन अकास समाये ।
 अग्नि जल पाँच बँधाया, पचग्रन्थी गाइ कै ॥८॥
 आदि ग्रन्थ परथम्भ बखाना, जब बना ब्रह्मंड समाना ।
 आदि ग्रन्थी रचना बाँधी, बावे कही जाय कै ॥९॥
 सुखमनी ये घाट कहाई, इड़ा पिँगला सुखमनि माहीं ।
 चढ़ी सूरति गगन समावा, पावा वोहि धाड़ कै ॥१०॥
 आसा के वार बताई, आसा भौ वार बँधाई ।
 आसा परे जब लखि पावै, सूरति सत पाइ कै ॥११॥
 जप का परमारथ जाना, जब जीव सुरति पहिचाना ।
 जब सुखमनि सुरति लगावा, चीन्हा पहिचानि कै ॥१२॥

सतगुरु दरियाव बखाना, सो बिधि तुलसी सब जाना ।
 लखि अलख अरूप अकाया, द्वारा निरखा पाइ कै ॥१३॥
 अम्मरसर गुरू लखाई, जहँ जीव अमर होइ जाई ।
 अस माना चढ़ि असमाना, जाना जिन जाइ कै ॥१४॥
 हलुवा बट छाकर लीन्हा, इक बट पानी में कीन्हा ।
 इक भंडा जाइ धरावा, चीन्हा नहिँ भूल से ॥१५॥
 जा को भगवान बतावा, बावे कही काल चबावा ।
 गोबिंदजी निज मुख भाखा, बावे कही साखि में ॥१६॥
 बावे राम रहीम न माना, गुरु गोबिंद ग्रंथ बखाना ।
 मत संतन और बतावा, साहिव कोइ और है ॥१७॥
 पूजा पाहन बावे न गाई, गुरु गोबिंद नहिँ ठहराई ।
 तुम पूजौ अंध अचेता, चीन्हा नहिँ भेद को ॥१८॥
 आरति भौ खंड न भाखा, चाँद सूरज दीपक राखा ।
 गगना में थाल बताई, थाह मिलै खुति लाइ कै ॥१९॥
 ये गति नानक बिधि गाई, सतसंग करै जब पाई ।
 संतन कोइ संधि लखावा, पावा खुत धाड़ कै ॥२०॥
 नानक खुत चढ़ी अकासा, कीन्हा सैल ब्रह्मंड निवासा ।
 ब्रह्मंड से परे सिधारे, निराकार नहिँ जात है ॥२१॥
 चौथा पद वाहगुरु माहीं, जहँ नानक सुरति चढ़ाई ।
 निराकार वहाँ नहिँ जावै, चढ़े नानक धाड़ कै ॥२२॥
 तुलसी संतन गति न्यारी, जहँ जोति नहीं निराकारी ।
 इन को सब काल बतावै, तुलसी पीव दयाल है ॥२३॥

॥ बिलावल ॥

नानक नजरा निहाल पलक में निहाला ॥टेक॥
 सूरति चली अगम चाल, छूटी ग्रन्थी निहाल ।
 सतगुरु वाहगुरु दयाल, नाल नौ के पारा ॥

दया के कपास पान, संतों का सूत जान ।
 ग्रन्थी जित बाट मान, ये जनेऊ सारा ॥
 फीकी जग गाँठि खोल, तोल मोल न्यारा ॥१॥
 त्रै पन नहीं तमक होइ, मन का जो मैल धोइ ।
 ऐसी सत रीति जोइ, खोइ खूब डारा ॥
 तेरा तोही मैं यार, सूरति नैना सँवार ।
 निरखा संतन निहार, माहिँ मौज मारा ॥
 सूरति ले निरत बृक्ति, सूक्ति सब्द सारा ॥२॥
 पाँडे के गले घात, टूटै ना जरै जात ।
 मैली ना होवै हाथ, धन वे सेवक न्यारा ॥
 संतों ने ग्रन्थ खोल, सूझा अगमन अमोल ।
 गोबिंदजी गुरु अतोळ, चाल चाल पारा ॥
 पाया सत नाम संत, हाथ लाग हीरा ॥३॥
 पौड़ी का अरथ जान, सीढ़ी चढ़ना पिछान ।
 सूरति सुखमना सान, मान लै की लारा ॥
 अंबर असमान देख, अंबरसर अधर पेख ।
 पावै अदबुद अलेख, आदि अंत सारा ॥
 दसवाँ महलन के पार, तार चार द्वारा ॥४॥
 सूरति कढ़ियाव सार, साधो परे साध पार ।
 गुरु गुरु दरियाव लार, कार कँवल मारा ॥
 आदि ग्रन्थ गाँठि तोड़, पाँच ग्रन्थ बाट मोड़ ।
 आसा के वार छोड़, जपजी के पारा ॥
 तुलसी नानक कृपाल, मारि कोल डारा ॥५॥

॥ सारठा ॥

पलकराम सुन बात, बावे ये बिधि यों कही ।
 गोबिंद मुख बिख्यात, लाग चरन संतन मिलै ॥

॥ प्रश्न पलकराम ॥

॥ सोरठा ॥

सतसँग तुलसी सार, जो कछु अगम लखाइया ।

बावे बिधि बिधि पार, सार सार सगरा कहा ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी स्वामी सत्त बताई । संत भेद हम तुम से पाई ॥
 संत मता है अगम अलेखा । सो कोइ भेष न किया बिबेका ॥
 पलकराम चरनन को दासा । सत सत संत चरन बिस्वासा ॥
 जो जो भेद तुम भाखि सुनाया । सो तो हम सुपने नहिँ पाया ॥
 पूछौँ बिधी भेद सब कहिया । वाह गुरु बावे कस पड़या ॥
 निराकार की आदि बतावौ । जोती आदि सबै दरसावौ ॥
 इन के परे कौन है स्वामी । ता की महिमा बिधी बखानी ॥
 तुम दयाल पूरे है स्वामी । बावे बिधी कही सोइ जानी ॥
 संतन अगम आदि कस गाई । सो स्वामी मोहिँ भाखि सुनाई ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिव ॥

॥ चौपाई ॥

तीनि लोक से चौथा न्यारा । चौथे के परे अगम अपारा ॥
 पुरुष तहाँ इक अगम अनामी । चौथा पद तेहि पार ठिकानी ॥
 चौथा पद सतनाम कहाई । तेहि नानक वाहगुरु बताई ॥
 सत्त नाम वाहगुरु बतावा । तेहि कबीर सत सब्द लखावा ॥
 तीनों नाम एक हैं भाई । वे बासी चौथे पद माहीं ॥
 वाहगुरु का अंस कहइया । जा से सोलह निरगुन भइया ॥
 ता में एक निरंजन राई । गुरु अंस से जोती आई ॥
 जोति निरंजन की है नारी । दोनों मिलिकीन्हा बिस्तारी ॥
 वाहगुरु पद इन से न्यारा । निराकार नहिँ जोति पसारा ॥
 तीनिलोक निराकार समाना । वाहगुरु चौथे में जाना ॥
 वाहगुरु का भेद न्यारा । निराकार नहिँ पावै पारा ॥

जोति निरंजन किया बिधाना ॥ उपजे तीन पुत्र परमाना ॥
 ब्रह्मा बिष्णु महेसुर जाना ॥ काल निरंजन से उतपाना ॥
 निरंजन जोति काल अन्याई ॥ दस औतार याहि के भाई ॥
 काल ने लिये दसौ औतारा ॥ तीनि पुत्र पुनि साज सँवारा ॥
 ब्रह्मा बेद पुरान बनावा ॥ ता में सकल जीव उरभावा ॥
 देवल देव पखान पुजावा ॥ ता में सकल जीव भरमावा ॥
 निरंकाल काल अन्याई ॥ जोती ठगिनी जाल बिछाई ॥
 ब्रह्मा बिष्णु काल के बेटे ॥ दस औतार काल के पेटे ॥
 ये ठग ठग मिलि जाल पसारा ॥ जीव बाँधि चौरासी डारा ॥
 वाहगुरू का मरम न पाया ॥ चेला जीव जहाँ से आया ॥
 निरंकाल जोती ने भाई ॥ वाहगुरू की राह छिपाई ॥
 वहाँ जीव जाने नहीं पाई ॥ ठग ठग मिलि सब जाल बिछाई ॥
 कोइ कोइ संत अगमपुर बासी ॥ मारा काल भये अबिनासी ॥
 सूरति चढ़ी गगन के माहीं ॥ चौथा पद वाहगुरू दरसाई ॥
 पदम कंज में गुरु का बासा ॥ गुरू मिलै तब चढ़ै अकासा ॥
 संत मिलै कोइ वा घर बासी ॥ दरसावै काटै वो फाँसी ॥
 संत दयाल मिलै कोइ पावै ॥ पलक एक में राह लखावै ॥
 है पुनि अगम सुगम होइ जावै ॥ वाहगुरू जीवत मिलि जावै ॥
 नानक येही रीति से पावा ॥ औरौ संत यही बिधि गावा ॥
 तब तिन वाहगुरू पद भाखी ॥ जीवत मिलै कही पद साखी ॥
 तुम तौ वाहगुरू को मानौ ॥ वाहगुरू का मरम न जानौ ॥
 वाहगुरू मुख भाखि बखानौ ॥ वाहगुरू की महिमा ठानौ ॥
 बावे वाह गुरू बतलाया ॥ तुम तौ याह गुरू मन लाया ॥
 कस कस राह मिलै पुनि भाई ॥ भेष पंथ ने राह भुलाई ॥
 संत चीन्हि जावै सरनाई ॥ वाह गुरू सहजै में पाई ॥
 बिना संत कछु मिलै न भेदा ॥ ऐसे काल करै जिव खेदा ॥

॥ पलकराम उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

हे स्वामी तुम अगम सुनाई । ये कहूँ भेद जगत में नाहीं ॥
 साध संत बहु खोजि सिराना । भेद पंथ में सुना न काना ॥
 सुना भेद मन चक्रित भइया । ये तौ स्वामी अकथ सुनइया ॥
 मैं तो सरन तुम्हारी लीन्हा । संत चरन जल मन जस मीना ॥
 मो को चरन सरन में राखौ । सरन संत मन सत कर भाखौ ॥
 मोर निबाह संत के हाथा । करिहूँ मो को संत सनाथा ॥
 मैं किंकर हूँ सरन अनाथा । निबहूँ संत चरन के साथथा ॥
 मो को संत चरन की आसा । दूजा और नहीं बिस्वासा ॥
 अस कहि बहै नैन से पानी । स्वाँसा भरै चरन लपटानी ॥
 साधू रीति प्रीति गति भाखी । सुरख भये नैना निज आँखी ॥
 बोले बचन दीन गति गाई । अब अज्ञा अस्थाने जाई ॥
 चरन परसि पुनि अज्ञा लीन्हा । तुलसी सीस चरन पर दीन्हा ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी कहै सरनि मैं स्वामी । दया कीन्ह मोहिँ अंतरजामी ॥
 अस भाखि चल कीन्ह पयाना । पलकराम पहुँचे अस्थाना ॥
 मन मैं मगन प्रीति भई गाढ़ी । सूरति लगी फिरै नहिँ आड़ी ॥

॥ दोहा ॥

पलकराम बिधि कहा कहूँ, सत मत साधू भाय ।
 मन प्रति दीन प्रभाव अति, सब साधन के मायँ ॥१॥
 साध संत हिये प्रीति ज्यौँ, उमगत बारोड़ बार ।
 नैन निरखि आँखी भरे, करै संत से भाव ॥२॥

॥ बिलावल ॥

पलकराम प्रेम मगन, संतन सरनाई ।
 अति अजान जान कछू, किंकर की नाँई ॥देक॥

चरन चिन्ह भाव सुमन, संतन स्रुति परन बंध ।
 नैना भर भरत नीर, बरनै लघुताई ॥
 जोड़ जोड़ मुख कहत बैन, बानी मृदु पुलक गात ।
 गुनन गिनत संत साथ, मन तन हित लाई ॥१॥
 हिरदे हित हरन बैन, किंचित मन भरम भै न ।
 निर निर निरभै समीर, थिरता अधिकाई ॥
 भावन मन भाव लाइ, चावत चित चेत साथ ।
 तुलसी ये भक्ति भाँत, चाहत चरनाई ॥२॥

॥ दोहा ॥

पलकराम के प्रेम की, तुलसी करत बखान ।
 बैन बचन मुख चैन की, सो कहूँ कौन बयान ॥

॥ सोरठा ॥

हिरदे हरष समाय, पलकराम साधू समझ ।
 मंजन तन परभाय, लाह लहर कस कस कहूँ ॥

॥ हिरदे उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

पुनि हिरदे बोला अस बानी । कासी में साधू अस जानी ॥
 स्वामी साधू बड़े प्रमानी । संत चरनबिन और न जानो ॥
 कासी में देखे यह साधू । कासी और कौंच पुनि काँदू ॥
 स्वामी सत मत कोउ न चीन्हा । यह पुनि साध बड़े मति लीन्हा ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी सुन हिरदे बाता । कासी नगर काल मति राता ॥
 कासी करम जीव अज्ञाना । जुग चारौ जग जीव भुलाना ॥
 कासी जगत धाम बतलावै । मरै जीव पुनि भूत कहावै ॥
 सिव की पुरी धाम जग भाखा । उनके भूत प्रेत की साखा ॥

सिव भये भूत प्रेत के राजा । मरै जीव होइ भूत समाजा ॥
 ये कासी मिलि भूत बड़ाई । सिव कैलास भूत में भाई ॥
 ता से जड़ मत जीवन लीन्हा । जड़ सँग जिव जो भया अधीना ॥
 घटरामायन सुनि भौ सोरा । कासी नगर भया घनघोरा ॥
 पंथ भेष जग लड़न खखारा । घट रामायन परी पुकारा ॥
 अस सुन सौर भयो जग माहीं । सहर मुलक सब गँवई गाँई ॥
 भेष पंथ में अचरज भइया । दरसन भेष लखन को अइया ॥

॥ दोहा ॥

जगत सौर सब भेष में, नगर गाँव सब ठौर ।
 भेष फकीरी पंथ के, लख जाँचत सत मोर ॥

संवाद साथ गुपाल गुसाईँ कबीर पंथी के

॥ चौपाई ॥

दरसन करन आये इक संती । मन मत नाम कबीरपंथी ॥
 हम पुनि धाइ चरन को लीन्हा । उन पुनि दया गुसाईँ कीन्हा ॥
 आसन दे कीन्हा सनमाना । पूछा रहौ कैान अस्थाना ॥
 कहँ से दया गवन कियो स्वामी । किरपा कीन्ह दीन मोहिं जानी ॥

॥ उत्तर गुपाल गुसाईँ ॥

॥ चौपाई ॥

तिरहुत देस धनौती गाँई । भगत नाम गोपाल गुसाईँ ॥
 भाव भक्ति हा साध कहाव । संत चरन पर सीस नवावै ॥
 साध जान हमहूँ चलि आये । दरसन करि मन आनँद पाये ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

धरमदास के बंसन माहीं । कै कोइ साध और मति राही ॥
 कबीरदास पुनि हँ धर्मदासा । उन से भिन्न रहौ कैहि पासा ॥
 यह बरतंत सुनावौ स्वामी । भावभक्ति हा कैहि बिधि जानी ॥

हम कबीर मति एक बिचारा । तुम कही और भेद बिस्तारा ॥
भाव भक्ति हा केहि बिधि भइया । सो स्वामी मोहिं बरनि सुनइया ॥

॥ गुपाल गुसाईँ उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसीदास सुनौ चित लाई । तुम अपना कहौ भेद जनाई ॥
कौन मते के साथ कहावौ । अपना गुरु मति भेद बतावौ ॥
हम हमरा जब सत मत भाखै । गुरु मत कहै भेद नहिं राखै ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

हमरे गुरु हैं संत सुजाना । हम तौ गुरु संत को माना ॥
संत गुरु और पंथ न जानी । निस दिन संत चरन सुत आनी ॥
संत चरन कर दास दिवाना । साधू सरन चरन लपटाना ॥
और इष्ट नहिं दूजा भाऊ । निस दिन साधू चरन उमाऊ ॥
मैं निकाम कछु जानौं न भेदा । नीच बुद्धि मन छल बल खेदा ॥
तुम्हरे चरन सरन कछु पाई । मैं मतिहीन साथ सरनाई ॥
दरसन तुम्हरे भये सनाथा । न्यारा करि पकरौ मेरा हाथा ॥

॥ गुपाल गुसाईँ उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी साधू तुम परमानी । बचन सुधा रस अमृत बानी ॥
तुम्हारा तेल बोल प्रिय मीठा । कासी मैं साधू तुम दीठा ॥
अब मैं गुरु मति भेद बताऊँ । भये जस भाव भक्ति हा नाऊँ ॥
भाख भये भगवान गुसाईँ । गद्दी रहै धनौती माहीं ॥
उनके मति के साथ कहावै । बीजक मति परमान बतावै ॥
रामैनी चौरासी गाई । ये कबीर मति कहा गुसाईँ ॥
धर्मदास मति मूल न मानी । बंस मता हम सत्त न जानी ॥
मूल मरम बीजक के माहीं । बंस भेद यह जानत नाहीं ॥

मुख कबीरमति आप बखानी । तत्त वस्तु बीजक मैं आनी ॥
 और ग्रंथ सब बंस बनाये । ये सब छुच्छम भर्म भुलाये ॥
 इन में कछू नहीं है भाई । ये सब गये गवन गफलाई ॥
 जो जो बंस राह मति माहीं । उन बीजक का मरमन पाई ॥
 जो जो बंस राह मति चाली । जम सेँटे से भये बेहाली ॥
 बंस राह चौके मैं भूला । कहा जानै मति बीजक अतूला ॥
 एक बिधी तुलसी सुन लीजै । बंस मता चित नेक न दीजै ॥
 बरनौ बंस राह की रीती । बीरा परवानै परतीती ॥
 पान परवाना लिखिलिखिजेई । जा की कहूँ बरतंत बिलोई ॥
 असत अजावन बीरा कीन्हा । बिंद बिज से लिख कर दीन्हा ॥
 सो सिष भिष्ट खवावै भाई । अस अस बीरा बंस चलाई ॥

॥ दोहा ॥

बीज बिंद बीरा करै, सो सिष पान खवाइ ।
 बंस राह रस रीति की, अस अस बूझ लखाइ ॥

॥ तुलसी साहिब उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

एक बिधी हमहूँ सुनि पाई । ता की स्वामी भाखि सुनाई ॥
 बसै साध इक मँडले माहीं । गोबिंददास नाम रहै भाई ॥
 वे हमरे अस्थाने आये । उन सब बिधि बरतंत सुनाये ॥
 इक दिन चरचा कही बुझाई । सो बिधि तुमको भाखि सुनाई ॥
 बीजक बरनन बात निकारी । उन बरतंत कहा सब झारी ॥
 सो बरतंत कहिकै समझाऊँ । जस उन कही कहन दरसाऊँ ॥
 धर्मदास सुत जुगल कहाई । एक नाम चूरामनि भाई ॥
 बचन कबीर भाव से भइया । अस चूरामनि नाम कहइया ॥
 दूजा नाम नरायन होई । ऐसे जुगल बंधु कहै सोई ॥
 धर्मदास के दरब न थोरा । माया रहै सोइ चारि किरारा ॥

गुन गुमास्ते दो रहे पासा । जागू भागू नाम प्रकासा ॥
 दास कबीर एक दिन आये । धर्मदास पूजा मन लाये ॥
 सालिगराम न्हवावै भाई । पूजा करिके ध्यान लगाई ॥
 सो कबीर देखत मुसक्यानी । पत्थर कस धोवत नित पानी ॥
 असकबीर मुख बचन बखाना । धर्मदास मन मैं रिसियाना ॥
 कस निंदक ने बचन सुनाया । ठाकुर को पत्थर ठहराया ॥
 धर्मदास दिल गुसा समाई । पूजा साज उठायौ जाई ॥
 है कोइ यह नास्तिक मत माहीं । चरचा इन से करौं बनाई ॥
 धर्मदास पूछी इक बाता । पूजा सो सब करत सनाथा ॥
 तुम् पत्थर कैसी बिधि गावा । इष्ट हमारे दोष लगावा ॥
 वेद पुरान सास्तर गावा । तिन को तुम् पत्थर ठहरावा ॥
 तुम्हरा मता कौन है भाई । सो तुम् हम को भाखि सुनाई ॥

॥ कबीरदास ॥

॥ चौपाई ॥

सुनियौ धर्मदास इक बाता । ब्रह्मा से भये वेद सनाथा ॥
 ब्रह्मा भये बैराट की नाभी । सो बैराट में किस की स्वाबी ॥
 पाँच तत्त कहौ कहूँ से आये । सो रचि कै बैराट बनाये ॥
 सो बैराट पिंड सब गावै । ये सब बिधी वेद बतलावै ॥
 बिधि वेदान्त ब्रह्म कहि गावा । आतम भीतर सुद्ध बतावा ॥
 और पुरान तुम्हरा गोहरावा । पत्थर पूजन कौन बतावा ॥
 ये बैराट पिंड तन माहीं । गगन माहिँ नौ खंड समाई ॥
 पाँच तत्त तन बदन बनाया । ता में चेतन ब्रह्म समाया ॥
 चेतन आतम सब के माहीं । तुम् पत्थर पूजौ केहि राही ॥
 धर्मदास मन बूझि बिचारा । या से ज्ञान कहूँ निरबारा ॥
 तब पंडित दो चारि बुलावा । ये फकीर कहा कहत बुझावा ॥
 जहँ इक पंडित कंजा नामा । कहा फकीर कस करत बखाना ॥

जो कछु बेद सनातन गाई । सो मति को हम मानै भाई ॥
 तुम फकीर कहौ कैसे साधू । धर्म भृष्ट करौ बाद बिबादू ॥
 जोइ जोइ आदि राह चलिआई । मेटेउ सब यहाँ से उठि जाई ॥
 पंडित कहै कंजा अस बाता । येहि को काढ़ि देउ दै लाता ॥
 इन सब धर्म नास्ती कीन्हा । मुख देखन नहिँ जोग अलीना ॥
 कंजा कहर लहरि कहि सारी । तब कबीर ने मौन बिचारी ॥

॥ कबीर दास ॥

॥ चौपाई ॥

पुनि बोले बिन रहा न जाई । तुम पंडित हौ कर्म कसाई ॥
 जग सब अंध धुंध करि डारा । पूजत पाहन जीव बिगारा ॥
 पानी जीव बँधाई आसा । अस अस जगत कर्म बस फाँसा
 देबी बकरा गला कटावौ । टका मूड़ बस पाप करावौ ॥
 माला टोपी काँध जनेऊ । करि असनान अचारी बनेऊ ॥
 हाँड़ी हाड़ मास घर सीभा । तलफत गला कटत जिव छीजा ॥
 पत्थर पानी जगत पुजाई । देखी पंडित की पँडिताई ॥
 बेद पुरान ज्ञान समझावौ । दयाहीन हति आतम खावौ ॥
 मछरी मास घास पशु खाई । अस तुम पशू नरक के माहीं ॥
 सुन पंडित तन अगिनिसमानी । गरम तवा जस डारौ पानी ॥
 जग बिच रहत कसाई जाता । तुम बिन करै कौन यह बाता ॥
 अब या का इक सव्द सुनाऊँ । सव्द साखि में लखन लखाऊँ ॥

॥ शब्द ॥

साधो भाई पाँड़े निपुन कसाई ।

बकरी मारि भैंड़ि को धावै । दिल में दरद न आई ॥ टेक ॥
 करि असनान तिलक दै बैठे । बिधि से देबी पुजाई ।
 आतम मारि पलक में बिनसै । रुधिर की नदी बहाई ॥ १ ॥
 अति पुनीत ऊँचे कुल कहिये । सभा माहिँ अधिकाई ।
 इन से गुरु-दिच्छा सब माँगै । हँसी आवै मोहिँ भाई ॥ २ ॥

पाप कटन को कथा सुनावैं । करम करावैं नीचा ।
हम तो दोऊ परस पर डीठा । बाँधे जम जग बीचा ॥३॥
गाइ बधै सो तुरुक कहावै । ये क्या इन से छोटे ।
कह कबीर सुनौ हो साधो । कलि में बाम्हन खोटे ॥४॥

॥ साखी ॥

जला जीव तुम बिन बिन खाये । काहे को छाँड़ी गाई ॥१॥
बेद पुरान भागवत गीता । पढ़ि पढ़ि भये कसाई ॥२॥

॥ धर्मदास ॥

॥ चौपाई ॥

अरे फकीर कस खोटी बोलौ । पहुँचे करामात कछु खोलौ ॥

॥ कबीर दास ॥

॥ चौपाई ॥

जब कबीर इक बिधी बिचारी । धरमदास सुन बात हमारी ॥
अंतर सालिगराम दिखाऊँ । हिरदे ठाकुर काढ़ि बताऊँ ॥
गगन भूमि चढ़ि नैन पसारौ । ऐसे सालिगराम निहारौ ॥
कहि कबीर इक हुचकी लीन्हा । काढ़े ठाकुर भया यकीना ॥
पुनि ठाकुर कबीर बुलाये । सो चलि चले हाथ में आये ॥
देखत सब को भया अचंभा । मन बिस्वास बास बिच थंभा ॥
धरमदास मन साँच समाना । ये साधू कोइ परम निधाना ॥
जीव भाव मुक्ती अस जाना । तब पुनि गये चरन लपटाना ॥
मंदिर आसन कीन्ह बनाई । सत कबीर आसन पर आई ॥
तिरिया चरन आन करि लीन्हा । बचन बाक चूरामनि दीन्हा ॥
दास नरायन दूजे भाई । अस कबीर बिधि बरनि सुनाई ॥
सब घर के नर नारि बुलाये । चरन परसि के भवन सिधाये ॥
दास नरायन बोले बानी । गई मत बापू की हम जानी ॥
ये फकीर ठग कहँ से आया । सब घर जादू भर्म भुलाया ॥

दास नरायन दीन्हा ज्वाबै । ठग फकीर पै हम नहिं जावै ॥
जब कबीर बोले मुख बानी । दास नरायन काल निसानी ॥

॥ दोहा ॥

कहा कबीर धर्मदास से, चौका करौ बनाइ ।

साज सकल बिधि आनिकै, बीरा सत्त समाइ ॥

॥ चौपाई ॥

तब चौके का साज मँगाया । धर्मदास चित चौका चाया ॥
चौका करि परवाना पावा । मुक्तिभाव सब बिधि दरसावा ॥
अस बरतंत कहा सब लेखा । कहूँ आगे का सुनौ बिबेका ॥
गोबिंददास समझ समझाई । गुपल गुसाईं कहौ बुझाई ॥
अब आगे बरतंत सुनाई । गुपल गुसाईं सुन मन लाई ॥
अस कबीर धर्मदास चितावा । सो बरनन हम बरनि सुनावा ॥
कहत कबीर सुनौ धर्मदासा । माया मोह जगत जिव फाँसा ॥
सब माया को देउ लुटाई । साधू संग रहौ लौ लाई ॥
सुन करि धर्मदास सोइ कीन्हा । माया द्रव्य लुटाई दीन्हा ॥
पुनि कबीर दिल भये दयाला । सब्द साखि सब ग्रंथ निकाला ॥
बीजक और और कहौ बानी । दीन्ही धर्मदास को आनो ॥
गुन गुमास्ते जागू भागू । चेला भये धरमनि सँग लागू ॥
धरमदास चित चेला होई । जागू भागू नाम बिलोई ॥
सब्द साखि बीजक और बानी । जागू भागू पास बखानी ॥
सिपुरस^१ धर्मदास ने कीन्हा । सोइ भागू सिर ऊपर लीन्हा ॥
देही धरमदास तन त्यागा । तब चूरामनि ग्रन्थ जो माँगा ॥
और ग्रन्थ सब दीन्हेउ भाई । बीजक भागू लीन्ह चुराई ॥
रहे भगवान गुसाईं भाई । बीजक दै उन दीन्ह भगाई ॥
तब तिरहुत में गढ़ी कीन्हा । जाइ धनौति महंती लीन्हा ॥
येहि बिधिभाव भक्तिहा भइया । गोबिंददास बरन अस कहिया ॥

और जागू कछु कही बखाना । गुपाल गुसाईँ सुन दै काना ॥
 भये भगवान गुसाईँ साधू । तिन की भाखूँ जड़ बुनियादू ॥
 बाम्हन बालक जाति बखानी । मात पिता केहि जाति निदानी ॥
 जगबँधनी माता कर नाऊँ । पितु कालू बिधि बरनि सुनाऊँ ॥
 उनके पुत्र रहे वे भाई । नाम कहा भगवान गुसाई ॥
 पुनि पुरान में रहे प्रबीना । गुरुमत करनी भाव न कीन्हा ॥
 पुनि कोई दिन मत में रहेऊ । तजि सतसंग गुसाईँ भयेऊ ॥
 जुगल गुरु मति छाँड़ि पराई । बीजक मिले भक्ति हा भाई ॥
 बीजक मति की चाल चलाई । जा से नाम भक्ति हा पाई ॥
 अब कालू की आदि बताई । जा से भये भगवान गुसाईँ ॥
 कालू चलन बिषय रस राज । रहै तेलिन मँगली बोहि गाऊँ ॥
 ता संग इस्क मुहब्बत कीन्हा । लेकर पकरि राज सोइ लीन्हा ॥
 मँगली तेलिन कालू दोई । बाँधे पकरि राज ने सोई ॥
 कालू पितु सुन सब सुनाई । डंड दीन्ह पुनि लीन्ह छुड़ाई ॥
 पुनि तेलिन ने सब बिचारा । मैँ संग रहौँ रहौँ येहि लारा ॥
 सब बाम्हन मिलि बहुत बुझाई । कहिया बहुत न मानै भाई ॥
 तब पितु माता दीन्ह निकारी । न्यारे रहे भये घरबारी ॥
 मँगली नाम फेरि तब दीन्हा । जगबँधनी धर नाम नबीना ॥
 मँगली से जगबँधनी कहिया । तेलिन नाम फेरि अस भइया ॥
 जा से भये भगवान गुसाईँ । येहि बिधि उन की आदि सुनाई ॥
 ॥ गुपाल गुसाईँ ॥

॥ चौपाई ॥

सुन बरतंत मनहिँ मन भाखा । कछु कछु समझ मनहिँ बिचराखा ॥
 हम आगे बरतंत न जाना । उन बिधि बिधि सब सत्त बखाना ॥
 हम सब भाँति सुनी यह बानी । तुलसी तुम ने करी बखानी ॥
 गोविंददास कही बिधि सारो । हम ने सुनी कहौँ बिस्तारो ॥

जो बरनन उन भाखि सुनावा । जा में कछु मन में नहिं आवा ॥
 कछु कछु तौ उन ठीक बतावा । कछु कछु समझ नहीं मन आवा
 अब या का बरतंत सुनाऊँ । जस जस सुनी समझ समझाऊँ ॥
 धर्मदास तन त्यागा भाई । जागू भागू कैद कराई ॥
 धर्मदास का कीन्ह भँडारा । सब साधू आये ज्यौनारा ॥
 समय पाइ भगवान गुसाई । बोले द्वै साधू आये नाहीं ॥
 पुनिकोइ साधुकानसुनि लइया । रहे साधु ये को अस कहिया ॥
 तब बोले भगवान गुसाई । जागू भागू नाम कहाई ॥
 सो चूरामनि कैद कराई । सब मिलि कै उन को छुड़वाई ॥
 तब चूरामनि लीन्ह बुलाई । साधु कैद से आनौ भाई ॥
 तब दोउ साधु कैद से काढ़े । आये जहाँ साधु सब ठाढ़े ॥
 सब पंगति ज्यौनार कराये । भोजन करि आसन पर आये ॥
 सब साधुन मिलि न्याव सँवारा । बीजक देना बिधी बिचारा ॥
 जब बीजक आयौ उन हाथा । अस बिधि वा तैं भये सनाथा ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

सुन कर बिधी भर्म मन आवा । तुम कछु औरहि और सुनावा ॥
 उन सब कही और बिधि भाखी । तुम रसरमज और बिधि राखी ॥
 यह तौ बिधी मिली नहिं भाई । तुम उन औरै और सुनाई ॥
 अब आगे का करौ बयाना । बीजक कहौ बिधान बिधाना ॥
 कस कस बीजक बरन सुनाया । जस कबीर मुख अपने गाया ॥
 सब्द साखि सोइ भाखि सुनावौ । बीजक का बरतंत बतावौ ॥
 जीव काल से बचै न भाई । भौ के पार कौन बिधि जाई ॥
 सब्द अरथ साखी समझावौ । भिन भिन वा कौ अर्थ बतावौ ॥

॥ गुपाल गुसाई ॥

॥ चौपाई ॥

सुनियौ तुलसीदास गुसाई । अब बीजक का सब्द सुनाई ॥

॥ शब्द ॥

साधौ भक्ती सतगुरु आनी ॥ टेक ॥

नारी एक पुरुष दो जोय, बूझै पंडित ज्ञानी ॥१॥

पाहन फोड़ि गंग इक निकसी, चहुँ दिस पानी पानी ॥२॥

तेहि पानी दुइ परबत बूड़े, दरिया लहर समानी ॥३॥

उड़ि माखी तरवर के लागी, बोलै एकै बानी ॥४॥

वा माखी के माखा नाहीं, गरभ रहा बिन पानी ॥५॥

नारी सकल पुरुष वोहि खाया, ता से रह्यौ अकेला ॥६॥

कहै कबीर जो अब की समझै, सोई गुरु मै चेला ॥७॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी सुन गुपल गुसाईँ । सब्द अरथ मोहिं कहौ बुझाई ॥

को सतगुरु को भक्ती लाये । ये कबीर कस बरनि सुनाये ॥

जुगल पुरुष केहि नारि ने जाई । पाहन फोड़ि गंग कस आई ॥

फैली गंगा चहुँ दिस पानी । यह कबीर कहा कही बखानी ॥

को दोउ परबत बूड़े पानी । कहौ या की भिनि भिनि करि ज्ञानी ॥

को दरिया कित लहर समाई । को तरवर को माखी भाई ॥

बिन माखा माखी गरभानो । सो कबीर कस कही बखानो ॥

परसे नर बिन गर्भ न होई । कस माखी गरभिनि भइ सोई ॥

कहौ को नारि पुरुष सब खाई । कही कबीर मै नारि बचाई ॥

कौन नारि लख बचे बतावा । नारि बचे सोइ गुरु कहावा ॥

कही कबीर अपने मुख बानी । या का भाखौ भेद बखानी ॥

गुपल गुसाईँ सुन मन माहीं । एक जवाब उन भाखि सुनाई ॥

॥ गुपाल गुसाईँ ॥

॥ चौपाई ॥

सुन स्वामी तुलसी समझाई । यह कबीर ने अगम सुनाई ॥

या मै मन बुधि चित नहिं चाली । उपजी एक सुनाऊँ हाली ॥

सतगुरु नाम कबीर कहाये । वे जग में भक्ती ले आये ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

धर्मदास मुख होती बानी । तौ कबीर सतगुरु बखानी ॥
खुद कबीर मुख बचन बतावा । उन सतगुरु कहौ केहि को गावा
यह तौ अर्थ न आवा भाई । कही कबीर से गुरु बताई ॥

॥ गुपाल गुसाई ॥

॥ चौपाई ॥

सुन स्वामी तुलसी इक बाता । मैं नहिं जानौँ अर्थ बिख्याता ॥
हम तौ सब्द पढ़न पढ़ि लीन्हा । गाइ गाइ खंजरी सँग कीन्हा ॥
बोले हाथ जोरि मुख बानी । स्वामी तुलसी कहौ बखानी ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी मन मुसकाने भाई । मैं कहा जानौँ गुपाल गुसाई ॥
सतसंगति संतन मे पाई । सो मैं भाखौँ समझि सुनाई ॥
सतगुरु तो सतपुरुष बताया । सत्तलोक रहे पुरुष अकाया ॥
वहूँ से सुरति कबीरा आई । तीनि लोक ब्रह्मंड समाई ॥
आतम जीव कबीर कहाई । धर्मदास मन को बतलाई ॥
काया बीर कबीर कहाई । धर्मदास मन को समझाई ॥
मन इंद्री बिच बास कराये । गुन प्रकृती बिच जग उपजाये ॥
काया बिच बस बँधे कबीरा । भूले सिंध अमोलक हीरा ॥
सिंध बंद तजि सूरति आई । वा कर नाम कबीर कहाई ॥
बंद सिंध की सुधि बिसराया । काया बन्द कबीर कहाया ॥
सत्त पुरुष पद कीन्हा मेला । सो कबीर सतगुरु का चेला ॥
और कबीर काया के माहीं । जड़ तन बस भौ मेँ भरमाई ॥
जिन बीजक रचि बरन सुनाया । तिन कबीर वह सतगुरु पाया ॥
वो सतगुरु का भेद बतावै । लोक अलोक राह समझावै ॥

जो कबीर का पंथ पिछानै । नहिँ पंथी सब जाति कहाने ॥
 अब जागू भागू समझाऊँ । चूरामनि के चिन्ह चिन्हाऊँ ॥
 जो जागे सो भागे भाई । मन चूरा सोइ ब्रह्म कहाई ॥
 नर तन नाम नरायन जाना । गो सँग मन भगवान कहाना ॥
 मन इंद्री गो संग गुसाईँ । भग सँग भौ भगवान कहाई ॥
 अस कबीर बीजक बिधि भाखा । तुम बेसमझ समझ नहिँ राखा ॥
 बीजक नाम बीज बिंद केरा । नाद बिंद जग किया बसेरा ॥
 बिंद बीज बीजक अस गाया । यह बिधि बीजक बरनि सुनाया ॥
 अब सुन सब्द अर्थ समझाऊँ । कही कबीर बीजक सोइ गाऊँ ॥
 बिंद बीज सिष्टी उपजाई । तन बैराट बनाया भाई ॥
 बीजक एक बीज सब कीन्हा । नाद बिंद अस बीजक चीन्हा ॥
 सत्त पुरुष सतगुरु से आई । सोई सूरति गई भक्त कहाई ॥
 भौ रस बन्ध रही जग माहीं । सो सूरति मन इच्छा भाई ॥
 इच्छा नारि पुरुष मन मानी । पुरुष नारि अस द्वै उतपानी ॥
 सब्द फोड़ि सूरति सोइ गंगा । मन बस फैल जगत रस रंगा ॥
 सो चहुँ दिस फैली जग माहीं । पानी परबत दोइ बुड़ाई ॥
 सूरति नाम कबीर कहाई । धर्मदास यह मन है भाई ॥
 द्वै परबत ये अस बिधि बूड़ा । यह बीजक मत कहा अगूढ़ा ॥
 सब्द सिंध से सूरति आई । भौ दरियाव लहर जग माहीं ॥
 तरवर तन इच्छा मन राखी । कर्म भर्म इच्छा भई माखी ॥
 बिना पुरुष की इच्छा नारी । बिन संयोग गर्भ भया भारी ॥
 गर्भ कर्म इच्छा गरभानी । येहि बिधि गर्भ रहा बिन पानी ॥
 इच्छा नारि जगत को खाया । या का चीन्ह कबीर बताया ॥
 अब की बार नारि सोइ चीन्हा । सो गुरु कहूँ जगत परबीना ॥

॥ गुपाल गुसाई ॥

॥ चौपाई ॥

स्वामी अगम अरथ समझाये । ये तौ हम सुपने नहिँ पाये ॥
हम ठोली सायर रस जाना । याम तुम ने अगम बखाना ॥
सतगुरु पद सतलोक लखावा । सूरति चेला मिलन बतावा ॥
सूरति मिलै सब्द के माहीं । सब्द जो मिलै अगम घर जाई ॥
अगम सिंध से सब्द जो आया । सब्द ने सूरति को पठवाया ॥
सो सूरति गुन इंद्री माहीं । मन बनिया बैराट बनाई ॥
तन मन गुन गो ज्ञान समाना । कल्प कल्प भै भौ भरमाना ॥
अस अस समझि परा यह लेखा । तुलसी स्वामी बचन बिबेका ॥
तुम ने कहन गहन सोइ गाई । हेरि हिये दिल माहिँ समाई ॥
हम ने पढ़ि पढ़ि जनम गँवाया । सब्द साखि खँजरी सँग गाया ॥
या का भेद भाव नहिँ चीन्हा । बूझा तुलसी कहन यकीना ॥

॥ दोहा ॥

अगम निगम गम पाइया, तुलसी चरन प्रताप ।

मैं महंत मन मान हौँ, बीजक के बिस्वास ॥

॥ चौपाई ॥

स्वामी तुलसी अगम लखाई । बीजक भेद भर्म के माहीं ॥
अब स्वामी इक सब्द सुनाऊँ । या का अर्थ अंत समझाऊ ॥
या मैं कस कस कही बिचारा । बीजक में बरने निरधारा ॥

॥ शब्द ॥

एकै पुरुष एक है नारी, ता का करौ बिचारा ॥टेक॥

एकै अंड सकल चौरासी, भर्म भूलि संसारा ॥१॥

एक नारि जम जाल पसारा, जग मैं भया अँदेसा ॥२॥

खोजिखोजिकाहूँ अंत न पाया, ब्रह्मा बिस्नु महेसा ॥३॥

नाग फाँस लीन्है घट भीतर, मूसनि सब जग भारी ॥४॥

ज्ञान खड्ग बिन सब कोइ जूझै, पकरि केहू नहिँ पाई ॥५॥
आपहि मूल फूल फुलवारी, आपहि चुनि चुनि खाई ॥६॥
कहै कबीर सोई जन उबरे, जिन गुरु लीन्ह जगाई ॥७॥

॥ दोहा ॥

नर नारी दोउ कौन है, कहे प्रभु अर्थ बिचार ।
गुपल गुसाईँ सरन में, तुलसी चरन निहार ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ दोहा ॥

पुरुष निरंजन मन भया, इच्छा नारि बिचार ।
ये दोऊ मिलि जग ठगा, कही कबीर निरधार ॥

॥ चौपाई ॥

मनहिँ निरंजन पुरुष बखानी । इच्छा जोती नारि कहानी ॥
पाँच तत्त ब्रह्मंड पसारा । जहँ लगि अंड कीन्ह बिस्तारा
ठगनी ठग मिलि सब ठगिलोन्हा । इच्छा मन सँग जगत अधीना
अस अस भूले भौ की खाना । चौरासी जम हाथ बिकाना ॥
एक नारि जम जाल पसारा । इच्छा मन किये काल अहारा ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस न बाचे । रजगुन तमगुन सतगुन राचे ॥
वोहि मन इच्छा नागिनि भाई । ठगि ठगि मूल सधन को खाई ॥
वोहि नारी का सब्द सुनाऊँ । बिधि चरनन ता का दरसाऊँ ॥

॥ होली ॥

नर से निकसी इक नारी, कोइ बूझै साध बिचारी ॥ टेक ॥
हाथ न पाँव सीस नहिँ काया, खाया सब जग भारी ।
माई न बाप आप से उपजो, करी खसम की खचारी ॥१॥
बारी न बूढ़ि तरुन तन नाहीं, सोवत सब जग मारी ।
आवै न जाय मरै ना जीवै, जुग जुग रहत करारी ॥२॥
ऋषी मुनी सब झारि बिगारी, सब जग त्राह पुकारी ।
रवि ससि सूर चंद्र तारा गन, ये सब खाइ बिडारी ॥३॥

चर और अचर सकल चरलीन्हा, कीन्ह ब्रह्मंड पसारी ।
 चेतन जाग भाग सोइ बाचे, जिन सतगुरु सरनिसुधारी ॥४॥
 चीन्है नारि सार सोइ पावै, तब उतरै भौ पारी ।
 तुलसीदास फाँस तजि भागै, संतन साथ उवारी ॥५॥

॥ चौपाई ॥

ऐसी नारि जबर जग माहीं । ज्ञान गिरा सब लीन्ह हिराई ॥
 ज्ञान खड़ग बिन सब कोइ जूझा । बिन सतगुरु कोइ भेद न बूझा ॥
 इच्छा मन कीन्ही फुलवारी । तन मन जीव ब्रह्मंड सँवारी ॥
 इच्छा से जग उपजा भाई । सोइ इच्छा जग खाइ बुढ़ाई ॥
 या से उबरे जोइ जन भाई । सतगुरु सत्त पुरुष दरसाई ॥
 सूरति सत्त लोक मैं बासा । सो बाचै सतगुरु का दासा ॥
 गुरु मति पंथ भेष मैं नाहीं । या से मुए टेक करि माहीं ॥
 जगत् गुरू जम जाल पसारा । ज्यों धीमर मछरी गहि मारा ॥
 पंथी गुरू भेद नहिं जानै । कान फूकि फिर भौ मैं आनै ॥
 जगत् गुरू सतगुरु नहिं चीन्हा । तन छूटे फिर काल अधीना ॥
 जगत् गुरू बिस्वास न माना । उनहूँ सतगुरु मरम न जाना ॥
 अस परपंच गुरू जग माहीं । भौजल मैं जिव गोता खाई ॥
 ये सब हाट बजार दुकानी । बूढ़े गुरु चेला बिन पानी ॥
 सब्द साखि सब भाखि बतावै । अर्थ भेद ता को नहिं पावै ॥
 बिन सतसंग नजर नहिं आई । बिना संत बूढ़े भौ माहीं ॥

॥ सारठा ॥

तुलसी कही पुकारि, गुपल गुसाईं भेद यह ।
 तुम बीजक मति माहि, मरम भेद गति ना लखी ॥

॥ गुपाल गुसाईं ॥

॥ चौपाई ॥

सब्द भेद मोहिं समझ सुनाई । तुलसी दरपन सी दरसाई ॥
 चौरासी रामायनि गाई । या की तुलसी कही अरथाई ॥
 सांखी एक समझ समझाई । ता मैं सब रामायनि गाई ॥

॥ रमैनी ॥

जीव रूप इक अन्तर बासा । अन्तर जोति कीन्ह परकासा ॥१॥

इच्छा रूप नारि औतरी । तासु नाम गायत्री धरी ॥२॥

॥ चौपाई ॥

ये साखी स्वामी कस बूझा । हम बीजक मति रहे अबूझा ॥

भेद भाव नहिँ जानै भाई । ये संतन कहि अगम अगाही ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

अब रामायनि अरथ बताऊँ । कही कबीर सोइ लखन लखाऊँ ॥

रूप सरीर जीव मध बासा । अन्तर जीव जोति परकासा ॥

जिव आतम सोइ सुरतिकहाई । या का तेज जोति ठहराई ॥

जोती तेज ऐन पर आया । मन माया गुन भवन समाया ॥

गयउ जीव तिरगुन के माहीं । इच्छा नारि गायत्री गाई ॥

॥ सोरठा ॥

रामायनि बिच माहिँ, येहि बिधि सब साखी लखौ ।

अन्तर घट के माहिँ, तुलसी तन बिच सब कही ॥१॥

चौरासी रामायनी, राम ऐन दरपन महौ ।

सो चौरासी खानि, उतपनि जगत कबीर कहि ॥२॥

मन मत राम कहान, बिंद ब्रह्मंड मन संग भया ।

श्रंडा खलक समान, अलख काल संग बस रही ॥३॥

॥ गुपाल गुसाई ॥

॥ चौपाई ॥

ये स्वामी यह बूझ बुझाई । तुलसी कहनि समझमँ आई ॥

यह कबीर कहि जग ब्यौहारा । या से नहीं जीव निरबारा ॥

मन चिताई कै ज्ञान लखावा । बीजक मँ अस अस परभावा ॥

अगम पंथ की राह नियारी । सो लखि दई संत दरबारी ॥

तुम चरनन से अस अस बूझा । तुलसी गहनि कहनि से सूझा ॥
अब स्वामी साखी समझावौ । सोइ साखी का अर्थ बुझावौ ॥

॥ साखी ॥

जहिया जन्म मुक्तै हता, तहिया हता न कोइ ।
छठी तुम्हारी हो जगी, तुम कहँ चले बिगोइ ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

जब ब्रह्मंड पिंड किया साजा । निरमल जीव तनहिँ करै राजा ॥
मन इच्छा तब होती न भाई । इंद्री षट रस जुवाँ^१ न चाही ॥
जीवन मुक्ति जीव तन माहीं । जब की साखी साखि सुनाई ॥
जब जेहि हता कोई नहिँ भाई । काम क्रोध तजि आप रहाई ॥
छूटै^२ छै रस मैं मन बींधा । हुआ जग जग मन रहान सीधा ॥
हुआ अहंकार माहिँ मन लागा । तेहि संग चल बिगोइ मत त्यागा ॥

॥ गुपाल गुसाई^३ ॥

॥ चौपाई ॥

साखी सतगुरु एक सुनाऊँ । या का भेद भाव दरसाऊँ ॥

॥ साखी ॥

पाँच तत्त का पूतरा, जुगत रचा म कीन्ह ।
मैं तोहि पूछौँ पंडिता, सब्द बड़ा कै जीव ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

गुपाल गुसाई^३ सुनिये बाता । अर्थ भेद भाखूँ बिख्याता ॥
पाँच तत्त पिंजर तन साजा । ता मैं आतम जीव बिराजा ॥
मन माया संग रचा पसारा । पिंड पिंड तन मन बिस्तारा ॥
सब्द सुन्न से उठै अवाजा । तासु तेज जिव आतम राजा ॥

ब्रह्म सब्द तन भीतर माहीं । जीव अंस तन पिंजर पाई ॥
गुपल गुसाईँ सुनियौ बानी । येहि बिधि अर्थ कबीर बखानी ॥

॥ गुपाल गुसाईँ ॥

॥ चौपाई ॥

इक साखी प्रभु और सुनाऊँ । या का अर्थ भेद समझाऊँ ॥

॥ साखी ॥

पाँच तत्त ले तन किया, सो तन ले क्या कीन्ह ।
कर्मन बस जिव रहत है, कर्मन को जिव दीन्ह ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी कहै सुन गुपल गुसाईँ । बन मन तन का मरम सुनाई ॥
नर तन पाँच तत्त से कीन्हा । बादहि जनम आप नहिँ चीन्हा ॥
कर्म काल बस रहन निहारे । जीव कर्म बस रहन बिचारे ॥
गुपल गुसाईँ सुन दे काना । यह साखी अस कही बिधाना ॥

॥ गुपाल गुसाईँ ॥

॥ चौपाई ॥

इक साखी और अरज बिचारी । वा की समझ कहौ निरवारी ॥

॥ साखी ॥

पाँच तत्त के भीतरै, गुप्त वस्तु अस्थान ।
बिरले मर्म कोइ पाइ है, गुरु के सब्द प्रमान ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी अब अर्थ सुनाऊँ । कहि कबीर मुख लखन लखाऊँ ॥
पाँच तत्त तन भीतर भाई । गुप्त अवाज उठै सुन माहीं ॥
बिरले गगन फोड़ि सुति जावै । परे मन निकरि सब्द गुरु पावै ॥
सूरति सिखर गिरा नभ राही । जब चढ़ि गई गगन गुरु पाई ॥

गुपल गुसाईं सुन यह बानी । बीजक मत कही भिनि भिनि छानी ॥
 सतसंग रँग बिन नहिँ निखारा । बिन सतगुरु कस खुलै किवारा ॥
 तुम बीजक के सब्द सुनाया । गाइ गाइ सब जनम गँवाया ॥
 पढ़ते सब्द जनम गयौ बीती । समझ बूझ बिन अँधरे रीती ॥
 सब्द समझ सतगुरु से पावै । बिन सतगुरु पढ़ि जनम गँवावै ॥
 अब या का इक सब्द सुनाई । सुनियौ कानन गुपल गुसाईं ॥

॥ शब्द १ ॥

सब्द साखि भाखत भये, तन बीति सिराना हो ॥टेक॥
 भेष पंथ भूले फिरैं, कोइ मरम न जाना हो ।
 सुन्न सहर सत द्वार मैं, चढ़ि सुति असमाना हो ॥१॥
 नभ निवास न्यारी भई, मारग पहिचाना हो ।
 पछिम पार पट खोलि कै, खिरकी नियराना हो ॥२॥
 होति जोति जगमग लखै, आतम दरसाना हो ।
 कँवल केल आगे चली, दल दोय दिखाना हो ॥३॥
 परमातम पद परसि कै, लखा पुरुष पुराना हो ।
 अगम गली आगे चली, अली आदि अनामा हो ॥४॥
 तुलसीदास दुरबीन मैं, कोइ संत समाना हो ।
 अगम निगम गम गाइकै, जिन भाखि बखाना हो ॥५॥

॥ शब्द २ ॥

सब्द भेद साखी लखै, सोइ साध सुजाना हो ॥टेक॥
 अगम निगम गम चीन्ह कै, बानी पहिचाना हो ।
 सुरति सिष्य सब्दै गुरु, मिलि मारग जाना हो ॥१॥
 लखि अकास औँधा कुआँ, ता मैं सुरति समाना हो ।
 गगन गिरा गरजत भई, फूटा असमाना हो ॥२॥
 गंग जमुन बिच सरसुती, बेनी असनाना हो ।
 जोग ज्ञान गम ना लखै, अली अगम ठिकाना हो ॥३॥

तुलसी दर दुरबीन का, कोइ फोड़ि निसाना हो ।
सिंध बुन्द सागर मिला, सोइ सिंध कहाना हो ॥४॥

॥ सोरठा ॥

बुन्दा सिंध समान, मिलि सागर सागर भयौ ।
गुपल गुसाईँ सद्द को, बिन बूझे बागर रह्यौ ॥

॥ चौपाई ॥

गुपल गुसाईँ सद्द न बूझा । बीजक मति मैं रहे अबूझा ॥
अगम निगम गम सद्द पुकारा । तुम अँधरे नहिँ बूझ बिचारा
सद्द सिंध सतगुरु गोहरावै । बिन सतसँग कसनजर समावै ॥
हिये दृग नैन किवारी खोली । सोइ सतगुरु की समुझै बोली ॥
सतगुरु अगम राह दरसाई । सद्द साखि सब भाखि सुनाई ॥
पिय मारग मिलने की रीती । नैन नगर नित प्रति स्तुति प्रीती ॥
अब या का इक सद्द सुनाऊँ । तुम को रमज राह दरसाऊँ ॥

॥ शब्द ॥

सुरति निरति निज नैन को, सतगुरु दरसावा हो ॥टेक॥
अति उत्तंग पिय पंथ को, तब मारग पावा हो ।
सुरति जहाज पै बैठि कै, अपने घर आवा हो ॥१॥
सजि सिंगार सुंदरि चली, पिय को अपनावा हो ।
फूलन सेज सँवारि कै, सजि पलँग बिछावा हो ॥२॥
लगन लार लै से मिली, पिय रीझ रिझावा हो ।
सुरति सुहागिनि साजि कै, पिय से लिपटावा हो ॥३॥
तुलसी तरँग रँग राह की, कछु कहत न आवा हो ।
पति परचे पिउ पास की, जाना जिन गावा हो ॥४॥

॥ चौपाई ॥

अस अस खुलि खुलि सद्द सुनावै । पंथ भूल से नजर न आवै ॥
पंथ राह रस्ते को गाया । तुम पंथी इक जाति बनाया ॥

पंथ अगम घर जो चढ़ि जावै । ता को नाम पंथ कहलावै ॥
 उलट बास संतन ने भाखी । जा की समझ सूर कोइ राखी ॥
 सुलटी को उलटी कर बूझा । उलटी सुलटी समझ न सूझा ॥
 अब या को इक सब्द सुनाऊँ । उलटि सुलटि बोहि माहिँ दिखाऊँ ॥

॥ रेखता ॥

अली इक बात सुन सुलटी । बिना समझे लगै उलटी ॥१॥
 कही सब संत ने बोली । गूढ़ मत गुप्त नहिँ खोली ॥२॥
 सुरति मन बुद्धि नहिँ जावै । लखन मैं कौन बिधि आवै ॥३॥
 अरी नहिँ बेद ने जाना । कहत करि नेत गोहराना ॥४॥
 जुगत जोगी नहीं जानी । ज्ञान नहिँ ध्यान बिज्ञानी ॥५॥
 जगत और भेष ना जाने । पढ़े पंडित भरमाने ॥६॥
 सकल तिरलोक लौं गाँव । निरंजन जोति ठहरावै ॥७॥
 अगम घर राह नहिँ सूझै । संत गति कौनि बिधि बूझै ॥८॥
 अस्त रवि होत अँधियारा । हिये तम रूप मैं सारा ॥९॥
 मिलै गुरु गैल बतलावै । तिमर तन बीच से जावै ॥१०॥
 लखै तब संत के बैना । सुरति सुरमा खुलै नैना ॥११॥
 तरक ताली खुलै ताला । निरखित हँ होत उजियाला ॥१२॥
 अधर घर सुरति चढ़ धावै । अगम गति गूढ़ तब पावै ॥१३॥
 सुरति जब उलट कर बूझा । उलट की सुलट कर सूझा ॥१४॥
 तुलसी तन बीच मैं हेरा । सुरति मन बुद्धि को फेरा ॥१५॥
 कहन कछु और बिधि राखै । उलट की सुलट कर नाखै ॥१६॥

॥ चौपाई ॥

संत गती गति उलटी रीती । तुम्हरी बुधि जग बिदित अनीती ॥
 चेला करि परिवार चलाई । संत मता कहौ कस कस पाई ॥
 बीजक टेक माहिँ तुम भूला । संतन का मत अगम अतूला ॥

(१) यह शब्द मुं० दे० प्र० की पुस्तक में नहीं है ।

बिन सतगुरु कोइ भेद न पाया । सब्द गाइ सब जनम गँवाया ॥
गान पढ़न बूझन से न्यारा । संत भेद मत अगम अपारा ॥
जब लग पंथ पकड़ नहिँ छूटै । बुधि मति हीन पकड़ि जम लूटै ॥
जो कबीर मति भाखि पुकारा । बिन सतगुरु नहिँ बूझ बिचारा
पाइ महंती भेद न जाना । उन सतगुरु मति नहिँ पहिचाना ॥
जिन से बूझ समझ कहि पाई । पढ़ि बीजक सब जनम गँवाई ॥

॥ सोरठा ॥

बिन सतगुरु उपदेस, सुर नर मुनि नहिँ निस्तरे ।
ब्रह्मा बिस्नु महेस, और सबन की को गिनै ॥

॥ चौपाई ॥

सतगुरु सत्त पुरुष अविनासी । सत्त लोक पद परम निवासी ॥
सूरति चढ़ि पहुँचै उन पासो । सो सूरति सतगुरु की दासी ॥
जब होइ जीव निकरि निखारा । नहिँ जग बूड़ै भौजल धारा ॥
स्रवन लाइ सुन गुपल गुसाईँ । ये कबीर मति अस बिधि गाई ॥

॥ सोरठा ॥

बूझै समझ बिचार, ये ब्रतंत भिनि भिनि कह्यौ ।
बीजक मति निरवार, भाव भक्ति हा भेद सब ॥

॥ चौपाई ॥

अब आगे बरतंत सुनाऊँ । संत पंथ मति राह लखाऊँ ॥
जस कबीर ने पंथ चलाया । सूरति पंथ अगम घर पाया ॥
सो घर बिधि बिधि बरति सुनाऊँ । संत पंथ मति राह लखाऊँ ॥
अब या की बरतंत बताऊँ । गगन गुमठ धधकार सुनाऊँ ॥
नित प्रति उठै महल भनकाश । निरखा तुलसी बस्तु अपारा ॥

॥ दोहा ॥

ढोल ढोल धधकार की, मंदर उठै अवाज ।
तुलसी सतगुरु संत से, पाई बस्तु अपार ॥

॥ रेखता ॥

तुलना सुनौ धधकारी । महलौ उठै भनकारी ॥१॥
 लागी लगन अली मन को । लहरै उठीं चलीं बन को ॥२॥
 देखा पंथ सब भारी । ठूँढा जग भेष भिखारी ॥३॥
 कहूँ ना निसाँ दिलदारी । खोजै पिया पिउ प्यारी ॥४॥
 सभी सतगुरु संत बतावै । कहूँ सतसंग से लखि पावै ॥५॥
 बूझा सुना धुनि बानी । कोइ भाखै न भेद बखानी ॥६॥
 अली अस अस बैस बितावा । कहूँ खोजत खोज न पावा ॥७॥
 कंजा गुरु गैल लखाई । धुनि सुनि सत सुरति लखाई ॥८॥
 तुलसी तन तपन बुझाई । सुनि सुति अपने घर आई ॥९॥
 सिंधा बुँद समुँद समाना । लखि सूरति सब्द ठिकाना ॥१०॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी सुन गुपल गुसाई । सब्द भेद सब साखि बताई ॥
 अस अस बैस बीति गई सारी । खोजत खोजत जनम सिहारी ॥
 कंज गुरु सोइ गैल लखाई । धुनि सुनि सुरति द्वार पर छाई ॥
 तब तन मन की तपन बुझानी । सूरति सब्द मिली सहदानी ॥
 सिंध बुँद जब मिला ठिकाना । सब्द सुरति लखि अगम बखाना ॥

॥ सोरठा ॥

हिये पिय लखन लखाउ, गगन गुमठ दरसत लखा ।

सागर सुरति छुड़ाय, करम कलस कृत फूटि सब ॥

॥ चौपाई ॥

जब हिये मैं पिय को लखि पावा । गगन गुमठ सोइ अगम दिखावा
 ये तन बीच हिये के माहीं । बस्तु अगोचर संत लखाई ॥
 जिन जिन घट मैं सुरति समाई । सो पहुँचे सतगुरु सरनाई ॥

॥ रेखता ॥

हिये मैं पिय लखि पावा । गगन गुमठ दरसावा ॥१॥
 स्याह रंग सुरति से छूटा । कलसा करम का फूटा ॥२॥

सुन की धुनि दरसानी । पौरी पिथा पहिचानी ॥३॥
 सुन मैं सब्द लखि पावा । मन से सुरति दौड़ावा ॥४॥
 फूला कँवल दल माहीं । सुरती सब्द मैं धाई ॥५॥
 नाली निरखि नभ द्वारा । देखा ब्रह्मंड पसारा ॥६॥
 गुरु से गली लखि पाई । प्यारी पिथा घर जाई ॥७॥
 बेनी बिबिधि बिधि देखा । भाखा अगम का लेखा ॥८॥
 बूझै कोइ संत बिचारी । निरखा जिन नैन निहारी ॥९॥
 तुलसी चरन का चेरा । पावन रज कीन्ह निवेरा ॥१०॥

॥ सोरठा ॥

संत चरन रज धूर, सूर सुरति सगरी करी ।
 भरी गगन के माहीं, गुमठ गगन चढ़ि लखि परी ॥

॥ दोहा ॥

सब्द सहर हेरा नहीं, किया न सतगुरु खोज ।
 बीजक मति संग पचि मुए, पढ़ पढ़ मनमत मौज ॥

॥ चौपाई ॥

गुपाल गुसाईँ खोज न कीन्हा । सब्द भेद का सार न चीन्हा ॥
 बुधि मति हीन सूझ नहिँ आई । गावत गावत जनम बिताई ॥

॥ गुपाल गुसाईँ ॥

॥ चौपाई ॥

स्वामी तुलसी सरनि तुम्हारी । संत चरन पर तन मन वारी ॥
 स्वामी चरन सरन मैं लीजै । दास जानि मेरा कारज कीजै ॥
 मैं मति अंध नैन मति हीना । अब तौ तुलसी चरन यकीना ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

सुनि लीजै अब गुपाल गुसाई । बिन सतसंगति कोऊ न पाई ॥
 सूरति सब्द समझ घट माहीं । पूछौ सोइ सतगुरु से राही ॥

सब्द गुरु सूरति जब पावै । चढ़ि चढ़ि गगन गुमठ पर आवै
गगना गुमठ फोड़ि असमाना । सूरति चढ़ि सबदा गुरु जाना ॥
सार सब्द गुरु सुरति समानी । अस कबीर गुरु सिष्य पिछानी ॥
गुरु सिष्य भया अगम गम चेला । सो साधू सत गुरु का चेला ॥

॥ सोरठा ॥

गुपल गुसाईं धाड़, पाँय पकर करि सिर दियौ ।
हिया उमँगि जल धार, नैन नीर टप टप चुवै ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी बोध ताहि का कीन्हा । समझ बूझ मारग को लीन्हा ॥
भेद राम और रामायन का जो तुलसी साहिब
ने अपने शिष्य हिरदे से कहा

॥ चौपाई ॥

हिरदे पंथ भेष सब बूढ़ा । संत मते को लखै अगूढ़ा ॥
वेद मता सब कासी माहीं । बूढ़े जा मैं भेष भुलाई ॥
रामायनि घट बूझि न जानी । सब जग पंडित भेष न मानी ॥
घट मठ मैं रामायनि गाई । कासी कदर भेष नहिं पाई ॥
सुनि सुनि के सब अचरज कीन्हा । बुधि मत हीन न काहू चीन्हा ॥
परमहंस सन्यासी जोगी । ब्रह्मचारि जग बिष रस भोगी ॥
भेष पंथ मति सगरे झारी । अस बिधि कासी परी पुकारी ॥
कासी नगर सोर भया भारी । जग पंडित सब कहै नकारी ॥
हिरदे घट रामायनि माहीं । निंदा की बिधि नाहिं सुनाई ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी सत मति मूल, जग अबूझ भूला फिरै ।
सहै करम कृत सूल, सत अतूल गति ना लखै ॥

॥ चौपाई ॥

सत मति संत राह गति गाई । पुनि काहू परतीत न आई ॥
अब कहूँ भाखि सो सुन संवादा । घट मैं अंड ब्रह्मंड अगाधा ॥

घट मैं रावन राम जो लेखा । भरत चन्नगुन दसरथ पेखा ॥
 सीता लखन कौसल्या माहीं । मंथ्रा केकई सकल रहाई ॥
 इंद्रजीत मंदोदरि भाई । रावन कुंभकरन घट माहीं ॥
 सारा जगत पिंड ब्रह्मंडा । पाँच तत्त रचना कर अंडा ॥
 जिनजिन घट अंदर मैं चीन्हा । सोइ सोइ साधू करै यकांना ॥
 यासे अगम अगम येहि माहीं । निरखा देख नजर से आई ॥
 नाम अनेक अनेकन कहिया । घट रामायन मैं दरसइया ॥
 घट रामायन अगम पसारा । पिंड ब्रह्मंड लखा बिधि सारा ॥
 नाम अनेक अनेकन कहिया । सो सब घट भीतर दरसइया ॥
 अगम निगम और अकथ कहानी । तुलसी भाखी अगम निसानी ॥
 घट रामायन ग्रंथ बनाई । साखी सब्द अगम बिधि गाई ॥
 कही बिलावल जैजैवन्ती । कोइ कोइ बूझि अगम गति संती
 ॥ जैजैवन्ती १ ॥

ए री घट माहिँ तो रामायन गाई, ग्रंथन बनाइ कै ॥ टेक ॥
 तुलसी सब भाखि सुनाई, घट रामायन बिधि गाई ।
 पिंड पिंड ब्रह्मंड दिखाना, तुलसी लौ लाइ कै ॥१॥
 दृग देखा पिंड ब्रह्मंडा, निरखा सात दीप नौखंडा ।
 अंडा तत पाँच बनाया, काया धसि जाइ कै ॥२॥
 तीन लोक घट माहीं, पुनि चौथे जाइ समाई ।
 परे ता के रहत अनामी, स्वामी निरताइ कै ॥३॥
 सूरति दृग दीप उड़ानी, लीला गिर जाय समानी ।
 सुन्न सेत सब्द सुहाना, पुनि आई धाइ कै ॥४॥
 हिये हिरदे नैन खुलाना, जहँ निरखा पुरुष पुराना ।
 वहँ सुन्न न सब्द न बोला, खोला द्वार पाइ कै ॥५॥
 मिला प्रीतम पुरुष पुराना, अगमन अज घर हम जाना ।
 स्यामा भइ गति मति मोरी, बुंदा सिंध पाइ कै ॥६॥

तुलसी संतन प्रति पाई, येहि अगम राह दरसाई ।
 लिया अजर अगमपुर धामा, ता मैं रही छाड़ कै ॥७॥
 कहूँ अब सतसंगति गाई, भइ कासी नगर मँभाई ।
 कासी काया भाखि बखानी, बिधि बिधि दरसाइ कै ॥८॥
 हिरदे अहीर बखाना, हिरदे में हेर समाना ।
 गुनुवाँ मन गुन संग खेला, ता को कही गाइ कै ॥९॥
 नैनू पंडित नैन कहाये, ता मैं स्यामा स्याम समाये ।
 जहँ माना मन लै बैठा, पंडित पिंड आइ कै ॥१०॥
 कर्मा करि करि कर्म कहाये, धर्मा सब धर्म चलाये ।
 करिया पुतरी लै जाना, भाखूँ समझाइ कै ॥११॥
 तकी तकि तकि नैननिहारा, सैनू सैनै सुरति सँवारा ।
 रहे मन इत रेवतीदासा, या को कही गाइ कै ॥१२॥
 फूलदास फूल गयौ कँवला, जहँ सूर दल पर सम्हला ।
 प्रिय प्रीति सुरति चढ़ि आई, येही प्रियेलाल कै ॥१३॥
 चढ़ि गई गगन के माहीं, परदा तीनौ फोड़ि समाई ।
 पद चौथे जाइ निहारा, कंजा मैं गुरु पाइ कै ॥१४॥
 गइ चौथे पद पर ताकी, राहि सुन्नी सुन्न न बाँकी ।
 तुलसी मति कीन्ही दीना, संतन गति गाइ कै ॥१५॥
 सम्मत सोलासै अट्टारा, घट रामायन लिखि सारा ।
 सूरति घट घट मैं देखा, लेखा पद जाइ कै ॥१६॥
 कासी मैं चौल उड़ाई, तब हम ने गुप्त छिपाई ।
 जानै कोइ सतसंग बासी, नहिँ कासी भाखियै ॥१७॥
 हिरदे जाने जाति अहीरा, घट रामायन वोहि तीरा ।
 कोइ सत मत मन का आवा, जा को कही गाइ कै ॥१८॥

तुलसी तत तोल बताई, पुनिकहि कहि भाखि सुनाई ।
घट रामायन बूझै, सूझै तिहँ लोक मैं ॥१९॥

॥ सोरठा ॥

घट रामायन सार, सोलह सै अठरा कही ।

सही भई नहिँ सार, लार निकट कासी बसै ॥

॥ चौपाई ॥

सोलहसै अठरा के माहीं । घट रामायन कीन्ह बनाई ॥
सम्बत सोलहसै अठारा । घट रामायन साज सँवारा ॥
पिरथम घट रामायन गाई । कासी सुनि सब अचरज लाई ॥
तुलसी नाम इक साध गुसाई । ग्रंथ कीन्ह इक भाखि बनाई ॥
ता मैं बेद कितेब न राखा । दस औतार कछू नहिँ भाखा ॥
तीरथ बरत एक नहिँ मानै । वो कहै और और परमानै ॥
पंडित हिरदे से भयौ भगरा । और भेष जग कासी सगरा ॥
तब तुलसी मन कियौ बिचारा । घट रामायन गुप्त करि डारा ॥
जग के माहिँ चलन नहिँ पाई । जग बिरोध नित भगरा लाई ॥
ये जग भवसागर की धारा । संत मता भवसागर पारा ॥
सत सत मति संतन ने गांथा । पुनि काहू की दृष्टि न आया ॥
अगम निगम और आदि अनादा । समझै सुनि बूझै कोइ साधा ॥
काहू चित धर चेत न कीन्हा । ता से सतगुरु भेद न दीन्हा ॥
जग बिरोध देखा जब जानी । सात कांड रामायन बखानी ॥
घट रामायन संत कोइ चीन्हा । समझै संत होइ लै लीना ॥
रावन राम कीन्ह संबादा । तब कासी मैं चली अगाधा ॥
तुलसी मता कोइ नहिँ चीन्हा । गुप्त भेद सब जग से कीन्हा ॥
ये भौसागर जगत असारा । तुलसी मता मते की लारा ॥
जगमें वस्तु कोइ नहिँ चीन्हा । जा से ग्रंथ गुप्त कर दीन्हा ॥
जिन कोइ संत मते को चीन्हा । बूझै सोई होइ लौलीना ॥

॥ सौरठा ॥

कासी नगर मँभार, भरम भाव सगरे भयौ ।
 घट रामायन लार, ये निकाम कासी बसै ॥१॥
 राम चरित्र बनाय, जगत भूल भ्रम ताहि मै ।
 इष्ट भाव ब्रत मान, समझाया समझै नहीं ॥२॥
 जासु बनी है बात, देखन बिधि बिधि यों कही ।
 लही जो तुलसी दास, संत चरन रज धूरि धरि ॥३॥
 हिरदे जानै बात, तुलसी तत मत लखि कही ।
 लई अपनपौ आइ, जाइ सुरति सबदै मिली ॥४॥
 सतसँग करौ हजार, बिना संत अंतै नहीं ।
 भेष पंथ मै नाहिँ, ये अतंत रस अगम है ॥५॥
 मै संतन कर दास, लखि हुलास अद्बुद कह्यौ ।
 लह्यौ अमर पद बास, यों अकास अंबर गह्यौ ॥६॥
 सूरति निरति सँवारि, सार पार पद निरखि कै ।
 बूझै बूझनहार, ये अगार अंदर कही ॥७॥
 मै संतन की लार, सत सँवार सूरति दई ।
 गई सेत के पार, सत सतगुरु मै मिलि रही ॥८॥
 सतसुतिमहलअगार, फारि आठ अटकी नहीं ।
 सटकी सिंध मँभार, पदम कंज निरखत रही ॥९॥
 अललपच्छ इमि बास, सजि अकास आगे गई ।
 लही अमरपुर बास, स्वाँस भास जहँ गम नहीं ॥१०॥

तुलसी साहिब के पूर्व जन्म का हाल

॥ दोहा ॥

तुलसी कहत बताइ, अपनी उत्पत्ति मति बिधी ।
 सुधि सतसंगति लार, जग जब से तन मै सिधी ॥

॥ चौपाई ॥

अब अपनी बिधि कहा बिसेखा । तुलसी कीच नीच कर लेखा ॥
 मैं अति अधम अचेत अबूझा । संत चरन कछु मोहिँ को सूझा ॥
 मैं तो अजान जानि जित जाई । संतन कीन्ह जानि सरनाई ॥
 मैं तो अचेत चेत चित नाहीं । संत चिताइ लीन्ह अपनाई ॥
 मैं पुनि संत सरन सम नाहीं । संत दयाल दया के साई ॥
 तुलसी मत बुधि नाहिँ बिबेका । संत चरन चित बाँधी टेका ॥
 मैं अब अपनी आदि बताओं । अपनी बिथा आदि गति गाओं ॥
 जग ब्यौहार जगत जग राही । तन उपजा बिधि कहैं बुझाई ॥
 राजापुर जमुना के तीरा । जहँ तुलसी का भया सरीरा ॥
 बिधि बुन्देलखंड वोहि देसा । चित्रकोट बीच दस कोसा ॥
 संबत पंद्रासै नावासी । भादौ सुदी मंगल एकादसी ॥
 भया जनम सोइ कहैं बुझाई । बाल बुद्धि सुधि बुधि दरसाई ॥
 तिरिया बरत भाव मन राता । बिधि बिधि रीत चित्त सँग साथ ॥
 ज्ञानहीन रस रँग सँग माता । कान्ह कुञ्ज बाम्हन मोरी जाता ॥
 जगत भाव ऊँचा सब भाँते । कुल अभिमान मान मद माते ॥
 मोटा मन कछु चीन्ह अचीन्हा । ज्ञान मते मत रहैं मलीना ॥
 एक बिधी चित रहैं सम्हारे । मिलै कोइ संत फिरौ तेहि लारे ॥
 संत साथ मोहिँ नीका भावै । ज्ञान अज्ञान एक नहिँ आवै ॥
 अब आगे का सुनौ बिधाना । ता की बिधी कहैं परमाना ॥
 संबत् सोलासै थे चौधा । ता दिन भया अगम का सौदा ॥
 सावन सुदी नौमी तिथि बारी । आधी राति भई गति न्यारी ॥
 बिजुली चमक भई उँजियारी । कड़का घोर सोर अति भारी ॥
 मन मैं बहु बिधि भर्म समाया । यह अजगुत कहौ कहँ से आया ॥
 राति बीति गइ भयउ बिहाना । मन अचरज सोइ कहैं बिधाना ॥
 पुनि प्रति रोज रोज अस होई । एक दिवस सूरति चढ़ि जोई ॥

नील सिखर गुरुद्वारे माहीं । निरखा अचरज कहा न जाई ॥
 कहँ लगि कहौं बिधी बिधि डंडा । पुनि सब निरखि परा ब्रह्मंडा ॥
 गंगा जमुना और त्रिवेनी । कंवल माहिँ सतगुरु की सैनी ॥
 पद प्रयाग अगमपुर बासा । सतगुरु कंज सुरति पद पासा ॥
 तीनि लोक भीतर सब देखा । कहौं कहाँ लगि बिधिविधिलेखा ॥
 जो ब्रह्मंड भरा जग माई । सो देखा सब घट मैं जाई ॥
 नित नित सैल सुरति संग खेला । निरखा अगमनिगम अस सैला ॥
 कस कस कहौं अगम बिधि नाना । एक दिवस चढ़ि अगम ठिकाना
 वहँ की सैल चौज कटु भारी । अंड खंड ब्रह्मंड से न्यारी ॥
 अस अस देखा अगम तमासा । चौथा पद सतलोक निवासा ॥
 वे सत सतगुरु भँटे जाई । सुरति सत्तनाम रही छाई ॥
 तीनि लोक से चौथा न्यारा । तहँ गइ सुरति सतगुरु पारा ॥
 नित नित सैल कोई दिन कीन्हा । चौथा पद जहँ सतगुरु लीन्हा ॥
 एक दिवस भइ ऐसी रीती । सुरति चढ़ि रस आगे पीती ॥
 पिंड ब्रह्मंड दोऊ से न्यारी । उतरै चढ़ै चढ़ै नित चारी ॥
 चौथे पद से न्यारा धामा । सतगुरु पद के पार अनामा ॥
 तुलसी प्रीति सुरति की लागी । राति दिवस सोवै नहिँ जागी ॥
 कहँ लगि ब्यान कहौं गति गाई । तुलसी मो से कही न जाई ॥
 जो सब बिधि मैं कहौं सुनाई । तौ जग कागद मिलै न स्याही ॥
 ये बिधि देखा सकल बिधाना । अब कहौं सुनौ और बिधि नाना
 कंज गुरु ने राह बताई । देह गुरु से कटु नहिँ पाई ॥
 अब आगे बिधि सुनौ बिधाना । ता की बिधी कहौं परमाना ॥
 ऐसे कइ दिन बीति सिराने । राजापुरी जगत सब जाने ॥
 लोग दरस को नित नित आवै । दरस भाव सब को उपजावै ॥
 नर नारी सब आवैं झारी । दरसन करै सिपारस भारी ॥
 हिरदे अहीर कासी का बासी । रहै राजापुर नौकर पासो ॥

बोहु प्रति दिन दरसन को आवै। प्रीति बड़ी हित कहा न जावै ॥
 राति दिवस दिन दिन रहै पासा। तुलसी बिना और नहिँ आसा ॥
 एक दिवस भइ ऐसी रीती। कासी गये बहुत दिन बीती ॥
 हमरा चित हिरदे में बासी। हम चलि गये नग्र जहँ कासी ॥
 संबत सोलासै रहे पंद्रा। चैत मास बारस तिथि मँगरा ॥
 पहुँचे कासी नगर मँभाई। हिरदे सुनत दौड़ि चलि आई ॥
 आये चरन लीन्ह परसादी। बिधि बिधिरहन कुटी की साधी
 कुटी बनाय कीन्ह अस्थाना। कासी में हम रहे निदाना ॥
 गंगा निकट कुटी जहँ कीन्हा। हिरदे नित आवै लौलीना ॥
 सतसँग रंग राह रस पीना। हम पुनि बस्तु अगम की दीन्हा
 अस अस कछु दिन कासी माई। रहे तहाँ पुनि सहज सुभाई ॥
 सोलासै सोला में सोई। कातिक बदी पंचमी होई ॥
 आये पलकराम इक संती। रहे कासी में नानक पंथी ॥
 गुष्टि भाव बिधि उन से कीन्हा। खुसी भये मारग के लीन्हा ॥
 घट रामायन ग्रंथ बनावा। ता की बिधी दिवस सब गावा ॥
 सम्मत सोलासै अठारा। उठी मौज ग्रंथ क्रियौ सारा ॥
 भादौ सुदी मंगल एकादसी। आरँभ क्रियो प्रथम मन भासी ॥
 सुनि कासी में अचरज कीन्हा। सोर नगर में भयो अलीना ॥
 पंडित जगत जैन अरु तुरका। भयौ ऋगरा आइ कासी पुरका ॥
 पंडित भेष जगत मिलि सारा। घट रामायन परी पुकारा ॥
 जो कुल ऋगरा रीति जस भाँती। जस जस भया दिवस अरु राती
 ता से ग्रंथ गुप्त हम कीन्हा। घट रामायन चलन न दीन्हा ॥
 या से संत मते की रीती। जगत अजान न जानै प्रीती ॥
 सम्मत सोलासै इकंतीसा। राम चरित्र कीन्ह पद ईसा ॥
 ईस कर्म औतारी भावा। कर्म भाव सब जगहिँ सुनावा ॥
 जग में ऋगरा जाना भाई। रावन राम चरित्र बनाई ॥

पंडित भेष जगत सब भारी । रामायन सुनि भये सुखारी ॥
अंधा अंधे बिधि समझावा । घट रामायन गुप्त करावा ॥
अब कहँ अंत समय अस्थाना । देह तजी बिधि कहँ बिधाना ॥

॥ दोहा ॥

सम्मत सोलासै असी, नदी बरुन के तीर ।
सावन सुकला सत्तमो, तुलसी तज्यो सरीर ॥

॥ चौपाई ॥

मैं अपना बरतंत बताई । समझबूझ सुध बुध चित लाई ॥
जस जस भया बिधी बिधिलेखा । तस तस तुलसी कहा बिसेखा ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी नीच निकाम, गति मति उतपति सब सुधी ।
निधि सुतिसंतसमान, आदि अंत तुलसी बिधी ॥

संतमत भेद बरनन

॥ छंद ॥

सरनि सूरसंता सोलीला अनंता । कृपा कीन्ह कथा दयालं कृपालं ॥१॥
मिटे दुख दुंदा कटे काल फंद । फटे भौ निखंदा न दुंद न फंद ॥२॥
दया संत जानी सो कहँ लौ बखानी । मता मूल मानी न करमं न भरम ॥६॥
गुरु दोन्ह संधा भया नीच बंदा । जु तुलसी निखंदा सुबोध प्रबोध ॥४॥

॥ दोहा ॥

संत सरन सम मुक्ति मन, तन मन समझ सिहार ।
बूझि बचन मन मूल को, सबहि सूल मिटि जाय ॥१॥
पकरि पदर धरि संत पद, जद्यपि सुरति बिचार ।
लार लगन लागी रहै, तब उतरै भौ पार ॥२॥

॥ छंद ॥

लखी संत स्वामी पकौ पंथ नामी । अचिंत अनामी न ठामं न धामं ॥१॥
करौ प्रेम प्रीती सरन सूर सुरती । धरौ पद प्रीतं न नीतं अनितं ॥२॥
धरै धीर चरना हरै पीर सरना । भगै भूमि भरमं न जनमं न मरनं ॥३॥

गुरू सब्द सारा निकरि सिंध पारा । धसी अगम धारानियारं सुपारं ॥४॥
चली सार संगी लगी लारचंगी । तनी तारतंगी उमंगै उलंघी ॥५॥
लखौ लोकन्यारी पकौ प्रेम प्यारी । अधर मैं निहारी न रंगन रूपं ॥६॥
गहै सूर साधू सो भाखै अगाधू । न सावन न भादूँ न नीरं न पीरं ॥७॥
बना बेनि घाटा लखी चीन्ह बाटा । सखी संग ठाटा बिराटं बिधानं ॥८॥
लखी सुति सैला चखी चौज खेला । तका तुलसी तालं कटा भर्म जालं ॥९॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी संत दयाल, निज निहाल मो कौ क्रियौ ।
लियौ सरन के माहिँ, जाइ जन्म फिर कर जियौ ॥

॥ दोहा ॥

भर्म भूल बस जग रहै, सहै जो जम के सूल ।
फूल फँदै जग जाल मैं, बंध न चीन्हा भूल ॥१॥
ये जग जाल कराल है, फँद फँद मुनि बेहाल ।
काल चाल चीन्हा नहीं, तुलसी संत कृपाल ॥२॥
मैं मतिमंद निकामता, पता न जानौं भेद ।
खेद जन्म की मिटि गई, लई लगन सुति लार ॥३॥
सतगुरु सुरति लखाइया, दिया जो भेद सुनाइ ।
पाँय परसि रस बसरही, गई गगन के माहिँ ॥४॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी तन मन अगम तमासा । लखै साध कोइ बरनि बिलासा ॥
कहि कहि कहौं संत के बैना । सुनि सुनि समझ भया सुख चैना ॥
मो मन जानि जमक जस गाई । खाइ खलक सोइ नाहिँ सुनाई ॥
ये जग जोर घोर अंधियारा । अंधे लगे अंध की लारा ॥
संत मता नहिँ चीन्हि गँवारा । कस कस लखै पार पद न्यारा ॥
नैन न चैन ऐन हिये भाँड़ै । सो कहौ संत अंत कस पाई ॥
मैला मन मद माहिँ चलावै । साधन संग रंग नहिँ भावै ॥
मन तरंग तन लहर गड़ानी । भया अंध कहौ कस कस जानी ॥

॥ दोहा ॥

मन तरंग थिर ना भयौ, गही न सतगुरु टेक ।
भेष भरम बस पचि मरे, धर धर जनम अनेक ॥

॥ छंद ॥

तुलसी तोल बानी सो भाखा बखानी । अली आदि जानं सो छानं बखानं ॥
कही आदि जेती भई भाख तेती । लई संत सेती जो सूभं सो बूभं
गुरू गैल गवना लखी लोक भवना । चखी चौज मौजं न सोगं न भोगं
पती पीर जानी मती मूल मानी । सती सूर सानी सो आपं मिलापं
मिली सिंध सारा जो सलिता सिधार । धसी पैठि धारा जो सिंध सो बुंदं
असी सुत चाली मिली सब्द नाली । भई भैंट भालं अकालं न जालं
तलब तुलसि भारी लगी प्रेम प्यारी । पिया सौँ सवारं जो नैना निहारं

॥ दोहा ॥

प्रेम पियारी प्रीति सौँ, जीति जनम मन सार ।
पार पकरि स्रुति सैल कर, भर भर भवन सिधार ॥

॥ चौपाई ॥

जोड़ जोड़ भेद भया सोइ भाखा । तुलसी कहन कटू नहिँ राखा ॥
ये विधि भया भेद सोइ गाया । तुलसी अगमन भाखि सुनाया ॥

॥ सोरठा ॥

जोड़ जोड़ विधि बरतंत, संत समझ मो को दई ।
लही जो तुलसीदास, कही कहन घट लखि परी ॥१॥
कहि लख लखन लखाव, चाव चौज जस जस भई ।
दही दधि माखन भाव, काढ़ि तत्त येहि विधि लह्यौ ॥२॥
पद परसंग समान, जानि कल्प जुग जुगन की ।
पलक पार दरियाव, भाव भेद लखि जिन कही ॥३॥

॥ चौपाई ॥

हित चित चेत सेत स्रुति सारा । संत चरन पर तन मन वारा ॥
मेरे बुधि बल बरन बिबेकी । मैँ नित लखन संत की देखी ॥

कही सुनी नहिं निजनिज बानी। सब्द बूझ कोइ संत पिछानी ॥
मेरे तन मन दृष्टि दिखानी । सो सब कृपा संत की जानी ॥

॥ सोरठा ॥

संतन सरन उबार, लार लगन जो कोउ करै ।

भरै भवन सुति द्वार, पार परसि पारस भये ॥

॥ चौपाई ॥

मैं लोहा जड़ कीट समाना । गुरु पारस सँग कनक कहाना ॥
कंचन भया सेन सुख माना । सो सराफ की तुलै दुकाना ॥
पुनि गहना गढ़ि कीन्ह सुनारा । तोड़ मोड़ बहु भाँति सँवारा ॥
पुनि पारस नहिं सेन कहाना । सेन सेन जुग जुग जिव जाना ॥
पारस परसत पारस होई । तस सतगुरु मत भाखा सोई ॥
तुलसी सतगुरु पारस कीन्हा । लोहा सुगम अगम लखि लीन्हा ॥
लोहा कंचन पारस होई । पारस पद संतन मत सोई ॥
करि सतसंग रंग जोइ जाना । जिन बोहि पारस को पहिचाना ॥
कर सोइ पारस कंचन होई । ये पारस सतगुरु सम सोई ॥

॥ सोरठा ॥

पारस कंचन कीन्ह, दीन द्रव्य बस भौ मई ।

दई दई कर्म लीन्ह, मीन बिबस बस जल भई ॥१॥

सतगुरु पारस सार, लगै लार पारस करै ।

सरै जीव कै काज, भरै सुरति भिनि भवन मैं ॥२॥

सूरति सब्द मिलाप, आठ अटारी चढ़ि चली ।

अली अगम गढ़ घाट, बाट लखन सतगुरु दई ॥३॥

॥ चौपाई ॥

जिन सतगुरु पद चरत सिद्धाण । सोइ पारस भये अगम अपारा ॥

सतगुरु पारस संत बखाना । चौथा पद चढ़ि अगम कहाना ॥

या को भर्म भाव कोइ लावै । सतसँग करै भर्म खुलि जावै ॥

जो कोई कहै अगम कस भाखा। आदि अरु अगम सुरति रस चाखा
तुलसी तुच्छ ग्रंथ घट कीन्हा। बूझै संत अगम लौ लीना ॥
मैं उन का बालक बिधि गाई। सुनिहैं संत बाल हित लाई ॥
मैं अजान बुधिहीन अचेता। वे सुनि करें करें हित हेता ॥
मैं बुधिलरिका की लरिकाई। बुधि बालक बिधि कीन्ह बनाई ॥
संत दयाल दया के स्वामी। तुलसी कीन्ही निरखि निसानी ॥

॥ सोरठा ॥

घट रामायन सार, जग बिरोध गुप्तै करी।
लगी संत के हाथ, बूझि भेद सारा लिया ॥१॥
अगम निगम रस सार, निरखि संत हाथै करी।
मथि माखन रस काढ़ि, जगत भाँड बिधि निरखि कै ॥२॥
तुलसी तत मत जान, सत्त भेद निंदा नहीं।
ये मत माखन सार, जग असार जानै नहीं ॥३॥
सब संतन रस मूल, कर्म सूल गाढ़े कटे।
फटे कागद करतार, सार वस्तु हाथै लगी ॥४॥
तुलसी निपट अयान, जानि संत बूझै सोई।
घट रामायन सार, लखि अंगार बिधि यों कही ॥५॥
आदि अंत की बात, भाखि भेद संतन लखा।
पका परम पद पार, भुका भर्म भौ मैं रहा ॥६॥
जिन बूझा मत मूल, सरन सूल सगरे कटे।
फटे भरम क्रम भूल, जब अतूल अद्बुद लखा ॥७॥

॥ दोहा ॥

जो ब्रह्मंड पिंड मैं मई, मइ मइ मोर पसार।
सब्द सार गुरु पदम की, तुलसी कहत निहार ॥

॥ चौपाई ॥

टाटी त्रोटक तोड़ बताई। छंद माहिँ सब संध लखाई ॥
जस जस भया गुरु सिष मेला। सो तुलसी त्रोटक में खोला ॥

या की बूझ संत कौड़ जानी । जिन जिन मंजिल राह पिछानी
आदि अंत और अगम निवासा । ज्ञान भक्ति और जोग बिलासा ॥
पुनि बैराग राग रस भारी । अगम निगम मत कहा बिचारी
गुरु सतगुरु मत मिलन मिलाण । छूटै तिमर अंध और आपा ॥
सतगुरु गगना गगन गुहारा । जब हिये नैना निरखि निहारा ॥
पल पल सुरति पदम पद माहीं । ताकै ऐन सैन की राही ॥
प्रथमहि बन्दौ सतगुरु स्वामी । तुलसी बारं बार प्रनामी ॥

॥ सोरठा ॥

गुरु पद गगन गुहार, जब निहार निरनय लखै ।
पकै पदम सुति सार, तकै ऐन अंदर मई ॥

॥ छंद १ ॥

प्रथम बंद स्वामी सो सतगुरु प्रनामी । अगम पंथ धामी सो बारं न पारं
परम पद मूलं सो महिमा अतूलं । कटे घोर सूलं अनंतं अपारं
कही तोल बानी अकथ गति कहानी । कहाँ लौ बखानी सो चरनारविंदं
मुए जोग ज्ञानी सो महिमा न जानी । बरन बेद बानी सो नेता जो नेतं
तुलसी सैल सानी सो भाखा बखानी । जो बंदौ नमामी सो लेखा अलेखं

॥ छंद २ ॥

गुरु धाम कंजा मनी मैल मंजा । धनू तोड़ भंजा सो लील अपीलं
घोर गरजा घरारी कमठ सेस भारी । सो कड़का करारी सो अंगं भुअंगं
दिगज दिगपाली परे पट चाली । रबी चाँप डाली सो तोल अतोलं
हली भूमि भारी कुलाहल अणारी । धसी तोड़ धारं गगन घोर सारं
तकी सुन्न जाई पकी ताल माहीं । सो तुलसी अन्हार्ड छुटे कर्म मैलं

॥ छंद ३ ॥

अगम पंथ बाटा चढ़ी सुति घाटा । गगन गैल फाटा सो आतं निआतं
पिला पील भारी चढ़ी सुति सारी । सो खिरकी निहारी लखा ब्रह्म पूरं
अधर लेख लेखा सो जानै न भेषा । सुरति संत देखा सो लेखा अलेखं
तुलसी तत्त बानी किया मत्त ज्ञानी । लिया लै निदानं जो ज्ञानं सो ध्यानं

॥ छंद ४ ॥

कही सिंध बानी सो बुंदा न जानी । सो सतगुरु बखानी अनाथं सनाथं
अजर कूप भारी सो सूरत सँवारी । कटे कर्म बंधं बसे बुन्द सिंधं
चढ़ी चेट चाली खड़ी बंक नाली । धसी द्वारपाली प्रबोयं सो धोयं
तुलसी तत्त तोली अधर चाँप खोली । लखी संत बोली सो मोलं अमोलं

॥ छंद ५ ॥

जड़े जाल कर्म पड़े भूल भर्म । धरे धर अधर्म न मरमं न सरमं
नहीं भक्त ज्ञानी जो आपान जानी । सो पाषान पानी न जाना अजानं
मया मोह बंधे त्रिया पुत्र फंदे । बिषय भोग अंधे सो गंदं निखंदं
तुलसी छेक छोड़े हथी और घोड़े । तिनुका इस्क तोड़े सो मोड़ं करोड़ं

॥ छंद ६ ॥

गिरा गोह गाँठी परे पाँच बाटी । फँसे घोर घाटी सो ठाटं बैराटं
प्रकिरती पचीसं गुना नाम ईसं । गिरा गोह ग्रीसं सो प्रीसं अनीसं
जड़े जोड़ जानी पड़े पिंड पानी । चले चेत खानी न ज्ञानं न ध्यानं
तुलसी मैल मारं भया भूमि भारं । न तुरती सम्हारं सो वारं न पारं

॥ छंद ७ ॥

कृतिम काल जारं फिकर फहम फारं । निकर नौ निवारं सो भारं उतारं
अली आदि जानी भली भूल मानी । चली चीन्ह खानी हितानं चितानं
तिरकूट तालं करौ सैल भालं । मिलौ मौज मालं सो कालं निकालं
तुलसी तेल गाई गगन गैल जाई । सुरति सैल पाई सो साधं अगाधं

॥ छंद ८ ॥

अली आत्म रूपं अकासं सरूपं । रबी भास भूपं अनंतं अनूपं
निराकार कारं भई जोति जारं । लई बिस्व भारं सो सारं सम्हारं
सरगुन स्याम वारं सो सृष्टी सवारं । रची खानि चारं सो भूमी अपारं
अली आस अंडा जमा जीव पिंडा । सो तुलसी अखंडा बैराटं ब्रह्मंडं

॥ छंद ९ ॥

गुना गोह तीतं बना बास कीतं । पके पाँच पीतं सो चीतं अनीतं
बैराट धारं सो बेदौ न पारं । जो नेतौ पुकारं सो वारं न पारं

निरबान बानंजगा जोग ध्यान। पगा प्रेम पालं सो कालं करालं
तुलसी तत्त धायंगठे गाँठि गोयं। पड़े पाँच मोयं जो सोयं सो खोयं

॥ सोरठा ॥

त्रोटक तरक बिचार, समझि संध साधू लखै ।
तकै सुरति धरि ध्यान, सो समान पद को चखै ॥१॥
घट रामायन अन्त, समझि सूर संतहि लखै ।
भक्तै भेष और पन्थ, थकै जगत भौ भिल रहा ॥२॥

॥ दोहा ॥

पंडित ज्ञानी भेष जो, नहिँ पावै कोइ अंत ।
ये अतन्त रस अगम है, लखै सूर कोइ संत ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी मैँ मतिहीन, संत चीन्ह मो को दर्ई ।
भई निरत पद लीन, होइ अधीन अन्दर मई ॥

॥ इति ॥

॥ सूची पत्र ॥

घट रामायन—भाग १

भूमिका	पृष्ठ १-२
जीवन-चरित्र तुलसी साहिब का	१-४
भेद पिंड और ब्रह्मांड का	१-१३
नीरों के नाम	१३-१४
पवनों के नाम	१५-१७
गगनों के नाम	१७
भँवर गुफा के नाम	१७-१८
त्रिकुटी के नाम	१८-२१
नालों के नाम	२१-२३
सुन्न भेद	२३-२६
कँवल भेद	२६-३०
जीव वचन	३०-३३
द्वार भेद	३३-४४
घट का भेद और ठिकाना	४४-४६
कोठों के नाम	४६-५३
सिद्धों के नाम	५३-५५
प्रकृतियों के नाम	५५-५६
प्रकृतियों के सुभाव	५६-५७
नाड़ियों के नाम	५७-५८
पाँच इन्द्रियों के नाम	५८
इन्द्रियों के बास	५८
सुन्नो के नाम और भेद	५८-६५
बरनन चार गति बैराग	६५-६७
बरनन जोग	६७-६८
बरनन ज्ञान	६८-६९
बरनन भक्ति	६९-७०
हाल काशी का	७१-७६
सम्बाद साथ तकी मियाँ के	७६-८३
सम्बाद जैनियों के साथ	८३-१०५
जुगल्या और जक्त की उत्पत्ति कैसे हुई	१०५-११६
शरण में आना कर्मा, धर्मा और करिया स्त्री का	११६-१२६
सम्बाद साथ नैन् और श्यामा पंडितों के	१२६-१४६
सम्बाद साथ माना पंडित के	१४६-१६४